

# शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

## सहायक सामग्री

( 2023-2024 )

कक्षा : बारहवीं

# हिंदी ( ऐच्छिक )

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार

सचिव ( शिक्षा )

श्री हिमांशु गुप्ता

निदेशक ( शिक्षा )

डॉ० रीता शर्मा

अतिरिक्त शिक्षा निदेशक ( स्कूल एवं परीक्षा )

समन्वयक:

श्री संजय सुभाष कुमार

उप शिक्षा निदेशक ( परीक्षा )

श्रीमती रितु सिंघल

विशेष कार्यधिकारी ( परीक्षा )

श्री राज कुमार

विशेष कार्यधिकारी ( परीक्षा )

श्री कृष्ण कुमार

विशेष कार्यधिकारी ( परीक्षा )

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

---

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में राजेश कुमार, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसेट, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

**ASHOK KUMAR  
IAS**



सचिव ( शिक्षा )  
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र  
दिल्ली सरकार  
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054  
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)  
Government of National Capital Territory of Delhi  
Old Secretariat, Delhi-110054  
Phone : 23890187 Telefax : 23890119  
e-mail : secyedu@nic.in

### **MESSAGE**

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself, I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of School and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

**HIMANSHU GUPTA, IAS**  
Director, Education & Sports



Directorate of Education  
Govt. of NCT of Delhi  
Room No. 12, Civil Lines  
Near Vidhan Sabha,  
Delhi-110054  
Ph.: 011-23890172  
E-mail: diredu@nic.in

## MESSAGE

**“A good education is a foundation for a better future.”**

**- Elizabeth Warren**

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating the latest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

**Dr. RITA SHARMA**  
Additional Director of Education  
(School/Exam)



**Govt. of NCT of Delhi**  
Directorate of Education  
Old Secretariat, Delhi-110054  
Ph. : 23890185

D.O. No. PS/AM/DE/Sch/2022/131

Dated: 01 सितम्बर, 2022

## संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमि समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

**रीता शर्मा**  
(रीता शर्मा)



शिक्षा निदेशालय  
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री  
( 2023-2024 )

हिंदी ( ऐच्छिक )  
कक्षा : बारहवीं

निःशुल्क वितरण हेतु

---

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित





# भारत का संविधान

## भाग 4क

### नागरिकों के मूल कर्तव्य

#### अनुच्छेद 51 क

**मूल कर्तव्य** - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
- (ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।



# Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

## Fundamental Duties


It shall be the duty of every citizen of India —

- (a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;
- (b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;
- (c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;
- (d) to defend the country and render national service when called upon to do so;
- (e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;
- (f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;
- (g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;
- (h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;
- (i) to safeguard public property and to abjure violence;
- (j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;
- \* (k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

---

**Note:** The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

\* (k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).



## भारत का संविधान उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक '[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और '[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की भाग 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की भाग 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

# **THE CONSTITUTION OF INDIA**

## **PREAMBLE**

**WE, THE PEOPLE OF INDIA**, having solemnly resolved to constitute India into a <sup>1</sup>**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

**JUSTICE**, social, economic and political;

**LIBERTY** of thought, expression, belief, faith and worship;

**EQUALITY** of status and of opportunity; and to promote among them all

**FRATERNITY** assuring the dignity of the individual and the <sup>2</sup>[unity and integrity of the Nation];

**IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY** this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)

2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

# सहायक-सामग्री निर्माण समिति

## हिन्दी 'ऐच्छिक'

### कक्षा-बारहवीं

क्रम सं.	नाम	विद्यालय
1.	डॉ. पंकज	उपप्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बालिका विद्यालय, सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली
2.	डॉ. शिवेन्द्र कुमार झा	प्रवक्ता- हिन्दी, कोर एकेडेमिक यूनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
3.	डॉ. अंकित कुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता- हिन्दी, कोर एकेडेमिक यूनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
4.	डॉ. पद्माक्षी पाठक	प्रवक्ता - हिन्दी, राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय बुराड़ी, दिल्ली
5.	श्रीमती सुमन शर्मा	प्रवक्ता - हिन्दी, दिल्ली मॉडल वर्चुअल स्कूल, दिल्ली



## विद्यार्थियों के लिए सहायक निर्देश:-

- (1) अपठित गद्यांश व पद्यांश के सही विकल्प चुनते समय अपनी तर्क एवं विश्लेषण क्षमता का प्रयोग करें ।
- (2) रचनात्मक लेखन करते समय छात्र अपने ज्ञान अनुभव व कल्पनाशीलता का प्रयोग करें ।
- (3) बहुविकल्पीय प्रश्नों के विकल्पों का चयन ध्यानपूर्वक करें ।
- (4) प्रश्नों के उत्तर देते समय निर्धारित अंकों व शब्दसीमा का ध्यान रखें ।
- (5) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के पश्चात् दो पंक्तियाँ अवश्य छोड़ें जिससे सभी उत्तर स्पष्ट दिखें ।
- (6) महत्वपूर्ण अंशों को विशेषतः रेखांकित करें ।
- (7) सभी प्रश्नों के उत्तर देने का अथक प्रयास करें ।
- (8) वैकल्पिक / अथवा - प्रश्नों के निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- (9) सप्रसंग व्याख्या से संबंधित प्रश्नों में संदर्भ प्रसंग व्याख्या और विशेष को करें।
- (10) सभी पाठों के अंत में ऑनलाइन कक्षाओं का लिंक दिया गया है, बच्चे इस ऑनलाइन ई सामग्री की सहायता से पाठों को समझने का प्रयास करें ।
- (11) वर्णनात्मक परीक्षा की तैयारी हेतु अधिक से अधिक लेखन अभ्यास करें ।

हिंदी ( ऐच्छिक ) ( कोड सं. 002 )

कक्षा-12वीं ( 2023-24 ) परीक्षा भार विभाजन

प्रश्न-पत्र दो खण्डों-खंड 'अ' और 'ब' में होगा।

खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे। सभी 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।

खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक : 80

निर्धारित समय 3 घंटे

वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन		
खंड अ ( वस्तुपरक प्रश्न )		
	विषय वस्तु	भार
1	अपठित गद्यांश	18
अ	एक अपठित गद्यांश पर आधारित 10 बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएँगे सभी 10 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। (लगभग 300 शब्दों का) (1 अंक × 10 प्रश्न)	10
ब	द्वय एक अपठित पद्यांश आधारित 08 बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएँगे। सभी 08 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। (लगभग 150 शब्दों का) (1 अंक × 8 प्रश्न)	08
2	अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर	05
	इकाई एक – जनसंचार माध्यम और लेखन (पाठ 3, 4 और 5) पर आधारित 05 बहुविकल्पात्मक प्रश्न। सभी 05 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। (1 अंक × 05 प्रश्न)	05
3	पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न	10
अ	पठित काव्यांश पर 05 बहुविकल्पी प्रश्न देने होंगे। (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
ब	पठित गद्यांश पर 05 बहुविकल्पी प्रश्न। सभी 05 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
4	पूरक पाठ्यपुस्तक अंतराल भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न	07
अ	अपठित पाठों पर 07 बहुविकल्पीय प्रश्न। सभी 07 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। (1 अंक x 07 प्रश्न)	07
खंड - ब ( वर्णनात्मक प्रश्न )		
	विषयवस्तु	भार
5	अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर	17



	इकाई एक - जनसंचार माध्यम और लेखन (पाठ 3, 4 और 5) इकाई - दो सृजनात्मक लेखन पाठ 6, 7, 8 और 13 पर आधारित	
1	दिए गए तीन नए और अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में रचनात्मक लेखन (5 अंक x 1 प्रश्न)	05
2	कविता/कहानी/नाटक की रचना प्रक्रिया पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (3 अंक x 2 प्रश्न) लगभग 60 शब्दों में)	06
3	समाचार लेखन (उल्टा पिरामिड शैली) फीचर लेखन/आलेख लेखन पर आधारित दो लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (लगभग 60 शब्दों में)	06
6	<b>पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 + अंतराल भाग-2</b>	<b>20+3=23</b>
1	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
2	02 में से किसी 01 काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या (विकल्प सहित) (दीर्घउत्तरीय प्रश्न) (6 अंक x 1 प्रश्न)	6
3	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
4	02 में से किसी 01 गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या (विकल्प सहित) (दीर्घउत्तरीय प्रश्न) (6 अंक x 1 प्रश्न)	6
7	<b>अंतराल भाग-2</b>	<b>03</b>
	पाठों की विषयवस्तु पर आधारित 01 प्रश्न (विकल्प सहित) (3 अंक x 1 प्रश्न)	
8	(अ) श्रवण तथा वचन	10
	(ब) परियोजना कार्य	10
	<b>कुल अंक</b>	<b>100</b>

**प्रस्तावित पुस्तकें:**

1. अंतरा, भाग-2, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. अंतरा, भाग-2, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
3. 'अभिव्यक्ति और माध्यम', एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

❖ नोट : निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

**पाठ्यपुस्तक-अंतरा भाग 2**

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-गीत गाने दो मुझे (घटाया गया पाठ का अंश और उससे संबंधित प्रश्न अभ्यास)
2. विष्णु खरे - एक कम, सत्य (पूरा पाठ)
3. केशवदास - रामचंद्रिका (पूरा पाठ)
4. घनानंद - सवैया (घटाया गया पाठ का अंश और उससे संबंधित प्रश्न अभ्यास)
5. ब्रजमोहन व्यास - कच्चा चिट्ठा (पूरा पाठ)
6. रामविलास शर्मा - यथास्मै रोचते विश्वम (पूरा पाठ)

**पूरक पाठ्यपुस्तक - अंतराल 2**

1. संजीव - आरोहण

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्न-पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श ( प्रतिदर्श ) प्रश्न-पत्र देखें।

## विषय सूची

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	अंतरा भाग - 2 ( काव्य खण्ड )	1
2.	अंतरा भाग - 2 ( गद्य खण्ड )	65
3.	पूरक पुस्तक - अंतराल भाग - 2	123
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	147
5.	रचनात्मक लेखन	197
6.	अपठित बोध ( काव्यांश तथा गद्यांश )	213
7.	अभ्यास प्रश्न-पत्र 2023-2024	222

## काव्य खंड

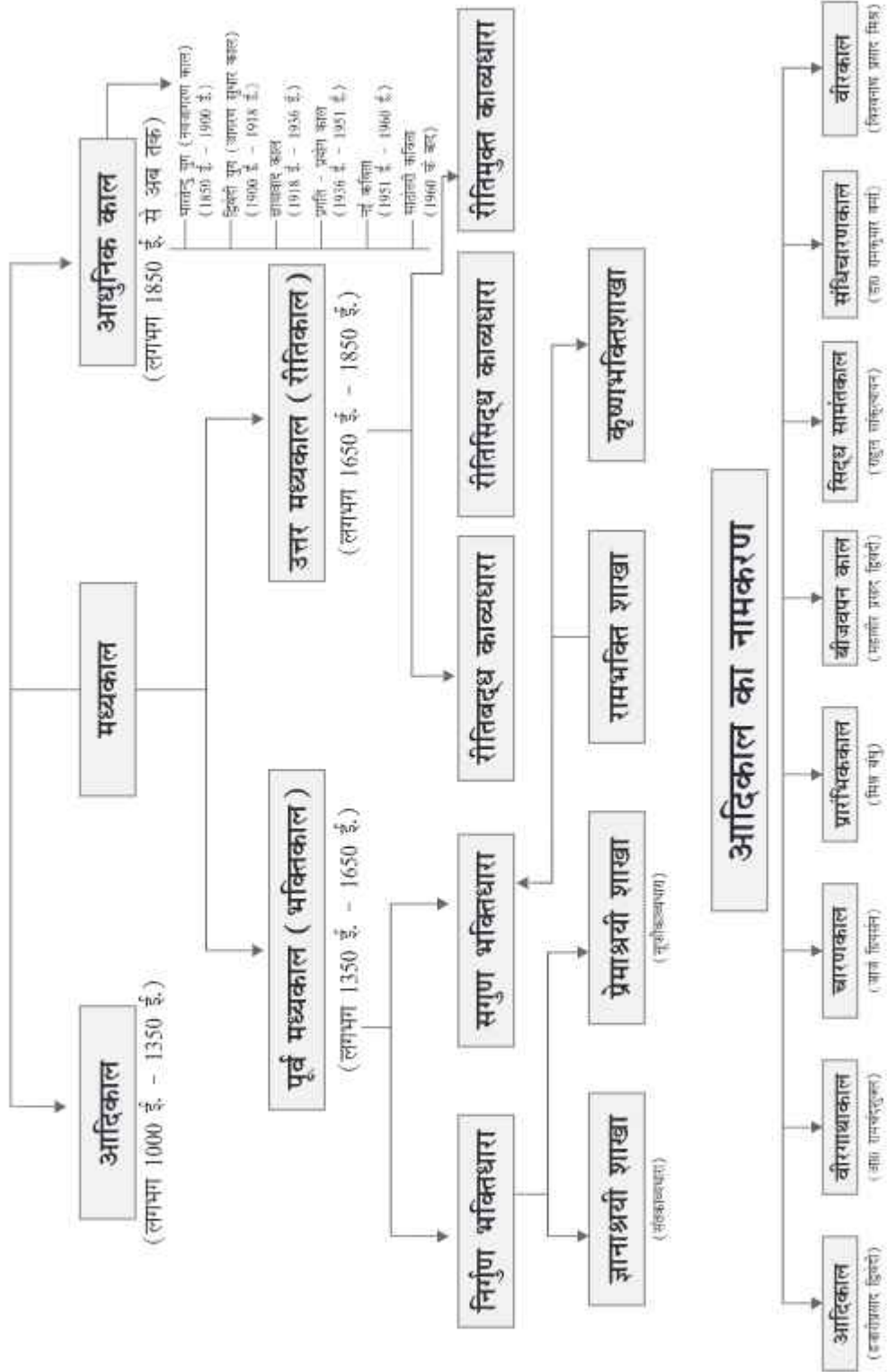
### आधुनिक काल

1. जयशंकर प्रसाद	(क) देवसेना का गीत (ख) कार्नेलिया का गीत
2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	(क) सरोज स्मृति
3. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	(क) यह दीप अकेला (ख) मैंने देखा, एक बूँद
4. केदारनाथ सिंह	(क) बनारस (ख) दिशा
5. रघुवीर सहाय	(क) तोड़ो (ख) बसंत आया

### प्राचीनकाल

6. तुलसीदास	(क) भरत-राम का प्रेम (ख) पद
7. मलिक मुहम्मद जायसी	(क) बारहमासा
8. विद्यापति	(क) पद
9. घनानंद	(क) कवित्त

## हिन्दी साहित्य का काल विभाजन



## आदिकाल

हिन्दी साहित्य के इतिहास में लगभग 8वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी के मध्य तक के काल को आदिकाल कहा जाता है। इस को यह नाम डॉ. हजारीप्रसाद रिवेदी से मिला है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने वीरगाथा काल तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'वीरकाल' काल नाम दिया है। इस काल के समय के आधार पर साहित्य का इतिहास लिखने वाले मिश्र बंधुओं इसका नाम आरंभिक काल किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीजवपन काल'। डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल को प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर इसको चारण-काल कहा है और राहुल संकृत्यायन ने सिद्ध-सामन्त काल।

## मध्यकाल

हिंदी साहित्य में चौदहवीं सदी के मध्य से उन्नीसवीं सदी के मध्य को मध्यकाल कहा गया है। इसे पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है, पूर्व मध्यकाल ( भक्तिकाल ) और उत्तर मध्यकाल ( रीति काल )

### पूर्व मध्यकाल ( भक्तिकाल )

सदी के मध्य से सोलहवीं सदी के मध्य को **भक्तिकाल** कहा गया है। इस काल को दो धाराओं में बाँटा गया है, **सगुण भक्ति धारा** और **निर्गुण भक्ति धारा**

**सगुण भक्ति धारा**—इसे भी दो शाखाओं में विभाजित किया गया है— **राम भक्ति शाखा** और **कृष्ण भक्ति शाखा**। विष्णु के दस अवतारों में से एक **राम कथा** को लेकर रचे गए काव्य को **राम भक्ति शाखा** कहा गया है। तुलसीदास इसके प्रतिनिधि कवि हैं।

**कृष्ण भक्ति शाखा**— विष्णु के दस अवतारों में से एक **कृष्ण कथा** को लेकर रचे गए काव्य को **कृष्ण भक्ति शाखा** कहा गया है। सूरदास इसके प्रतिनिधि कवि हैं।

**निर्गुण भक्ति धारा**— इसे भी दो शाखाओं में विभाजित किया गया है **ज्ञान मार्गी ( संत काव्य )** और **प्रेम मार्गी शाखा ( सूफी काव्य धारा )**।

**ज्ञान मार्गी ( संत काव्य )** ईश्वर के निर्गुण रूप एवं आत्मशुद्धि पर बल देते हुए रचित काव्यों को **ज्ञान मार्गी** या **संत काव्य** कहा गया है। कबीरदास इसके प्रतिनिधि कवि हैं।

**प्रेम मार्गी शाखा ( सूफी काव्य धारा )**—ईश्वर के निर्गुण रूप एवं प्रेम पर बल देते हुए रचित काव्यों को **प्रेम मार्गी शाखा** या **सूफी काव्य धारा** कहा गया है। मलिक मुहम्मद जायसी इसके प्रतिनिधि कवि हैं।

### उत्तर मध्यकाल ( रीतिकाल )

सोलहवीं सदी के मध्य से उन्नीसवीं सदी के मध्य को रीतिकाल कहा गया है। रीति काल को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है-रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त

रीतिबद्ध- रीतिकाल में 'रीति' शब्द का प्रयोग काव्यांग निरूपण के अर्थ में हुआ है। ऐसे अन्य जिनके लक्षण उदाहरण दिये जाते हैं 'रीतिग्रंथ' कहलाते हैं। रीतिकाल के अधिकांश कवियों ने रीतिनिरूपण करते हुए लक्षण ग्रंथ लिखे, अतः इल काल को प्रधान प्रवृत्ति रीति निरूपण को माना जा सकता है। केशवदास, चिंतामणि त्रिपाठी, शूलपति मिश्र देव, भिखारीदास, पद्माकर और मतिराम आदि इस धारा के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं।

रीतिसिद्ध- काव्य-रीति में सिद्धहस्त अर्थात् जिन्होंने रीति में पारंगत होते हुए उस रीति-ज्ञान का पूरा-पूरा उपयोग अपनी काव्य-रचनाओं में किया है, वे कवि ही रीतिसिद्ध कवि के रूप में स्वीकार किए गए। आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, केशव, चिंतामणि, देव, बिहारी, मतिराम, भूषण, घनानंद, पद्माकर आदि। को रीतिसिद्ध कवि मानते हैं। इनमें से केशव, बिहारी और भूषण को इस युग का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है।

रीतिमुक्त- रीतिमुक्त काव्य शास्त्रों से मुक्ति का काव्य है। इन कवियों ने काव्यशास्त्र के नियमों पर ध्यान नहीं दिया। ये कवि हृदय की अनुभूति के आधार पर रचना करते हैं। इनका काव्य आलंकारिता का खंडन करता है तथा मार्मिकता पर ध्यान देता है। रीतिमुक्त धारा के कालक्रमानुसार प्रमुख कवि आलम, घनानंद, बोधा, ठाकुर और द्विजदेव आदि हैं।

भारतेंदु युग- 1850 ई. से 1900 तक के कालखंड को भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर भारतेंदु युग कहा जाता है।

द्विवेदी युग 1900 ई. से 1918 तक के कालखंड को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर द्विवेदी युग कहा जाता है।

### छायावाद

छायावाद हिंदी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य-धारा है जो लगभग ई.स. 1918 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ और कल्पना प्रधान है।

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, पंडित माखन लाल चतुर्वेदी आदि इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है।

## प्रगतिवाद

हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद का आरंभ 1936 से 1943 तक माना जा सकता है। इसी वर्ष लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ का पहला सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की। इसके बाद साहित्य की विभिन्न विधाओं में मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रचनाएँ हुईं। प्रगतिवादी धारा के साहित्यकारों में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन, रांगेय राघव आदि इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्य में प्रगतिवाद के रूप में उदय हुआ। यह समाज को शोषक और शोषित के रूप में देखता है। प्रगतिवादी शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चलना लाने तथा उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना की कोशिशों का समर्थन करता है। यह पूँजीवाद, सामंतवाद, धार्मिक संस्थाओं को शीर्षक के रूप में चिन्हित कर उन्हें उखाड़ फेंकने की बात करता है।

## प्रयोगवाद

हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद का आरंभ 1943 से 1953 तक माना जाता है। प्रयोगवाद हिन्दी साहित्य की आधुनिकतम विधारधारा है। अज्ञेय को अस्तित्ववादी माना जाता है। प्रयोगवाद के प्रवर्तक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय हैं। प्रयोगवाद का एकमात्र उद्देश्य प्रगतिवाद के जनवादी दृष्टिकोण का विरोध करना है। प्रयोगवाद कवियों ने काव्य के भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों को ही महत्व दिया है। इन्होंने प्रयोग करके नये प्रतीकों, नये उपमानों एवं नवीन बिम्बों का प्रयोग कर काव्य को नवीन छवि प्रदान की है। प्रयोगवाद में कविता में शिल्प और संवेदना के स्तर पर सर्वथा नवीन प्रयोग मिलते हैं। प्रयोगवाद ने साहित्य में पहली बार वैयक्तिक अस्मिता, निजी व्यक्तित्व और निजता को बहुत महत्व दिया। इसमें क्षण को महत्व देकर जीवन को भरपूर ढंग से जीने की चाह है। प्रयोगवादी कवि वैयक्तिक प्रेम की सहज स्वीकृति पर बल देता है।

## नयी कविता

नयी कविता हिन्दी साहित्य में सन् 1952 ई. के बाद की उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है। नयी कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है।



नयी कविता आंदोलन का आरंभ इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था परिमल के कवि लेखकों- जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी और विजयदेव नारायण साहू के संपादन में 1953 ई. में प्रकाशित नयी कविता (पत्रिका) से माना जाता है। इससे पहले अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'दूसरा सप्तक' की भूमिका तथा उसमें शामिल कुछ कवियों के वक्तव्यों में अपनी कविताओं के लिये 'नयी कविता' शब्द को स्वीकार किया गया था।

काव्य गुण या शब्द गुण से तात्पर्य किसी काव्य में प्रयुक्त होने वाले उन शब्दों से होता है जो हमें रस का अनुभव कराते हैं। जिन तत्वों के कारण काव्य में रस का उत्सर्ग होता है और हमें काव्य हमें काव्य में रस की अनुभूति होती है, काव्य की शोभा बढ़ाने वाले ऐसे तत्वों को काव्य गुण या शब्द गुण कहते है।

## काव्य गुण

**माधुर्य गुण:-** काव्य के जिस गुण के कारण सहृदय का चित्त द्रवित हो जाता है, उसे माधुर्य गुण कहते हैं।  
यह गुण शृंगार, करुण और शांति रस में पाया जाता है।  
उदाहरण- यही भाता इस मन में छोड़ धन-धाम जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में (साकेत)

**प्रसाद गुण:-** काव्य के जिस गुण विशेष के कारण सहृदय/पाठ्य के चित्त में अर्ध पूरे का पूरा रस जाता है यह गुण ऐसी रचनाओं में पाया जाता है जिनके सुनने या पढने मात्र से उनका अर्थ सहज ही समझ में आ जाता है।  
यह गुण प्रायः सभी रसों में पाया जाता है।  
उदाहरण: "तन भी सुंदर मन भी सुंदर प्रभु मेरा जीवन हो सुंदर।"

**ओज गुण:-** काव्य के जिस गुण के कारण सहृदय का चित्त दीप्त हो जाता है अर्थात् पाठक के मन में तेज या उत्साह का संचार हो जाता है।  
यह गुण वीर रौद्र, वीभत्स रसों में पाया जाता है।  
उदाहरण: सिंहासन हिल उठें, राजवंशों ने भृकुटि तानी थी बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी, खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी

**छन्द**  
वर्ण, गुण, मात्रा, यति गति आदि नियमों से नियोजित रचना छंद कहलाती है।

**मात्रिक गुण:-** जो छंद मात्राओं की गणना के आधार पर लिखे जाते है।

1. चौपाई
2. दोहा
3. सारठा
4. गीतिका
5. रोला
6. उल्लाहा
7. हरिगीतिका
8. छप्पय
9. कुंडलिया

**वर्णिक गुण:-** जो छंद वर्णों की गणना के आधार पर लिखे/रचे जाते है।

1. सवैया
2. कवित्त
3. घनाक्षरी
4. शिखरिणी
5. मंदक्रांता

**मुक्तक गुण:-** जिस छंद में वर्ण और मात्राओं का बंधन न हो।

### छन्द के भाग

1. **मात्रा**- ह्रस्व स्वर जैसे 'अ' की एक मात्रा और दीर्घ स्वर आ, ई की दो मात्राएँ मानी जाती है।
2. **चरण या पाद**- एक छंद में प्रायः चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण को विषम चरण तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहा जाता है।
3. **यति**- किसी छंद को पढते समय पाठय जहाँ रुकता या विराम लेता है।
4. **गति**- कविता की लय या प्रवाह।
5. **तुक**- चरण के अंत में वर्णों की समान आवृत्ति।
6. **गण**- वार्णिक छंदों की गणना गण के क्रमानुसार की जाती है। तीन वर्णों का एक गण होता है। कुल गण आठ होते हैं।

**गणसूत्र**- यमाताराजभानसलगा।

### शब्द शक्ति

शब्द में कई अर्थ छिपे रहते हैं। समय और स्थिति के अनुसार वे विशेष व्यापार या कारण से अलग अर्थ को व्यक्त करने हैं। वे अर्थ हम जिस कारण या व्यापार से ग्रहण करते हैं, उसी को शब्द शक्ति कहा जाता है।

अभिधा	लक्षणा	व्यंजना
इसमें शब्द का सामान्य या प्रचलित अर्थ प्रकट होता है। जैसे- पर्वत को पार करना कठिन होता है।	इसमें प्रचलित या मुख्य अर्थ में बाधा आने पर लक्षण के आधार पर कोई दूसरा अर्थ (लाक्षणिक अर्थ) प्रकट होता है जैसे:- जीवन में मनुष्य को कई पर्वत पार करने पड़ते हैं। यहाँ पर्वत का मुख्य अर्थ नहीं बल्कि उसका लाक्षणिक अर्थ "बाधा" ही प्रकट हो रहा है।	इसमें मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ से भी अलग एक तीसरा अर्थ प्रकट होता है। यह अर्थ संदर्भ या परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। जैसे- "शाम हो गई है।" इस वाक्य का अर्थ संकेत अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग हो सकता है। जैसे- गृहिणी, किसान, कर्मचारी, मजदूर आदि।

## पाठ-1

# जयशंकर प्रसाद

(छायावाद के प्रवर्तक कवि)

## पाठ परिचय

# ‘देवसेना का गीत’

कविता का प्रतिपाद्य / मूल संवेदना

‘देवसेना का गीत’ ‘जयशंकर प्रसाद’ के प्रसिद्ध नाटक ‘स्कन्दगुप्त’ का अंश है। देवसेना स्कन्दगुप्त के प्रेम से वंचित रह जाने पर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में अपने दुःख, वेदना और व्याकुलता को प्रकट करते हुए यह गीत गाती है। हूणों के हमले में मालवा का राजा बंधुवर्मा और उसका परिवार मारा जाता है, लेकिन उनकी बहन देवसेना किसी तरह बच कर निकल जाती है। देवसेना स्कन्दगुप्त से प्रेम करती है और उसे पूरा विश्वास है कि इस मुश्किल घड़ी में स्कन्दगुप्त उसका साथ देगा और उससे विवाह करेगा। लेकिन स्कन्दगुप्त तो मालवा के धन कुबेर की पुत्री विजया से विवाह करना चाहता है। इस बात से देवसेना पूरी तरह से टूट जाती है और अपने पूरे जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर देती है।

**सप्रसंग व्याख्या :** आह वेदना ..... नीरवता अनंत अगैड़ाई।  
**संदर्भ :** कवि-‘जयशंकर प्रसाद’

कविता-‘देवसेना का गीत’

**प्रसंग :** इसमें देवसेना अपने दुःख और संघर्षों का वर्णन करते हुए कहती है कि उसकी जीवन यात्रा पर अगर किसी ने अधिकार किया है तो वह है एकमात्र उसका अकेलापन।

**व्याख्या:-** देवसेना कहती है कि मुझे जीवन के अन्तिम क्षणों में भी दुःख और पीड़ा ही मिल रही है। मैंने अपना सारा जीवन इसी आशा में गुजार दिया कि स्कन्दगुप्त मुझसे प्रेम करता है लेकिन यह तो मात्र मेरा भ्रम था। इसी कारण मैंने अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया अर्थात् अपने जीवन की मधुर यादों को दान कर दिया अतः जीवन के अन्तिम क्षणों में भी मुझे दुःख ही दुःख मिल रहे हैं, मानो संध्या भी उसके दुःख में औसू बहा रही है। उसने अपना जीवन निरंतर दुःखों और संघर्षों के बीच ही बिताया है जहाँ उसका कोई साथी नहीं था। उसका एकाकीपन ही उसका साथी बनकर चलता रहा।

**काव्यगत विशेषताएँ :-** देवसेना के जीवन संघर्षों का सजीव चित्रण हुआ है।

1. विषयानुकूल गंभीर और तत्सम प्रधान खड़ी बोली।
2. मुक्त छंद।
3. लाक्षणिक शैली।
4. करुण रस।
5. उपमा, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
6. स्मृति बिंब।
7. गेयता का गुण।
8. व्याकरणिक शब्द- सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण।

### सप्रसंग व्याख्या

चढ़कर मेरे जीवन रथ.....इससे मन की लाज गँवाई।

संदर्भ : कवि-‘जयशंकर प्रसाद’

कविता-‘देवसेना का गीत’

**प्रसंग** : इसमें देवसेना के हृदय की समस्त वेदना, व्याकुलता और बेचैनी का वर्णन किया गया है। वह अपने वेदनामय क्षणों को याद करती है।

**व्याख्या** : इस गीत में स्कंदगुप्त के विवाह-प्रस्ताव को टुकराने के बाद देवसेना अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन करती हुई कहती है कि मेरे जीवन रूपी रथ पर चढ़कर विनाश व मुसीबतें मेरे साथ-साथ हमेशा चलते रहे अर्थात् मैंने जीवन भर दुःखों को झेला है। मैं उनसे लगातार होड़ करती हुई, संघर्ष करती हुई निरन्तर आगे बढ़ती रही जबकि मुझे पता था कि मैं उनके सामने बहुत कमजोर हूँ; उनका मुकाबला नहीं कर पाऊँगी; फिर भी मैं उनसे जीवन भर लोहा लेती रही। देवसेना स्कंदगुप्त को संबोधित करते हुए कहती है कि हे राजन! अब मेरे हृदय की करुण रागिनी हाहाकार कर रही है अर्थात् मैं बहुत अधिक दुखी हो रही हूँ। आप जो भी अधिकार मुझ पर रखते हो, उसे लौटा लो क्योंकि मेरा मन बहुत अधिक व्यथित हो गया है। अब इसे संभालना मेरे वश की बात नहीं है। इसी कारण मैं अपने मन की लज्जा की रक्षा भी न कर सकी और सबके सामने उसे खो बैठी।

**काव्यगत विशेषताएँ :**

**विशेष** : 1. देवसेना की विरह-विद्ग्ध दशा और हतोत्साहित मनःस्थिति का चित्रण है।

**काव्य-सौंदर्य** : 2. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। 3. मुक्त छंद की रचना, 4. छायावादी रचना।

5. करुण रस। 6. रूपक, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

**काव्य-सौंदर्य:-** श्रमित स्वप्न ..... विहाग की तान उठाई ।

**भाव-सौंदर्य:-** जिस प्रकार लंबी यात्रा से थके हारे और घने जंगल में वृक्ष की शीतल छाया में नींद और स्वप्न में डूबे पथिक को कोई विहाग राग की मधुर तान गाकर जगा दे, उसी प्रकार अपने जीवन के संघर्षों से थकी हारी देवसेना जब विगत जीवन को भुलाकर अपने मन को विश्राम देना चाहती है, उस समय स्कंदगुप्त द्वारा किया गया प्रेम निवेदन उसके मन को विचलित कर देता है ।

**रस:-** - करुण रस ।

**गुण:-** - माधुर्य गुण ।

**शिल्प सौंदर्य:-**

- (1) खड़ी बोली का प्रयोग ।
- (2) संस्कृतनिष्ठ शब्दावली ।
- (3) लाक्षणिक एवं आत्मनिष्ठ शैली ।
- (4) मुक्त छंद ।
- (5) प्रतीक विधान - पथिक, स्वप्न, विपिन, विहाग की तान ।
- (6) बिंबों का प्रयोग - गहन विपिन, विहाग की तान ।
- (7) सामासिक शब्द - तरुछाया ।
- (8) गेयता का गुण ।
- (9) अलंकार - मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास ।

## ‘कार्नेलिया का गीत’

**प्रतिपाद्य / मूल संवेदना**

‘कार्नेलिया का गीत’ ‘जयशंकर प्रसाद’ के प्रसिद्ध नाटक ‘चन्द्रगुप्त’ से लिया गया है। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया जब सिंधु नदी के तट पर खड़े होकर भारत की गौरव गाथा तथा अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य को देखती है तो इसे अपना देश मानने लगती है। वह कहती है कि भारत वह स्थान है जो प्रेम और अपनत्व के माधुर्य और लालिमा से भरा हुआ है। जहाँ अनजान व भूले-भटके लोगों को भी आश्रय मिल जाता है। दूर-देशों से आये हुए रंग-बिरंगे पक्षी भी भारत में ही अपना घोंसला बनाना चाहते हैं। यहाँ के निवासी दूसरों के दुख-तकलीफों को देखकर अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। विशाल समुद्र की लहरें भी भारत के किनारों से टकराकर शांत हो जाती हैं अर्थात् उन्हें भी यहीं आकर आश्रय मिलता है।

## ‘कार्नेलिया का गीत’

कार्नेलिया ने भारत की किन विशेषताओं का वर्णन किया है

**सप्रसंग व्याख्या**

“अरुण यह मधुमय.....मंगल कुंकुम सारा।”

**संदर्भ:-** कवि - जयशंकर प्रसाद

कविता - कार्नेलिया का गीत

**प्रसंग:-** यहाँ सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया सिंधु नदी के किनारे यूनानी शिविर के पास बैठी भारत की गौरवगाथा और प्राकृतिक सौंदर्य का बखान कर रही है।

**व्याख्या:-** कार्नेलिया भारत के भौगोलिक और सांस्कृतिक सौंदर्य पर मुग्ध होते हुए इसे अपना देश मानती है। वह भारत भूमि की प्रशंसा करते हुए कहती है कि भारत भूमि ही वह भूमि है जहाँ सर्वप्रथम ज्ञान और सभ्यता का सूर्य उदित हुआ। यहाँ के निवासियों के हृदय में प्रेम और अपनत्व की मिठास भरी हुई है। इस भारत भूमि पर सुदूर देशों से आने वाले अनजान लोगों अथवा शरणार्थियों को भी आश्रय मिल जाता है। उन्हें यहाँ के लोग इस प्रकार अपना लेते हैं कि उन्हें यह देश अपना देश लगने लगता है।

कार्नेलिया को भारत में प्रातःकालीन दृश्य अत्यंत मनोहर लगता है। इस दृश्य का वर्णन करते हुए वह कहती है कि सूर्य का लाल प्रकाश पेड़ों की शाखाओं से छनकर चारों ओर फैलता है, यह प्रकाश तालाब में खिले कमल के पुष्पों को भी आभायुक्त बना देता है उस समय ऐसा लगता है मानो पेड़ों की शाखाएँ प्रसन्न होकर नाच रही हैं। प्रातःकाल में हरी-भरी धरती पर जब सूर्य की लाल किरणें बिखरती हैं तो ऐसा लगता है कि किसी ने सजीव जगत के ऊपर मंगलकारी सिंदूर बिखेर दिया है अर्थात् सबके मन में एक कल्याणकारी भावना का उदय हो जाता है।

**काव्यगत विशेषताएँ:-**

- (1) भारतभूमि के सांस्कृतिक व प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण।
- (2) विषयानुकूल सरस और तत्सम प्रधान खड़ी बोली।
- (3) लाक्षणिक शैली।
- (4) मानवीकरण, रूपक, उत्प्रेक्षा अलंकार।
- (5) दृश्य बिंब।



- (6) अद्भुत एवं शांत रस ।  
 (7) माधुर्य गुण ।  
 (8) गेयता का गुण ।

**काव्य-सौंदर्य** : हेम कुंभ ..... रजनी भर तारे।

**भाव-सौंदर्य** : ऊषा रूपी पनिहारिन सूर्य की किरणों रूपी सोने के घड़े में सुख-समृद्धि और वैभव लाकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में उड़ेल देती है अर्थात्, बिखेर देती है। जबकि सारी रात जागने के कारण तारे नींद में मदमस्त होकर ऊँघने लगते हैं।

-रस-शांत, अद्भुत

-गुण-माधुर्य

**शिल्प सौंदर्य** :

- |    |            |   |
|----|------------|---|
| 1. | भाषा       | - भावानुकूल   |
| 2. | शैली       | - लाक्षणिक  |
| 3. | छंद        | - मुक्त छंद   |
| 4. | अलंकार     | - उषा और तारों का मानवीकरण किया गया है ।<br>रूपक, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार हैं । |
| 5. | विधा       | - गीत   |
| 6. | शब्द शक्ति | - लक्षणा व व्यंजना  |
| 7. | प्रतीक     | - उषा, तारे, घड़ा   |

## महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1.** देवसेना की हार व निराशा के क्या कारण हैं?

**उत्तर :** देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन है। हूणों के आक्रमण में उनका सारा परिवार नष्ट हो जाता है। वह स्कंदगुप्त से गुप्त प्रेम करती है परन्तु स्कंदगुप्त मालवा के धन कुबेर की कन्या विजया को चाहते हैं। इसलिए उसे प्रेम में निराशा ही मिलती है। जीवन के अन्तिम क्षणों में स्कंदगुप्त उससे प्रणय-निवेदन करता है तो वह उसे स्वीकार नहीं करती। उसने अपने आप को कमजोर जानते हुए भी मुसीबतों और कठिनाइयों का डट कर सामना किया, परन्तु वह हार गई। इस प्रकार प्रेम में मिली असफलता और जीवन में मिली पीड़ाओं के कारण देव सेना हार जाती है। यही उसकी निराशा का कारण भी है।

**प्रश्न 2.** कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

**उत्तर :** कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है क्योंकि वह मनुष्य को यथार्थ से दूर स्वप्न के संसार में ले जाती है। उसके मन में असंख्य आकांक्षाएँ जगाती है। आशा की डोर को पकड़कर वह असंख्य सपने सजाता है भले ही वे सपने पूरे न हो पाएँ। इन सपनों व आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए वह उन्माद की स्थिति में पहुँच जाता है। देवसेना के मन में भी जीवन भर यही आशा जागृत रही कि एक न एक दिन उसे स्कन्दगुप्त से उसके प्रेम का प्रतिदान मिलेगा। इस प्रकार आशा मनुष्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचने की ललक में बावला बनाए रखती है।

**प्रश्न 1.** 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होते हैं।

**उत्तर :** 'उड़ते खग' से अभिप्राय प्रवासी पक्षियों तथा बाहरी व्यक्तियों से है। यहाँ उनका अस्तित्व और संस्कृति सुरक्षित है। यहाँ उन्हें घर-परिवार जैसा अपनत्व व आश्रय प्राप्त होता है। 'बरसाती आँखों के बादल' से अभिप्राय है कि यहाँ के लोग दूसरे के दुःख दर्द को अपना समझकर उनका सहारा बनते हैं। इस देश में प्रेम व करुणा सर्वव्याप्त है।



## पठित काव्यांश देवसेना का गीत

बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. “श्रमित स्वप्न की मधुमाया ..... यह विहाग की तान उठाई” ।  
इन पंक्तियों में ‘गहन विपिन’ किसका प्रतीक है?
  - (i) घने जंगल का
  - (ii) पर्वत की गुफा का
  - (iii) अंधकार का
  - (iv) दुःख और संघर्ष से भरे जीवन का
2. इस कविता का मुख्य रस कौन सा है ?
  - (i) वीर
  - (ii) करुण
  - (iii) वियोग श्रृंगार
  - (iv) अद्भुत
3. ‘श्रमित स्वप्न’ में ‘श्रमित’ शब्द है-
  - (i) सर्वनाम
  - (ii) विशेषण
  - (iii) क्रिया
  - (iv) संज्ञा
4. ‘विहाग की तान’ के माध्यम से किसकी ओर संकेत किया गया है ?
  - (i) संगीत का राग
  - (ii) सुंदर गीत
  - (iii) प्रेम निवेदन
  - (iv) रात्रि का शोर
5. देवसेना स्कंदगुप्त द्वारा किए प्रेम निवेदन पर है-
  - (i) प्रसन्न
  - (ii) व्यथित
  - (iii) विचलित
  - (iv) क्रोधित
6. देव सेना की सबसे बड़ी चारित्रिक विशेषता है।-
  - (i) भावुक स्वं संबेदनशील
  - (ii) शांत, सौम्य एवं परिसमी
  - (iii) जुझारू एवं संघर्षगीत
  - (iv) स्पष्टता एवं विदुषी
7. “श्रमित स्वप्न ..... तान उठाई” पंक्ति में दर्शनीय नहीं है।
  - (i) आलंकारिकता
  - (ii) श्रृंगारिकता
  - (iii) लाक्षणिकता
  - (iv) प्रतीकात्मकता

8. "मधुकरियों की भीख लुटाई" में देवसेना का दुख है—
- उसे देश सेवा का व्रत लेना पडा।
  - उसे अपने सच्चे प्रेम का प्रतिदान नहीं मिला।
  - युद्ध में उसका परिवार मारा गया।
  - उसे स्कंद गुप्त का प्रेम निवेदन ठुकराना पडा।
9. "हारी होड़ लगाई" के माध्यम से देवसेना का आशय है।
- वह समय से आगे निकल गई
  - उसने जीवन से हार मान ली।
  - उसने अपना साम्राज्य गवा दिया।
  - वह अपने एकाकीपन और संघर्ष के कारण थक गई है।
10. देवसेना अपने चरणों को कैसा मानती है
- दुर्बल
  - सबल
  - सशक्त
  - बलशाली
11. "नीरवता अनंत अंगडाई" के माध्यम से देवसेना के जीवन के किस पक्ष की ओर संकेत किया गया है
- संघर्ष
  - प्रेम
  - एकाकीपन
  - दुख
12. 'देवसेना का गीत' कविता का मुख्य रस कौन सा है—
- करुण
  - वियोग शृंगार
  - शांत
  - वीर
13. अपने हृदय की तीव्र वेदना को स्वर प्रदान करती हुई देवसेना कह रही है—
- स्वप्न थक गए है
  - मोह का माधुर्य बना हुआ है।
  - संघर्षों से हार मान ली है
  - सभी विकल्प ठीक है

14. अंत में देवसेना क्या चाहती है
- (i) प्रेम
  - (ii) सुख
  - (iii) सुख की आकांक्षा से विदाई
  - (iv) कोई नहीं
15. स्कंदगुप्त का प्रेम निवेदन ठुकराने के बाद देवसेना का मनोभाव है-
- 1. वेदना जीवन के अंत तक रहेगी
  - 2. प्रेम मात्र एक भ्रम है।
  - 3. समाज व सेवा का मार्ग छोड़ देगी।
  - 4. वह अपने जीवन की बाधाओं से हार गई है।
- (i) केवल 1 व 2                      (ii) 1, 2, 4  
(iii) 1, 2, 3, 4                      (iv) केवल 4
16. "श्रमित स्वप्न की मधुमाया में अलंकार है।
- (i) उपमा, अनुप्रास, मानवीकरण
  - (ii) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण
  - (iii) अनुप्रास, मानवीकरण
  - (iv) उपमा, उत्प्रेक्षा
17. 'सतृष्ण' एव 'दीठ' क्रमशः किस प्रकार के शब्द हैं।-
- (i) तत्सम और तद्भव                      (ii) तद्भव और तत्सम
  - (iii) देशज और तद्भव                      (iv) तत्सम और देशज

## कार्नेलिया का गीत

“बरसाती आँखों के बादल ..... जगकर रजनी भर तारा । ”

1. 'बरसाती आँखों ..... करूणा जल' पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?

- (i) यहाँ वर्षा अधिक होती है
- (ii) यहाँ के लोग बहुत जल्दी रो पड़ते हैं ।
- (iii) यहाँ के निवासी दया, करूण और सहानुभूति की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं।
- (iv) यहाँ के लोग दुःखी और उदास रहते हैं ।

2. उपर्युक्त पंक्तियों में वर्णन है-

- (i) भारतीय संस्कृति की उदारता व विशालता का
- (ii) भारत की प्राकृतिक सुषमा का
- (iii) बादल एवं वर्षा का
- (iv) उपर्युक्त (i) व (ii) का

3. यह रचना साहित्य की कौन सी विधा है?

- (i) छंद
- (ii) कविता
- (iii) गीत
- (iv) रागिनी

4. प्रातःकाल में 'उषा रूपी पनिहारिन' अपने घड़े से कौन से सुख उड़ेलती है?

- (i) खाने-पीने के पदार्थ
- (ii) सोना
- (iii) नवीन आशा, उमंग और उत्साह
- (iv) पानी

5. सही विकल्प छाँटिए-

कथन (क) हमारा देश प्रेम और अपनत्व के माधुर्य से युक्त है।

कथन (ख) दूरस्थ देशों के अपरिचित लोगों की तरह पक्षी भी मुक्त रूप से इसकी ओर खिंचे चले आते हैं

(i) (क) सही है परंतु (ख) गलत है।

(ii) (क) गलत है परंतु (ख) सही है।

(iii) (क) सही है परंतु (ख) इसकी गलत व्याख्या करता है।

(iv) (क) सही है तथा (ख) इसकी सही व्याख्या करता है।

6. रूपातिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किस पंक्ति में है।-

(i) हेम कुंभ ले उषा सवेरे

(ii) शीतल मलय समीर सहारे

(iii) रजनी भर तारा

(iv) बरसाती आँखों के बादल

7. किस-किस पंक्ति में मानवीकरण अलंकार प्रयुक्त हुआ है।-

(क) खाने-पीने के पदार्थ

(ख) नाच रही तरुशिखा मनोहर

(ग) हेम कुंभ ले उषा सवेरे

(घ) बरसाती आँखों के बादल

(i) क, ख, ग

(ii) ख, घ

(iii) ख, ग

(iv) क, ख, घ

8. "छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा"- में मंगल कुंकुम संकेत करता है-

(i) लाल रंग की ओर

(ii) वैवाहिक जीवन की ओर

(iii) सांस्कृतिक विशेषता की ओर

(iv) चित्रकला की ओर

ई सामग्री-

जयशंकर प्रसाद का  
व्यक्तित्व और  
कृतित्व, देवसेना का  
गीत



कार्नेलिया का गीत-  
जयशंकर प्रसाद



## पाठ-2

# सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(छायावादी काव्य के प्रमुख स्तंभ एवं मुक्त छंद के प्रवर्तक कवि)

## सरोज-स्मृति

**प्रतिपाद्य/मूल संवेदना :** यह कविता हिन्दी काव्य साहित्य का पहला शोक-गीत है। यह कविता कवि की दिवंगता पुत्री सरोज के वियोग जनित दुख पर केन्द्रित है। पुत्री की असामयिक मृत्यु ने कवि को तोड़ दिया है। उसे पुत्री के विवाह का समय याद आ रहा है। पुत्री का विवाह हर तरीके से नये ढंग का था। कवि ने इस विवाह में माता-पिता दोनों का कर्त्तव्य निभाया था। विवाह के समय पुत्री के चेहरे पर स्वाभाविक लज्जा थी। कवि को अपनी पुत्री का वधू रूप देखकर अपनी स्वर्गीया पत्नी की याद आती है पुत्री का विवाह हो गया। विवाह में न तो मांगलिक गीत गाए गए और न ही किसी परिजन को बुलाया गया।

विवाह के बाद माँ के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा भी पुत्री को कवि ने दी और पुष्प-शैया भी सजाई। कवि को कभी शकुन्तला याद आती है तो कभी सरोज का बचपन। विवाह के कुछ समय बाद वह बीमारी के कारण ननिहाल चली गई, जहाँ उसे मामा-मामी का अगाध प्यार मिला था। वहीं उसने असमय मृत्यु का वरण किया। इस कविता में एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष तथा पुत्री के लिए कुछ न कर पाने का दुःख भी व्यक्त हुआ है। कवि इस कविता में अपने सभी संचित कर्मों से अपनी पुत्री का तर्पण करते हैं।

## सप्रसंग व्याख्या

मुझ भाग्यहीन.....कर, करता मैं तेरा तर्पण।

**संदर्भ :** कवि-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कविता-'सरोज-स्मृति'

**प्रसंग :** इस गीत में कवि ने अपनी पुत्री सरोज के आकस्मिक निधन पर अपनी मर्मांतक पीड़ा और वेदना व्यक्त की है।

**व्याख्या :** कवि अपनी पुत्री को संबोधित करते हुए कहता है कि हे पुत्री! मुझ अभागे का एकमात्र तू ही सहारा थी। आज तुम्हारे निधन के दो वर्ष बाद तुम्हारी याद से व्याकुल होकर इस बात को प्रकट कर रहा हूँ, जो मैंने आज तक नहीं कही थी मेरे जीवन की कहानी तो दुःख की कहानी है अर्थात् मैं आजीवन विपत्तियों का सामना ही करता आया हूँ। यह बात



आज तक मैंने किसी से भी नहीं की, तो आज कह कर भी क्या करूंगा? यदि मेरा धर्म मेरे साथ रहे, चाहे मेरे सारे कर्मों पर भले ही बिजली टूट पड़े, मैं उन्हें सिर झुका कर स्वीकार कर लूंगा। इस जीवन मार्ग पर मेरे सम्पूर्ण कार्य उसी प्रकार नष्ट हो जाएँ, जिस प्रकार शरद ऋतु में ठंड के कारण कमल का फूल नष्ट हो जाता है। भाव यह है कि भले ही अपने सद्कार्यों से मुझे यश की प्राप्ति न हो तो भी मुझे किसी प्रकार का दुख नहीं होगा। हे पुत्री। मैं आज अपने पिछले सभी जन्मों के अपने पुण्यों और संचित कर्मों को श्राद्ध के रूप में तुम्हें अर्पण कर रहा हूँ।

### काव्य विशेषताएँ:

1. इस शोकगीत में कवि का समस्त दैन्य भाव मुखरित हो उठा है। उसके जीवन की सम्पूर्ण वेदना को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है।
2. तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली।
3. मुक्त छंद।
4. भावपूर्ण आत्मपरक शैली।
5. माधुर्य गुण।
6. करुण रस एवं वियोग वात्सल्य रस।
7. अनुप्रास तथा उपमा अलंकार।

**काव्य-सौंदर्य** : शृंगार रहा जो निराकार ..... स्वर पर उतरा।

**भाव-सौंदर्य** : (1) पुत्री के विवाह के आयोजन में पत्नी के प्रतिरूप को अपनी बेटी में निहारने का व अपनी अभावग्रस्त जिंदगी का वर्णन किया है।

(2) सरोज के प्रति स्नेह को व्यक्त करने के साथ उसके सौंदर्य का मनोहारी चित्रण किया है।

(3) रस - वात्सल्य, करुण।

(4) गुण - माधुर्य।

### शिल्प सौंदर्य

1. भाषा - तत्सम प्रधान।
2. शैली - भावात्मक व आत्मपरक।
3. छंद - मुक्त छंद
4. स्मृति बिंब।
5. अलंकार - 1 अनुप्रास - ('राग-रंग' 'रति-रूप')

2. मानवीकरण - 'प्रिय मौन ..... उतरा।'

3. विरोधाभास - 'प्रिय मौन एक संगीत भरा।'

### महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** 'आकाश बदल कर बना मही' में 'आकाश' और 'मही' शब्द किनकी ओर संकेत करते हैं?

**उत्तर :** 'आकाश' कवि की स्वर्गीया पत्नी की ओर तथा 'मही' नववधू के वेश में सजी कवि की पुत्री की ओर संकेत करता है। कवि की पुत्री विवाह पर अत्यधिक सुन्दर लग रही थी, कवि को लगता है कि मानो उसकी पत्नी का अलौकिक सौंदर्य आकाश से उतर कर पृथ्वी पर सरोज के रूप में उतर आया हो। पुत्री सरोज का रति जैसा सौंदर्य कवि को उसकी पत्नी की याद दिला रहा है।

**प्रश्न 2 :** 'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है?

**उत्तर :** इस पंक्ति के द्वारा कवि कहता है कि वह लता वहीं की थी, जहाँ पर वह कली बनकर खिली। इस पंक्ति के द्वारा इस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है कि सरोज का अपने ननिहाल में ही पालन-पोषण हुआ था। वह उसी कुल में एक कली के रूप में विकसित हुई, जिसमें उसकी माँ एक लता रूप में पल्लवित - पुष्पित हुई थी।

**प्रश्न 3 :** 'शकुंतला' के प्रसंग के माध्यम से कवि क्या संकेत करना चाहता है?

**उत्तर :** सरोज के विवाह के चित्रण में कवि निराला, कालिदास की शकुंतला को स्मरण करते हैं, जिसे वन में उसके पिता कण्व ऋषि ने सारी कलाओं अर्थात् जीवन की सारी विधाओं का पाठ पढ़ाया था, उसी प्रकार निराला ने अपनी पुत्री को जीवन की सभी शिक्षाएँ स्वयं दी परंतु शकुंतला को कण्व ऋषि ने दत्तक पुत्री के रूप में पाला था वे उसके धर्म पिता थे जब कि सरोज निराला की अपनी पुत्री थी।

## सरोज स्मृति

“माँ की कुल शिक्षा .....वर महामरण”

1. इन पंक्तियों में किस समय का वर्णन हुआ है?  
(i) सरोज की विदाई (ii) विवाह का अनुष्ठान  
(iii) सरोज के आगमन (iv) सरोज के शृंगार
2. सरोज और शकुंतला की विदाई में किस बात की समानता थी-  
(i) पितृ हृदय की व्याकुलता (ii) संबंधियों के मन का दुख  
(iii) विवाह विधि की समानता (iv) कोई नहीं
3. 'वह लता वहीं की' पंक्ति में लता किसे कहा गया है?  
(i) सरोज (ii) सरोज की माता  
(iii) नानी (iv) सरोज की सखी
4. 'भर जलद धरा को ज्यों अपार' में अलंकार है-  
(i) रूपक (ii) उपमा  
(iii) विरोधाभास (iv) उत्प्रेक्षा
5. 'मामा-मामी' के साथ सरोज का कैसा संबंध व्यक्त हुआ है?  
(i) अति स्नेह एवं लगाव (ii) तटस्थता  
(iii) विरक्ति (iv) औपचारिक
6. इन पंक्तियों में किस प्रकार की शब्दावली की प्रधानता है।  
(i) संस्कृतनिष्ठ (ii) सरल एवं बोलचाल  
(iii) देशज (iv) तद्भव
7. 'सरोज स्मृति' कविता का एक रूप है-  
(i) प्रेम काव्य (ii) भक्तिकाव्य  
(iii) शोक गीत (iv) शृंगारगीत

8. “मुझ भाग्यहीन की तू संबल, युग वर्ष बाद जब हुई विकल” पंक्तियाँ दर्शाती हैं
- कवि केवल अपनी पुत्री से प्रेम करता था।
  - कवि कार्य में असफलता के कारण स्वयं को भाग्यहीन कहता है।
  - कवि का जीवन व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सृजन संबंधी संघर्षों से भरा हुआ था।
  - कवि के जीवन में पहले कोई दुख नहीं आया था।
9. ‘सरोज स्मृति’ के आधार पर निराला जी के विषय में कौन से विशेषण उपयुक्त हैं-
- क) स्नेहशील पिता
  - ख) विद्रोही एवं जागरूक
  - ग) अनुराग पूर्ण पति
  - घ) अकर्मण्य एवं भावुक
  - i) क और ग
  - ii) क, ख, घ
  - iii) क, ग, घ
  - iv) क, ख, ग
10. कविता में सरोज को किस-किस नाम से पुकारा गया है-
- क) कली
  - ख) कन्ये
  - ग) बेटों
  - घ) संबल
  - i) क, ख, ग
  - ii) क, ख, ग
  - iii) क, ख, ग, घ
  - iv) क, ख, घ
11. ‘रति’ किसे कहा गया है-
- i) कवि की पत्नी
  - ii) पुत्री सरोज
  - iii) कामदेव की पत्नी
  - iv) सुंदरी
12. “मामा-मामी का रहा प्यार”- के लिए कौन सा विशेषण उपयुक्त है-
- i) उत्सर्गपूर्ण प्रेम
  - ii) प्रेम की विषमता
  - iii) स्वार्थ प्रेरित प्रेम
  - iv) सफल प्रेम
13. कविता में कौन सा बिंब दृष्टव्य नहीं है।
- i) दृश्य बिंब
  - ii) श्रवण बिंब
  - iii) स्मृति बिंब
  - iv) तद्भव

### पाठ-3

## सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय' ( प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि )

### यह दीप अकेला

प्रतिपाद्य:- 'यह दीप अकेला' कवि अज्ञेय जी की प्रतीकात्मक कविता है तथा एक प्रकार से उनका आत्मकथ्य है। इस कविता में 'दीपक' को एक सर्वगुण संपन्न व्यक्ति के रूप में वर्णित किया है परंतु वह अकेला है। यहाँ दीप व्यक्ति का प्रतीक है और पंक्ति समाज का / व्यक्ति बहुत कुछ होते हुए भी समाज में विलय होकर अपना और समाज दोनों का भला कर सकता है। दीप का पंक्ति में या व्यक्ति का समष्टि में विलय ही उसकी ताकत / सत्ता का सार्वभौमीकरण है, उसके जीवन की सार्थकता है।

सप्रसंग व्याख्या :-

“ यह वह विश्वास ..... इसको भी पंक्ति को दे दो । ”

संदर्भ:- कविता:- यह दीप अकेला

कवि:- सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय'

प्रसंग:- इन पंक्तियों में कवि दीप/व्यक्ति की व्यक्तिगत सत्ता की बात कर रहा है, जो पंक्ति की तुलना में एकाकी है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि सृजनशील व्यक्ति हर परिस्थिति में अपना धैर्य बनाए रखता है। वह एकाकी एवं छोटा होने पर भी विचलित नहीं होता है। उसका विश्वास स्वयं पर अडिग रूप से कायम है। समाज में उसे कई बार निंदा, उपेक्षा एवं अपमान का शिकार भी होना पड़ता है परंतु वह हार नहीं मानता। वह सतर्क व सावधान रहता है। सबको अपनाने के लिए अपनी बाँहें उठाकर तत्पर रहता है। इसकी आँखें हमेशा अनुराग की तरतला से पूरित हैं। यह प्रज्ञावान और जिज्ञासु है तथा जीवन के प्रति आस्तिक भाव से परिपूर्ण है। इसे समाज की वृहद आध्यात्मिक शक्ति और भक्ति के साथ जोड़ दे ताकि इसकी आस्था समाज के काम आ सके।

काव्यगत विशेषताएँ - (1) कवि ने व्यक्ति के महत्व को समाज से जोड़कर देखा है। उसकी व्यक्तिगत सत्ता का सामाजिक सत्ता में विलय करने की ओर संकेत किया है।

(2) लाक्षणिक शैली।

(3) 'दीप' का प्रतीकात्मक प्रयोग।

(4) तत्सम शब्दावली की प्रधानता

(5) शब्द चयन सटीक व प्रभावपूर्ण

## मैंने देखा, एक बूँद

प्रतिपाद्य :- 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि 'अज्ञेय' की विचारोन्मुख एवं दार्शनिक कविता है यह लघुकविता जापानी भाषा की लघुकविता 'हाइकू' की तर्ज पर रची गई है। इसमें भी कवि प्रतीकों के माध्यम से गहन अर्थ की अभिव्यक्ति करता है। कविता में एक छोटी सी बूँद और सागर क्रमशः व्यक्ति और समष्टि सत्ता की ओर संकेत करते हैं। सागर की विराट सत्ता शाश्वत है और बूँद क्षणभंगुर। बूँद का क्षणभर के लिए समुद्र से अलग होकर सूरज की लालिमा से रंग जाना नाश शीलता के बोध से मुक्ति का अहसास है। इस प्रकार यहाँ क्षण के महत्व को भी प्रतिपादित किया गया है।

काव्य सौंदर्य :-

“मैंने देखा, एक बूँद ..... नश्वरता के दाग से।”

भाव सौंदर्य :- दार्शनिक पुट से संपृक्त इन पंक्तियों में कवि ने समुद्र से अलग हुई एक बूँद के क्षणिक अस्तित्व को चित्रित किया है। कवि ने कहा है कि बूँद के ढलते सूर्य की रोशनी से रंग जाने में उसे विराट के सामने लघु की नश्वरता से मुक्ति दिखाई दी। बूँद का क्षण भर के लिए सूर्य के प्रकाश से चमक उठना उसके अस्तित्व की सार्थकता है।

रस:- शांत, अद्भुत

गुण:- प्रसाद

शिल्प सौंदर्य :- (1) भाषा में सरलता, सजीवता, प्रवाहमयता है।

(2) प्रतीकों का प्रयोग

(3) लाक्षणिक शैली का प्रयोग

(4) आंतरिक लय का समावेश

(5) बूँद का प्रयोगवादी स्वरूप

प्रश्न- 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि उसे कवि ने स्नेहभरा, गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा है?

उत्तर:- 'दीप अकेला' से आशय यहाँ व्यष्टि अर्थात् व्यक्तिगत सत्ता से है। 'दीप' को यहाँ एक सर्वगुणसंपन्न मनुष्य के रूप में वर्णित किया गया है। इस व्यक्ति में स्वतंत्रता, मौलिकता और रचनात्मकता की अद्वितीय विशेषताएँ हैं। इसमें अंधकार से लड़ने की शक्ति भी है परन्तु अपनी शक्ति और गुणों पर अंधकार के कारण मद भी है।

प्रश्न: 'यह दीप अकेला', पर इसको भी पंक्ति को दे दो के आधार पर व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे संभव है ?

उत्तर:- दीप व्यक्ति का प्रतीक है और पंक्ति समाज का। दीप को पंक्ति में स्थान देने का तात्पर्य व्यक्ति

को समाज के साथ जोड़ना है। यही व्यक्ति का समष्टि में विलय है। व्यक्ति को सर्वगुणसंपन्न होते हुए भी उसके अस्तित्व की सार्थकता समाज के प्रति स्वयं के विसर्जन में ही है। समाज के साथ मिलकर वह अपनी सेवाओं से समाज एवं राष्ट्र को मजबूत बनाता है।

प्रश्न :- 'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए 'एक बूँद' कविता का मूल भाव बताइए।

उत्तर:- संध्या के समय समुद्र में एक बूँद का उछलना और फिर उसी में विलीन हो जाना क्षण के महत्व को प्रतिपादित करता है। बूँद एक क्षण में ही सूरज की लाल रोशनी में रँगकर चमक उठी थी, इसी प्रकार विराट की निराकार सत्ता के समक्ष मानव के लघु जीवन में मधुर मिलन के प्रकाश से प्रदीप्त जो क्षण आते हैं, वही इसे नश्वरता के बोध से मुक्त करके आत्मबोध से भर देते हैं।

### यह दीप अकेला

“ यह दीप अकेला स्नेह भरा ..... पंक्ति को दे दो। ”

(1) “पंक्ति को दे दो ” के माध्यम से कवि कहना चाहता है:-

- (i) अकेला व्यक्ति शक्तिहीन और अयोग्य है।
- (ii) समाज से मिलना व्यक्ति की विवशता है।
- (iii) व्यक्ति और समाज एक दूसरे से मिलकर ही सार्थकता प्राप्त करते हैं।
- (iv) केवल व्यक्ति ही शक्तिशाली होता है।

(2) 'व्यक्ति' और 'समाज' के लिए क्रमशः प्रतीक हैं :-

- (i) जन और गीत
- (ii) लकड़ी और समिधा
- (iii) दीप और पंक्ति
- (iv) पनडुब्बा और मोती

(3) 'स्नेह' शब्द में अलंकार है -

- (i) यमक
- (ii) अनुप्रास
- (iii) श्लेष
- (iv) रूपक

(4) व्यक्ति के समाज से जुड़ने पर :-

- (i) केवल व्यक्ति की शक्ति बढ़ जाएगी।
- (ii) केवल समाज शक्तिशाली हो जाएगा।
- (iii) दोनों को एक दूसरे का लाभ प्राप्त होगा।
- (iv) किसी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

(5) 'गर्वभरा मदमाता' का अभिप्राय है :-

- (i) साहस, क्षमता एवं स्वाभिमान से युक्त है।
- (ii) व्यक्ति अभिमानी है।

- (iii) वह नशे से युक्त है ।  
 (iv) वह अयोग्य है ।
- (6) ..... के गरिमायुक्त होने से ही ..... को सार्थकता एवं पूर्णता प्राप्त होती है।  
 (i) वह अयोग्य है । (ii) व्यक्ति दीप  
 (iii) समष्टि (iv) समष्टि, दीप
- (7) उचित युग्म बनाइए
- |            |                 |
|------------|-----------------|
| 1. मौना    | (क) प्रेम, गर्व |
| 2. स्नेह   | (ख) समाज, समूह  |
| 3. समष्टि  | (ग) एकाकी       |
| 4. व्यक्ति | (घ) संग्रह      |
- (i) 1-(ख), 2-(ग), 3-(घ), 4-(क)  
 (ii) 1-(घ), 2-(क), 3-(ग), 4-(ख)  
 (iii) 1-(क), 2-(ख), 3-(ग), 4-(घ)  
 (iv) 1-(घ), 2-(क), 3-(ख), 4-(ग)
- (8) व्यक्ति को गर्वभरा, मदमाता क्यों कहा गया है  
 (i) व्यक्ति के भहंभाव के कारण (ii) मदिरापान करने के कारण  
 (iii) सीधेपन के कारण (iv) गुणों एवं योग्यता के कारण
- (9) कविता में कौन सा विचार प्रमुख है  
 (i) व्यष्टि का समष्टि में विलय (ii) समष्टि का व्यष्टि में विलय  
 (iii) समाज ही सर्वोपरि है। (iv) व्यक्ति स्वयं में संपूर्ण है।
- (10) कवि के अनुसार धरती को फोडकर सूर्य की ओर निर्भीक होकर कौन देखता है  
 (i) समाज (ii) अंकुरित बीज  
 (iii) दीपक (iv) गोरस
- (11) "यह गोरस-जीवन कामधेनु का अमृतपूत पय" में अलंकार है-  
 (i) उपमा (ii) मानतीकारण  
 (iii) श्लेष (iv) रूपक
- (12) कविता में व्यक्ति के लिए कौन-कौन से प्रतीक प्रस्तुत किए गए हैं  
 (क) मधु (ख) अंकुर  
 (ग) सूर्य (घ) गीतकार



- (i) क, ख, ग (ii) क, ग, घ  
 (iii) क, ख, घ (iv) क, ख, ग, घ
- (13) 'दीप' किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक नहीं है  
 (i) स्वतंत्र, मौलिक एवं रचनात्मक  
 (ii) यौद्ध  
 (iii) विद्वान एवं अध्येता  
 (iv) एकाकी एवं भयभीत
- (14) 'यह दीप अकेला' कविता है  
 (i) छायावादी (ii) शृंगारिक  
 (iii) प्रयोगवादी (iv) प्रगतिवादी
- (15) 'यह दीप अकेला' कविता की विशेषता हैं-  
 (i) छंदबद्ध (ii) सरल तद्भव शब्दावली  
 (iii) मुहावरों का प्रयोग (iv) आंतरिक लय और लाक्षणिक शैली

#### मैंने देखा, एक बूँद

“मैंने देखा ..... नश्वरता के दाग से ।”

(1) 'मैंने देखा, एक बूँद' जैसी लघु कविता को किस भाषा में 'हाइकू' कहा जाता है:-

- (i) अंग्रेजी  
 (ii) जापानी  
 (iii) चीनी  
 (iv) रूसी

(2) 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता है:-

- (i) दार्शनिक  
 (ii) प्रेम प्रधान  
 (iii) हास्य प्रधान  
 (iv) यथार्थवादी

(3) 'बूँद का ढलते सूरज की आग से रँग जाना' किस भाव को व्यक्त कर रहा है?

- (i) बूँद की सुंदरता

- (ii) सूर्य का तीव्र प्रकाश  
(iii) विराट के सम्मुख लघु की नश्वरता से मुक्ति  
(iv) लघु का नष्ट हो जाना
- (4) 'बूँद' किसका प्रतीक है?  
(i) पानी की बूँद  
(ii) एक व्यक्ति  
(iii) वर्षा  
(iv) समुद्र का झाग
- (5) "आलोक हुआ अपना मन" के माध्यम से कवि किस ओर संकेत कर रहा है?  
(i) जीवन के क्षणिक सौंदर्य  
(ii) सूर्य की किरण  
(iii) बूँद की चमक  
(iv) सौंदर्य और प्रेम से परिपूर्ण क्षण का महत्व

## केदारनाथ सिंह

(नई कविता धारा के वरिष्ठ कवि)  
'बनारस'

प्रतिपाद्य / मूलसंवेदना

'बनारस' कविता में कवि केदारनाथ सिंह ने बनारस के सांस्कृतिक एवम् सामाजिक परिवेश का सजीव चित्रण किया है। इसमें आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति का समावेश है। मृत्यु यहाँ किसी अंत के बोध से पैदा होने वाली हताशा का कारण नहीं बनती, बल्कि जीवन को नये सिरे से जीने की सीढ़ी है। यहाँ न तो हवन कुंड में से धुँआ उठना बंद होता है और न चिताग्नि ठंडी होती है।

**सप्रसंग व्याख्या :** जो है वह सुगबुगाता ..... कटोरों का निचाट खालीपन  
**संदर्भ :** कवि - 'केदारनाथ सिंह'

कविता - बनारस

**प्रसंग :** इसमें कवि ने बनारस शहर की जागृति, उल्लास व नवीन चेतना का बड़ा ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है।

**व्याख्या :** बनारस में सांस्कृतिक परिवर्तन आने पर सुगबुगाहट होने लगती है, अर्थात् वहाँ के परिवेश में जीवतता आने लगती है और जिन वस्तुओं में चेतना का रूप दिखाई नहीं देता, उनमें भी अंकुरण होने लगता है, अर्थात् सांस्कृतिक परिवर्तन से पूरे वातावरण में नया उल्लास व जोश आने लगता है।

आदमी जब दशाश्वमेध घाट पर जाता है, तो उसे महसूस होता है कि गंगा के निरन्तर स्पर्श से घाट का पत्थर भी मुलायम हो जाता है अर्थात् हमारे मन में व्याप्त कठोरता भी आस्था व भक्ति से परिवर्तित होकर मुलायम होने लगती है। अर्थात् कोमलता में बदलने लगती है। यहाँ घाट की सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखें भी अजीब सी चमक से भरी रहती हैं। भिखारियों के कटोरों का एकदम खालीपन एक विचित्र सी चमक (भिक्षा की सामग्रियों) से भरा हुआ दिखाई देता है। अर्थात् अब उनके खाली कटोरे भी दान-दक्षिणा से लबालब भर जायेंगे।

**काव्यगत विशेषताएँ:-**

- (1) यहाँ कवि ने बनारस शहर के जीवन का सजीव चित्रण किया है।
- (2) खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
- (3) मुक्त छंद की रचना है।
- (4) 'बैठे बंदरों' और 'एक अजीब' में अनुप्रास अलंकार है।
- (5) 'और पाता ..... हो गया है' में विरोधाभास अलंकार है।
- (6) बिंब विधान - दृश्य व स्पर्श
- (7) रस - शांत

**सप्रसंग व्याख्या:-**

“ जो है वह खड़ा है ..... बिलकुल बेखबर”

**संदर्भ : कवि:- बनारस**

**कविता:- केदारनाथ सिंह**

**प्रसंग :-** कवि ने बनारस शहर के मिथकीय रूप के प्रति आस्था, विश्वास और इसमें आधुनिकता के उदय की ओर संकेत किया है ।

**व्याख्या:-** कवि कहता है कि बनारस की प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति, आस्था, विश्वास आदि वहाँ के लोगों के जीवन में दृढ़ता से समाए हुए हैं । उसे किसी बाहरी सहारे की आवश्यकता नहीं है । शहर को ध्यान से देखने पर यही प्रतीत होता है कि वहाँ एक ओर जनसमुदाय सामूहिक रूप से पूरी आस्था व श्रद्धा के साथ साधना में रत है तो दूसरी ओर मृत चिंताओं के अंतिम संस्कार की क्रिया भी अनवरत रूप से चलती रहती है ।

कवि कहता है कि बनारस में जीवित मनुष्य की आस्था व भक्ति युक्त आध्यात्मिक क्रियाएँ बिना किसी सहारे के चल रही हैं और जो नहीं है अर्थात् जो मृत हो चुके हैं, उनको थामने के लिए आग, पानी तथा धुँए के तथा आदमी के प्रार्थना में उठे हाथों का सहारा मिलता है । यह शहर जीवन और मृत्यु के एक निरंतर क्रम की ओर संकेत करता हुआ दिखाई देता है ।

यह शहर आज भी एक टाँग पर खड़े साधक की तरह साधना में लीन दिखाई देता है अर्थात् अपने आस्था, विश्वास और ज्ञान के प्रकाश की कामना में डूबा हुआ है और जीवन की भौतिक चिंताओं और इसके बदलते हुए रूप से अनजान है ।

**काव्यगत विशेषताएँ:-**

- (1) बनारस में सदियों पुरानी आध्यात्मिक संस्कृति आज भी दृढ़ता से कायम है, दूसरी ओर यहाँ आधुनिकता की आहट भी सुनाई देती है ।
- (2) “ किसी अलक्षित.....यह शहर” में बनारस के गहन धार्मिक वातावरण का चित्रण हुआ है ।
- (3) सहज सरल खड़ी बोली (4) मुक्त छंद (5) बिंब विधान (6) मानवीकरण, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, अनुप्रास अलंकार ।

**काव्य सौंदर्य :-**

“ अगर ध्यान से देखो ..... और आधा नहीं है ।”

**भाव सौंदर्य:** कवि:- बनारस शहर को संपूर्णता में जान लेना सरल नहीं है । समृद्ध आध्यात्मिक संस्कृति के अलावा इस शहर का एक आधुनिक रूप भी है जो भौतिकता में डूबा हुआ है।

ये पंक्तियों इसके दार्शनिक पक्ष को भी उजागर कर रही हैं । यदि इस शहर के गूढ़ दर्शन किए जाएँ तो यही प्रतीत होता है कि अपनी समृद्ध संस्कृति के बीच यह शहर जीवन और जगत के पूर्ण सत्य ( अर्थात मोक्ष ) की साधना में लगा हुआ है । उसकी पूर्णता की ओर अग्रसर है, पर अभी पूर्ण नहीं है ।

**रस - शांत रस**

**गुण - प्रसाद गुण**

**शिल्प सौंदर्य:-**

- (1) सरल व सहज प्रवाहमयी खड़ी बोली।
- (2) व्यंजनापूर्ण शैली।
- (3) मुक्त छंद।
- (4) बिंब विधान।
- (5) अनुप्रास अलंकार।

**दिशा**

**प्रतिपाद्य/मूल संवेदना**

‘दिशा’ बाल मनोविज्ञान पर आधारित ‘कवि केदारनाथ’ की लघु कविता है। इसमें बच्चों को निश्छलता और स्वाभाविक सरलता का अत्यन्त भावपूर्ण चित्रण हुआ है। इसमें कवि पतंग उड़ाते हुए बालक से पूछता है कि बताओ हिमालय किधर है? इस पर बालक बिना कोई विचार किए बाल सुलभ सरलता से उत्तर देता है कि जिधर उसकी पतंग उड़ती जा रही है, हिमालय उधर ही है। बालक का यह सहज उत्तर कवि का मोह लेता है। कवि सोचता है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना यथार्थ है।

## दिशा

**काव्य सौंदर्य :-**

“हिमालय किधर है ! मैंने ..... जाना हिमालय किधर है ।”

भाव सौंदर्य: कवि के प्रश्न का बच्चे द्वारा बाल सुलभ उत्तर देने से कवि को यह प्रतीत हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति का वस्तुओं के प्रति अपना दृष्टिकोण और अपना यथार्थ होता है । जैसे बच्चे दुनिया की हर चीज को अपने ढंग से देखते हैं । उनका केवल अपनी छोटी सी दुनिया, अपनी रुचि और आनंद से सरोकार होता है । कवि को यह अनुभव नवीन और बहुत प्रभावी प्रतीत होता है ।

गुण - प्रसाद

रस - अद्भुत

**शिल्प सौंदर्य :-**

- (1) सरस, सरल एवं प्रवाह पूर्ण खड़ी बोली।
- (2) मुक्त छंद।
- (3) चित्रात्मकता।
- (4) पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास अलंकार।
- (5) शब्द शक्ति - व्यंजना।

## पठित काव्यांश

### बनारस

“जो है वह सुगबुगाता है .....कटोरों का निचाट खालीपन ”

1. 'पचखियाँ' शब्द का अर्थ एवं श्रेणी है-

- |                     |                      |
|---------------------|----------------------|
| (i) लकड़ियाँ, तत्सम | (ii) अंकुरण, तद्भव   |
| (iii) अंकुरण, देशज  | (iv) सब्जियाँ, तत्सम |

2. घाट का आखिरी पत्थर किस ऋतु में मुलायम प्रतीत होता है?

- |            |            |
|------------|------------|
| (i) सर्दी  | (ii) गर्मी |
| (iii) वसंत | (iv) पतझर  |

3. भिखारियों के कटोरों में किस वस्तु की चमक भर उठी है?  
 (i) श्रद्धालुओं द्वारा दी गई भिक्षा (ii) सूर्य की किरणें  
 (iii) गंगा के जल की (iv) धातु की
4. “जो है, वह सुगबुगाता है ” में कवि किस वस्तु की ओर संकेत कर रहा है?  
 (i) लोगों के मन की श्रद्धा और आस्था की भावना  
 (ii) पेड़-पौधे  
 (iii) लोगों का शोर (iv) पानी का शोर
5. आदमी दशाश्वमेध पर क्यों जाता है?  
 (i) पर्यटन के उद्देश्य से (ii) स्नान करने  
 (iii) गंगा मैया के प्रति अपनी आस्था और विश्वास आर्पित करने  
 (iv) दूसरे लोगों की नकल करने
6. बनारस शहर के विषय में उपयुक्त संकेत करने वाले शब्द है  
 (i) आध्यात्मिक, आधुनिक, शांत  
 (ii) प्रदूषित, प्राचीन, आध्यात्मिक  
 (iii) प्राचीन, विशाल, आध्यात्मिक  
 (iv) सांस्कृतिक, प्राचीन, आध्यात्मिक
7. उचित युग्म बनाइए-
1. वहीं है गंगा वही है तुलसीदास (क) गति व हलचल  
की खडाऊँ, सैकड़ों बरस से
  2. “अपनी एक टाँग पर खड़ा है (ख) अडिग आस्था एवं विश्वास  
यह शहर .....।
  3. जो है वह सुगबुगाता है (ग) बेखबर
  4. जो है, वह खड़ा है, बिना (घ) प्राचीन सांस्कृतिक वैभव  
किसी स्तंभ के
8. ‘अलक्षित’ शब्द में कौन सा प्रत्यय है-
- (i) अ (ii) लक्ष्य  
 (iii) इत (iv) त

9. "किसी अलक्षित सूर्य को देता हुआ अर्घ्य" बनारस की किस विशेषता को प्रदर्शित करता है।

- (i) अंध विश्वास (ii) प्राचीनता  
(iii) आध्यात्मिक संस्कृति (iv) कर्मकांड की परंपरा

## दिशा

"हिमालय किधर है ? .....हिमालय किधर है।"

1. बच्चे का स्कूल के बाहर पतंग उड़ाने का सांकेतिक अर्थ है-

- (i) उसे पतंग उड़ाने के लिए आदेश मिला है।  
(ii) पतंग उड़ाना वर्जित है।  
(iii) वह बंधनमुक्त अवस्था में आनंदित है।  
(iv) वह पतंग उड़ाना सीख रहा है।

2. कविता में बालकों की किस विशेषता का वर्णन है?

- (i) बालक लापरवाह होते हैं  
(ii) बालक जिद्दी/हठी होते हैं  
(iii) अपनी रुचि के प्रति केंद्रित होते हैं।  
(iv) बालक प्रश्न सुनकर डर जाते हैं।

3. 'उधर-उधर' में कौन सा अलंकार है?

- (i) अनुप्रास (ii) उपमा  
(iii) यमक (iv) पुनरुक्ति प्रकाश

4. "पतंग उड़ाना" किस प्रकार की क्रिया के लिए प्रयुक्त हुआ है?

- (i) कठिन कार्य  
(ii) सरल कार्य  
(iii) बालक की रुचि का कार्य  
(iv) प्रचलित कार्य



5. कवि ने पहली बार क्या जाना ?

- (i) हिमालय की दिशा
- (ii) बालक का ज्ञान
- (iii) पतंग उड़ाना
- (iv) बालक का स्वभाव एवं बालोचित यथार्थ

6. कौन सी पंक्ति 'दिशा' कविता के मुख्य भाव से सर्वाधिक संबद्ध है-

- (क) ज्ञान अनुभव सापेक्ष होता है
- (ख) स्कूल में बालक की सहज अभिव्यक्ति नहीं होती है
- (ग) बच्चे अपनी धुन के पक्के होते हैं।
- (घ) बालमन का अपना यथार्थ होता है।

- (i) क व ख
- (ii) ख, ग एवं घ
- (iii) क एवं घ
- (iv) क, ख, घ

## पाठ-6

# रघुवीर सहाय

## ( नई कविता/खबरों के कवि )

( क ) वसन्त आया

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना

**मूलभाव:** इस कविता में कवि ने आधुनिक मानव के प्रकृति से संबंध टूटने पर प्रकाश डाला है। वसन्त ऋतु का आना अब प्रकृति के परिवर्तनों को अनुभव करने की अपेक्षा कैलेंडर और दफ्तर में छुट्टी के होने से जाना जाता है। कवि ने मनुष्य की आधुनिक जीवनशैली को व्यंग्य का निशाना बनाया है कि उसका प्रकृति से संबंध नहीं रह गया है। यह उसके जीवन की विडम्बना है

**प्रसंग सहित व्याख्या :** और कविताएँ पढ़ते ..... कि वसन्त आया।

**सन्दर्भ :** कवि - 'रघुवीर सहाय'  
कविता - 'वसन्त आया'

**प्रसंग :** कवि को वसन्त का आना कैलेंडर से ज्ञात होता है। प्रकृति का सौंदर्य अब उसे आकर्षित नहीं करता। प्रकृति की उपेक्षा पर कवि व्यंग्य करते हुए कहता है कि:-

**व्याख्या :** वसन्त के आने का पता उसे कैलेंडर से चल गया है। कविताएँ पढ़ते रहने से उसे यह तो पता था कि वसन्त ऋतु के आने पर वनों में पलाश के वृक्ष लाल-लाल फूलों से लद जाते हैं। ये पलाश वृक्ष लाल फूलों से लदे ऐसे लगते हैं, मानों वन धधक-धधक कर लपट के साथ जल रहे हों। वसन्त में आम के वृक्ष बौर के भार से लदकर झुकने लगते हैं। वसन्त के आने पर उद्यानों में विभिन्न प्रकार के सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। फूलों का रस पीकर भँवरे व कोयल मस्त होकर अपने-अपने कार्यों का प्रदर्शन करते हैं। अर्थात् गीत गाने लगते हैं। दफ्तर की छुट्टी से वसन्तपंचमी का आगमन जानकर वह निराश हो जाता है कि जीवन की भागदौड़ में प्राकृतिक सौंदर्य न जाने कहाँ खो गया है। यह दिन साधारण सा दिन है जिसमें उत्सव जैसा कुछ भी नहीं रहा।

**काव्यगत विशेषताएँ :-**

- (1) यह कविता आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य है।
- (2) वसन्त ऋतु के समय प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है।

3. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार- दहर-दहर, अपना-अपना।
4. अनुप्रास अलंकार - दहर-दहर दहकंगें, रंग-रस
5. बिम्बों और प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग।
6. मुक्त छंद
7. सरल-सहज व प्रवाहमयी खड़ी बोली
8. देशज शब्दों व क्रियाओं का प्रयोग।

#### काव्य सौंदर्य :-

ऊँचे तरूवर से गिरे ..... फिरकी सी आई, चली गई।

(क) भाव सौंदर्य - कवि कहता है कि वसन्त के आने पर सड़कों पर ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से बड़े-बड़े पीले पत्ते गिरे हुए हैं। इन सूखे पत्तों पर जब पौंख पड़ते हैं, तो चरमराने की आवाज आती है। सुबह छः बजे की हवा में ऐसी ताजगी है कि जैसे वह अभी-अभी गरम पानी से स्नान करके आई हो और प्रसन्नता से खिल उठी हो। ऐसी ताजगी भरी हवा फिरकी की तरह गोल-गोल घूमती हुई आई और कवि को छूकर चली गई।

रस - अद्भुत

गुण - प्रसाद

#### (ख) शिल्प-सौंदर्य

1. भाषा - सरल-सहज व प्रवाहमयी।
2. शैली - वर्णनात्मक।
3. छंद - मुक्त छंद।
4. शब्दावली - तद्भव (देशज)।
5. अलंकार।

1. पुनरुक्तिप्रकाश - 'बड़े-बड़े'।
2. उपमा - 'फिरकी-सी'।
3. अनुप्रास अलंकार - 'पियराए पत्ते' 'हुई हवा'।
6. बिम्बयोजना - दृश्य, स्पर्श, श्रव्य।
7. कविता - अतुकान्त।
8. विशेषणों का सटीक प्रयोग।

### महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1:** “और कविताएँ पढ़ते रहने से ..... आम बौर आवेंगे - में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ?

**उत्तर -** कवि कहता है कि उसे कविताएँ पढ़कर ही ढाक के दहकते जंगलों और आम के पेड़ पर आते बौरों के बारे में जानकारी मिली थी। यही आधुनिक मानव के जीवन की विडंबना है कि आज उसका प्रकृति से रिश्ता पूरी तरह टूट चुका है। प्रकृति में आए सहज और स्वाभाविक परिवर्तनों को भी वह पुस्तकों में पढ़कर ही जान पाता है। वह प्रकृति के सौंदर्य का पुस्तकीय ज्ञान ही प्राप्त करता है, कभी उसका प्रत्यक्ष आनंद प्राप्त नहीं कर पाता।

**प्रश्न 2 :** 'वसन्त आया' कविता में कवि की चिन्ता क्या है? उसका प्रतिपाद्य लिखिए?

**उत्तर :** कवि की चिन्ता यह है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से नाता ही टूट गया है। अब ऋतुओं का आना अनुभव की बजाय कैलेंडर से जाना जाता है। कवि को वसन्त ऋतु का आना भी कैलेंडर से पता चलता है। हमारी आधुनिक जीवन शैली ने प्रकृति से प्राप्त होने वाले आनन्द से हमें दूर कर दिया है। व्यस्तता के कारण मनुष्य को प्रकृति में हाने वाले परिवर्तन पता ही नहीं चलते। वृक्षों से गिरते पत्ते, कूकती कोयल, फूलों के खिलने, शीतल वायु के बहने व पलाश के जंगलों से मानव का कोई मतलब नहीं।

### (ख) तोड़ो

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य:** यह एक उद्बोधनपरक कविता है। इसमें कवि धरती से मन की तुलना करते हुए नवीन सृजन के लिए प्रेरित करता है। एक ओर वह धरती पर फैले बंजर, चट्टानों और ऊसर भाग को तोड़कर उसे उपजाऊ बनाने की बात करता है तो दूसरी ओर मन से नकारात्मक भावों को खोदकर बाहर निकालने का आह्वान करता है क्योंकि ये नकारात्मक भाव नवीन सृजन में बाधक हैं। यहाँ कवि विध्वंस के लिए नहीं उकसाता अपितु नवीन सृजन के लिए प्रेरित करता है।

### सप्रसंग व्याख्या

“ ये ऊसर बंजर तोड़ो ..... गोड़ो - गोड़ो - गोड़ो ”

**संदर्भ:-** कवि:- रघुवीर सहाय

कविता:- तोड़ो

**प्रसंग:-** इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बंजर धरती को तोड़कर तथा गोड़कर हरे-भरे खेतों में बदल डालो।

**व्याख्या:-** कवि कहता है कि बरसों से खाली पड़ी जमीन को हरे-भरे खेतों में बदल दो। उसके ऊपर छाया कटोर परत को तोड़ दो। बंजर या ऊसर धरती अपने अंदर बीज का पोषण नहीं कर पाती, अतः उसकी गुड़ाई करके ही उसकी उर्वरा शक्ति को पैदा किया जा सकता है। इसी प्रकार निराशा, ऊब, खीज आदि नकारात्मक भावों को मन से बाहर निकालकर ही उसकी सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है इसलिए इन संकीर्ण भावनाओं को तोड़कर मन की गहराई को सकारात्मक और सुंदर भावनाओं से पूर्ण करो।

### काव्यगत विशेषताएँ:-

- (1) सकारात्मक भावों को बार - बार मन में धारण करके ही मन को सृजनशील बनाया जा सकता है।
- (2) भाषा-सरल, सहज और प्रवाहमयी।
- (3) ओज गुण।
- (4) 'ऊसर-बंजर' और 'चरती-परती' में पद मैत्री।
- (5) शब्द शक्ति-लक्षणा और व्यंजना।
- (6) अलंकार - अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश।

## पठित काव्यांश

### वसंत आया

“ऐसे, फुटपाथ पर चलते चलते .....दिखावेंगे।”

1. फुटपाथ पर चलते- चलते कवि ने क्या जाना?

- (i) वसंत ऋतु की दिनचर्या (ii) वसंत के गीत  
(iii) सड़क पर पड़े हुए पत्तों का रंग  
(iv) वसंत ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन

2. इससे पहले कवि को वसंत के आने की सूचना कैसे मिलती थी ?

- (i) कैलेंडर से (ii) कविताएँ पढ़ने से  
(iii) दफ्तर की छुट्टी से (iv) उपर्युक्त सभी

3. इसके पहले कवि वसंत के विषय में क्या नहीं जानता था ?

- (i) आम पर बौर आना (ii) भौरों और कोयल का गान  
(iii) ढाक के जंगलों में लाल फूल खिलना (iv) वसंत ऋतु में प्रकृति के परिवर्तनों का अनुभव

4. “नंदन-वन होवेंगे यशस्वी ” में शब्द शक्ति है :-

- (i) अभिधा (ii) लक्षणा  
(iii) व्यंजना (iv) तीनों

5. “दहर-दहर दहकेंगे, कहीं ढाक के जंगल” में बिंब है :-

- (i) दृश्य (ii) स्पर्श  
(iii) श्रव्य (iv) घ्राण

6. इस कविता में कौन सा अलंकार नहीं है :-

- (i) अनुप्रास (ii) उपमा  
(iii) पुनरुक्ति प्रकाश (iv) अतिशयोक्ति

7. 'वसंत आया' कविता में परिवेश है-
- (i) शहरी (ii) ग्रामीण  
(iii) जंगल (iv) उपवन
8. 'कैलेंडर', 'दफ्तर में छुट्टी' और कविताएँ पढ़ना- किस वर्ग की ओर संकेत करते हैं।
- (i) शहरी, शिक्षित, बुद्धिजीवी  
(ii) अमीर और शिक्षित  
(iii) आलसी और पढ़ाकू  
(iv) केवल शहरी
9. 'दहर-दहर दहकेंगे' में अलंकार हैं-
- (i) अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश  
(ii) पुनरुक्तिप्रकाश, विरोधाभास  
(iii) अनुप्रास, उपमा, विरोधाभास  
(iv) अनुप्रास, विरोधाभास, पुनरुक्ति प्रकाश
10. 'पियराए' किस प्रकार का शब्द है
- (i) तत्सम (ii) तद्भव  
(iii) देशज (iv) विदेशी
11. आज के नगण्य दिन..... वसंत आया में नगण्य शब्द के पीछे आशय छिपा है
- (i) अनभिज्ञता (ii) एकरसता  
(iii) चिंतनशीलता (iv) उपेक्षा
12. 'मदन महीना' में मदन का अर्थ है
- (i) एक शहरी व्यक्ति (ii) एक पौराणिक पात्र  
(iii) कामदेव (iv) एक राजा का नाम
13. 'वसंत आया' में कवि चाहता है।
- (i) वसंत पर सुंदर कविताएँ लिखना  
(ii) दफ्तर की छुट्टी मनाना  
(iii) प्रकृति का साहचर्य प्राप्त करना।  
(iv) कोयल की मधुर आवाज सुनना।

14. "कोई छःबजे सुबह , जैसे गरम पानी से नहाई हो" में अलंकार हैं—

- ( i ) मानवीकरण, अनुप्रास
- ( ii ) मानवीकरण, उत्प्रेक्षा
- ( iii ) स्वरमैत्री, मानवीकरण
- ( iv ) रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश

## तोड़ो

"तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो .....आधे-आधे गाने ।"

1. 'सुनते हैं मिट्टी में रस है' - यहाँ 'मिट्टी में रस' से कवि का क्या अभिप्राय है?

- ( i ) हृदय में रचनात्मकता
- ( ii ) मिट्टी में नमी
- ( iii ) धरती में उर्वरता
- ( iv ) मनुष्य में भाव

2. 'मन के मैदानों पर व्यापी ऊब' का क्या कारण है?

- ( i ) परंपराओं में बँधे होने के कारण
- ( ii ) रचनात्मकता का अभाव
- ( iii ) नकारात्मक भावों का हावी होना
- ( iv ) उपर्युक्त सभी

3. ' आधे-आधे गाने ' से आशय हैं—

- ( i ) संगीत में रूचि न लेना
- ( ii ) आधा गीत गाना
- ( iii ) मन में स्पष्ट भावों का सृजन न होना( iv ) गीत न सुनना



4. ' तोड़ो ' कविता है-

- ( i ) उद्बोधन परक कविता
- ( ii ) आवेगपूर्ण कविता
- ( iii ) निराशा की कविता
- ( iv ) प्रेम की कविता

5. पत्थर एवं चट्टान किसके प्रतीक है?

- ( i ) संकीर्ण विचारधारा एवं नकारात्मक भावों का
- ( ii ) झूठे बंधनों का
- ( iii ) बजरं भूमि का
- ( iv ) पहाड़ का

6. कविता में कौन सा काव्य गुण मुख्य है :-

- ( i ) माधुर्य
- ( ii ) ओज
- ( iii ) प्रसाद
- ( iv ) कोई नहीं

7. ' झूठे बंधन ' से अभिप्राय है-

- ( i ) गलत अवधारणाएँ
- ( ii ) अंध विश्वास
- ( iii ) ऊब, उकताहट, आलस्य
- ( iv ) हथकड़ी

8. निम्नांकित कथनों में से कौन सा सही है-

- ( क ) मिट्टी के रस से हरी-हरी दूब उगती है

- (ख) मन के उत्साह और उमंग से नवसृजन होता है  
(ग) धरती के भीतर केवल पत्थर और चट्टानें छिपी हैं  
(i) क और ख (ii) क, ख और ग  
(iii) ग (iv) सभी

9. "मन के मैदानों" में अलंकार है

- (i) अनुप्रास, उपमा  
(ii) रूपक, उपमा  
(iii) अनुप्रास, रूपक  
(iv) मानवीकरण, अनुप्रास

10. 'तोड़ो' कविता का मुख्य भाव या प्रतिपाद्य है

- (i) नव-निर्माण एवं सृजन के लिए प्रेरित करना।  
(ii) विध्वंस के लिए प्रेरित करना।  
(iii) नवीन फसल उगाने के लिए प्रेरित करना।  
(iv) गीत गाने के लिए प्रेरित करना।

ई सामग्री-

रघुवीर सहाय-1  
वसन्त आया कविता



तोड़ो (कविता) रघुवीर  
सहाय-2



## पाठ-7 तुलसीदास

( भक्तिकाल की 'सगुण भक्ति धारा' की 'रामभक्ति शाखा' के प्रतिनिधि कवि )

( क ) भरत-राम का प्रेम

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना-

'भरत-राम का प्रेम' कविता 'रामचरित मानस' के अयोध्याकांड' से ली गई है जिसमें रामवन-गमन के पश्चात भरत की व्याकुल मनोदशा एवं आत्मपरिताप का वर्णन किया गया है। भरत भावुक हृदय से बताते हैं कि राम का उनके प्रति अत्यधिक प्रेमभाव है। वे कहते हैं कि विधाता इस प्रेमभाव को सहन नहीं कर सका और माता के रूप में उसने व्यवधान उपस्थित कर दिया। राम के वन गमन से माताएँ और अयोध्या के सभी नगरवासी अत्यंत दुखी हैं। भरत इस सारे दुःख का दोष अपने भाग्य को ही देते हैं।

"पुलकि सरीर सभी ..... प्रेम पिआसे नैन।"

**सन्दर्भ:** कवि - तुलसीदास

कविता- 'भरत-राम का प्रेम'

**प्रसंग :** इसमें कवि ने राम के वन-गमन के बाद भरत की मानसिक दशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। वे अपने प्रति राम के अनन्य प्रेम को याद करते हुए अपने हृदय की वेदना को मुखरित करते हैं और राम को वापिस अयोध्या लौटा ले जाने के लिए चित्रकूट आते हैं।

**व्याख्या :** चित्रकूट में आयोजित सभा में राम अपने भाई भरत की प्रशंसा करते हैं तो मुनि वशिष्ठ भरत से भी अपने मन की बात व्यक्त करने का आग्रह करते हैं। यह सुनकर भरत का शरीर रोमांचित हो जाता है और वे सभा में खड़े हो जाते हैं। उनके कमल के समान नयनों से आँसुओं की बाढ़ सी आ जाती है। वे कहते हैं कि मुझे जो कुछ भी कहना था, वह तो मेरे गुरुजन पहले ही कह चुके हैं। इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ। मैं अपने स्वामी श्री राम का स्वभाव बहुत अच्छे से जानता हूँ। वे अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा और प्यार रहा है। मैंने खेल में भी कभी उनकी खीझ नहीं देखी। मैं बचपन से ही उनके साथ रहा हूँ और उन्होंने भी मेरे मन को कभी ठेस नहीं पहुँचाई। मैंने प्रभु की कृपा को भली-भाँति देखा है। वे स्वयं खेल में हारकर मुझे जिताते रहे हैं।

मैंने सदा उनका सम्मान किया है और प्रेम और संकोचवश उनके सामने कभी भी मुँह नहीं खोला। मैं अपने भाई व स्वामी राम से इतना अधिक प्रेम करता हूँ कि मेरे नेत्र आज तक प्रभु राम के दर्शन से तृप्त नहीं हुए हैं।

### काव्यगत

#### विशेषताएँ:-

1. इन पंक्तियों में भरत का राम के प्रति अनन्य प्रेम अभिव्यक्त हुआ है।
2. अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है।
3. माधुर्य गुण एवं अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है।
4. 'नीरज-नयन' तथा 'नेह-जल' में रूपक अलंकार है।
5. दांहा-चौपाई छंद है।
6. पूरे पद में संगीतात्मकता को छटा है।
7. काव्यांश में अनुप्रास अलंकार की छटा देखते ही बनती है।

## काव्य-सौंदर्य

मातु मंदि में साधु सुचाली .... संबुक काली।।

**भाव-सौन्दर्य :** भरत इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि उन्हें यह अच्छा नहीं लग रहा कि वे यह कहें कि कौन अच्छे स्वभाव का है और कौन अच्छे स्वभाव का नहीं है। इसका निर्णय दूसरे लोग करते हैं। अर्थात् वे अपनी माता कैकयी के लिए अपशब्दों का प्रयोग करे और स्वयं को अच्छे स्वभाव का कहें, ऐसी बातें मन में लाना भी सबसे बड़ा अपराध है। भरत स्वप्न में भी किसी को दोष नहीं देना चाहते। इसे वे उदाहरण से स्पष्ट करते हैं कि कोदव (निम्न श्रेणी का अनाज) की बाली से उत्तम अनाज प्राप्त नहीं हो सकता और काली घोंघी में भी उत्तम कोटि का मोती नहीं मिल सकता। वास्तव में मेरे दुर्भाग्य से ही मुझे यह दुःख मिला है।

रस - करुण

गुण - माधुर्य

## शिल्प-सौंदर्य

1. भाषा - अवधी ।
2. शैली - दोहा - चौपाई शैली/कड़वक शैली ।
3. छंद - छंदबद्ध ।
4. अलंकार - 1. 'मातु मंदि', 'साधु सुचाली', 'कोटि कुचाली' - अनुप्रास ।  
अलंकार ।  
2. मुकुता..... काली - दृष्टान्त अलंकार ।

### (ख) पद

प्रतिपाद्य/मूल संवेदना: ये पद 'तुलसीदास' की काव्य रचना 'गीतावली' से लिए गए हैं। इन पदों में कवि ने श्री राम के वनगमन के पश्चात् माता कौशल्या के हृदय की वियोग दशा और पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है। प्रथम पद में वे राम के बचपन की वस्तुओं को हृदय से लगा कर पुत्र की निकटता का अनुभव करती हैं। वे इतनी बेसुध हैं कि उन्हें कुछ ध्यान नहीं रहता जब उन्हें राम के वनगमन की स्मृति हो आती है तो वे चकित होकर चित्र के समान स्थिर हो जाती हैं।

दूसरे पद में माँ कौशल्या राम के वियोग में दुखी अश्रुओं को देखकर राम से एक बार पुनः अयोध्या लौट आने का आग्रह करती हैं।

### काव्य सौंदर्य :-

“भरत सौगुनी.....इन्हकों बड़ो अंदेसो”

भाव सौंदर्य:- यहाँ कवि ने माता कौशल्या द्वारा राम के वियोग में दुखी घोड़ों को देखकर पुत्र- श्री राम से एक बार पुनः अयोध्या लौट आने का आग्रह करने का सहज, सुदर व मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

रस:- वियोग वात्सल्य रस गुण - माधुर्य

शिल्प सौंदर्य :- (1) ब्रज भाषा (2) सहज व भावानुकूल भाषा  
(3) पद छंद (4) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा अलंकार

### महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'मही सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति द्वारा भरत के विचारों, भावों का स्पष्टीकरण कीजिए?

उत्तर : इस पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि राम के वन गमन व पिता की मृत्यु, माताओं की दशा के लिए भरत स्वयं को ही दोषी मानते हैं। पिता को मृत्यु व राम को वनवास भी उनके कारण ही हुए हैं। इसके लिए वह स्वयं को अपराधी मानते हैं और खेद प्रकट करते हैं।

प्रश्न 2. 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का अर्थ यह है कि जब माता कौशल्या को राम की याद आती है तो उनकी स्थिति एक जड़ चित्र के समान हो जाती है जो हिलती-डुलती नहीं है। वे राम की वस्तुओं को देखकर हैरान थी किन्तु जैसे ही कौशल्या का भ्रम टूटता है तो उसकी स्थिति चित्र के समान हो जाती है। जैसे ही उन्हें राम के वन जाने की बात याद आती है वैसे ही एक चित्र की भाँति खड़ी रह जाती है।

**प्रश्न 3.** गीतावली के पद 'जननी निरखति बान धुनहियाँ' के आधार पर राम के वन गमन के पश्चात माँ कौशल्या की मनः स्थिति का वर्णन कीजिए।

**उत्तर :** राम के वन चले जाने के बाद राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है। ऐसे में माता कौशल्या बहुत व्यथित रहने लगती है। घर में जहाँ कहीं भी उन्हें राम के बचपन की कोई वस्तु दिखाई देती है तो उन्हें राम की याद सताने लगती है। वे राम के बचपन के दिनों के खेलने वाले धनुष-बाण को देखकर उठा लेती है और बार-बार राम को याद करते हुए उन्हें अपने हृदय और नेत्रों से लगाती हैं। इसी प्रकार से बालक राम के नन्हें-नन्हें पैरों की सुंदर जूतियाँ देखकर भी उनका हृदय उमड़ पड़ता है और उन्हें भी वे अपने हृदय और नेत्रों से लगाती हैं।

## पठित काव्यांश

### तुलसीदास- 'भरत राम का प्रेम'

“बिधि न सकेउ सहि .....जननि कहि काकू । ”

1. भरत और राम के बीच का स्नेह किसे सहन नहीं हुआ?

- |              |             |
|--------------|-------------|
| (i) राजा     | (ii) कैकेयी |
| (iii) विधाता | (iv) लोग    |

2. परिवार में आए सभी दुखों का कारण भरत किसे मानते हैं?

- |                |                        |
|----------------|------------------------|
| (i) कैकेयी को  | (ii) दशरथ को           |
| (iii) स्वयं को | (iv) अपने दुर्भाग्य को |

3. 'अभाग- उदधि' में अलंकार है :-

- |                   |            |
|-------------------|------------|
| (i) यमक           | (ii) रूपक  |
| (iii) उत्प्रेक्षा | (iv) श्लेष |

4. कविता किस छंद में लिखी गई है?

- |                          |                |
|--------------------------|----------------|
| (i) कवित्त               | (ii) सवैया     |
| (iii) दोहा-चौपाई (कड़वक) | (iv) हरिगीतिका |

5. "मुक्ता प्रसव कि संबुक काली " कहकर भरत का आशय यही है :-  
 (i) उनकी ममता पूर्णतः दोषमुक्त है  
 (ii) माता के दुर्गुण भरत में व्यक्तित्व में भी समाहित हैं  
 (iii) माता के ही कारण भरत दोषी सिद्ध हुए हैं  
 (iv) माता पिता दोनों दोषी हैं
6. "मो पर कृपा सनेहु बिसेषी " में किसका प्रेम प्रदर्शित है:-  
 (i) राम एवं लक्ष्मण (ii) कवि एवं प्रभु राम  
 (iii) रामचंद्र व भरत (iv) गुरु मुनि एवं रामचंद्र
7. "मातु मदि मैं साधु सुचाली" पंक्ति में भरत के मन का कौन सा भाव प्रकट हुआ है:-  
 (i) घृणा एवं क्रोध (ii) आत्मा परिताप एवं अपराध बोध  
 (iii) क्रोध एवं करुणा (iv) करुणा एवं आत्म परिताप
8. "मुक्ता प्रसव कि संबुक काली" पंक्ति में किस प्रकार का प्रयोग है:-  
 (i) रूपक (ii) दृष्टांत  
 (iii) उत्प्रेक्षा (iv) उपमा
9. 'भूपति' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है:-  
 (i) राम (ii) जनक  
 (iii) दशरथ (iv) भरत
10. "राघव, एक बार फिरि आवौ" में किसकी वेदना व्यक्त हो रही है:-  
 (i) कौशल्या (ii) सीता  
 (iii) भरत (iv) घोड़े
11. द्वितीय पद में संदेश किसके द्वारा किसके लिए भिजवाया जा रहा है:-  
 (i) राम को कौशल्या के द्वारा (ii) राम को पथिक के द्वारा  
 (iii) सीता को पथिक के द्वारा (iv) सीता को कौशल्या के द्वारा

ई सामग्री-

तुलसीदास - भारत  
राम का प्रेम भाग 1



तुलसीदास - भरत राम  
का प्रेम भाग 2



तुलसीदास - भारत  
राम का प्रेम भाग 3





## पाठ-8

### मलिक मुहम्मद जायसी

( भक्तिकाल की निर्गुणभक्ति धारा की प्रेममार्गी शाखा के कवि )

### बारहमासा

**प्रतिपाद्य/मूल संवेदना:-** जायसी द्वारा रचित प्रेमाख्यानक महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' का एक भाग है इसमें नागमती के विरह का वर्णन है। नागमती चितौड़ के राजा रत्नसेन की पत्नी है। राजा सिंहल द्वीप की राजकुमारी 'पद्मावती' की सुन्दरता पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए नागमती को छोड़कर चला जाता है। राजा को पद्मावती के बारे में हीरामन तोते ने बताया है। यह तोता पद्मावती का तोता है। इस काव्य में कवि ने लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम को अभिव्यक्ति दी है। प्रेम द्वारा ईश्वर प्राप्ति पर बल दिया है। यहाँ रत्नसेन 'आत्मा' का प्रतीक है जो गुरु (हीरामन तोता) ज्ञान द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिए (पद्मावती) चल देता है। परन्तु ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बहुत कठिन है; अतः मार्ग में सांसारिक मोह-माया (नागमती) रास्ता रोकने का प्रयास करती हैं। इस काव्य पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

**प्रश्न :** प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

अगहन देवस घटा ..... धुआँ हम लाग।

**सन्दर्भ:** कवि - 'मलिक मुहम्मद जायसी'।

कविता - 'पद्मावत' (महाकाव्य) से 'बारहमासा'।

**प्रसंग :** इसमें कवि ने नागमती के विरह का वर्णन किया है जिसे उसका पति पद्मावती को प्राप्त करने के लिए छोड़कर चला जाता है।

**व्याख्या :** कवि नागमती के माध्यम से अगहन मास में उसके विरह का वर्णन करते हुए कहता है कि इस मास में दिन छोटा और रातें लम्बी हो गई हैं, जिससे नागमती की विरह वेदना भी लम्बी हो गई है। वह विरह को अग्नि में रात और दिन ऐसे जलती है, जैसे दीपक में बाती जल रही है। उसके लिए यह विरह वेदना असहनोय है। घर-घर में स्त्रियाँ रंगीन वस्त्रों से स्वयं को सुसज्जित कर रही हैं पर नागमती को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। वह श्रृंगार नहीं करती है, क्योंकि उसे लगता है कि उसका रंग, रूप-सौंदर्य उसके पति के साथ चला गया है और उसका पति उसे एक बार छोड़कर ऐसा गया कि वापिस नहीं आया, यदि वह वापिस आ जाता है तो उसकी खुशियाँ उसका रूप सौंदर्य भी वापिस आ जायेगा। सर्दी भी उसकी विरह की अग्नि को शांत

करने की अपेक्षा और अधिक बढ़ा रही है। विरह की आग में उसका यौवन रूपी जीवन भस्म हो रहा है। भँवरे और कौए कं माध्यम से अपने पति को संदेश भेजती है कि उनकी पत्नी विरह की आग में जलकर मर गई है, उसी आग कं निकले धुएँ के प्रभाव से वे भी काले हो गए हैं।

### काव्यगत विशेषताएँ

1. नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण है।
2. 'दूभर दुख', 'किमि काढ़ी', 'रूप-रंग', 'दुःख-दग्ध' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'जैरै बिरह ज्यों दीपक बाती'- उदाहरण अलंकार, उपमा।
4. भाषा - ठेठ अवधी।
5. छंद - दोहा-चौपाई (कड़वक)
6. शैली - चित्रात्मक।
7. रस - वियोग शृंगार।

### सप्रसंग व्याख्या

फागुन पवन झकौरे ..... कंत धरै जहँ पाड।

सन्दर्भ: कवि - मलिक मुहम्मद जायसी।

कविता - 'पदमावत' (महाकाव्य) से 'बारहमासा।'

प्रसंग : इसमें कवि ने फागुन मास में नागमती की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन किया है।

**व्याख्या :** नागमती अपनी वेदना का वर्णन करते हुए कहती है कि फागुन मास में तेज और ठंडी हवाएँ चल रही हैं, जिससे सर्दी चार गुना बढ़ गई है। वह वियोग के कारण बहुत कमजोर और पीली पड़ गई है, जिससे इस माह में चलने वाली तेज हवाएँ भी वह सहन नहीं कर पा रही है। पेड़ों से पुराने पत्ते गिर गए हैं, ढाक के वन पत्ते रहित हो गए हैं वहीं दूसरी ओर पेड़ों पर नयी कोपलें फूट रही हैं। नये पत्ते और फूल आ रहे हैं। चारों ओर वनस्पति और लोगों में नया उल्लास भर आया है। सब इस मास में आनन्द के साथ चाचरी (फाग के माह में केवल दम्पति द्वारा किया जाने वाला नृत्य) खेल रहे हैं। परन्तु नागमती को यह सब वस्तुएँ कष्ट दे रही हैं क्योंकि उसका पति उसके साथ नहीं है। अतः वह किसके साथ होली खेले। वह कहती है कि यदि उसके प्रिय को उसका विरह में इस प्रकार जलना अच्छा लगता है तो वह उसकी खुशी के लिए कोई शिकायत नहीं करेगी, ऐसे ही विरह में मर जाएगी। बस उसकी यही एक अन्तिम इच्छा है कि वह मरने से पहले एक पति के चरणों का स्पर्श करना चाहती है।

### काव्यगत विशेषताएँ

1. नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया है
2. भाषा - ठेठ अवधी।
3. छंद - दोहा चौपाई।
4. रस - वियोग शृंगार।
5. अलंकार - उपमा, रूपक, अनुप्रास।
6. प्रकृति का सजीव चित्रण।
7. प्रेम की उत्सर्ग भावना, पूर्ण समर्पण का भाव है।

प्रश्न : काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) रक्त डरा मांसू ..... आई समेटहु पंख।

**भाव सौन्दर्य :** कवि ने नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया है। विरह में उसका सारा रक्त आंसू बनकर बह रहा है। सारा मांस गल कर गिर रहा है और हड्डियाँ सूखकर शंख के समान हो गई हैं। अर्थात् वह मृत्यु को प्राप्त होने वाली है। वह सारस पक्षी के समान मरने से पहले बस एक बार अपने पति से मिलना चाहती है कि उसका पति सारस बनकर आए उसे सम्भाल ले।

- रस - वियोग शृंगार

- गुण - माधुर्य

### शिल्प सौंदर्य

1. भाषा - ठेठ अवधी।
2. शैली - ऊहात्मक।
3. रस - वियोग शृंगार रस।
4. छंद - दोहा चौपाई, वीभत्स।
5. अलंकार - अतिशयोक्ति।

6. छंद कविता - तुकान्त

7. गुण - माधुर्य

**प्रश्न 1.** माघ महीने में विरहिणी को क्या अनुभूति होती है? (बारहमासा)

**उत्तर :** माघ महीने में बहुत भयंकर सर्द पड़ने लगती है। प्रियतम के वियोग में विरहिणी नायिका के दिन काटे नहीं कटते हैं। माघ की वर्षा के समान उसकी आँखों से निरंतर विरह के आँसू बहते रहते हैं। इन आँसुओं से भीगे वस्त्र उसके शरीर को बाण के समान चुभते रहते हैं। माघ की तेज हवा और ओलों की वर्षा उसके जीवन को और भी अधिक कष्टप्रद बना देती है लेकिन प्रियतम के वियोग में उसका जीवन रसहीन हो गया है। वह दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। उसका शरीर तिनके के समान हल्का हो गया है। वह तो विरह रूपी अग्नि में जलकर राख के समान उड़ने के लिए तैयार है।

**प्रश्न 2.** वृक्षों से पत्तियाँ तथा वनों से ढ़ाँखे किस माह में गिरते हैं? इससे विरहिणी का क्या संबंध है ?

**उत्तर -** शिशिर ऋतु के माघ और फागुन के महीने में वृक्षों से पत्तियाँ और वनों से ढ़ाँखे गिरते हैं। पेड़-पौधों का सौंदर्य समाप्त हो जाता है। अपने प्रिय के विरह में जलती नायिका का शरीर भी पुराने पत्तों की तरह पीला पड़ गया है अर्थात् सौंदर्य विहीन हो गया है। विरह रूपी पवन उसके क्षीणकाय शरीर को अपने आघात से पीड़ा पहुँचा रही है।

## पठित काव्यांश

### बारहमासा

“एहि मास उपजै रस .....चहै उड़ावा झोल ।”

1. कौन से मास में वनस्पति में नवीन रस उत्पन्न होता है?

- (i) फागुन (ii) माघ  
(iii) पौष (iv) अगहन

2. “रस मूलू” के माध्यम से विरहिणी के मन के कौन से भाव की ओर संकेत किया है?

- (i) शृंगार (ii) दुख  
(iii) आश्चर्य (iv) शांत

3. “ नैन चुवहिं जस माँहुट नीरू ” में आँसुओं की समानता किस वस्तु से की गई है ?

- (i) नदी का जल (ii) पसीना  
(iii) उष्ण का जल (iv) माघ मास में होने वाली वर्षा

4. कविता की भाषा है :-

- (i) ब्रज (ii) देशज  
(iii) परिनिष्ठित अवधी (iv) बोलचाल की अवधी

5. नागमती के विरह वर्णन की विशेषता है :-

- (i) अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन (ii) ऊहात्मकता  
(iii) समर्पित प्रेम (iv) उपर्युक्त सभी

6. इस कविता का मुख्य रस है:-

- (i) शृंगार (ii) वियोग शृंगार  
(iii) संयोग शृंगार (iv) करुण

7. ‘सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा’ में अलंकार है:-

- (i) अनुप्रास, रूपक (ii) रूपक, विरोधाभास  
(iii) यमक, विरोधाभास (iv) श्लेष, रूपक

8. "नैन चुवाहिं जस माहुट नीरू" कौन-से महीने के लिए कहा गया है—

- (i) पौष (ii) अगहन (iii) माघ (iv) फागुन

9. उचित युग्म बनाइए:—

- |          |  |
|----------|--|
| 1. माघ   | (क) शीत के कारण हृदय काँपता है।                                |
| 2. अगहन  | (ख) ढाक के जंगल पत्रविहीन हो जाते हैं।                         |
| 3. पौष   | (ग) वनस्पति में नवीन रस उत्पन्न होता है।                       |
| 4. फागुन | (घ) सूर्य शीत से बचने के लिए दक्षिण दिशा की ओर गतिमान होता है। |

(i) क - 3, ख - 1, ग - 2, घ - 4 (ii) क - 3, ख - 4, ग - 4, घ - 2

(iii) क - 4, ख - 2, ग - 3, घ - 1 (iv) क - 2, ख - 4, ग - 1, घ - 3

10. "जै विरह ज्यों दीपक बाती" में अलंकार है:—

- (i) उपमा (ii) उत्प्रेक्षा (iii) रूपक (iv) यमक

11. इन कथनों में असत्य छाँटो:—

- (i) इस कविता में नागमती एक समर्पिता भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है  
(ii) इसमें नागमती की विरह वेदना का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन है।  
(iii) नागमती का प्रियतम युद्ध के लिए उससे दूर चला गया है।  
(iv) प्रकृति के उपादानों को विरह वेदना में सहभागी बनाया गया है।

12. विरह को किसके रूप में बताया गया है—

- (i) चकवी (ii) हंस (iii) बाज (iv) कोयला

13. किस पंक्ति में ऊहात्मकता दृष्टव्य है—

- (i) घर-घर चीर रचा सब काहूँ।  
(ii) केहिक सिंगार को पहिर पटोरा।  
(iii) रक्त ढरा, माँसू गरा, हाड़ भए सब संख  
(iv) नैन चुवाहिं जस माहुट नीरू

ई सामग्री—

बारहमासा ( कविता )  
जायसी - भाग 1



बारहमासा ( कविता )  
जायसी - भाग 2



## पाठ-9 विद्यापति

(आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि)

### पद

#### प्रतिपाद्य/मूलसंवेदना

इस पाठ में राधा की विरह वेदना और प्रेम के अनिर्वचनीय रूप का वर्णन है। कृष्ण राधा को छोड़कर मथुरा में जा बसे हैं और एक बार भी उनसे मिलने गोकुल नहीं आए हैं। राधा उनके वियोग में व्याकुल हैं, उनसे अब कृष्ण के बिना रहा नहीं जाता है। उनकी विरह व्यथा का अलग-अलग पद के द्वारा वर्णन किया गया है। प्रेम के अनुभव को प्रति पल नवीन होने वाली अनुभूति बताया गया है।

**प्रश्न :** प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

(क) सखि हे कि पुछसि ..... लाखे न मीलल एक।

**सन्दर्भ :** कवि-विद्यापति।

कविता-विद्यापति की पदावली।

**प्रसंग :** इस पद में नायिका अपने प्रियतम को जन्म-जन्म से देखते रहकर भी तृप्त न होने की बात अपनी सखी को बताते हुए नायक के प्रति अपने अनन्य प्रेम को व्यक्त करती है।

**व्याख्या :** नायिका और नायक एक-दूसरे से लंबे समय से प्रेम करते हैं। नायिका और नायक के इस प्रेम को उसकी सखी भी जानती है। अपनी इस उत्सुकतावश वह नायिका से इसका अनुभव पूछती है। तब नायिका अपने प्रेम का वर्णन करती हुई कहती है कि हे सखी! मुझसे मेरे प्रेम के अनुभव के बारे में क्या पूछती है अर्थात् मैं इसके आनंद और सच्चे स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकती। प्रेम तो क्षण-क्षण रूप बदलने वाला होता है, इसलिए यह अवर्णनीय है। मैं जन्मभर प्रिय का रूप निहारती रही, किंतु मेरी आँखें तृप्त नहीं हुईं। उनके मधुर वचनों को कानों से सुनती रही, किंतु कानों को संतुष्टि नहीं हुई। प्रियतम के साथ प्रेम क्रीड़ा करते हुए भी यह नहीं समझ सकी कि मिलन का आनन्द क्या होता है। लाखों-लाखों युगों तक मैंने अपने प्रियतम को हृदय में रखा किंतु फिर भी मेरे प्रेम को पूर्णता प्राप्त नहीं हुई। हे सखी! मेरी बात ही क्या, कितने रसिक लोगों ने इसको अनुभूत किया, किंतु इसका पूर्ण अनुभव किसी को नहीं हुआ। विद्यापति जी कहते हैं कि लाखों में एक भी नहीं मिला जो कृष्ण प्रेम की पूर्णता को प्राप्त कर चुका है। वस्तुतः यह प्रेम शाश्वत है।

### काव्यगत विशेषताएँ:

1. कवि ने प्रेमानुभूति को व्यक्तिगत अनुभव बताया है, जो अलौकिक एवम् स्वयं अनुभव करने योग्य है।
2. शृंगार रस का वर्णन है।
3. मैथिली भाषा है।
4. माधुर्य गुण विद्यमान है।
5. अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, यमक, विरोधाभास, अतिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
6. छंद पद है।

### (क) जनम अबधि हम.....पथ परस न गेल।

**भाव सौन्दर्य :** विद्यापति नायिका के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि सच्चे प्रेम में कभी भी तृप्ति नहीं मिलती है। नायिका उसे बताती है कि वह जन्म-जन्मांतर से अपने प्रेमी को निहारती चली रही है, परन्तु अभी तक उसके नेत्रों को उसे देखने की इच्छा है। वह अपने प्रियतम के मीठे बोलों को सुनती आ रही है, फिर भी वह उसके लिए नवीन है। अर्थात् वह कहना चाहती है कि सच्चे प्रेम में मिलन के बाद भी अतृप्ति बनी रहती है।

रस - शृंगार

गुण - माधुर्य

### शिल्प सौंदर्य

1. छंद कविता - तुकान्त।
2. भाषा - मैथिली।
3. 'स्रवनहि सूनल सुति' व 'पथ परस' में अनुप्रास अलंकार है।
4. शैली - चित्रात्मक, बिम्बात्मक।



**प्रश्न 1 :** कवि 'नयन न तिरपित भेल' के माध्यम से विरहिणी नायिका की किस मनोदशा को व्यक्त करना चाहता है?

**उत्तर :** कवि यहाँ यह बताना चाहता है, कि सच्चे प्रेम में व्यक्ति कभी भी तृप्त नहीं होता है। नायिका भी जन्म-जन्मांतर से नायक के साथ है, फिर भी वह उससे एक क्षण के लिए भी अलग नहीं होना चाहती है और यही प्रेम का आदर्श रूप भी है। प्रेम हमेशा नवीन रहता है। उससे तृप्त होना संभव नहीं है। यही नायिका की भी मनोदशा है।

**प्रश्न 2.** 'सेह पिरित अनुराग बखानिअ तिल - तिल नूतन होए' से कवि का क्या आशय है?

**उत्तर :** कवि का आशय यह है कि प्रेम स्थिर नहीं है और यह अनुभव की चीज़ है, वर्णन की नहीं। प्रेम में प्रतिपल नवीनता आती रहती है, अर्थात् प्रेम प्रतिपल और मजबूत, गहरा और नवीन होता रहता है। अतः इसका वर्णन सम्भव नहीं है। इसे तो केवल महसूस किया जा सकता है।

**प्रश्न 3. कवि ने सावन मास में नायिका की किस मनोदशा का वर्णन किया है?**

**उत्तर -** कवि ने सावन मास में विरहिणी नायिका के हृदय की पीड़ा को व्यक्त किया है। वह प्रियतम के बिना पूरे भवन में अपने अकेलेपन की पीड़ा को सहन नहीं कर पाती है। वह मानती है कि इस दुनिया में कोई भी मनुष्य अन्य व्यक्ति का दुख नहीं समझ सकता। उसका मन भी उसके पास नहीं है क्योंकि वह भी हर समय प्रिय के ध्यान में लगा रहता है। उस हृदय वियोग के इस असहनीय दुख से पीड़ित है।

**प्रश्न 4.** 'गोकुल.....अप जस तेल' प्रथम पद के आधार पर इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें

**उत्तर -** विरहिणी नायिका अपने हृदय की पीड़ा को प्रकट करते हुए कहती है कि उसके मन को हर कर (चुराकर) उसका प्रियतम गोकुल छोड़कर मथुरा में जाकर बस गया है। गोकुल में मिले अपार प्रेम को भुलाकर और गोकुल को त्यागकर उन्होंने अपनी हृदय हीनता का परिचय दे दिया है। मथुरा में जा बसने के इस कृत्य के कारण उन्हें बहुत अपयश (बदनामी) मिला है।

## पठित काव्यांश

### पदावली

“सेह पिरिति .....अनुभव काहू न पेख ।”

1. नायिका प्रेम के अनुभव को प्रकट करने में असमर्थ है क्योंकि :-

- (i) प्रेम का अनुभव अच्छा नहीं है ।
- (ii) नायिका व्यस्त है ।
- (iii) प्रेम प्रतिपल नवीन रूप धारण करता है ।
- (iv) नायिका अशिक्षित है ।

2. “सच्चे प्रेम की मुख्य विशेषता है:-

- (i) इसमें एकाधिकार का भाव समाहित होता है ।
- (ii) इसमें अतृप्ति बनी रहती है ।
- (iii) इसमें परस्पर ईर्ष्या बलवती होती है ।
- (iv) इसमें प्रतिस्पर्धा जागृत होती है ।

3. “ तइओ हिव जरनि न गेल ” प्रेम मनुष्य को कौन सी संतुष्टि प्रदान करता है?

- (i) उसे वासना-विकार रहित अलौकिक सुख प्राप्त होता है ।
- (ii) वह दूसरों से बड़ा बन जाता है ।
- (iii) वह अधिक सुंदर और शक्तिशाली हो जाता है ।
- (iv) वह सफलता प्राप्त कर लेता है ।

4. ‘विदग्ध जन’ से अभिप्राय है :-

- (i) ज्ञानी
- (ii) रसिक
- (iii) विद्वान
- (iv) उपर्युक्त सभी

5. इन पंक्तियों में कौन सा अलंकार मुख्य रूप से प्रयुक्त हुआ?

- (i) अनुप्रास
- (ii) पुनरुक्ति प्रकाश
- (iii) रूपक
- (iv) यमक

ई सामग्री-

पद ( काव्यखंड ) -  
विद्यापति



## पाठ-11

### घनानंद

( रीतिकाल की रीतिमुक्त स्वछंद काव्यधारा के प्रमुख कवि )

कवित्त

#### प्रतिपाद्य/मूल संवेदना

प्रथम कवित्त में कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान को सम्बोधित करते हुए कहा है कि वह उससे मिलने के लिए व्याकुल है। उसकी इच्छा है कि उसकी प्रेमिका एक बार अवश्य ही उसे दर्शन दे क्योंकि उसके प्राण इसी आस में अटके हुए हैं। रीतिकालीन कवि अपनी कविताओं में शृंगार का माध्यम राधा और कृष्ण के प्रेम को बनाते हैं। कवित्त में दूसरा अर्थ भी निकलता है कि सुजान शब्द यहाँ कृष्ण के लिए आया है। अर्थात् घनानंद चाहते हैं कि मेरी भक्ति सफल हो जाये अगर प्राण निकलने से पहले सुजान (कृष्ण) दर्शन दे दें।

**संप्रसंग व्याख्या :** बहुत दिनान.....सँदेसो लै सुजान को।

**संदर्भ :** कवि - घनानंद।

कविता - कवित्त

**प्रसंग :** इसमें कवि चाहता है कि उसके प्राण निकलने से पहले सुजान उसे दर्शन दे दें ताकि वह इस संसार से विदा ले सके।

**व्याख्या :** कवि घनानंद जी कहते हैं कि बहुत समय बीत गया है लेकिन सुजान अब भी उससे मिलने नहीं आई है। अब मेरे प्राण निकलने के लिए व्याकुल हो रहे हैं। मेरी दयनीय दशा का संदेश मेरी सुंदर व मन को भाने वाली प्रेमिका तक पहुँचा दिया जाता है और वह भी उन संदेशों को सम्मानपूर्वक अपने पास रख लेती है। परन्तु मुझसे मिलने नहीं आती है। उसकी झूठी बातों पर विश्वास करके कवि घनानंद उदास हो गये हैं।

घनानंद जी कहते हैं कि उपचार करने वाले आनन्द रूपी बादल अब घिरते ही नहीं है अर्थात् जिसको देखकर उसकी बीमारी दूर हो सके वह प्रियतमा सुजान अब आती ही नहीं है। अब मेरे प्राण अधरों तक आ गए हैं कि उसके दर्शनों की अभिलाषा में ही उसके प्राण अब तक अटके हुए हैं कि वह आकर उसे दर्शन दे दें।

**काव्यगत विशेषताएँ :-** 1. कवि के हृदय की व्याकुलता और वियोग का सजीव चित्रण किया गया है।

2. कवि अपनी प्रेमिका के वियोग में मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया है।

3. ब्रज भाषा का सुन्दर प्रयोग
4. कवित्त छंद
5. वियोग शृंगार रस
6. 'कहि-कहि, दै दै' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है।
7. 'घिस्त घन', 'कहि के', 'पयान प्रान' तथा 'चाहत चलन' में अनुप्रास अलंकार, श्लेष अलंकार
8. मुहावरे का प्रयोग

### काव्य सौंदर्य

मौन हूँ सौं देखिहौं कितेक पन.....आप बोलि है।

**भाव सौंदर्य :** इन पंक्तियों के माध्यम से कवि घनानंद जी अपनी प्रेमिका सुजान से कहते हैं कि- अब तो मुझे चुप रह कर यह देखना है कि मेरे हृदय की पुकार सुनकर भी तुम कब तक न बोलने की अपनी प्रतिज्ञा का पालन करती हो, क्योंकि मेरे प्रेम से भरे हृदय की मूक पुकार तुम्हें एक ना एक मुझसे बात करने पर अवश्य ही विवश कर देगी।

-रस - वियोग शृंगार

- गुण - माधुर्य

### **शिल्प सौंदर्य :-**

1. भाषा - ब्रज भाषा
2. शैली - रीतिमुक्त
3. छंद - कवित्त
4. अलंकार - पन पालिहौ में अनुप्रास, कूक भरी मूकता में विरोधाभास अलंकार है।
5. शब्दशक्ति - व्यंजना शक्ति

**प्रश्न 2.** कवि ने 'चाहत चलन ये संदेसों ले सुजान को' क्यों कहा है?

**उत्तर :** कवि की प्रेमिका का नाम सुजान है। वह उससे प्रेम करता है। वह उससे मिलना चाहता है। परंतु वह कोई उत्तर नहीं देती। कवि मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया है। उसे लगता है कि कभी भी उसके प्राण निकल सकते हैं। वह अपनी प्रेमिका सुजान तक यह संदेसा पहुँचाना चाहता है कि उसके दर्शनों की इच्छा में ही उसके प्राण अब तक अटके हुए हैं इसलिए वह आकर उसे दर्शन दे।

## पठित काव्यांश घनानंद ( कवित्त )

“आनाकानी आरसी निहारिबो .....कान खोलि है । ”

1. घनानंद को माना जाता है :-

- |                           |                       |
|---------------------------|-----------------------|
| (i) प्रेम की पीड़ा के कवि | (ii) साक्षात रसमूर्ति |
| (iii) वीर रस के कवि       | (iv) क व ख दोनों      |

2. 'आरसी' का अर्थ है:-

- |            |            |
|------------|------------|
| (i) वृक्ष  | (ii) पुष्प |
| (iii) आकाश | (iv) दर्पण |

3. नायिका द्वारा नायक की ओर न देखकर दर्पण को निहारना उसकी किस मनोदशा को सूचित करता है ?

- |              |               |
|--------------|---------------|
| (i) चिंता    | (ii) क्रोध    |
| (iii) उपालंभ | (iv) उदासीनता |

4. कविता की भाषा है :-

- |                         |                                    |
|-------------------------|------------------------------------|
| (i) संस्कृत             | (ii) अवधी                          |
| (iii) अवधी-ब्रज मिश्रित | (iv) परिस्कृत व साहित्यिक ब्रजभाषा |

5. 'कूक भरी मूकता' में अलंकार है:-

- |                   |                |
|-------------------|----------------|
| (i) अनुप्रास      | (ii) विरोधाभास |
| (iii) उत्प्रेक्षा | (iv) रूपक      |

6. 'कूकभरी मूकता बुलाय आप बोलिहै' कवि के किस मनोभाव को दर्शाता है?

- |                                 |                        |
|---------------------------------|------------------------|
| (i) अपने सच्चे प्रेम पर विश्वास | (ii) जिद्दी/हठी स्वभाव |
| (iii) प्रतिशोध का भाव           | (iv) क्रोध का भाव      |

## काव्य खंड

### अभ्यास प्रश्न

1. 'कार्नेलिया का गीत' कविता में कवि ने भारत की किन विशेषताओं को ओर संकेत किया है?
2. इस सत्र में पठित काव्यांशों में से किसी एक काव्यांश में वर्णित अलंकारों में महत्व को स्पष्ट कीजिए—
3. 'देवसेना की गीत' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।
4. 'कार्नेलिया का गीत' कविता में व्यक्त प्रकृति चित्रों को अपने शब्दों में लिखो।
5. "कार्नेलिया का गीत" कविता में देशभक्ति के साथ-साथ इतिहास की भी झलक मिलती है।" स्पष्ट कीजिए—
6. सरोज का विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था?
7. 'मुझ भाग्यहीन की तू संबल' निराला की यह पंक्ति 'बेटी बचाओ' बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रम की माँग करती है?
8. इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए—
  - (i) नत नयनों से आलोक उतर।
  - (ii) पर पाठ अन्य यह अन्य कला।
  - (iii) यदि धर्म, रहे नत सदा माथ।
9. कवि निराला ने अपनी पुत्री सरोज का तर्पण किये प्रकार किया?
10. 'दुःख ही जीवन की कथा रही'— पंक्ति में निराला की वेदना पर प्रकाश डालिए।
11. 'सरोज स्मृति' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। आत्मकथा किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?
15. "मैने देखा, एक बूँद" कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।
16. 'बनारस' कविता में बनारस शहर का मानवीकरण करने के लिए किन पंक्तियों का प्रयोग किया गया है?
17. 'बनारस' कविता में बनारस शहर की कौन-कौन सी विशेषताएँ बताई गई हैं?
18. बनारस शहर से मिथकीय आस्था किस प्रकार जुड़ी हुई है?
19. 'बनारस' कविता में दूसरी टाँग से बिलकुल बेखबर का क्या आशय है?
20. "धीरे-धीरे" के माध्यम से कवि बनारस शहर के बारे में क्या कहना चाहता है?

21. 'बनारस' कविता की भाषा और शैली के विषय में दो-दो बिन्दु लिखिए।
22. 'दिशा' कविता में बालक की दुनिया का यथार्थ किस प्रकार दिखाया गया है?
23. 'दिशा' कविता को ध्यान में रखते हुए बताइए कि बालक का स्कूल से कैसा संबंध होना चाहिए।
24. 'वसंत आया' कविता को ध्यान में रखते हुए बताइए कि प्रकृति के साथ मनुष्य के रिश्ते को कैसे पुनः स्थापित किया जा सकता है?
25. कवि वसंत ऋतु के साथ कैलेंडर और कविताओं के माध्यम से कैसे जुड़ता है?
26. "प्रकृति मनुष्य की सहचरी है"—वसंत आया' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
27. 'वसंत आया' कविता की शिल्पगत विशेषताएँ बताइए।
28. 'तोड़ों' कविता का आरंभ 'तोड़ों तोड़ों तोड़ों' से हुआ है और अंत 'गोड़ों-गोड़ों-गोड़ों' से क्यों हुआ?
29. 'तोड़ों' कविता में 'पत्थर' और चट्टान शब्द किसके प्रतीक हैं?
30. 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है?
31. 'वसंत आया' कविता में कवि ने आज के मनुष्य की जीवन शैली पर क्या व्यंग्य किया है?
32. 'तोड़ो' कविता में कवि विध्वंस के लिए नहीं उकसाता, वरन् सृजन के लिए प्रेरित करता है। "स्पष्ट कीजिए।"
33. धरती और मन की अनुभूति में क्या समानता है?
34. "मैं जानऊँ निजनाथ सुभाऊ" में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है?
35. राम के प्रति श्रद्धाभाव को भरत किस प्रकार प्रकट करते हैं?
36. विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा" के माध्यम से भरत ने किस प्रकार के उद्गार प्रकट किए हैं?
37. 'भरत-राम का प्रेम' प्रसंग पढ़कर भरत के प्रति आपके मन में क्या धारणा बनती है?
38. वियोगावस्था में सुखकारी वस्तुएँ भी दुख क्यों देने लगती हैं? 'गीतवली' में संकलित पदों के आधार पर बताइए।
39. 'रहि चकि चित्रलिखि सी' पंक्ति का मूल भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
40. "तुलसीदास द्वारा रचित दोनों पदों में वियोग-वात्सल्य के चरम उत्कर्ष दृष्टव्य है"—स्पष्ट कीजिए।
41. विरहणी नागमती अपनी व्यथा का संदेश परदेशी पति के पास कैसे पहुँचाना चाहती है? अपने शब्दों में लिखिए।
42. बारहमासा कविता के आधार पर चारों महीनों की विशेषताएँ लिखिए।

43. "नागमती के व्यक्तित्व में मध्यकालीन स्त्री के जीवन की स्थिति को समझा जा सकता है- " अपने विचार व्यक्त कीजिए।
44. "कोकिल कलरव मधुकर धुनि सुनि, कर देइ झांपई कान" पंक्ति में निहित विरह भाव को स्पष्ट कीजिए।
45. सावन मास में प्रियतमा के दुख का क्या कारण है।
46. विद्यापति की विरहणी नायिका की तीन विशेषताएँ बताइए।
47. 'सेह पिरिति अनुराग बखानिअ, तिल तिल नूतन होय' से लेखक का क्या आशय है?
48. "हियों हितपत्र" के रूपक को स्पष्ट कीजिए।
49. "कूकभरी मूकता बुलाय आप बोलि है" पंक्ति में निहित मनोभाव को स्पष्ट कीजिए।
50. कवि ने "चाहत चलन संदेशों लै सुजान को" क्यों कहा है?
51. विद्यापति की नायिका पर कोयल और भौरें का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है?
52. वसंत के आने की सूचना कवि को कैसे मिलती है?
53. आज के समय में राम और भरत जैसे- भ्रातृ प्रेम के विषय में अपने विचार लिखिए।
54. होली के अवसर पर रानी नागमती की विरह वेदना का वर्णन कीजिए।
55. दुख ही जीवन की कथा रही- पंक्ति में निहित निराला की वेदना पर प्रकाश डालिए।
56. सेह पिरित अनुराग बखानिअ तिल-तिल नूतन होय, इस पंक्ति के माध्यम से कवि प्रेम के किस रूप का वर्णन कर रहा है?
57. "मैं जानऊँ निथ नाथ सुभाऊँ" में राम को किन विशेषताओं का वर्णन/संकेत किया है?
58. अगहन मास में विरहिणी नायिका अपना व्यथा संदेश पति को कैसे पहुँचाना चाहती है? आशय स्पष्ट कीजिए।  
"मौन हूँ सो देखिहौँ, कितेक पन पालिहो जू"
59. भाव स्पष्ट कीजिए-  
"कन्ये, गत कर्मों का अर्पण, कर करता मैं तेरा तर्पण"



## उत्तर बिंदु ( पठित काव्यांश )

देवसेना का गीत

- (1) iv (2) ll (3) ii (4) i (5) ii (6) iii (7) ii  
(8) i (9) iv (10) i (11) ii (12) i (13) i (14) iii  
(15) ii

कार्नेलिया का गीत

- (1) iii (2) iv (3) iii (4) iii (5) iv (6) i (7) iii  
(8) iii

सरोज स्मृति

- (1) i (2) i (3) ii (4) iv (5) i (6) i (7) iii  
(8) iii (9) iv (10) iv (11) iv (12) iii (13) iv (14) iii  
(15) iv

;

यह दीप अकेला

- (1) iii (2) iii (3) iii (4) iii (5) i (6) iii (7) iv  
(8) iv (9) i (10) ii (11) iv (12) iii (13) iv (14) iii  
(15) iv

मैंने देखा, एक बूँद

- (1) ii (2) i (3) iii (4) ii (5) iv

बनारस

- (1) ii (2) iii (3) i (4) i (5) iii (6) iv (7) ll  
(8) iii (9) iii

दिशा

- (1) iii (2) iii (3) iv (4) iii (5) i (6) iv

वसंत आया

(1) iv (2) iv (3) iv (4) iii (5) i (6) iv (7) i  
(8) i (9) i (10) iii (11) ii (12) iii (13) iii (14) ii

तोड़ो

(1) i (2) iv (3) iii (4) i (5) i (6) iii (7) iii  
(8) i (9) iii (10) i

तुलसीदास

(1) iii (2) iv (3) ii (4) iii (5) ii (6) iii (7) ii  
(8) ii (9) iii (10) ii (11) ii

मलिक मुहम्मद जायसी

(1) ii (2) i (3) iv (4) iv (5) iv (6) ii (7) ii  
(8) iii (9) iv (10) iii (11) iii (12) iii (13) iii

विद्यापति

(1) iii (2) ii (3) i (4) iv (5) ii

घनानन्द

(1) i (2) iv (3) iv (4) iv (5) iv

## गद्य खंड

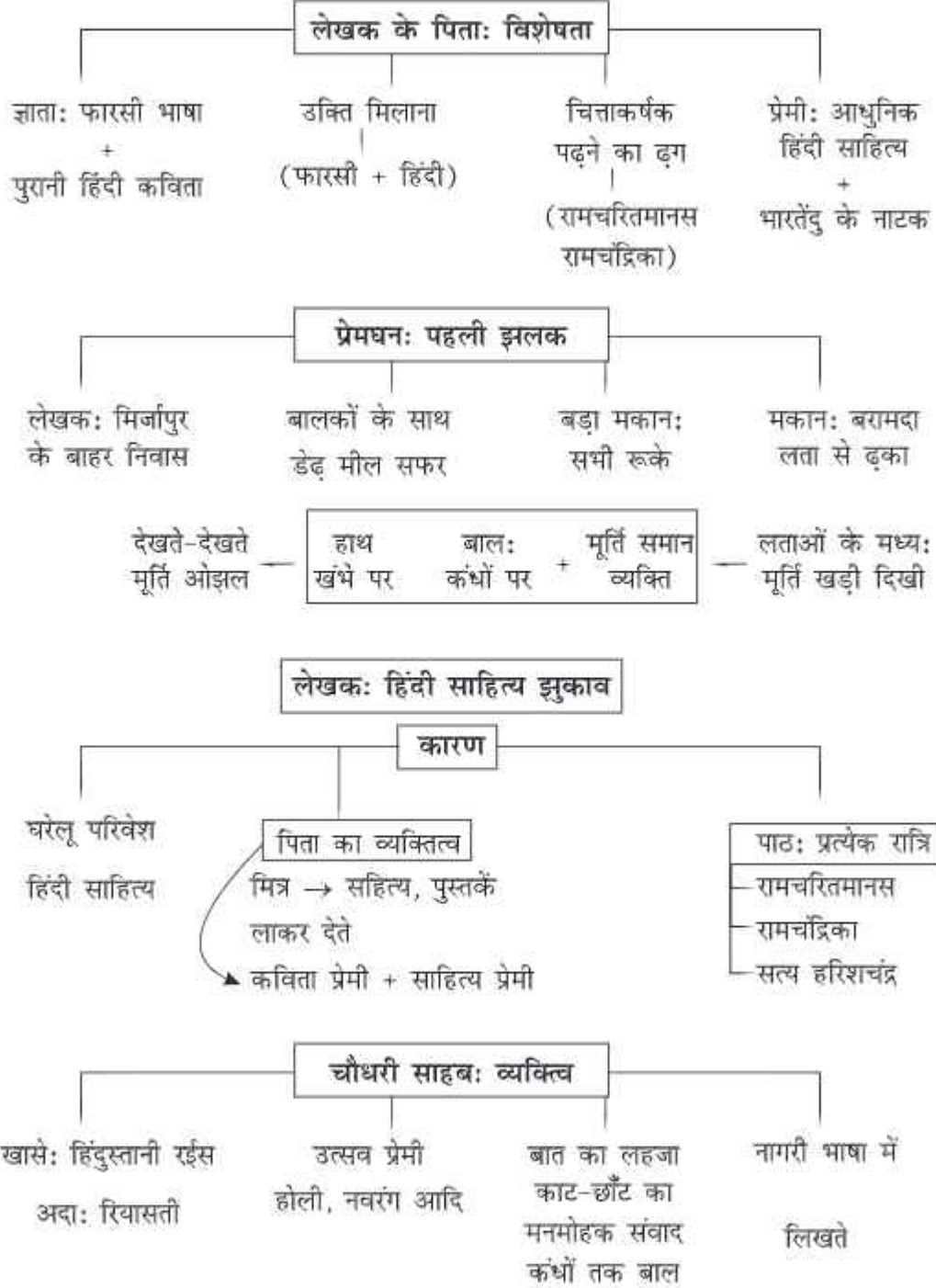
---

1.	रामचन्द्र शुक्ल	-	प्रेमघन की छाया - स्मृति
2.	पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी	-	सुमिरिनी के मनके
3.	फणीश्वरनाथ रेणु	-	संबदिया
4.	भीष्म साहनी	-	गांधी नेहरू और यास्सेर अराफात
5.	असगर वजाहत	-	शेर, पहचान, चार हाथ, साझा
6.	निर्मल वर्मा	-	जहाँ कोई वापसी नहीं
7.	ममता कालिया	-	दूसरा देवदास
8.	हजारी प्रसाद द्विवेदी	-	कुटज

---

पाठ-1

## रामचन्द्र शुक्ल



## प्रेमघन की छाया-स्मृति

**विधा :** संस्मरणात्मक निबंध (स्मृति के आधार पर लिखा गया निबंध)।

**प्रतिपाद्य/मूल संवेदना :** आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का एक ऐसा रेखाचित्रात्मक संस्मरण उकेरना चाहते हैं जिससे पाठकों के मनोमस्तिष्क पर प्रेमघन की छवि, व्यवहार, रहन-सहन, खानपान, अभिरूचि, पहनावा, बातचीत की शैली, चाल ढाल, विनोदप्रियता तथा हिन्दी भाषा के प्रति उनके विचार आदि का सजीव चित्र अंकित हो सके।

### पाठ का सार

**शुक्ल जी के बचपन का साहित्यिक वातावरण :** शुक्ल जी को बचपन से घर में साहित्यिक वातावरण मिला क्योंकि उनके पिता फारसी भाषा के अच्छे ज्ञाता थे तथा पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे। वे प्रायः रात्रि में घर के सब सदस्यों को एकत्रित करके 'रामचरित मानस' तथा 'रामचंद्रिका' को पढ़कर सुनाया करते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक उन्हें अत्यंत प्रिय थे। बचपने के कारण शुक्ल जी 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक के नायक राजा हरिश्चंद्र तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र में अन्तर समझ नहीं पाते थे।

**चौधरी प्रेमघन के प्रथम दर्शन :** पिता की बदली मिर्जापुर में होने पर अपने घर से प्रेमघन के घर की निकटता रहने के कारण शुक्ल जी को अपनी मित्र मंडली के साथ उनके प्रथम दर्शन हुए जिसमें लता-प्रतान के बीच वे मूर्तिवत खड़े थे, कंधों पर बाल बिखरे और एक हाथ बरामदे के खम्भे पर था।

**शुक्ल जी की साहित्य के प्रति बढ़ती रूचि :** पं. केदारनाथ के पुस्तकालय से पुस्तकें लाकर पढ़ते-पढ़ते शुक्ल जी की रूचि हिन्दी के नवीन एवं आधुनिक साहित्य के प्रति बढ़ गई व उनकी गहरी मित्रता केदारनाथ जी से भी हो गई। अपनी युवावस्था तक आते-आते शुक्ल जी को समव्यस्क 'हिन्दी प्रेमी लेखकों' की मंडली भी मिल गई। जहाँ शुक्ल जी रहते थे वह उर्दूभाषी वकीलों, मुख्तारों आदि की बस्ती थी। लेखक अपनी मित्र मंडली के साथ जब भी कोई बातचीत करते तो उस बातचीत में 'निस्संदेह' शब्द का बहुत बार प्रयोग होता था जिसे सुन-सुनकर उस बस्ती के लोगों ने इस लेखक मंडली का नाम 'निस्संदेह मंडली' रख दिया था।

**चौधरी प्रेमघन की व्यक्तिगत विशेषता :** प्रेमघन जी को खासा हिन्दुस्तानी रईस बताया गया है। उनकी हर बात में तबीयतदारी टपकती थी। बसंत-पंचमी, होली आदि त्यौहारों पर उनके घर में खूब नाच-रंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी बातें विलक्षण वक्रता (व्यंग्यात्मकता) लिए रहती थी। चौधरी साहब प्रायः लोगों को बनाया करते थे। वे प्रसिद्ध कवि होने के साथ-साथ भाषा के विद्वान भी थे।

### प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दूभाषी लोग उन्हें किस नाम से पुकारते थे तथा क्यों?

**उत्तर :** शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दूभाषी लोग उन्हें 'निस्संदेह-मंडली' के नाम से पुकारने लगे थे। क्योंकि उन्हें लेखक मंडली की बोली अनोखी लगती थी। जिसमें

'निस्संदेह' शब्द का प्रयोग बहुत होता था जबकि वहाँ रहने वाले वकील, मुख्तार तथा कचहरी के अफसरों की भाषा उर्दू थी। इसलिए लेखक मंडली का नाम उन्होंने 'निस्संदेह मंडली' रख दिया था।

**प्रश्न 2 :** लेखक का रूझान और रूचि साहित्य की ओर कैसे बढ़ती गई?

**उत्तर :** शुक्ल जी की अभिरूचि हिन्दी के नवीन एवं आधुनिक साहित्य के प्रति बढ़ गई क्योंकि उन्होंने पंडित कंदारनाथ के पुस्तकालय से पुस्तकें ला-लाकर पढ़ना आरम्भ किया। लेखक जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर उनका झुकाव बढ़ता गया। उनके घर में जीवन-प्रेस की पुस्तकें आती थीं जिन्हें वे बड़े चाव से पढ़ते थे। ऐसे ही उनका रूझान व रूचि साहित्य के प्रति बढ़ती गई।

**प्रश्न 3.** प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है ?

**उत्तर :** प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी के व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं को उजागर किया है :-

1. चौधरी साहब एक रईस की तरह रहते थे।
2. उनका व्यक्तित्व आकर्षक तथा बाल कंधों तक थे।
3. वे सभी त्यौहारों पर नाच-रंग का आयोजन करते थे।
4. उनकी हर एक अदा से रियासत व तबीयतदारी टपकती थी।
5. वे छोटे से छोटे काम के लिए नौकरों पर निर्भर रहते थे।
6. नौकरों के साथ संवाद करने का उनका लहजा सुनने लायक होता था।
7. वे नागरी को भाषा मानते थे और उसी में लिखते भी थे।

**सप्रसंग व्याख्या :** चौधरी साहब तो ..... अक्सर लगा रहता था।

**सन्दर्भ :** पाठ - प्रेमघन की छाया स्मृति।

लेखक - पं. रामचंद्र शुक्ल।

**प्रसंग :** इन पंक्तियों में लेखक ने चौधरी प्रेमघन जी के घर के वातावरण का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में हिन्दुस्तानी संस्कार ही बसते थे।

**व्याख्या :** शुक्ल जी का आना-जाना प्रेमघन जी के घर में एक लेखक के रूप में होने लगा था। प्रेमघन जी को देखकर शुक्ल जी उन्हें कौतुहल की दृष्टि से देखा करते थे। क्योंकि वे प्रेमघन जी को प्राचीन कवियों के रूप में देखते थे। वे हिन्दुस्तानी रईसों की भाँति जीवन व्यतीत करते थे। अर्थात् उनके घर में होली, वसंत पंचमी के उत्सव पूरे जोश और उल्लास के साथ मनाए जाते थे। जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक साफ दिखाई पड़ती थी। उनकी बातचीत का ढंग नौकरों के साथ अनूठा होता था।

**विशेष :-**

1. **भाषा** : प्रवाह पूर्ण, खड़ी बोली, बोलचाल की भाषा शैली अपनाई है।
2. **शब्द भंडार** : तत्सम्, तद्भव शब्द चयन किया है जिनका सटीक प्रयोग किया गया है।
3. **लोकोक्ति/मुहावरा** : तबीयतदारी टपकना, काँट छौँट करना।
4. **शब्द शक्ति** : अभिधा शब्द शक्ति
5. **शैली** : वर्णनात्मक

**बहुविकल्पीय प्रश्न**

**प्रश्न 1.** उच्च कोटि के आलोचक, इतिहासकार और साहित्य चिंतक हैं।

- |                       |                            |
|-----------------------|----------------------------|
| (क) जयशंकर प्रसाद     | (ख) निर्मल वर्मा           |
| (ग) राहुल सांकृत्यायन | (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल |

**प्रश्न 2.** हिन्दी साहित्य के इतिहास को क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित करने तथा कवियों की सम्यक समीक्षा करने का श्रेय किसे दिया जाता है ?

- |                    |                           |
|--------------------|---------------------------|
| (क) शिवसिंह सेंगर  | (ख) रामचन्द्र शुक्ल       |
| (ग) रामकुमार वर्मा | (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी |

**प्रश्न 3.** शुक्ल जी के निबंधों की क्या प्रधानता थी?

- |                      |                       |
|----------------------|-----------------------|
| (क) भाव और मनोविकार  | (ख) श्रद्धा एवं भक्ति |
| (ग) 'क' और 'ख' दोनों | (घ) इनमें से कोई नहीं |

**प्रश्न 4.** शुक्ल जी की कीर्ति का अक्षय स्रोत है -

- |                             |                                       |
|-----------------------------|---------------------------------------|
| (क) हिंदी शब्द भंडार        | (ख) हिंदी साहित्य में संत परंपरा      |
| (ग) हिंदी साहित्य का इतिहास | (घ) हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास |

**प्रश्न 5.** प्रेमघन की छाया-स्मृति किस विधा पर आधारित रचना है?

- |                     |               |
|---------------------|---------------|
| (क) रेखाचित्र       | (ख) संस्मरण   |
| (ग) यात्रा-वृत्तांत | (घ) रिपोतार्ज |

**प्रश्न 6.** लेखक के पिताजी के द्वारा घर में प्रायः किन पुस्तकों का चित्ताकर्षक ढंग से पाठन कार्य किया जाता था ?

- |                       |                                     |
|-----------------------|-------------------------------------|
| (क) रामायण और उपनिषद् | (ख) शिवपुराण और गरुड़ पुराण         |
| (ग) श्रीमद्भागवत गीता | (घ) रामचरित मानस और रामचन्द्रिका का |

**प्रश्न 7.** 'लता प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी' उचित कथन किसके परिप्रेक्ष्य में है?

- (क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ख) उपाध्याय बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'  
(ग) भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र (घ) पं. केदारनाथ जी पाठक

**प्रश्न 8.** चौधरी साहब के यहाँ किन उत्सवों पर नाचरंग का आयोजन धूम-धाम से किया जाता था ?

- (क) दीपावली और होली (ख) होली और चैत्र नवरात्रि  
(ग) बसंत पंचमी और होली (घ) दीपावली और बसंत पंचमी

**प्रश्न 9.** "खंभा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की।" उक्त कथन किस साहित्यकार के द्वारा कहा गया।

- (क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ख) चौधरी बदरी नारायण प्रेमघन  
(ग) वामनाचार्य गिरि (घ) भगवानदास जी

**प्रश्न 10.** पं. लक्ष्मीनारायण चौबे, बा. भगवानदास हालना तथा बा. भगवानदास मास्टर के द्वारा किस विनोदपूर्ण पुस्तक का सृजन कार्य किया गया ?

- (क) रुस्तमे-ए-हिंद (ख) उर्दू बेगम  
(ग) सोजे वतन (घ) बेगम खलीफा

ई सामग्री-

प्रेमघन की छाया  
स्मृति -1, रामचन्द्र  
शुक्ल



प्रेमघन की छाया स्मृति  
-2, रामचन्द्र शुक्ल





## पठित गद्यांश रामचन्द्र शुक्ल

भारतेन्दु मंडल की किसी जीव स्मृति के प्रति मेरी कितनी उत्कंठा रही होगी, यह अनुमान करने की बात है। मैं नगर से बाहर रहता था। एक दिन बालकों की मंडली जोड़ी गयी। जो चौधरी साहब के मकान से परिचित थे, वे अगुआ हुए। मील डेढ़ का सफर तै हुआ। पत्थर के एक मकान के सामने हम सब जा खड़े हुए। नीचे का बरामदा खाली था। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से आवृत था। बीच-बीच में खंडों और खुली जगह दिखाई पड़ती थी। उसी ओर देखने के लिए मुझसे कहा गया। कोई दिखाई नहीं पड़ा। सड़क पर कई चक्कर लगे। कुछ देर पीछे एक लड़के ने ऊगली से ऊपर की ओर इशारा किया। लता-प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी। दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे। एक हाथ खंडों पर था। देखते ही देखते वह मूर्ति दृष्टि से ओझल हो गयी। बस, यही पहली झाँकी थी।

निम्नलिखित में से विकल्पों का चयन कीजिए।

1. चौधरी साहब के मकान से कौन परिचित थे?
  - (i) लेखक
  - (ii) बालकों की मंडली
  - (iii) पिताजी
  - (iv) कुछ लेखक
2. मकान कैसा था?
  - (i) पत्थर से बना
  - (ii) ईंटों से बना
  - (iii) संगमरमर से बना
  - (iv) कच्चा था
3. ऊपर का बरामदा किससे ढँका था?
  - (i) जाली से
  - (ii) लताओं से
  - (iii) काँटों से
  - (iv) फूलों से
4. ऊपर खड़े व्यक्ति के बाल कहाँ थे?
  - (i) कंधो पर
  - (ii) सिर पर
  - (iii) कपड़ों पर
  - (iv) खंभे पर
5. लेखक की किस मंडली के प्रति सजीव उत्कंठा थी?
  - (i) साहित्यिक मंडल
  - (ii) कवि मंडल
  - (iii) भारतेन्दु मंडल
  - (iv) लेखक मंडल

## सुमिरिनी के मनके बालक बच गया

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य** - वर्तमान शिक्षा पद्धति को गुलेरी जी राष्ट्र के लिए घातक मानते हैं। धर्म, विज्ञान, प्रकृति, या पौराणिकता - व्यावहारिक शिक्षा बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। लेखक, बचपन को जीवित रखते हुए ही बच्चों को शिक्षित करने के पक्षधर हैं।

### पाठ का सार

**बालक की विद्वता का प्रदर्शन** : विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रधानाध्यापक का पुत्र अपनी विद्वता का प्रदर्शन करता दिखता है जिसे देख पिता और अध्यापक फूले नहीं समा रहे हैं।

**लेखक द्वारा बालक के 'बचपन' के बचने की संतुष्टि** : वृद्ध महाशय द्वारा इनाम माँगने के प्रस्ताव पर बच्चे के चेहरे पर एक रंग आता है एक रंग जाता है। जब 'लड्डू' शब्द उस बच्चे के मुख से सुनते हैं तब लेखक को महसूस होता है कि 'बालक बच गया' अर्थात् उसके बचपन का भाव अभी उसमें ही निहित है क्योंकि 'लड्डू' की मांग उसके बालपन की स्वाभाविक मांग है।

### प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1** : बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों ली?

**उत्तर** : बालक के पिता व उनके शिक्षकों ने बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गला घोटने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लेखक बैठा-बैठा उस बालक के प्रश्नों को सुन रहा था और सोच रहा था कि क्या किसी बालक को जिसकी अभी खेलने-खाने की उम्र हो उस पर शिक्षा का इस प्रकार का दबाव उचित है? जब बालक ने लड्डू माँगा तो लेखक को लगा कि अभी इस बालक का बचपन मरा नहीं है। अभी भी इसको इस दबाव से उबारा जा सकता है। लेखक के द्वारा सुख की साँस लेने का यही कारण था।

**प्रश्न 2.** बालक की प्रवृत्तियों का गला घोंटना अनुचित है पाठ में ऐसा आभास किन स्थलों पर होता है कि उसकी प्रवृत्तियों का गला घोंटा जा रहा है।

**उत्तर :** बालक जब वार्षिकोत्सव के मंच पर खड़ा था तब उसका मुँह पीला, आँखें सफेद, दृष्टि भूमि से उठती नहीं थी।

जब बालक से इनाम माँगने को कहा गया तब बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था। कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक बालक की आँखों में साफ दिखाई दे रही थी। उसकी इस दशा से पता चलता है कि स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गला घोंटा जा रहा था।

**सप्रसंग व्याख्या :** उसके बचने की आशा ..... वाली खड़खड़ाहट नहीं।

**सन्दर्भ :** पाठ - बालक बच गया।

**लेखक -** पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

**प्रसंग :** इन पंक्तियों में लेखक ने शिक्षा को जबरदस्ती बच्चे पर थोपने की प्रवृत्ति की तुलना सूखी लकड़ी से व लड्डू माँगने की स्वाभाविकता की तुलना हरी लकड़ी से की है।

**व्याख्या :** बालक के लड्डू माँगने पर लेखक ने राहत की साँस ली और पाया कि बच्चों में बचपन की स्वाभाविकता अभी भी शेष बची है। उसके द्वारा लड्डू की माँग वास्तव में जीवित और हरे पेड़ के पत्तों की जीवित ध्वनि के समान है जो सभी को संगीतमय लगती है। शांति और मधुरता का आभास देती है जबकि बच्चे को कठिन से कठिन प्रश्नों का उत्तर रटवाना सूखी लकड़ी की कर्कश चरमराहट ध्वनि के समान है जिसकी चौखट बना दी जाती है और खड़खड़ाहट कानों को चुभती है।

### विशेष

1. भाषा - प्रवाह पूर्ण, खड़ी बोली, विषयानुकूल भाषा प्रयोग।
2. शब्द भंडार - तत्सम्, तद्भव उर्दू शब्द का प्रयोग।
3. शब्द शक्ति - लक्षणा एवम् व्यंजना शब्द-शक्ति।
4. शैली - प्रवाहमयी, विचारात्मक

## घड़ी के पुर्जे

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य** - लेखक ने घड़ी के पुर्जों के माध्यम से धर्म-विषयक बखान या उपदेश करने वालों पर व्यंग्य किया है। धर्म के रहस्यों को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों को घड़ी के दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट किया गया है। सभी मनुष्यों को भी धर्म के रहस्यों को जानने का अधिकार है।

### पाठ का सार

**धर्म का प्राचीन स्वरूप** : धर्माचार्य अपने पूर्वजों से प्राप्त धर्म संबंधी ज्ञान को अपने तक ही सीमित रखना चाहते हैं तथा लंबे लंबे उपदेश देकर अपनी विद्वता आम लोगों पर थोपना चाहते हैं। धर्म से जुड़ी बातों में कुछ भी नया या वैज्ञानिक नहीं लाना चाहते हैं अपितु अपने प्राचीन ज्ञान से ही जनता पर अपनी प्रतिष्ठा बनाना चाहते हैं।

**घड़ी के पुर्जों के माध्यम से धर्म के रहस्य की व्याख्या** : लेखक ने घड़ी के पुर्जों की जानकारी को केवल घड़ीसाज तक ही सीमित नहीं रखा है। अपितु वे साधारण व्यक्तियों को भी घड़ी को खोलकर देखने, उसके कल-पुर्जे साफ करके फिर से जोड़ने का अधिकार देना चाहते हैं। अर्थात् धर्म के गूढ़ रहस्य धर्मोपदेशकों तक ही सीमित न रहें, जन-सामान्य को भी उसके गहरे अर्थों को समझने का अधिकार देना चाहिए।

### प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1** : लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का ही दृष्टान्त क्यों चुना?

**उत्तर** : लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का उदाहरण लिया है क्योंकि उन्होंने घड़ी को केवल समय बताने वाली मशीन समझने तक ही सीमित न मान कर, घड़ी को खोलकर देखने, उसकी साफ-सफाई, कल-पुर्जों के विषय में जानकारी हासिल करने का अधिकार सबका होना चाहिए ऐसा माना है इसी प्रकार धर्म से संबंधित बातें धर्मोपदेशकों तक ही सीमित न रहें। सभी को उसके अर्थों का बोध (ज्ञान) कराया जाना चाहिए।

**प्रश्न 2**. 'अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो'- आशय स्पष्ट कीजिए,

**उत्तर :** इस कथन का आशय यह है कि ऐसे व्यक्ति से कोई काम मत करवाओ जो उसके बारे में न जानता हो। यही स्थिति धर्म की भी है। जिस व्यक्ति को धर्म के बारे में पूरी जानकारी है उससे धर्म के बारे में चर्चा कीजिए किंतु जिसे धर्म का तनिक ज्ञान नहीं उससे धर्म संबंधित ज्ञान न लें। जिस तरह घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया व्यक्ति खराब घड़ी सही कर सकता है वही स्थिति धर्म पर भी लागू होती है।

**सप्रसंग व्याख्या :** धर्म का रहस्य जानने ..... कई बातें निकल आवें।

**सन्दर्भ:** पाठ - घड़ी के पुर्जे।

**लेखक -** पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

**प्रसंग :** लेखक का मत है कि धर्म मुट्ठीभर धर्माचार्यों तक ही सीमित न रहे अपितु आम लोग भी उसका रहस्य समझ सकें, जिससे समाज का समग्र विकास हो सके।

**व्याख्या -** धर्माचार्यों का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति को धर्म के रहस्य को जानने की इच्छा नहीं करना चाहिए। ये लोग घड़ी का दृष्टान्त देकर अपने मत का समर्थन लोगों से तालियाँ पिटवाकर करते हैं। घड़ी का काम है समय बताना। यदि तुम्हें घड़ी देखना नहीं आता तो किसी ऐसे व्यक्ति की मदद ले सकते हो 'जिसे घड़ी का पूर्ण ज्ञान हो। इसी तरह धर्म के बारे में भी धर्माचार्य से पूछकर काम चलाओ। तात्पर्य यह है कि धर्माचार्य नहीं चाहते कि आम व्यक्ति धर्म की गहराई में जाए। आम व्यक्ति को धर्म का रहस्य जानने का अधिकारी नहीं है अपितु धर्म का रहस्य तो वेदशास्त्र के ज्ञाता धर्माचार्य ही समझ सकते हैं। घड़ी के पुर्जों अर्थात् धर्म के रहस्य की बातों से आम आदमी का वास्ता नहीं है।

## विशेष

1. भाषा : विषयानुकूल खड़ी बोली।
2. शब्द भंडार : तत्सम, तद्भव उर्दू शब्दों का प्रयोग।
3. शब्द शक्ति : लक्षणा व्यंजना शब्द-शक्ति।
4. शैली : विचारात्मक।

## ढेले चुन लो

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य :** यह निबंध लोक-जीवन में व्याप्त अंधविश्वासों पर व्यंग्य करता है जो हमारे समाज की गहन तथा गंभीर समस्या है। लेखक का मत है कि अपनी आँखों से देखे सत्य को ही सत्य मानना चाहिए। भविष्य की झूठी कल्पना पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

### पाठ का सार

**समाज में व्याप्त अंधविश्वास :** अपने जीवनसाथी को चुनने के लिए सोने चाँदी तथा लोहे की पेटियाँ अथवा विभिन्न स्थानों की मिट्टी के ढेलों पर विश्वास एक अंधविश्वास मात्र है, जिसका कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है। ऐसे अंधविश्वास समाज के सहायक न होकर घातक सिद्ध होते हैं।

**वर्तमान पर विश्वास :** लेखक मोर, कबूतर, मोहर, पहाड़, चक्की इत्यादि विभिन्न उदाहरण देकर अपने विचार पुष्ट करते हैं कि भविष्य की नींव कल्पना मात्र पर न टिकाकर सत्य की मजबूत धरती पर खड़ी करनी चाहिए। वर्तमान के सत्य को नकारना नहीं चाहिए तथा भविष्य की कल्पना को सत्य मान स्वीकारना नहीं चाहिए।

**प्रश्न 1 :** 'ढेले चुन लो' पाठ में किस अंधविश्वास की ओर संकेत किया गया है?

**उत्तर :** इस पाठ में जिस विवाह-रीति का वर्णन किया गया है, वह अंधविश्वास की प्रतीक है जिसमें मिट्टी के ढेलों के आधार पर वधू को चुना जाता है। लड़की के सामने खेत की, हवन की, चारागाह की व श्मशान की मिट्टी के ढेले रखे जाते थे। लड़की जिसे उठा ले उसका भविष्य उसी के आधार पर निर्धारित होता था। यह अंधविश्वास ही था कि श्मशान की मिट्टी के ढेले उठाने पर अपशुन होगा। ज्योतिष संबंधी अंधविश्वास पर कटाक्ष किया गया है।

**सप्रसंग व्याख्या :** आज का कबूतर ..... तेजपिंड से।

**सन्दर्भ :** पाठ - ढेले चुन लो।

लेखक - पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

**प्रसंग :** लेखक ने लोक-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास से भरी हुई मान्यताओं का खंडन किया है।

**व्याख्या :** लेखक का मत है कि हमें वर्तमान पर विश्वास करते हुए जीना चाहिए। जो आज उपलब्ध है वही सत्य है और अपना है। कल की कल्पना में आशा करते हुए जीना व्यर्थ है। लेखक उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि यदि आज कबूतर उपलब्ध है तो भविष्य में मिलने वाले मोर की कल्पना करते-करते कबूतर भी मत छोड़ देना। आज यदि पैसा हाथ में है कल स्वर्ण-मोहर की कल्पना से उन पैसों को मत छोड़ो क्योंकि आँखों देखा ही सत्य है। लाखों कोस दूर मंगल, बुध, शनि ग्रह पर विश्वास न कर वर्तमान की स्थिति और सच्चाई पर विश्वास करो।

### विशेष

1. भाषा - आम बोलचाल की सरल व सहज भाषा है।
2. शब्द भंडार - तद्भव शब्द प्रधान खड़ी-बांग्ली।
3. शब्द शक्ति - लक्षणा शब्द शक्ति एवम् व्यंजना शब्द शक्ति।
4. शैली - विचारात्मक, व्यंग्यात्मक

### बहुविकल्पीय प्रश्न

**प्रश्न 1.** गुलेरी जी को किस उपाधि से सम्मानित किया गया ?

- |                   |                    |
|-------------------|--------------------|
| (क) मैथिल कोकिल   | (ख) इतिहास दिवाकर  |
| (ग) साहित्य शलाका | (घ) साहित्य दिनमान |

**प्रश्न 2.** 'उसने कहा था' कहानी किसका पर्याय बन चुका है?

- |                         |                              |
|-------------------------|------------------------------|
| (क) ममता कालिया         | (ख) असगर वजाहत               |
| (ग) पं. रामचन्द्र शुक्ल | (घ) पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी |

**प्रश्न 3.** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्य विभाग के प्राचार्य 'गुलेरी' जी किसके कहने पर बने ?

- |                                |                            |
|--------------------------------|----------------------------|
| (क) पं. मदन मोहन मालवीय        | (ख) आचार्य श्यामसुन्दर दास |
| (ग) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी | (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल |

**प्रश्न 4.** 'बालक बच गया' कहानी का मूल प्रतिपाद्य है?

- (क) बालक का मेधावी होना (ख) बालक का शिक्षा ग्रहण करना  
(ग) शिक्षा ग्रहण की सही उम्र (घ) बालक के बचपन का बच जाना

**प्रश्न 5.** व्यक्ति के बौद्धिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है -

- (क) शिक्षित होना (ख) खेलना  
(ग) शारीरिक मजबूती (घ) इनमें से कोई नहीं।

**प्रश्न 6.** प्रस्तुत पाठ में धर्म के रहस्यों को जानने तथा धर्म उपदेशकों के द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को किस कहानी के माध्यम से व्यक्त किया गया है ?

- (क) बालक बच गया (ख) ढंले चुन लो  
(ग) घड़ी के पुर्जे (घ) क और ग

**प्रश्न 7.** वृद्ध महाशय के द्वारा इनाम देने की बात पर बालक ने क्या माँगा?

- (क) किताबें (ख) मिठाई  
(ग) बरफी (घ) लड्डू

**प्रश्न 8.** 'ढंले चुन लो' कहानी में उल्लिखित 'दुर्लभ बंधु' नाटक के लेखक हैं?

- (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी  
(ग) शेक्सपीयर (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

**प्रश्न 9.** आश्वलायन, गोभिल, भारद्वाज नामक गृह्यसूत्रों में क्या उल्लिखित है?

- (क) ढेलों के चुनाव का (ख) ढेलों की लाटरी का  
(ग) क और ख (घ) इनमें से कोई नहीं

## पठित गद्यांश

### पंडित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ( घड़ी के पुर्जे )

धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना जानने वाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किन्तु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्जे गिन ले, उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ करके फिर लगा दें - यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं। यह तो वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जानें, तुम्हें इससे क्या ? क्या इस उपमा से



जिज्ञासा बंद हो जाती है ? इसी दृष्टांत को बढ़ाया जाए तो जो उपदेशक जी कह रहे हैं उसके विरुद्ध कई बातें निकल आवें ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. धर्म के रहस्य जानने की इच्छा कौन ना करे -

- (i) प्रत्येक मनुष्य (ii) लेखक  
(iii) उपदेशक (iv) इनमें से कोई नहीं

2. धर्माचार्यों का क्या कहना है?

- (i) प्रत्येक व्यक्ति को धर्म का रहस्य जानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए  
(ii) हम जो कहें, केवल उसी को सुनें  
(iii) क व ख दोनों (iv) इनमें से कोई नहीं

3. धर्माचार्यों किस वस्तु का उदाहरण देते हैं?

- (i) घड़ी का (ii) पुर्जों का  
(iii) समय का (iv) किसी का नहीं

4. आद आदमी के वश की क्या बात नहीं है ?

- (i) धर्म का रहस्य जानना (ii) चुप रहना  
(iii) घड़ी ठीक करना (iv) घड़ी देखना

5. वेदशास्त्र धर्माचार्यों का क्या कार्य है ?

- (i) घड़ी को भली-भाँति देखना (ii) घड़ी को ठीक करना  
(iii) घड़ी के पूजों के बारे में जानना (iv) उपरोक्त सभी

ई सामग्री-

सुमिरनी के मनके  
( लघु-निबंध ) भाग-1  
चंद्रधर शर्मा गुलेरी



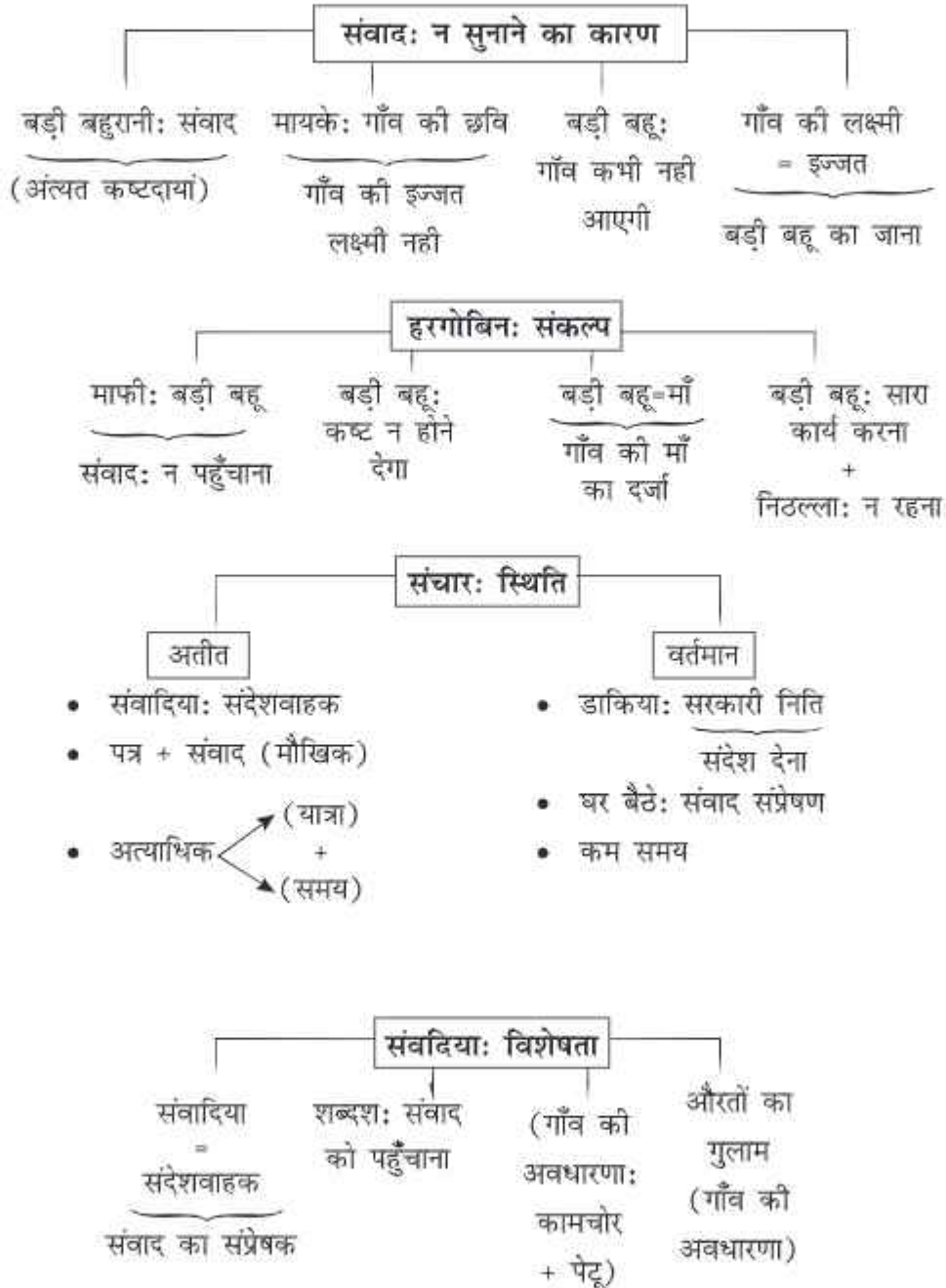
सुमिरनी के मनके  
( लघु-निबंध ) भाग-2  
चंद्रधर शर्मा गुलेरी

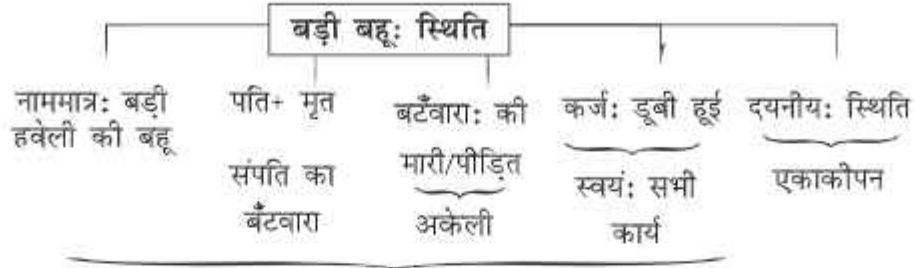


सुमिरनी के मनके  
( लघु-निबंध ) भाग-3  
चंद्रधर शर्मा गुलेरी



## फणीश्वर नाथ रेणु





(बड़ी बहुरिया: संदेश भेजने का कारण मायके)



## संवदिया

**विधा :** कहानी।

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य :** संवदिया कहानी में मानवीय संवेदना की गहन और विलक्षण पहचान हुई है। इसमें असहाय और सहनशील नारी-मन के कोमल तन्तु को, उसके दुःख और करुणा को पीड़ा और यातना की सूक्ष्म पकड़ हुई है। इस कहानी में रेणु जी ने बड़ी बहुरिया की पीड़ा को, उसके भीतर के हाहाकार को संवदिया के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है।

## पाठ का सार

**संवदिया की विशेषता :** संवदिया अर्थात् संदेशवाहक जो बिना लालच के संवाद पहुँचाने का काम करता है। संवाद के प्रत्येक शब्द, भावना, स्वर का ध्यान रखते हुए उसी ढंग से जाकर सुनाना संवदिया की विशेषता है। गांव के लोग उसे निठल्ला, कामचोर तथा पेटू समझते हैं।

**बड़ी बहुरिया की सामाजिक, आर्थिक व मानसिक स्थिति :** बड़ी बहुरिया की सामाजिक व आर्थिक स्थिति पहले बहुत अच्छी थी। हवेली में नौकर चाकरों की भीड़ लगी रहती थी। तब बड़ी बहुरिया के हाथों में मेहंदी लगा कर ही नाइन अपने परिवार का पेट पालती थी। किंतु अब उनकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चली थी कि वह अपना गुजारा उधार लेकर ही चला रही थी। इसी दुख से वह अपने मायके हरगोबिन के हाथ संदेश भेजना चाहती थी, क्योंकि वह इसी वजह से मानसिक यातना झेल रही थी।

**बड़ी बहुरिया का संदेश :** अपने आर्थिक दुख के कारण वह अपने मायके हरगोबिन के हाथों संदेश भेजना चाहती है कि भाई आकर उसे लिवा ले जाए। नहीं तो वह पोखरे में डूबकर जान दे देगी। बथुआ साग खा-खाकर कब तक जीऊँ? किसके लिए जीऊँ? किसलिए जीऊँ?

**हरगोबिन का मानसिक द्वंद :** बड़ी बहुरिया के संवाद का एक-एक शब्द हरगोबिन के मन में काँटे की तरह चुभ रहा था तथा वह बड़ी बहुरिया की वेदना, बंबसी, पीड़ा और दुःख समझ रहा था जिससे उसे स्वयं मानसिक पीड़ा हो रही थी। वह उसके मायके में कैसे संवाद सुनाएगा। गांव वाले उस पर थूकेंगे। कैसा गांव है-जहाँ लक्ष्मी जैसी बड़ी बहुरिया दुःख भोग रही है। उसके मन में अपने गाँव तथा बड़ी बहुरिया की बहुत इज्जत थी। वह बड़ी बहुरिया को गांव छोड़कर नहीं जाने देगा।

**हरगोबिन का संकल्प :** अपने गांव वापिस पहुँचने पर उसने बड़ी बहुरिया के पाँव पकड़ लिए। माफी माँगते हुए उसका संदेश न पहुँचाने की बात कही। साथ ही स्वयं को उसका बेटा बताते हुए संकल्प लेता है कि वह उसकी माँ समान है, पूरे गांव की माँ समान है। वह आग्रह करता है कि वह गाँव छोड़कर न जाए। साथ ही संकल्प लेता है कि अब वह निठल्ला नहीं बैठा रहेगा। उन्हें (बड़ी बहुरिया) गाँव में कोई कष्ट नहीं होने देगा। उनके सभी काम करेगा।

## प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन उसके मायके तक क्यों नहीं पहुँचा सका?

**उत्तर :** बड़ी बहुरिया की मानसिक पीड़ा और यातना को हरगोबिन अच्छी तरह समझ रहा था। उसके मायके पहुँचकर वहाँ का खुशनुमा वातावरण व आवभगत देखकर उसकी हिम्मत नहीं हुई क्योंकि इससे हरगोबिन को अपने गांव की इज्जत भी मिट्टी में मिलती दिख रही थी तथा लग रहा था कि फिर गांव की लक्ष्मी सदा के लिए गांव छोड़कर चली जाएगी। उसकी वेदना का समाचार वह किस मुँह से सुनाएगा।

**प्रश्न 2.** जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या संकल्प लिया? इससे उसकी कौन सी विशेषता उद्घाटित होती है?

**उत्तर :** जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने यह संकल्प लिया कि अब वह उसे कोई कष्ट नहीं होने देगा। अब वह बड़ी बहुरिया का सारा काम करेगा। बड़ी बहुरिया उसकी माँ है, सारे गाँव की माँ है। अब उसे गाँव छोड़ कर जाने की आवश्यकता नहीं है। इस भाव से हरगोबिन की कर्तव्यनिष्ठा तथा स्वामिभक्ति की भावना उद्घाटित होती है जो उसके चरित्र को और अधिक मजबूत बनाती है।

**प्रश्न 3.** संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं और गांव वालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

**उत्तर :** संवदिया वातावरण सूँघ कर ही संवाद का अनुमान लगा लेता है। वह बहुत भावुक है। वह एक संवेदनशील और समझदार इंसान है। वह ईमानदार और दूसरों का मददगार है। वह चतुर है। गांव वालों के मन में संवदिया की यह अवधारणा है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का कार्य करता है। जिसके आगे-पीछे कोई नहीं होता। बिना मजदूरी के ही जो संवाद पहुँचाता है वह औरतों का गुलाम होता है।

**सप्रसंग व्याख्या :** बड़े भैया के मरते ही जैसे सब ..... बेचारी बड़ी बहुरिया।

**सन्दर्भ :** पाठ - संवदिया

लेखक - फणीश्वर नाथ 'रेणु'

**प्रसंग :** इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने बड़ी बहुरिया की आर्थिक स्थिति खराब होने का कारण पति की मृत्यु के पश्चात् उसके भाईयों में परस्पर गृह क्लेश को बताया है।

**व्याख्या :** बड़ी बहुरिया के पति की मौत के बाद घर की रैनक ही चली गई। परिवार बिखर गया क्योंकि सारी सम्पत्ति का बंटवारा सभी भाईयों ने आपस में कर लिया और गांव छोड़कर चले गए। बड़ी बहुरिया के पास मायके जाने के अतिरिक्त और कोई स्थान नहीं है। बड़े भईया की मृत्यु के पश्चात् घर का जो हाल हुआ वह बहुत कष्टदायी था। वह केवल एक 'बेचारी' बनकर रह गई। उसकी भावनाओं की किसी ने कद्र नहीं की।

### विशेष

1. भाषा - लोकजीवन से जुड़ी आंचलिक भाषा का प्रयोग है।
2. शब्दावली - आंचलिक शब्दों का प्रयोग।
3. लोकोक्ति/मुहावरा - खेल खत्म हो जाना, दावा करना, लीला करना।
4. शब्द शक्ति - अभिधा शब्द-शक्ति।
5. शैली - भावात्मक और प्रवाहपूर्ण

### बहुविकल्पीय प्रश्न

**प्रश्न 1.** 'रेणु' जी ने सन् 1942 ई. में किस स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया?

- |                  |                      |
|------------------|----------------------|
| (क) भारत छोड़ो   | (ख) साइमन कमीशन      |
| (ग) इरविन समझौता | (घ) सत्याग्रह आंदोलन |

**प्रश्न 2.** हिन्दी के आंचलिक कथाकार हैं :-

- |                            |                     |
|----------------------------|---------------------|
| (क) महावीर प्रसाद द्विवेदी | (ख) फणीश्वरनाथ रेणु |
| (ग) जैनेन्द्र              | (घ) इलाचन्द्र जोशी  |

**प्रश्न 3.** 'रेणु' जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किस लेखक की विरासत को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास किया?

- |                      |                           |
|----------------------|---------------------------|
| (क) मुंशी कन्हैयालाल | (ख) राय कृष्णदास 'स्नेही' |
| (ग) मुंशी प्रेमचन्द  | (घ) राधिका रमण प्रसाद     |

**प्रश्न 4.** आत्मा के शिल्पी रेणु के द्वारा किस कहानी में मानवीय संवेदना को गहन एवं विलक्षण पहचान प्रस्तुत हुई है?

- |                 |               |
|-----------------|---------------|
| (क) मैला आँचल   | (ख) संवदिया   |
| (ग) परती परिकथा | (घ) तीसरी कसम |

**प्रश्न 5.** हरगोबिन के आश्चर्य का क्या कारण था?

- (क) संदेशवाहक होना (ख) बड़ी बहुरिया के द्वारा बुलाया जाना  
(ग) गाँव-गाँव में डाकघर का खुलना (घ) सभी।

**प्रश्न 6.** द्रौपदी चीर-हरण लीला! से तात्पर्य है?

- (क) घर का बंटवारा होना।  
(ख) बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े करके बाँटना  
(ग) क और ख  
(घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 7.** बड़ी बहुरिया के गाँव का नाम था -

- (क) बिहपुर (ख) जलालगढ़  
(ग) खगड़िया (घ) बरौनी

**प्रश्न 8.** संवदिया डटकर खाता है और 'अफर' कर सोता है - उक्त कथन किसके बारे में है?

- (क) हरगोबिन (ख) बड़ी बहुरिया  
(ग) मायजी (घ) बड़े भैया

**प्रश्न 9.** हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संदेश माँ जी को क्यों नहीं दे पाया?

- (क) शर्मिन्दगी के कारण।  
(ख) पूरे गाँव की इज़्जत बचाने के कारण।  
(ग) बड़ी बहुरिया गाँव के लिए माँ लक्ष्मी स्वरूपा थी  
(घ) उपरोक्त सभी

**प्रश्न 10.** गाड़ी में बैठे हुए हरगोबिन के विचलित मन को शांति कैसे मिली?

- (क) निरगुन गायक के कारण  
(ख) नींद आ जाने के कारण  
(ग) बड़ी बहुरिया से पुनः मिलने की खुशी में  
(घ) प्राकृतिक दृश्यों से मन परिवर्तित हो जाने से

## पठित गद्यांश

### फणीश्वरनाथ रेणु ( संवदिया )

बड़े भैया के मरने के बाद ही जैसे सब खेल खत्म हो गया तीनों भाइयों ने आपस में लड़ाई झगड़ा शुरू किया। रैयतों ने जमीन पर दावे करके दखल किया। फिर तीनों भाई गाँव छोड़कर शहर जा बसे, रह गयी बड़ी बहुरिया-कहाँ जाती बेचारी! भगवान भले आदमी को कष्ट देते हैं। नहीं तो एक घंटे की बीमारी में बड़े भैया क्यों मरते? बड़ी बहुरिया की देह से जेवर खींच-छीनकर बँटवारे की लीला हुई थी।

हरगोविन ने देखी है अपनी आँखों से द्रौपदी चीर-हरण लीला। बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बँटवारा किया था, निर्दय भाईयों ने बेचारी बड़ी बहुरिया।

निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए।

1. बड़े भैया के मरने के बाद क्या हुआ ?

- (i) भाइयों में लड़ाई-झगड़े हुए।
- (ii) रैयतो ने जमीन पर दावे करके दखल किया।
- (iii) तीनों भाई शहर में जा बसे।
- (iv) उपर्युक्त सभी बातें

2. बड़ी बहुरिया के साथ क्या व्यवहार किया गया ?

- (i) उसके शरीर से जेवर खींच-छीनकर बाँटा गया।
- (ii) चीर-हरण की लीला हुई।
- (iii) उसकी बनारसी साड़ी के तीन टुकड़े किए गए
- (iv) उपर्युक्त सभी

3. 'बनारसी' शब्द व्याकरण में क्या है ?

- (i) संज्ञा
- (ii) सर्वनाम
- (iii) विशेषण
- (iv) क्रिया

4. संवादिया को क्या करना पड़ता है ?

- (i) संवाद का प्रत्येक शब्द याद रखना पड़ता है।
- (ii) संवाद जिस सुर-स्वर में कहा गया है, वैसे ही सुनाना पड़ता है।
- (iii) संवाद को सही जगह सही व्यक्ति तक पहुँचाना पड़ता है।
- (iv) उपर्युक्त सभी काम

5. तीनों भाईयों का बड़ी बहुरिया के प्रति कैसा बर्ताव था ?

- (i) दयालु
- (ii) निर्दयी
- (iii) वफादार
- (iv) स्वार्थी

ई सामग्री-

संवादिया ( कहानी )  
फणीश्वरनाथ रेणु-  
भाग 1



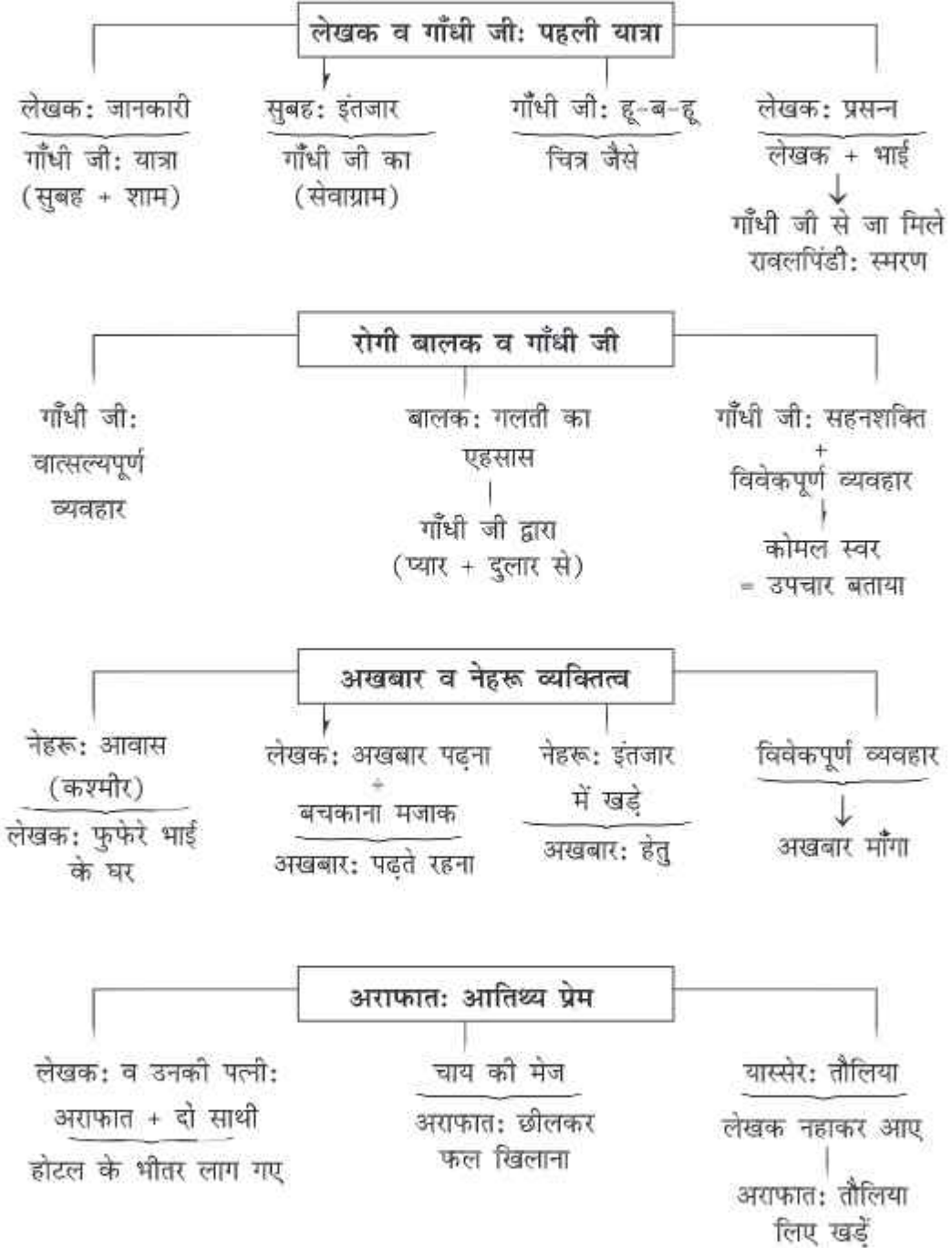
संवादिया ( कहानी )  
फणीश्वरनाथ रेणु-  
भाग 2

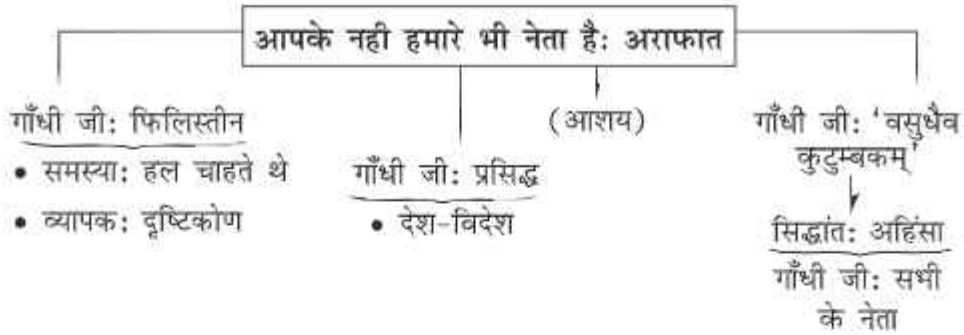




## भीष्म साहनी

गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात





### गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात ( भीष्म साहनी )

**विधा :** आत्मकथा (संस्मरण)

**पाठ की मूल संवेदना/प्रतिपाद्य :** भीष्म साहनी द्वारा रचित संस्मरण गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात, उनकी आत्मकथा 'आज के अतीत' का एक अंश है। इसमें लेखक ने किशोरावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अपने अनुभवों को स्मृति के आधार पर शब्दबद्ध किया है। जहाँ एक ओर गांधी और नेहरू के साथ बिताए निजी क्षणों का मार्मिक उल्लेख है वहीं यास्सेर अराफात के साथ बिताए निजी क्षणों को अंतर्राष्ट्रीय मैत्री जैसे मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

#### गांधी जी

**लेखक का गाँधी जी के साथ पहला अनुभव :** लेखक अपने भाई के साथ सेवाग्राम आया हुआ था। वहीं पर गांधी जी से उनकी प्रथम मुलाकात हुई। लेखक ने जैसा चित्रों में देखा था वे हूबहू वैसे ही लग रहे थे। वे तेजी से चलते हुए लेखक से धीमें स्वर में हंसते हुए बातचीत कर रहे थे।

**सेवाग्राम का वातावरण :** लेखक तीन सप्ताह तक सेवाग्राम में रहा। रोज शाम को प्रार्थना होती थी। वहाँ का वातावरण देशभक्तिपूर्ण था। कस्तूरबा गांधी लेखक को अपनी माँ जैसी प्रतीत होती थी। लेखक को वहाँ कई देशभक्तों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। जैसे पृथ्वीसिंह आज़ाद, मीरा बेन, अब्दुल गफ्फार खान, राजेन्द्र बाबू आदि।

**रोगी बालक और गांधी जी :** आश्रम के किनारे एक खोखे में रहने वाले बालक के पेट में असहनीय दर्द हो रहा था। वह निरंतर गांधीजी को ही बुला रहा था। बापू ने उसका फूला हुआ पेट देखा और सारा माजरा समझ गए कि इसने गन्ने का रस अधिक मात्रा में पी लिया है। बापू ने उसे तब तक उल्टी कराई जब तक उसे आराम नहीं हो गया। इसी प्रकार वे तपेदिक के मरीज की देखभाल व उसका हालचाल भी लेते रहते थे।

#### जवाहरलाल नेहरू जी

**नेहरू जी का व्यक्तित्व :** नेहरू जी का व्यक्तित्व उदार और विनम्र था। वे देर रात तक काम करते और सुबह चरखा कातते थे। हर विषय पर उनकी पकड़ मजबूत थी। नेहरू जी के हृदय में सभी के लिए सम्मान की भावना थी। वह हर व्यक्ति के साथ नरमी से पेश आते थे। उदाहरण के लिए जब लेखक ने वार्तालाप के बहाने उन्हें अनदेखा करते हुए

अखबार नहीं दिया तब कुछ देर चुप खड़े रहने के बाद नेहरू जी ने विनम्रता से कहा कि "यदि आपने देख लिया हो तो क्या मैं एक नज़र देख सकता हूँ?" यह वाक्य पंडित जी के बड़प्पन का सूचक है।

**धर्म के प्रति नेहरू जी के विचार :** धर्म के प्रति नेहरू जी के विचार बहुत उदार थे। उनका मानना था कि ईश्वर की आराधना का अधिकार सभी को है। वे धर्म के संकीर्ण रूप के खिलाफ थे।

## यास्सेर अराफात

**यास्सेर अराफात का आतिथ्य प्रेम :** आमंत्रण मिलने पर लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में ट्यूनिस गया हुआ था। राजधानी पहुँचने पर यास्सेर अराफात उनकी अगवानी करने के लिए स्वयं आए। खाने की मेज पर स्वयं फल छील-छीलकर खिला रहे थे तथा शहद की चाय भी बनाई। जब लेखक हाथ धोने गुसलखाने गया तो अराफात स्वयं तौलिया लेकर बाहर खड़े हो गए। ये घटनाएँ उनके आतिथ्य प्रेम को दर्शाती हैं।

**गांधी जी के बारे में अराफात के विचार :** गांधी जी अहिंसक आंदोलन के जन्मदाता थे। इसी कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी प्रसिद्धि थी। फिलीस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्यायपूर्ण रवैये को अहिंसक आंदोलन द्वारा समाप्त करने में अराफात ने गांधी जी को अपना आदर्श माना। अराफात गांधी जी को भारत का ही नहीं वरन् अपना भी नेता मानते थे।

## महत्वपूर्ण प्रश्न

**प्रश्न 1 :** रोगी बालक के प्रति गांधी जी का व्यवहार उनके व्यक्तित्व की किस खूबी को दर्शाता है?

**उत्तर :** गांधी जी बहुत ही दयालु और सहृदय व्यक्ति थे। रोगियों की सेवा करना वो अपना धर्म समझते थे। बालक के पेट में जब दर्द असहनीय हो गया तो वह सिर्फ बापू को ही बुलाने की बात कर रहा था। बापू के स्नेह और सेवा से वह ठीक हो गया। गांधी जी रोगियों की मनःस्थिति को भांपकर उनसे प्रेम का व्यवहार करते थे। जिन रोगियों के पास लोग जाने से कतराते थे (जैसे-तपेदिक का रोगी), वे स्वयं उनके पास जाते और देखभाल करते थे। इन उदाहरणों से गांधी जी के उच्च व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

**प्रश्न 2.** फिलीस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत ही सहानुभूति पूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था?

**उत्तर :** साम्राज्यवादी शक्तियाँ कई देशों पर अन्याय कर रही थी और उन्हें अपने अधीन करना चाहती थीं। भारत स्वयं फिलीस्तीन की तरह साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्याय का शिकार था। इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वालों के साथ वह सहानुभूति रखता था। भारतवासी फिलीस्तीन के लोगों को सही मानते थे तथा उन्हें भी आन्दोलन के लिए समर्थन देना चाहते थे। इसी संघर्ष में यास्सेर अराफात ने गांधी जी को अपना आदर्श माना हुआ था।

**प्रश्न 3.** कश्मीर के लोगों ने नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया?

**उत्तर :** शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में, झेलम नदी पर, शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीराकदल तक, गाँवों में उनकी शोभा-यात्रा देखने को मिली थी जब नदी के दोनों ओर हज़ारों-हज़ार कश्मीर निवासी अदम्य उत्साह के साथ उनका स्वागत कर रहे थे।

**प्रश्न 4.** अराफात ने ऐसा क्यों बोला कि वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए। इस कथन के आधार पर गांधी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए,

**उत्तर :** इस कथन से पता चलता है कि गांधी जी केवल भारत के ही नेता नहीं थे बल्कि वे हर उस व्यक्ति और देश के नेता थे जो अपनी आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे। गांधीजी की सहानुभूति फिलिस्तीन के प्रति थी वे फिलिस्तीन की समस्याओं को सुलझाना चाहते थे। वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में विश्वास रखते थे। अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण उन्हें समस्त विश्व में लोकप्रियता प्राप्त थी।

**सप्रसंग व्याख्या :** मैं साथ चलने लगा ..... मुझे सूझ गया।

**सन्दर्भ :** पाठ का नाम : गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात

लेखक - भीष्म साहनी।

**प्रसंग :** प्रस्तुत पक्तियों में लेखक ने गांधी जी के साथ बिताए अपने निजी क्षणों का उल्लेख किया है। सेवाग्राम में बिताए दिनों तथा गांधी जी के साथ प्रथम अनुभव को दर्शाया है।

**व्याख्या :** लेखक गाँधी जी की एक झलक देखने के लिए एवं उनसे बातचीत करने के लिए प्रातः ही उनकी टोली में सम्मिलित हो जाता है। लेखक भीड़ में एक दो लोगों को पहचान लेता है। वह सबकी आँख बचाकर गांधी जी को निहार रहा था। उनके सरल स्वभाव से वह प्रभावित था। गांधी जी की धूल भरी चप्पल इस बात का परिचायक थी कि वो इतने

प्रसिद्ध होने पर भी अपनी ओर ध्यान नहीं देते थे। एक साधारण जन की तरह रहते थे। लेखक खुद को उस महान व्यक्तित्व के सामने बौना मान रहा था।

### विशेष

1. गांधी जी के सरल और सहज व्यक्तित्व का प्रभावशाली चित्रण है।
2. भाषा सरल, सुबोध और सजीव है।
3. चित्रात्मक वर्णन है।
4. वर्णनात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग है।

**सप्रसंग व्याख्या :** धीरे-धीरे ..... जितने आपके लिए।

**सन्दर्भ :** पाठ का नाम : गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफात  
लेखक - भोष्प साहनी।

**प्रसंग-** इन पंक्तियों में लेखक ने उस समय का वर्णन किया है जब लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लेने के लिए ट्युनिस गया था। तब तक फिलीस्तीन का मसला हल नहीं हुआ था। वहीं लेखक की भेंट यास्सेर अराफात से हुई। यास्सेर अराफात ने लेखक को भोज पर आमंत्रित किया था।

**व्याख्या-** खाने की मेज पर यास्सेर अराफात के साथ लेखक की बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। उनकी बात बहुत दूर तक नहीं जा सकती थी। उनका दायरा सीमित था। हमारा देश भारत प्रारम्भ से ही फिलीस्तीन की मुक्ति का हिमायती रहा था। वह साम्राज्यवादी शक्तियों का विरोध करता रहता था। साम्राज्यवादी शक्तियों रवैया अन्यायपूर्ण था। उस रवैये की हमारी देश के नेता निंदा करते थे। फिलिस्तीनी आंदोलन के प्रति भारतवासियों की सहानुभूति थी और वे इसे हर प्रकार से समर्थन दे रहे थे। यास्सेर अराफात भी भारतीय नेताओं के प्रति सम्मान का भाव रखते थे। लेखक ने जब गांधीजी तथा अन्य भारतीय नेताओं का नामाल्लेख किया तब यास्सेर अराफात बोले वे आपके ही नेता नहीं हैं, हमारे भी नेता हैं। हम भी उनका उतना ही आदर-सम्मान करते हैं जितना आप।

### विशेष:

1. लेखक की यास्सेर अराफात के साथ भेंट का चित्रण कुशलतापूर्वक किया गया है।
2. फिलिस्तीन मुक्ति आंदोलन को जानकारी मिलती है।
3. भारतीय नेताओं की लोकप्रियता का पता चलता है।
4. सरल एवं सुबोध भाषा
5. खड़ी बोली का प्रयोग।

### बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. भीष्म साहनी जी मास्को के किस कार्यालय में करीब सात वर्षों तक अनुवादक के पद पर कार्यरत रहे -

- (क) विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (ख) राष्ट्र भाषा प्रकाशन गृह  
(ग) साहित्यिक भाषा प्रकाशन गृह (घ) इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 2. रुसी भाषा का अध्ययन और लगभग 2 दर्जन रुसी पुस्तकों के अनुवाद को उपलब्धि रही?

- (क) लाला भगवानदास (ख) भगवती चरणवर्मा  
(ग) भगवती प्रसाद (घ) भीष्म साहनी

प्रश्न 3. अफ्रो एशियाई तथा प्रगतिशील लेखक संघ से संबद्ध रहे -

- (क) श्रीधर पाठक (ख) भीष्म साहनी  
(ग) बालमुकुन्द गुप्त (घ) जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 4. 'तमस' उपन्यास के उपलक्ष्य में साहनी जी को किस सम्मान से सम्मानित किया गया?

- (क) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ख) भारत-भारती  
(ग) शलाका सम्मान (घ) साहित्य अकादमी

प्रश्न 5. प्रस्तुत पाठ किस विधा पर आधारित है?

- (क) रेखाचित्र (ख) रिपोतार्ज  
(ग) संस्मरण (घ) यात्रा-वृत्तांत

प्रश्न 6. 'नयी पत्रिका' के सह-संपादक के रूप में कार्यरत थे :-

- (क) भीष्म साहनी (ख) यास्सेर अराफात  
(ग) नेहरू जी (घ) बलराज

प्रश्न 7. मोहनदास करमचन्द गाँधी के निजी सचिव थे:-

- (क) महादेव देसाई (ख) मास्सेर अराफात  
(ग) डॉ. सुशीला नय्यर (घ) पृथ्वीसिंह आजाद

**प्रश्न 8.** पृथ्वी सिंह, आजाद मीरा बेन, अब्दुल गफ्फार खान, राजेन्द्र बाबू से लेखक भीष्म साहनी की मुलाकात कहाँ पर हुई?

(क) रावलपिंडी

(ख) सेवाग्राम

(ग) हरिपुरा

(घ) वर्धा

**प्रश्न 9.** शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में झेलम नदी पर शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक किसके स्वागत की तैयारी थी?

(क) राजेन्द्र बाबू

(ख) मोहनदास करमचन्द गाँधी

(ग) अब्दुल्ला गफ्फार खाँ

(घ) पं. जवाहर लाल नेहरू

**प्रश्न 10.** फ्रांस के विख्यात लेखक का नाम है?

(क) रस्किन बॉड

(ख) अनातोले

(ग) पॉवलो कोएल्हो

(घ) शेक्सपियर

**प्रश्न 11.** अफ्रो एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में भारत से जाने वाले प्रतिनिधि मंडल में शामिल नहीं थे?

(क) कमलेश्वर

(ख) डॉ. सुशील नैयर

(ग) जोगिंदर पाल

(घ) बालू राव

— • — • — • — • —

**भीष्म साहनी ( गाँधी, नेहरू यास्सेर अराफात )**

यह भी लगभग उसी समय की बात रही होगी । पंडित नेहरू काश्मीर यात्रा पर आए थे जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ था । शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में, झेलम नदी पर, शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीराकदल तक । नावों में उनकी शोभायात्रा देखने को मिली थी । जब नदी के दोनों ओर हजारों - हजार काश्मीर निवासी अदम्य उत्साह के साथ उनका स्वागत कर रहे थे। अद्भुत दृश्य था ।

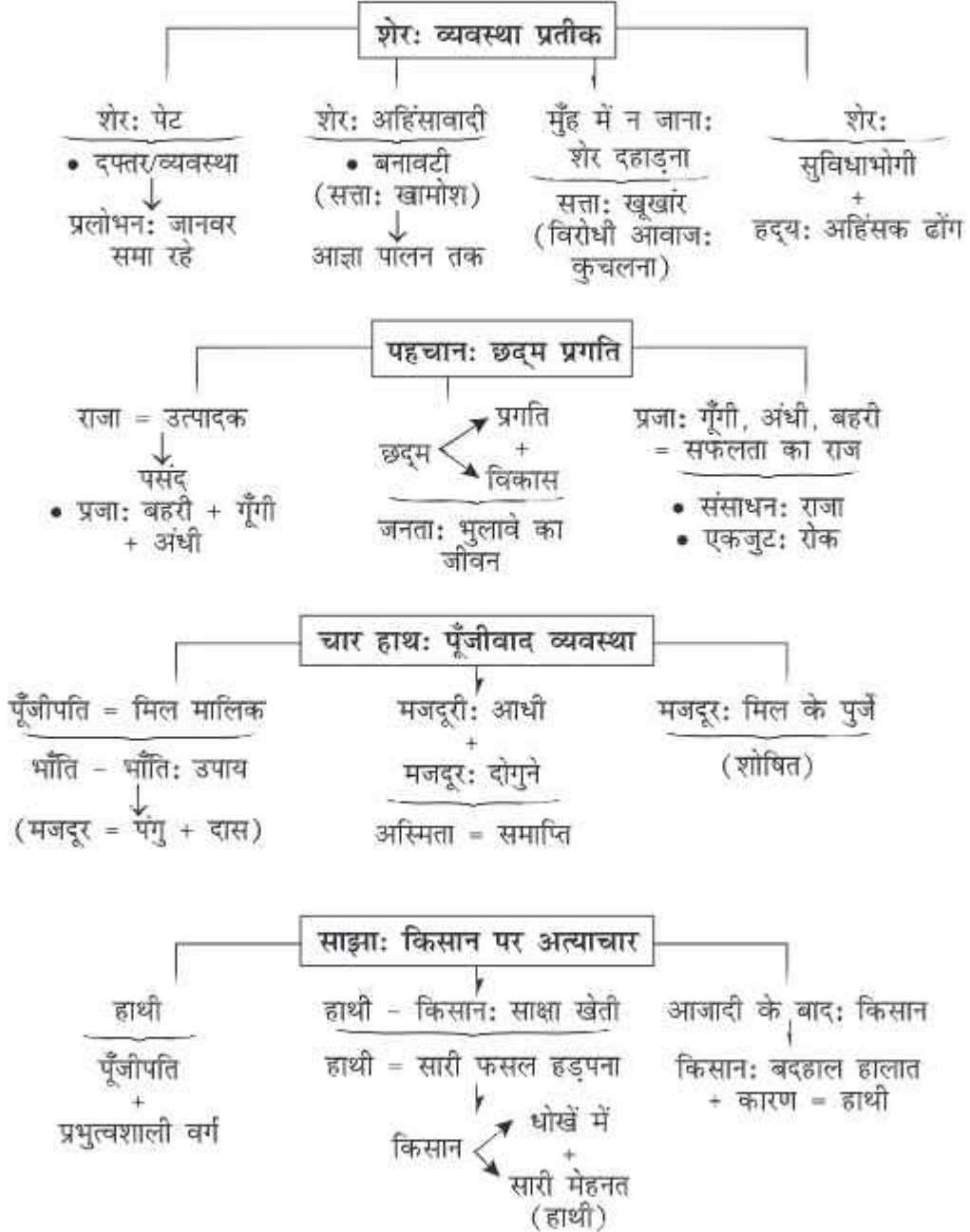
निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए ।

1. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?  
( i ) भीष्म साहनी ( ii ) यथास्मै रोचते विश्वम्  
( iii ) कुटज ( iv ) गाँधी, नेहरू, यास्सर अराफात
2. काश्मीर की यात्रा पर भव्य स्वागत किसका किया गया ?  
( i ) यास्सेर अराफात का  
( ii ) नेहरू जी का  
( iii ) गाँधी जी का  
( iv ) शेख अब्दुल्ला का
3. नेहरू जी के स्वागत के नेतृत्व कर्ता थे ?  
( i ) शेख अब्दुल्ला ( ii ) लेखक  
( iii ) क व ख दोनों ( iv ) इनमें से कोई नहीं
4. झेलम नदी कहाँ पर स्थित है ?  
( i ) लद्दाख में  
( ii ) भारत के पूर्वी तट पर  
( iii ) काश्मीर में  
( iv ) उपरोक्त सभी
5. नेहरू की शोभा यात्रा कहां देखने को मिली थी ?  
( i ) नावों में ( ii ) अमीराकदल तक  
( iii ) झेलम नदी के तट पर ( iv ) उपरोक्त सभी



## असगर वजाहत

शेर, पहचान, चार हाथ, साझा



## शेर, पहचान, चार हाथ, साझा

विधा : लघु कथाएँ।

मूल संवेदना/प्रतिपाद्य : इन चार लघु कथाओं में लेखक ने शासन तंत्र के हृदयरूप, पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों का शोषण व किसानों की समस्या पर करारी चोट की है।

### शेर-व्यवस्था का प्रतीक

‘शेर’ असगर वजाहत की प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघु कथा है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है। जो तभी तक खामोश रहता है जब तक सारी जनता उसके खिलाफ नहीं बोलती। जैसे ही व्यवस्था के खिलाफ ऊँगली उठती है, सत्ता उसे कुचलने का प्रयास करती है। सत्ता में बैठे लोग जनता को विभिन्न प्रलोभन देकर उसे अपनी ओर मिलाने का प्रयास करते हैं जबकि सच्चाई यह है कि वह केवल अपना उल्लू सीधा कर रहे होते हैं। शेर द्वारा दिए गए प्रलोभनों से गधा, लोमड़ी उल्लू और कुत्तों का समूह बिना कुछ सोचे विचारे उसके मुँह में चले जा रहे थे।

प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण विश्वास : भोली भाली जनता प्रमाण को अधिक महत्व न देते हुए विश्वास के आधार पर शोषक वर्ग, सत्ता वर्ग की बात मानती है। यह जानते हुए भी कि शेर एक मांसाहारी जीव है जो सभी को खाता है, सभी जानवरों को यह विश्वास दिला दिया जाता है कि अब शेर अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का समर्थक हो गया है और वह जानवरों का शिकार नहीं करेगा। अतः जानवर उनकी बात मानकर शेर के मुँह में स्वयं प्रवेश कर लेते हैं किन्तु लेखक जैसे कुछ लोग हैं जो प्रमाण को ही अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं जिन्हें सत्ता कुचलने का प्रयास करती है।

### पहचान

राजा द्वारा दिए गए हुक्म : राजा ने अपने राज्य में उत्पादन बढ़ाने के लिए खैराती, रामू, छिद्दू आदि आम जनता को यह आज्ञा दी कि अपनी आँखें बंद करके काम करें। अपने-अपने कानों में पिघला सीसा डलवा लें, अपने होंठ सिलवा लें, क्योंकि बोलना उत्पादन में सदा बाधक रहा है। फिर उन्हें कई तरह की चीजें कटवाने और जुड़वाने का हुक्म दिया गया। इससे राजा आश्चर्यजनक रूप से रात दिन प्रगति करने लगा।

राजा की निरंकुशता का परिणाम : इस कहानी में शासनतंत्र की निरंकुशता और लालच को दर्शाया गया है। यदि जनता राज्य की स्थिति को अनदेखा करती है तो शासक

वर्ग निरंकुश हो जाता है। राजा प्रगति के नाम पर समस्त साधनों को हड़प कर अपना भला करता है। ऐसे शासकवर्ग को बहरी, गूंगी और अंधी जनता पसन्द आती है जो केवल उनकी आज्ञा का पालन करे। खैराती, रामू और छिद्दू ऐसी जनता के प्रतीक हैं जो आँख मूंदकर अपने राजा पर विश्वास करते हैं पर जब तक वह अपनी आँखें खोलते हैं तब तक राजा अत्यधिक बलशाली हो चुका होता है। उसका विरोध करने की हिम्मत उनमें नहीं होती।

## चार हाथ

‘चार हाथ’ पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल-मालिकों का लालच मजदूरों के शोषण का कारण बनता है। मिल-मालिक मजदूरों को मात्र एक कलपुर्जे के रूप में लेता है जो उसको लाभ देंगे। वह हर संभव प्रयास करता है कि उन मजदूरों का अस्तित्व समाप्त हो जाए और वह विरोध की स्थिति में न रहें ताकि उसके इशारे पर चलते हुए वे दुगुना काम कर सकें। अधिक उत्पादन के चक्कर में वह मजदूरों के लोहे के हाथ लगाता है जिससे सारे मजदूर मर जाते हैं। अंत में उसे समझ आ जाता है कि यदि अधिक उत्पादन और मुनाफा चाहिए तो मजदूरी आधी कर दो और दुगुने मजदूर रख लो।

## साझा

साझा में आजादी के बाद किसानों की बदहाली का वर्णन किया गया है। पूँजीपतियों व गाँव के प्रभुत्वशाली वर्ग की नज़र किसानों को जमीन और उत्पाद पर है। वह हर संभव प्रयास द्वारा उसे हासिल करना चाहता है। हाथी समाज के अमोर और प्रभुत्वशाली वर्ग का प्रतीक है जो किसानों की सारी मेहनत और कमाई धोखे से हड़प लेता है और किसानों को पता भी नहीं चलता। किसान सक्षम होते हुए भी लाचार रह जाता है।

## महत्वपूर्ण प्रश्न

**प्रश्न 1 :** ‘प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास’ कहानी के आधार पर टिप्पणी करो।

**उत्तर :** लघुकथा ‘शेर’ से ली गई इन पंक्तियों में लेखक ने भोली-भाली जनता और धूर्त सत्ता के बारे में बताया है। लेखक यह मानने को तैयार नहीं है कि शेर के मुँह में रोजगार का दफ्तर है किंतु उसे बार-बार यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया जाता है कि शेर का मुँह ही सब दुःखों का अंत है। शेर का मुँह हिंसा का प्रतीक है, यह सभी जानवर जानते हैं किंतु केवल विश्वास दिलाने पर वे स्वेच्छा से उस मुँह के अंदर जा रहे हैं। आज का

सत्ताधारी एवं राजनैतिक वर्ग भी सर्वप्रथम लोगों का विश्वास हासिल करता है उसके पश्चात् उनका शोषण करता है जिसका पता जनता को नहीं चलता। वह अंत तक यही सोचती है कि सत्ता पक्ष उसके हित के लिए काम करती है।

**प्रश्न 2.** पहचान लघुकथा का प्रतिपाद्य क्या है?

**उत्तर :** पहचान कथा का प्रतिपाद्य यह है कि राजा को बहरी, गूंगी और अँधी प्रजा पसंद आती है जो बिना कुछ बोले, बिना कुछ देखे उसकी आज्ञा का पालन करती रहे। कहानी में इसी यथार्थ की पहचान कराई गई। प्रगति और विकास के बहाने राजा उत्पादन के सभी साधनों पर अपनी पकड़ मजबूत करता जाता है। वह जनता को एकजुट होने से रोकता है और उन्हें भुलावे में रहता है। यही उसकी सफलता का राज है।

**प्रश्न 3.** 'चार हाथ' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए?

**उत्तर :** 'चार हाथ' कथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। पूँजीवादी भौति-भौति के उपाय कर मजदूरों को पंगु बनाने के नए-नए तरीके ढूँढते हैं और अंततः उसकी अस्मिता को ही समाप्त कर देते हैं। मजदूर विरोध करने की स्थिति में नहीं है। वे तो मिल के कल-पुर्जे बन गए हैं और लाचारी में आधी मजदूरी पर भी काम करने को विवश हैं। मजदूरों की यह लाचारी शोषण पर आधारित व्यवस्था का पर्दाफाश करती है।

**प्रश्न 4.** 'साझा' कथा का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए?

**उत्तर :** 'साझा' कथा में उद्योगों पर कब्जा जमाने के बाद पूँजीपतियों की नजर किसानों की जमीन और उत्पाद पर जमी है। वह किसान को साझा खेती करने का लालच देता है और उसकी सारी फसल हड़प लेता है। किसान को पता भी नहीं चलता और उसकी सारी कमाई हाथी (पूँजीपति) के पेट में चली जाती है। यह हाथी कोई और नहीं बल्कि समाज का धनाढ्य और प्रभुत्वशाली वर्ग है जो किसानों को धोखे में डालकर उनकी सारी मेहनत डकार जाता है।

**सप्रसंग व्याख्या :** अगले दिन मैंने कुत्तों का एक ..... रोजगार का दफ्तर है।

**सन्दर्भ :** पाठ का नाम - शेर (लघुकथा)

लेखक - असगर वजाहत

**प्रसंग :** इन पंक्तियों में शेर को व्यवस्था का प्रतीक बताया गया है। लेखक ने दिखावा करने वालों, सत्ता का साथ देने वालों और चापलूसों पर भी व्यंग्य किया है।

**व्याख्या :** लेखक कहता है कि छोटे-छोटे जानवरों को विभिन्न प्रलोभनों में फँसकर शेर के मुँह में जाते हुए देखा है। कुत्तों का समूह जो कभी सत्ता के विरोध में नारे लगा रहा

था, कभी हँस और गा रहा था, वह भी व्यवस्था से डरकर शेर के मुँह में जा रहा है अर्थात् व्यवस्था का विरोध करने वालों का यह समूह व्यवस्था की शक्ति के आगे विवश है। उनका समर्थन करने तथा उनकी आज्ञा मानने के लिए विवश है। लेखक के अनुसार ये छद्म क्रांतिकारी है जो दिखावा तो सत्ता के विरोध कर रहे हैं। किंतु भीतर ही भीतर वे दुम दबाकर उसका समर्थन भी कर रहे हैं। शेर को अहिंसावादी और सभी के अस्तित्व की रक्षा करने वाला घोषित कर दिया गया है। लेखक ने शेर के कार्यालय में जाकर उसके कर्मचारियों से रोजगार के दफ्तर के बारे में पूछा। कर्मचारियों के अनुसार जनता को यह विश्वास है या फिर यह विश्वास दिलाया गया है कि शेर का मुँह ही सारे सुखों को देने वाला है, अर्थात् व्यवस्था और सत्ता ही तुम्हारे सारे दुखों को दूर करेगी। सच्चाई यह है कि प्रमाण द्वारा यह सिद्ध होता है कि व्यवस्था के कारण सारी समस्याएँ हैं किन्तु लोगों ने प्रमाण से अधिक विश्वास को महत्व दिया है।

### विशेष

1. लेखक ने प्रतीकों के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।
2. शेर व्यवस्था का प्रतीक है, कुत्तों का समूह झूठे क्रांतिकारियों का, कर्मचारी सुविधाभोगी चापलूसों का और छोटे जानवर आम जनता का प्रतीक है।
3. छोटे-छोटे संवादों में गहनता छिपी है।
4. भाषा सादगी से पूर्ण चिंतन प्रधान है।
5. व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग है।

### बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. असगर जी की कहानी संग्रह का नाम है :-

- |                   |               |
|-------------------|---------------|
| (क) अग्नि परीक्षा | (ख) आकाशद्वीप |
| (ग) अजातशत्रु     | (घ) आधी बानी  |

प्रश्न 2. निम्न में से असगर वजाहत की भाषा की विशेषता नहीं है :-

- |                |                    |
|----------------|--------------------|
| (क) लाक्षणिकता | (ख) व्यंग्यात्मकता |
| (ग) गांभीर्यता | (घ) भावाभिव्यक्ति  |

प्रश्न 3. 'बूँद-बूँद' धारावाहिक का लेखन तथा 'गजल की कहानी' वृत्तचित्र का निर्देशन किया :-

- (क) भीष्म साहनी (ख) फणीश्वरनाथ 'रेणु'  
(ग) असगर वजाहत (घ) ब्रजमोहन व्यास

**प्रश्न 4.** प्रस्तुत पाठ में प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक लघुकथा है:-

- (क) शेर (ख) पहचान  
(ग) चार हाथ (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 5.** चार हाथ कहानी समाज के किस पक्ष पर प्रहार करती है?

- (क) पूँजीवादी व्यवस्था (ख) मजदूरों का शोषण  
(ग) पूँजीपतियों का अत्याचार (घ) सभी

**प्रश्न 6.** प्रगति और विकास को आधार मानकर उत्पादन पर अपनी मजबूत पकड़ राजा किस तरह बनाना चाहता है?

- (क) प्रजा पर अत्याचार करके (ख) प्रजा को अंधा, बहरा और गूंगा बनाकर  
(ग) क और ख (घ) प्रजा के हित में कार्य करके।

**प्रश्न 7.** साझा कहानी में हाथी प्रतीकार्थक है:-

- (क) प्रभुत्वशाली वर्ग (ख) धनाढ्य वर्ग  
(ग) पूँजीपति वर्ग (घ) सभी

**प्रश्न 8.** "शेर के मुँह के अंदर रोजगार का दफ्तार है" कथन किसका है?

- (क) गधा (ख) कुत्तों का झुंड  
(ग) लोमड़ी (घ) उल्लू

**प्रश्न 9.** अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का जबरदस्त समर्थक किसे बताया है। (पाठ के आधार पर)

- (क) लोमड़ी (ख) लेखक  
(ग) गधा (घ) शेर

**प्रश्न 10.** शेर, चीता, मगरमच्छ के साथ साझे की खेती कौन कर चुका था?

- (क) हाथी (ख) प्रभुत्वशाली वर्ग  
(ग) राजा (घ) किसान

ई सामग्री-

कथा) असगर वजाहत  
- भाग 1



शेर, पहचान ( लघु  
कथा ) असगर वजाहत  
- भाग 2



## पठित गद्यांश असगर वजाहत

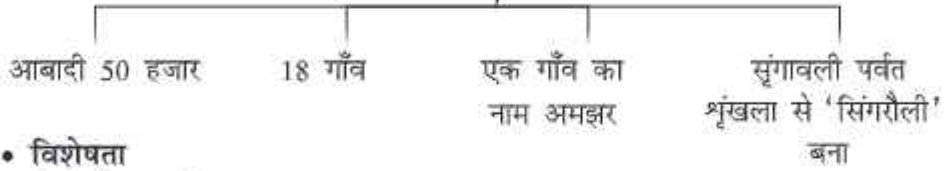
हालाँकि उसे खेती की हर बारीकी के बारे में मालूम था, लेकिन फिर भी डरा दिए जाने के कारण वह अकेला खेती करने का साहस न जुटा पाता था। इससे पहले वह शेर, चीते और मगरमच्छ के साथ साझे की खेती कर चुका था, अब उससे हाथी ने कहा कि अब वह उसके साथ साझे की खेती करे। किसान ने उसको बताया कि साझे में उसका कभी गुजारा नहीं होता और अकेले वह खेती कर नहीं सकता। इसलिए वह खेती करेगा ही नहीं। हाथी ने उसे बहुत देर तक पट्टी पढ़ाई और यह भी कहा कि उसके साथ साझे की खेती करने से यह लाभ होगा कि जंगल के छोटे-मोटे जानवर खेतों को नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे और खेती की अच्छी रखवाली हो जाएगी। किसान किसी न किसी तरह तैयार हो गया और उसने हाथी के साथ मिलकर गन्ना बोया।

निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए।

1. कौन अकेला खेती करने का साहस नहीं जुटा पा रहा था?
  - (i) किसान
  - (ii) दादा किस्म का व्यक्ति
  - (iii) मजदूर
  - (iv) इनमें से कोई नहीं
2. किसान ने क्या निर्णय किया ?
  - (i) वह साझे की खेती करेगा।
  - (ii) वह अकेले खेती नहीं कर सकता।
  - (iii) वह खेती करेगा ही नहीं
  - (iv) वह शेर के साथ मिलकर खेती करेगा
3. इस बार किसान ने किसके साथ मिलकर गन्ना बोया ?
  - (i) हाथी के साथ
  - (ii) शेर के साथ
  - (iii) मगरमच्छ के साथ
  - (iv) चीते के साथ
4. 'हाथी' किसका प्रतीक है ?
  - (i) ताकत का
  - (ii) पूँजीपती का
  - (iii) किसान का
  - (iv) मजदूर का
5. उपरोक्त गद्यांश के अनुसार किसे खेती की हर बारीकी के बारे में मालूम था?
  - (i) लेखक को
  - (ii) किसान को
  - (iii) ग्राम प्रधान को
  - (iv) पूँजीपति को

## निर्मल वर्मा

सिंगरौली



### • विशेषता

- उर्वरक भूमि
- जंगलों की समृद्धि
- किसानों और वनवासियों के पोषण का आधार 'जंगल'
- यातायात के सीमित साधन
- काला पाली नामकरण

### • पेड़ों में सूनापन-कारण

- अमरौली प्रोजेक्ट
- नवागाँव के गाँवों का उजाड़ा जाना
- पेड़ों द्वारा मिलकर मूक सत्याग्रह करना
- आदमी उजड़ेगा तो पौधे जीवित रहकर क्या करेंगे?

### • सिंगरौली की संपदा का अभिशाप बनना

- दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों का लालच
- खनिज संपदा की भरमार होना
- शहर से दूर होना
- प्राकृतिक छटा की समृद्धि

### • भारत की सांस्कृतिक विरासत

- रिश्तों में जीवित
- अदृश्य लिपि में मौजूद

### • पर्यावरणीय संकट का उत्पन्न होना

- औद्योगीकरण के मार्ग का चुनाव।
- पश्चिम की योजनाओं की नकल।
- शिक्षित वर्ग का ध्यान न देना।
- पाश्चात्य संस्कृति की नकल करना।
- अपने वातावरण व परिवेश की आवश्यकताओं की अनदेखी
- सरकार की दखलंदाजी न होना
- सत्ताधारियों व पूँजीपतियों का लोभी होना।



## जहाँ कोई वापसी नहीं

**पाठ की विधा :** यात्रा वृत्त।

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य :** प्रस्तुत पाठ में लेखक ने पर्यावरण संबंधी सरोकारों के साथ-साथ विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उत्पन्न मनुष्य की विस्थापन संबंधी समस्या को भी चित्रित किया है। लेखक ने यह बताना चाहा है कि यदि विकास और पर्यावरण संबंधी सुरक्षा के बीच संतुलन न बनाए रखा जाए तो हमेशा विस्थापन और पर्यावरण संबंधी समस्या सामने आती रहेगी जिससे केवल मनुष्य ही अपनी जमीन और घर से अलग नहीं होता बल्कि उसका परिवेश व संस्कृति भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाती है।

### पाठ का सार

**अमड़र शब्द का अर्थ :** एक ऐसा गाँव जो आम के पेड़ों से घिरा रहता था, जहाँ आम झड़ते थे। जब से सरकारी घोषणा हुई कि अमरौली प्रोजेक्ट के तहत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएंगे तब से आम के पेड़ सूखने लगे, उन पर सूनापन छा गया। ठीक ही तो है - आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रह कर क्या करेंगे?

**आधुनिक भारत के नए शरणार्थी :** जिन लोगों को औद्योगिकरण की आँधी ने अपने घर-जमीन से हमेशा के लिए अलग कर दिया वही लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहलाए।

**प्रकृति एवं औद्योगिकरण के कारण विस्थापन में अंतर :** बाढ़ या भूकंप के कारण जब लोग अपने घर को छोड़कर कुछ समय के लिए सुरक्षित स्थान पर चले जाते हैं और स्थिति सामान्य होने पर वापिस अपने घर लौट आते हैं उन्हें प्रकृति के कारण विस्थापित कहा जाता है। जब लोगों को औद्योगिकरण व विकास के नाम पर निर्वासित (घर-जमीन से अलग) कर दिया जाता है और ये लोग फिर कभी अपने घर वापिस नहीं आ पाते, उन्हें औद्योगिकरण के नाम पर विस्थापित कहा जाता है।

**यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ :** यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ सर्वथा भिन्न हैं। यूरोप में मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखना पर्यावरणीय प्रश्न है जब कि भारत में यही संतुलन मनुष्य और संस्कृति के बीच बनाए रखने का भी है।

**सिंगरौली की उर्वरा भूमि अपने लिए अभिशाप :** सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और जंगल इतने समृद्ध थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसान अपना भरण-पोषण करते थे। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय संपदा उसके लिए अभिशाप बन

गई, तभी तो दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अपार संपदा छुप नहीं पाई। सिंगरौली जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण बैकुण्ठ और अकेलेपन के कारण काला पानी माना जाता था अब प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ।

**औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण संकट :** ये सच है कि औद्योगीकरण ने पर्यावरण संकट पैदा किया है। औद्योगीकरण के कारण गांव के गांव उजाड़ कर लोगों की जमीन ले ली गई। ऐसा करके वहाँ का परिवेश तो खराब हुआ ही साथ ही मनुष्य और उसका परिवेश भी उजड़ गया जिससे प्रकृति, मनुष्य व संस्कृति का संतुलन गड़बड़ा गया। औद्योगीकरण के कारण स्थापित उद्योगों ने धुएँ व कचरे से पर्यावरण संकट पैदा कर दिया। औद्योगीकरण ने मनुष्य, प्रकृति व संस्कृति के बीच संतुलन को नष्ट कर दिया है। हमें ऐसी योजनाएँ बनानी हैं जो इस संतुलन को बनाए रखकर विकास एवं प्रगति करें।

## प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1.** प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है?

**उत्तर :** बाढ़ या भूकंप प्रकृति की आपदाएँ हैं। प्रकृति के कारण जब लोग विस्थापित होते हैं तब यह विस्थापन अस्थायी होता है। आपदा के टलते ही लोग अपने घरों को लौट आते हैं और वहाँ पहले की तरह रहने लगते हैं। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित हुए लोग सदा-सदा के लिए अपने घर अपने परिवेश से अलग हो जाते हैं। उनकी जमीन पर कोई उद्योग स्थापित हो जाता है फिर वे कभी भी अपने घरों को लौट नहीं पाते। औद्योगीकरण की आँधी उन्हें घर और परिवेश से उजाड़ देती है। इन्हीं लोगों को आधुनिक भारत के नए शरणार्थी भी कहा गया है।

**प्रश्न 2.** यूरोप और भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ किस प्रकार भिन्न हैं?

**उत्तर :** यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है जबकि भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है। दोनों देशों की पर्यावरण संबंधी चिंताओं में अंतर है।

**प्रश्न 3.** औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है। क्यों और कैसे?

**उत्तर :** यह बिल्कुल सच है कि औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट खड़ा कर दिया है। औद्योगीकरण के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का बड़ी मात्रा में दोहन हो रहा है। पेड़ काटे जा रहे हैं, जंगलों का सफाया किया जा रहा है। उद्योगों से निकला कचरा पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। इससे वायु, जल, पृथ्वी, ध्वनि, आकाश सभी में प्रदूषण फैल रहा है।

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) किन्तु कोई भी प्रदेश ..... हजारों गाँव उजाड़ दिये गये थे।

सन्दर्भ : पाठ का नाम - जहाँ कोई वापसी नहीं।

लेखक : निर्मल वर्मा

**प्रसंग :** इस पाठ में लेखक ने विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उत्पन्न विस्थापन पर विचार किया है।

**व्याख्या :** लेखक का मानना है कि कोई भी प्रदेश आज के लालची युग में अपने अलगाव में सुरक्षित नहीं रह सकता अर्थात् आज का युग लालच का युग है इसमें कोई भी प्रदेश दूसरों से कटकर सुरक्षित नहीं है। कभी-कभी किसी प्रदेश की अच्छी संपदा ही उसके अभिशाप का कारण बन जाती है। दिल्ली के सत्ताधारियों तथा उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अपार खनिज संपदा भी छिपी नहीं रही। उनके लालच ने इस प्रदेश की अपार संपदा को भी ढूँढ़ निकाला। विस्थापन की एक लहर रिहंद बाँध बनने से आई थी, जिसके कारण हजारों गाँव उजाड़ दिये गये थे अर्थात् रिहंद बाँध की परियोजना हजारों गाँवों के उजड़ने का कारण बनी।

- विशेष :**
1. खड़ी बोली व विषयानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।
  2. रिहंद बाँध से विस्थापन की समस्या का वर्णन किया गया है।
  3. तत्सम, तद्भव शब्दावली की अधिकता है।
  4. शैली - विचारात्मक व चिंतन प्रधान

**बहुविकल्पीय प्रश्न**

**प्रश्न 1. सन् 1959 में चेक गणराज्य जाने का उद्देश्य क्या था?**

- (क) उपन्यासों और कहानियों का हिन्दी में लेखन
- (ख) प्राग के लोगों को हिन्दी की शिक्षा देना
- (ग) प्राग में हिन्दी विषय के शिक्षक के रूप में नियुक्ति
- (घ) उपन्यासों तथा कहानियों का हिन्दी अनुवाद

**प्रश्न 2. निर्मल वर्मा जी ने यूरोप की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर रिपोर्ताज और लेख किस अखबार में लिखे?**

- (क) टाइम्स ऑफ इंडिया और नवभारत टाइम्स
- (ख) हिन्दुस्तान टाइम्स और नवभारत टाइम्स
- (ग) हिन्दुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इंडिया
- (घ) द हिन्द और नवभारत टाइम्स

प्रश्न 3. नयी कहानी आंदोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं :-

- (क) निर्मल वर्मा (ख) महादेवी वर्मा  
(ग) राजकुमार वर्मा (घ) श्रीराम वर्मा

प्रश्न 4. निर्मल वर्मा जी के किस उपन्यास को आधार बनाकर सीरियल बनाया गया?

- (क) चीड़ों पर चाँदनी (ख) परिंदे  
(ग) रात का रिपोर्टर (घ) तीन एकांत

प्रश्न 5. सन् 1985 में 'कब्बे और काला पानी' संग्रह पर कौन सा पुरस्कार दिया गया?

- (क) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ख) साहित्य अकादमी  
(ग) शलाका सम्मान (घ) भारत-भारती पुरस्कार

प्रश्न 6. विस्थान संबंधी मनुष्य की यातना को वर्मा जी ने किस लेख के माध्यम से व्यक्त किया है?

- (क) लालटीन की छत (ख) जहाँ कोई वापसी नहीं  
(ग) एक चिथड़ा सुख (घ) चीड़ों पर चाँदनी

प्रश्न 7. बढ़ते औद्योगीकरण के दूरगामी प्रभाव से समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- (क) विस्थापन की समस्या (ख) प्राकृतिक सौंदर्य का क्षय  
(ग) पर्यावरण विनाश (घ) सभी

प्रश्न 8. सिंगरौली गाँव का नाम किस पर्वत श्रृंखला के नाम पर पड़ा?

- (क) सृंगावली (ख) विन्ध्याचल  
(ग) मेहरौली (घ) हिमालयन

प्रश्न 9. लेखक को दिल्ली स्थिति किस संस्था की तरफ से सिंगरौली की यात्रा पर भेजा गया था?

- (क) लोकायतन (ख) सेवाग्राम  
(ग) लोकायन (घ) राष्ट्र भाषा संस्था

प्रश्न 10. स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजडी रही है :-

- (क) पाश्चात्य अधानुकरण (ख) विस्थापन  
(ग) औद्योगीकरण (घ) क व ग दोनों

## पठित गद्यांश ( जहाँ कोई वापसी नहीं )

भारत की सांस्कृतिक विरासत यूरोप की तरह म्यूजियम्स और संग्रहालयों में जमा नहीं थी- वह उन रिश्तों से जीवित थी, जो आदमी को उसकी धरती, उसके जंगलों, नदियों एक शब्द में कहें - उसके समूचे परिवेश के साथ जोड़ते थे। अतीत का समूचा मिथक संसार पोथियों में नहीं, इन रिश्तों की अदृश्य लिपि में मौजूद रहता था। यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है - भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है।

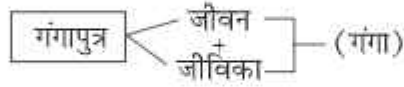
निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

1. भारत की सांस्कृतिक विरासत किसमें निहित है ?  
(i) संग्रहालयों में (ii) परिवेश में  
(iii) जंगलों में (iv) रिश्तों में
2. गद्यांश में किसके मिथक संसार की बात हो रही है ?  
(i) यूरोप की (ii) अतीत के रिश्तों की  
(iii) भारत की (iv) मनुष्य की
3. रिश्तों की अदृश्य लिपि से आप क्या समझते हैं ?  
(i) मनुष्य के आपसी संबंध (ii) भारत की सांस्कृतिक पहचान  
(iii) प्रकृति से रिश्ते (iv) मनुष्य और प्रकृति का संबंध
4. 'मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन' से क्या अभिप्राय है ?  
(i) मनुष्य और धरती का संबंध  
(ii) अपने परिवेश से संबंध  
(iii) पर्यावरण और मनुष्य का संबंध  
(iv) पर्यावरण का रक्षण
5. भारत में पर्यावरण का प्रश्न किससे संबंधित है ?  
(i) मनुष्य से (ii) संस्कृति से  
(iii) प्रकृति से (iv) परिवेश से

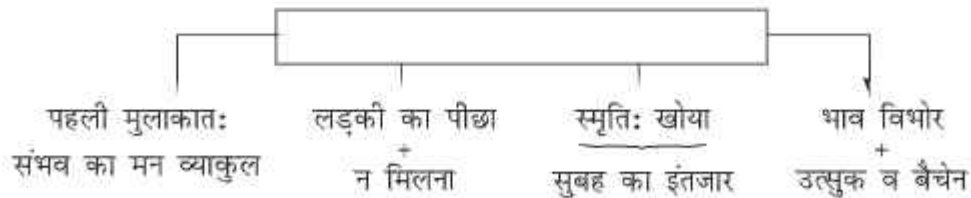
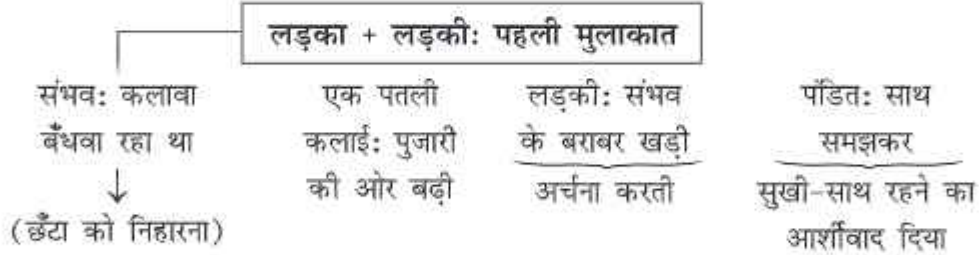
## पाठ-9

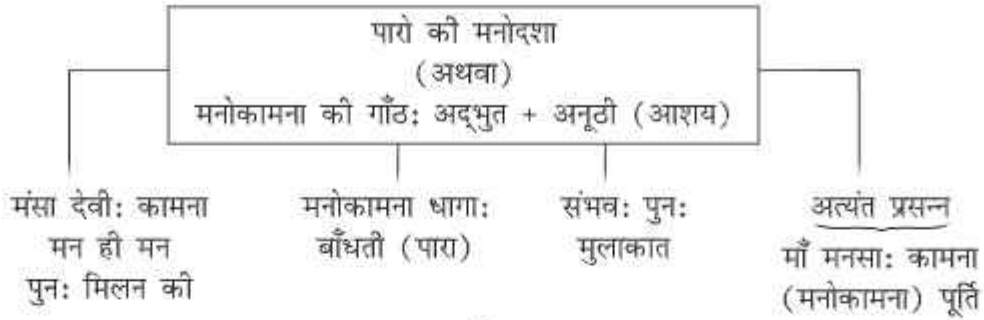
# ममता कालिया

- स्थान: हर की पौड़ी (शाम)
- बाजार: {
  - कीमत दोगुनी: फूल
  - देशी घी डिब्बे: ईमानदारी का प्रतीक
- वातावरण {
  - स्वयंसेवक: मुस्तैद
  - स्नान: आरती पूर्व
  - सुगंध {
    - अगरबत्ती
    - चंदन
- आरती {
  - सहस्र: दीप: जलते
  - मनौती दीप: गंगा की लहरों पर
  - समवेत स्वर: गंगा आरती



आरती के समय → गंगा के बीच: कश्ती से पैसे छांटना → खुले पैसे बहन + पत्नी → कुशाघाट: एक रूपये के अस्सी पैसे (20 पैसे: जीविका)





## दूसरा देवदास

**विधा :** कहानी

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य :** ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्त्व और उसकी गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती है। कहानी से यह सिद्ध होता है कि प्रेम के लिए किसी नियत व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वतः ही घटित हो जाता है। 21वीं सदी में भोग विलास की संस्कृति ने प्रेम का स्वरूप अधिकतर उच्छृंखल कर दिया है। ऐसी स्थिति में यह कहानी प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित करती है और दूसरी तरफ युवा मन की संवेदना, भावना और कल्पनाशीलता को भी प्रस्तुत करती है।

### पाठ का सार

**हर की पौड़ी का मनोहारी दृश्य :** हर की पौड़ी पर संध्या के समय गंगा की आरती का रंग ही निराला होता है। भक्तों की भीड़ मनोकामना की पूर्ति के लिए फूल, प्रसाद आदि खरीदती है। उस समय पंटे और गोताखोर सक्रिय हो जाते हैं। चारों तरफ पूजा का वातावरण है। पंच मंजिली नीलांजलि में लगे, सहस्र दीप जल उठते हैं और आरती शुरू हो जाती है। मनौतियों के दिये लिए हुए फूलों के छोटे-छोटे दोने गंगा की लहरों पर इठलाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। पूरे वातावरण में चंदन और धूप की सुगंध फैली हुई और भक्तजन संतोष भाव से भर उठते हैं।

**गंगापुत्रों का जीवन परिवेश :** गंगापुत्र उन गोताखोरों को कहते हैं जो गंगा में डुबकी लगाकर भक्तों द्वारा छोड़े गए पैसों को इकट्ठा करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इनका जीवन गंगा पर ही निर्भर रहता है ये रेजगारी बटोरकर अपनी बहन या बीवी को कुशाघाट पर दे आते हैं जो इन्हें बेचकर नोट कमाती है। कभी-कभी इनके साथ हादसा भी हो जाता है किंतु बगैर परवाह किए ये अपने कार्य में लगे रहते हैं।

**नायक-नायिका का प्रथम परिचय :** कहानी का नायक संभव है और नायिका पारो है। संभव कुछ दिनों के लिए अपनी नानी के घर आया हुआ है। नास्तिक होते हुए भी अपने माता-पिता के कहने पर गंगा का आशीर्वाद लेने आया हुआ है। नायक-नायिका का प्रथम

परिचय गंगा किनारे के मंदिर में होता है। संभव मंदिर में जैसे चढ़ाने के उपरांत अपना हाथ कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ाता है तभी एक नाजुक सी कलाई भी कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ती है। संभव उस गुलाबी कपड़ों में भीगी लड़की को देखता है। पुजारी दोनों को दम्पति समझकर आशीर्वाद देता है- 'सुखी रहो, फूलो फलो, जब भी आओ साथ ही आना, गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।' लड़की घबराहट में छिटककर दूर हो गई और तेजी से चली गई। इस प्रकार दोनों के बीच प्रथम आकर्षण हर की पौड़ी पर उत्पन्न होता है जो निरन्तर घटने वाली घटनाओं के तारतम्य से प्रेम में बदल जाता है। इसे प्रथम दृष्टि का प्रेम कहा जा सकता है।

**संभव की मनःस्थिति (लड़की से मिलने के पश्चात्) :** उस छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन में कल्पना और सपनों के पंख लगा दिए। उसके अंदर पुनः मिलने की बेचैनी पैदा हो गयी। यह एक ऐसी निराली अनुभूति थी जो बेचैनी के साथ सुख भी प्रदान कर रही थी। वह मन ही मन उसके रूप को याद कर उससे बातचीत के बारे में सोचने लगा। ऐसा आकर्षण उसे प्रथम बार महसूस हो रहा था।

लड़की का आँख मूंदकर अर्चना करना, माथे पर भीगे बालों की लट, कुरते को छूता गुलाबी आंचल और उसका सौम्य स्वर, संभव सारी रात इन्हीं ख्यालों में खोया रहा। यकायक उसे बिंदिया और शृंगार के अन्य साधन भाने लगे और 'मांग में तारे भरने' जैसे गीत अच्छे लगने लगे।

**मनसा देवी पर मनोकामना की गाँठ :** मनसा देवी पर सभी भक्तजन लाल-पीले धागे मनोकामना हेतु बाँध रहे थे। संभव ने भी पूरी श्रद्धा के साथ मनोकामना की गाँठ लगाई जिसमें पुनः उस लड़की से मिलने की इच्छा थी। अब प्रथम आकर्षण प्रेम में परिवर्तित हो गया था। दूसरी तरफ पारो ने भी इसी प्रकार की आशा लिए मनोकामना की गाँठ लगाई। दोनों ही एक-दूसरे से मिलने को आतुर थे। अचानक मंदिर के बाहर दोनों का पुनः मिलन हो जाता है दोनों ने अपनी-अपनी मनोकामना की गाँठ के इतनी शीघ्र परिणाम की अपेक्षा नहीं की थी।

**पारो की मनोदशा :** पारो की मनोदशा भी संभव से भिन्न न थी, वह स्वयं भी उसके आकर्षण में बंध चुकी थी। युवा मन का निश्चल प्रेम केवल एक झलक देखने के लिए व्याकुल था। मनसा देवी पर लगी मनोकामना की गाँठ का परिणाम संभव से मिलने के रूप में आया तो वह आश्चर्यमिश्रित सुख में डूब गई। सफेद साड़ी में उसका चेहरा लाज से गुलाबी हो रहा था क्योंकि उसे भी इस बात की प्रतीक्षा थी। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और मन ही मन एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया। मनोकामना पूरी होने से देवी पर आस्था और संभव के प्रति प्रेम और अधिक दृढ़ और स्थायी हो गया।



## महत्वपूर्ण प्रश्न

**प्रश्न 1 :** 'देवदास' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर :** लेखिका ने कहानी का शीर्षक 'दूसरा देवदास' सोच समझकर रखा है जो कहानी के मूल कथ्य को स्पष्ट करने में समर्थ है। शरतचन्द्र की रचना 'देवदास' में नायक देवदास पारो पर अपना प्रेम लुटाता है और अंत तक यह प्रेम एक निश्चल रूप में जीवित रहता है। उसी प्रकार संभव भी पारो को प्राप्त करने के लिए बेचैन है। देवदास और पारो निश्चल प्रेम के प्रतीक हैं। इसलिए संभव के लिए लेखिका ने 'दूसरा देवदास' शीर्षक रखा।

**प्रश्न 2 :** 'मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती हैं।' कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

**उत्तर :** पारो भी संभव से प्रेम करने लगी थी। हर की पौड़ी पर लड़कें के साथ छोटी सी मुलाकात ने पारो को विचलित कर दिया। वह मन ही मन उससे प्रेम करने लगी थी व दोबारा उससे मिलना चाहती थी। उसने भी कुछ ऐसी ही मनोकामना की पूर्ति के लिए धागा बाँधा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि मनसा देवी से माँगी गई मुराद इतनी जल्दी पूरी हो जायेगी। वह संभव से मिलने के बाद प्रसन्न थी। वह हैरान भी थी कि उसकी इच्छा इतनी जल्दी पूरी हो गई।

**सप्रसंग व्याख्या :** एकदम प्रकोष्ठ में चामुंडा ..... शीश नवाते।

**सन्दर्भ :** पाठ का नाम - दूसरा देवदास

लेखिका - ममता कालिया

**प्रसंग :** इस कहानी में लेखिका ने युवा मन के प्रेम, भावों, प्रथम आकर्षण और उससे उत्पन्न संवेदनाओं को व्यक्त करने के साथ-साथ धार्मिक स्थानों पर बढ़ती व्यापारिक वृत्ति का भी वर्णन किया है।

**व्याख्या :** इन पंक्तियों में लेखिका ने धार्मिक स्थलों पर बढ़ते व्यापार का वर्णन किया है। मंसा देवी में पहुँचने के बाद संभव ने चढ़ावा चढ़ाने के लिए एक थैली खरीदी। मंदिर के कक्ष में चामुंडा रूप में मंसादेवी विराजमान थी। आसपास का वातावरण भक्तिमय था किंतु मानव का ये स्वभाव है कि वह बिना लाभ की कामना के कोई कार्य नहीं करता। यहाँ तक कि ईश्वर की भक्ति के पीछे भी अपने और अपनों के सुख की कामना रहती है। लोग भगवान के दर्शन बाद में करते हैं, पहले कामनापूर्ति की गाँठ बाँधते, लन-देन की यह प्रवृत्ति

भक्ति और पूजा में भी व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ती। अन्य धार्मिक स्थलों की भाँति यहाँ भी व्यापार था। अर्थात् बड़े चढ़ावे वालों को पहले और अलग से दर्शन करने की सुविधा थी और आम लोगों को केवल दूर से ही दर्शन कराए जा रहे थे। यह पुजारियों की व्यापारिक वृत्ति की ओर संकेत करता है।

### विशेष

1. मानव की स्वार्थ वृत्ति और व्यापार वृत्ति को व्यंग्यात्मकता शैली में प्रस्तुत किया है।
2. धार्मिक स्थलों पर भक्ति के स्थान पर पैसे को अधिक महत्त्व दिया जाता है।
3. भाषा सरल, चित्रात्मक और सहज है।
4. तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।

### - बहुविकल्पीय प्रश्न

**प्रश्न 1.** कथा-साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के द्वारा किस सम्मान से सम्मानित किया गया?

- |                          |                       |
|--------------------------|-----------------------|
| (क) साहित्य भूषण         | (ख) व्यास सम्मान      |
| (ग) सोवियत लैंड पुरस्कार | (घ) भारत-भारती सम्मान |

**प्रश्न 2.** युवामन की संवेदना, भावना और विचार जगत की उथल-पुथल को ध्यान में रखकर कालिया जी ने किस कहानी का सृजन किया?

- |                  |                       |
|------------------|-----------------------|
| (क) बेघर         | (ख) प्रेम कहानी       |
| (ग) दूसरा देवदास | (घ) एक पत्नी के नोट्स |

**प्रश्न 3.** प्रेम का प्रथम अंकुरण किसके हृदय में उत्पन्न हुआ?

- |          |                  |
|----------|------------------|
| (क) पारो | (ख) देवदास       |
| (ग) संभव | (घ) क और ग दोनों |

**प्रश्न 4.** किस कहानी का कथ्य, विषयवस्तु, भाषा और शिल्प बेजोड़ है?

- |                  |                  |
|------------------|------------------|
| (क) तीसरी कसम    | (ख) संवदिया      |
| (ग) दूसरा देवदास | (घ) उसने चुना था |

**प्रश्न 5.** प्रस्तुत कहानी के कथ्य को किस धार्मिक और पवित्र स्थल के इर्द-गिर्द रचा गया है?

- (क) ऋषिकेश (ख) उज्जैन  
(ग) राम की पौड़ी (घ) हर की पौड़ी

**प्रश्न 6.** पाँच बजे जो फूलों के दोने एक रुपये में बिक रहे थे, अचानक वे दो-दो रुपये के क्यों हो गये?

- (क) फूलों की कमी के कारण (ख) फूलों की माँग बढ़ जाने के कारण  
(ग) केवल क (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 7.** प्रस्तुत पाठ में गंगापुत्र की उपाधि से किसे सम्मानित किया गया है?

- (क) गोताखोर (ख) भीष्म पितामह को  
(ग) देवव्रत को (घ) पुजारी को

**प्रश्न 8.** पूजा-पाठ में नियमित आस्था किसकी नहीं थी?

- (क) गोताखोर (ख) संभव  
(ग) लेखिका (घ) देवदास

**प्रश्न 9.** पुजारी द्वारा युगल समझ कर आशीर्वाद देने की गलती कैसे हुई?

- (क) पारो के द्वारा 'हम' शब्द का प्रयोग करना  
(ख) दोनों का सन्निकट खड़े होना  
(ग) संभव के द्वारा लड़की को एकटक देखना  
(घ) उपरोक्त सभी

**प्रश्न 10.** सद्यः स्नाता शब्द का तात्पर्य है?

- (क) प्रातःकालीन स्नान (ख) तुरंत नहाकर आयी हुई नायिका  
(ग) दौड़कर आना (घ) नदी में किया गया स्नान



## पठित गद्यांश दूसरा देवदास

यकायक सहस्र दीप जल उठते हैं, पंडित अपने आसन से उठ खड़े होते हैं। हाथ में अंगोछा लपेट के पंचमंजिली नीलांजलि पकड़ते हैं और शुरू हो जाती है आरती। पहले पुजारियों के झराए गले से समवेत स्वर उठता है - जय गंगे माता, जो कोई तुझको ध्याता, सारे सुख पाता, जय गंगे माता। घंटे घड़ियाल बजते हैं। मनौतियों के लिए लिए हुए फूलों की छोटी-छोटी किशितियाँ गंगा की लहरों पर इठलाती हुई आगे बढ़ती हैं। गोताखोर दोने पकड़, उनमें रखा चढ़ावे का पैसा उठाकर मुँह में दबा लेते हैं।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

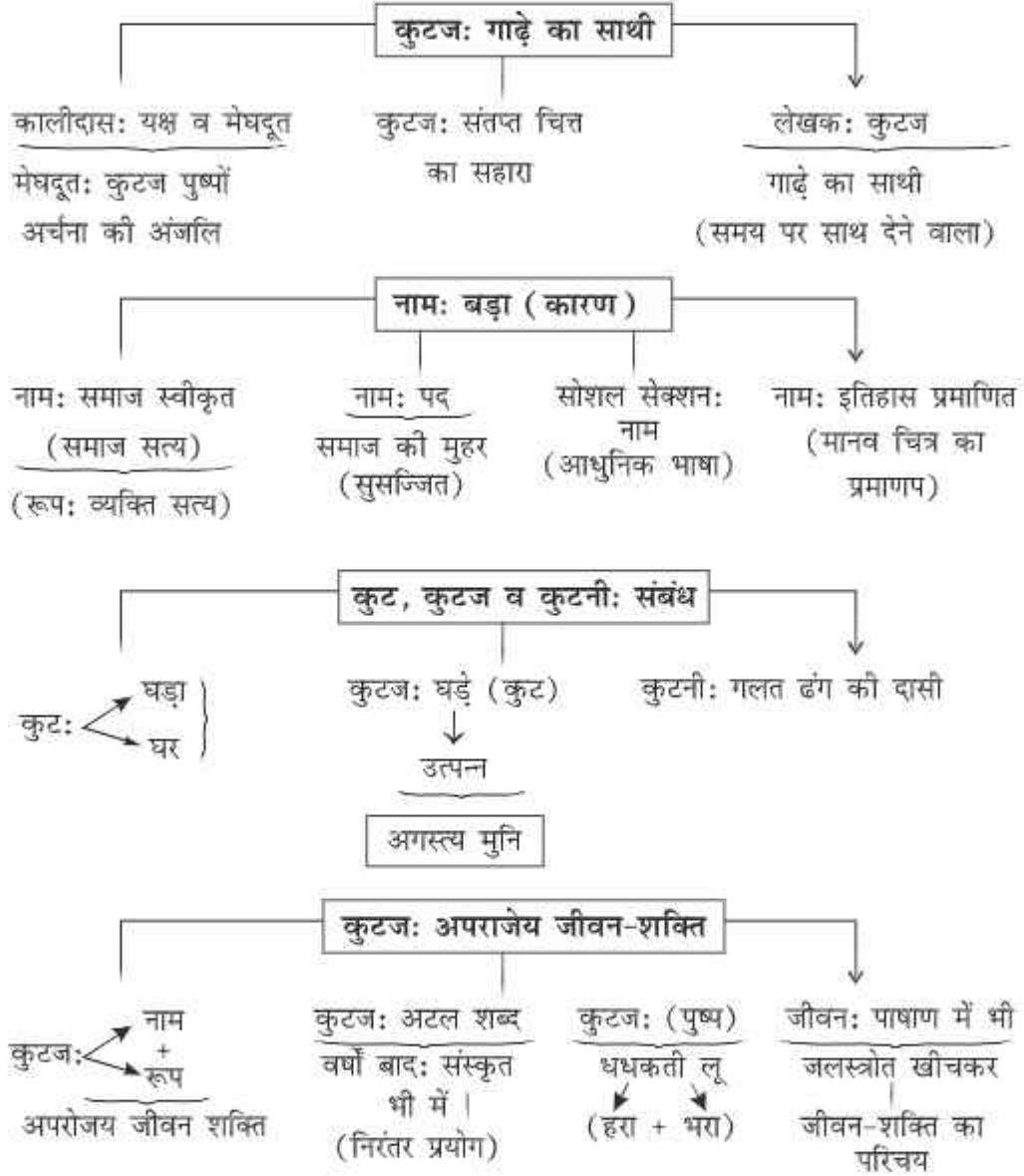
1. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से अवतरित है ?  
(क) देवदास (ख) दूसरा देवदास  
(ग) क व ख (दोनों) (घ) इनमें से कोई नहीं
2. 'यकायक सहस्र दीप जल उठे' कहाँ ?  
(क) हर की पौड़ी पर (ख) राम की पौड़ी पर  
(ग) वृंदावन में (घ) मंदिरों में
3. पंडित ने अपने हाथ में क्या पकड़ा ?  
(क) आसन (ख) दीपक  
(ग) पंचमंजिली आरती (घ) अंगोछा
4. झराए गले से समवेत स्वर किनका उठता है ?  
(क) भक्तों का (ख) पुजारियों का  
(ग) लोगों का (घ) सभी
5. गोताखोर क्या करते हैं ?  
(क) दोना पकड़ते हैं (ख) पैसा मुँह में दबाते हैं  
(ग) क व ख (दोनों) (घ) डुबकी लगाने का

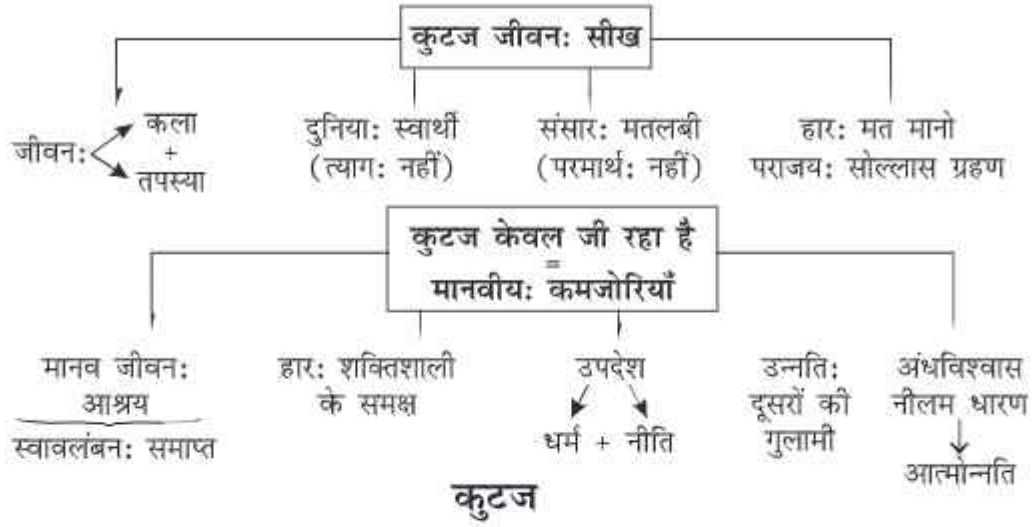
ई सामग्री-



दूसरा देवदास (कहानी)  
ममता कालिया

## हजारी प्रसाद द्विवेदी





**पाठ की विधा :** निबंध।

**मूल संवेदना/प्रतिपाद्य :** कुटज हिमालय पर्वत की ऊँचाई पर सूखी शिलाओं के बीच उगने वाला एक जंगली पौधा है। इसमें सौन्दर्य व सुगंध न होते हुए भी मानव के लिए एक संदेश है। कुटज अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति, आत्म निर्भरता एवं विषम परिस्थितियों में भी शान से जीता है और मानव को भी यही संदेश देता है। इस निबंध का उद्देश्य यह बताना है कि सामान्य से सामान्य वस्तु में भी विशेष गुण हो सकते हैं।

### पाठ का सार

**हिमालय और कुटज :** कहा जाता है कि पर्वत शोभा के निकेतन (घर) होते हैं। हिमालय को तो पृथ्वी का मानदण्ड कहा जाता है। लोग इसे शिवालिक शृंखला भी कहते हैं। अर्थात् शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा प्रतीत होता है। यहाँ काली-काली चट्टानों और उनके बीच की शुष्कता को झेलकर भी कुछ टिगने से पौधे मस्त मौला से दिख रहे हैं। ये भयंकर गर्मी की मार को झेलकर भी बेहया से जी रहे हैं। ये पौधे कठोर पत्थरों की छाती को चीरकर गहरी खाईयों से रस खींचकर सरस बने हुए हैं।

**नाम से रूप की पहचान :** हिमालय पर्वत पर लगे इन टिगने से पेड़ों में एक पेड़ को लेखक पहचानता है किन्तु उसका नाम याद नहीं आता। नाम के बिना रूप की पहचान अधूरी रह जाती है। यूँ तो इसे अनेक नाम लेखक दे सकता था किन्तु नाम तो वह होना चाहिए जिससे समाज की स्वीकृति मिली हो। तभी लेखक को याद आता है कि इस टिगने पौधे का नाम तो कुटज है।

**गाढ़े का साथी :** संस्कृत साहित्य का परिचित नाम 'कुटज' लेकिन कवियों ने इसकी सदैव उपेक्षा की है। कालोदास ने यक्ष द्वारा मेघ की अभ्यर्थना कराते समय कुटज के फूलों की ही अंजलि दिलवाई थी। ऐसे समय में जब कोई फूल नहीं था, मुसीबत के समय इसी के द्वारा पूजा सम्पन्न होने के कारण इसे गाढ़े का साथी कहा गया।

**अपराजेय जीवनी शक्ति :** कुटज का पौधा नाम और रूप दोनों में ही अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है। ये भयंकर गर्मी की लू के थपेड़े खाकर भी हरा-भरा बना रहता है। यह पाताल की छाती चीरकर भी अपना प्राप्य वसूल लेता है, भोग्य खींच लेता है। यही प्रेरणा कुटज मानव को भी देता है कि उसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी किसी के आगे गिड़गिड़ाना नहीं है, किसी के आगे घुटने नहीं टेकने, दाँत नहीं निपोरने वरन् संघर्ष करते हुए सफलता पानी है। मनुष्य को स्वयं के लिए नहीं बल्कि सर्व के लिए न्योछावर होना है।

**स्वावलंबी कुटज :** सुख और दुःख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है और दुखी वह है जिसका मन परवश है। परवश अर्थात् दूसरों की खुशामद करने, तलवे चाटना आदि। कुटज धन्य है क्योंकि वह तो अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने ऊपर सवारी नहीं करने देता।

**कुटज शब्द के विभिन्न अर्थ :** कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो। कुट घड़े को भी कहते हैं और घर को भी कहते हैं। कुट अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहे जाते हैं। घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे। कोई और बात रही होगी। संस्कृत में 'कुटिहारिका' और 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं। एक ज़रा गलत ढंग की दासी को कुटनी भी कह दिया जाता है।

## प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** कुटज क्या केवल जी रहा है - लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

**उत्तर :** 'केवल जी रहा है' शब्दों से लगता है जैसे कोई मजबूरी में जी रहा है लेकिन कुटज के साथ ऐसा नहीं है। वह तो अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर जी रहा है और केवल जी ही नहीं रहा शान से, स्वावलंबन के साथ जी रहा है।

इस प्रश्न से मानव स्वभाव की इन कमजोरियों पर प्रकाश पड़ता है- बहुत से लोग 'जीना है' - केवल इसलिए विवशता पूर्वक जीते हैं। उनमें जिजीविषा (जीने की इच्छा) शक्ति की कमी होती है। ऐसे लोगों में संघर्ष का अभाव होता है। जो मिल जाता है, उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। वे कठिन परिस्थितियों से टकराकर अपना प्राप्य वसूल नहीं कर पाते।

वे मन से हार चुके हैं। जब तक वे अपनी इस प्रवृत्ति को नहीं त्यागेंगे, तब तक उनके जीवन में आनन्द नहीं आएगा।

**प्रश्न 2.** कुटज की जीवन जीने की कला से आप क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं? उसके माध्यम से लेखक ने मनुष्य की किन कमजोरियों की ओर संकेत किया है?

**उत्तर :** कुटज की जीवन जीने की कला से हम यह प्रेरणा ग्रहण करते हैं कि हमें विषम परिस्थितियों में जीने की कला आनी चाहिए। हर हाल में जिओ और मस्ती के साथ जियो। हमें आत्मसम्मान के साथ जीना चाहिए। जहाँ से भी संभव हो अपना प्राप्य पाने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए चाहे पाताल की छाती भी क्यों न भेदनी पड़े। किसी की चापलूसी मत करो और अपने मन पर नियंत्रण रखो। ईर्ष्या द्वेषभावना से उपर उठना चाहिए।

**निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।**

दुख और सुख तो मन ..... दूसरों का फँसाने के लिए जाल बिछाता है।

**सन्दर्भ :** पाठ का नाम - कुटज। लेखक - हजारी प्रसाद द्विवेदी।

**प्रसंग :** लेखक ने कुटज के जीवन को प्रेरणादायी बताते हुए सुखी और दुखी व्यक्ति की विवेचना की है।

**व्याख्या :** लेखक कहता है कि सुख और दुख तो मन के दो भाव हैं। व्यक्ति सुखी भी रह सकता है, दुखी भी। जिस व्यक्ति का मन अपने वश में है, वह सुखी है और जिस व्यक्ति का मन परवश होता है अर्थात् दूसरों के अधीन होता है, वह दुःखी रहता है। ऐसे लोगों की संकल्प शक्ति क्षीण (कमजोर) होती है। परवश अर्थात् स्वयं को छोटा समझना, दूसरों की चापलूसी करना, दूसरों की हों में हों मिलाना अर्थात् ऐसे लोग कोई भी कार्य अपनी इच्छा से नहीं कर पाते, न ही शीघ्र कोई निर्णय ले पाते हैं। ऐसे लोग सदैव दूसरों को फँसाने, नीचा दिखाने के लिए चाल चलते हैं। अपने दोषों को छिपाने के लिए दूसरों के दोष निकालते हैं।

**विशेष**

1. दुख और सुख की समीक्षा की गई है।
2. विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
3. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग है।
4. तत्सम प्रधान शब्दावली।



### बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 1955 में प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य और राष्ट्रपति का नामिनी किसे नियुक्त गया ?

- (क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) सोहन लाल वर्मा  
(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) श्री राम वर्मा

प्रश्न 2. किस पुस्तक पर द्विवेदी जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ?

- (क) विचार और वितर्क (ख) विचार और वीथि  
(ग) आलोक पर्व (घ) रस-मीमांसा

प्रश्न 3. भारत सरकार ने द्विवेदी जी को किस अलंकरण से विभूषित किया?

- (क) भारत रत्न (ख) पद्म विभूषण  
(ग) पद्म श्री (घ) पद्म भूषण

प्रश्न 4. अपराजेय जीवनीशक्ति स्वालंबन आत्म विश्वास और विषम परिस्थितियों में भी शान से खड़ा है?

- (क) हिमालय (ख) लेखक  
(ग) कुटज (घ) हिन्दी साहित्य

प्रश्न 5. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और आचार्य क्षिति मोहन सेन का सान्निध्य किसे प्राप्त हुआ?

- (क) श्री धर पाठक (ख) नलिन विलोचन शर्मा  
(ग) रामविलास शर्मा (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 6. संपूर्ण हिमालय को देख कर किसी के मन में मूर्ति स्पष्ट होगी -

- (क) समाधिस्थ महादेव (ख) समाधिस्थ विष्णु  
(ग) समाधिस्थ कृष्ण (घ) समाधिस्थ ब्रह्मा

प्रश्न 7. 'ये भी पाषण की छाती फोड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लेते हैं।' इस पंक्ति से कुटज की किस विशेषता का पता चलता है?

- (क) जिजीविषा (ख) दूसरों का हक छीनने को सोच  
(ग) मरने की चाह (घ) कोई नहीं

**प्रश्न 8.** कुटज के माध्यम से मानव को उपदेश दिया गया है-

- (क) विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए लक्ष्य प्राप्त करना
- (ख) विषम परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देना
- (ग) अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर असंभव को भी संभव पर दिखाना।
- (घ) क व ग दोनों दोनों

**प्रश्न 9.** मन की परवशता का परिणाम है -

- (क) मानव का सुखी होना
- (ख) मानव का दुःखी होना
- (ग) मानव की सफलता का होना
- (घ) क व ग दोनों

**प्रश्न 10.** कुटज हरा-भरा व जीवंत बना रहता है -

- (क) शिवालिक की शुष्क पहाड़ियों पर
- (ख) कंचनजंघा की बर्फीली पहाड़ियों पर
- (ग) हिमालय पर्वत की चट्टानों पर
- (घ) कोई नहीं



## पठित गद्यांश

### कुटज

रूप की तो बात ही क्या है। बलिहारी हैं इस मादक शोभा को। चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से अधिक कठोर पाषाण की कारा में रूढ़ अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है। और मूर्ख के मस्तिक से भी अधिक सूने गिरि कांतर में भी ऐसा मस्त बना हुआ है कि ईर्ष्या होती है। कितनी कठिन जीवनी-शक्ति है। प्राण ही प्राण को पुलंकित करता है, जीवनी-शक्ति ही जीवनी-शक्ति को प्रेरणा देती है।

निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए।

1. गद्यांश में रूप का आशय है-

- |                   |               |
|-------------------|---------------|
| (क) व्यक्ति सत्य  | (ख) समाज सत्य |
| (ग) संस्कृति सत्य | (घ) कोई नहीं  |

2. लेखक किसी मादक शोभा पर बलिहारी होने की बात कर रहा है।

- |              |           |
|--------------|-----------|
| (क) संस्कृति | (ख) कुटज  |
| (ग) फूल      | (घ) यमराज |

3. धधकती लू किसका प्रतीक है का अभिप्राय क्या है ?

- |               |                             |
|---------------|-----------------------------|
| (क) मादक शोभा | (ख) यमराज का दारुण निःश्वास |
| (ग) दुर्जन    | (घ) पौधे का                 |

4. पाषाण की कारा में रूढ़ अज्ञात जल-स्रोत से रस खींचकर सरस कौन बना हुआ है ?

- |          |            |
|----------|------------|
| (क) मानव | (ख) जीवन   |
| (ग) कुटज | (घ) दुर्जन |

5. लेखक को कुटज से ईर्ष्या क्यों होती है ?

- |  |
|--|
| (क) सूने गिरि-कांतर में भी मस्त खड़ा है।       |
| (ख) अज्ञात जलस्रोत से बरबस ही रस खींच लेता है। |
| (ग) धधकती लू में भी हरा - भरा है               |
| (घ) उपरोक्त सभी                                |

## परिशिष्ट उत्तर संकेत ( गद्य खंड )

पाठ-1

1. घ	2. ख	3. ग	4. ग	5. ख	6. घ	7. ख
8. ग	9. ग	10. ख				

पाठ-2

1. घ	2. घ	3. क	4. ग	5. क	6. ग	7. घ
8. क	9. ख					

पाठ-3

1. ग	2. ग	3. घ	4. क	5. ग	6. ख	7. क
8. क	9. घ	10. क				

पाठ-4

1. क	2. ख	3. ग	4. ख	5. ख	6. ग	7. क
8. क	9. घ	10. क				

पाठ-5

1. क	2. घ	3. ख	4. घ	5. ग	6. क	7. क
8. ख	9. घ	10. ख	11. ख			

पाठ-6

1. घ	2. क	3. ग	4. क	5. क	6. ग	7. घ
8. ख	9. घ	10. ख				

पाठ-7

1. घ	2. ग	3. क	4. ग	5. ख	6. ख	7. घ
8. क	9. ग	10. घ				

पाठ-8

1. ख	2. घ	3. ख	4. घ	5. ख	6. ग	7. क
8. घ	9. ख	10. ख				

पाठ-9

1. क	2. ग	3. घ	4. ग	5. घ	6. ख	7. क
8. ख	9. घ	10. ख				

पाठ-10

1. ग	2. ग	3. घ	4. ग	5. घ	6. क	7. क
8. घ	9. ग	10. ग				

## अंतराल भाग-2

1. सूरदास की झोंपड़ी
3. बिस्कोहर की माटी
4. अपना मालवा : खारू-उजाड़ू सभ्यता में

## सूरदास की झोंपड़ी

### मुख्य बिन्दु

- प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'रंगभूमि' का एक अंश 'सूरदास की झोंपड़ी' एक कहानी के रूप में प्रस्तुत की गई है। यह कहानी एक अंधे भिखारी सूरदास तथा उसके पालित बेटे मिटुआ को केन्द्र में रख कर लिखी गई है।
- सूरदास ने भिक्षा माँग-माँग कर कुछ पैसे संचित किए हैं जिससे वह अपनी तीन अभिलाषाएँ पूरी करना चाहता है-
  - (क) संचित धन से पितरों का पिंडदान करना।
  - (ख) अपने पालित पुत्र मिटुआ का ब्याह करना।
  - (ग) गाँव के लिए एक कुँआ बनवाना।
- उसी गाँव में जगधर और भैरों भी रहते हैं जो इस कथा के खलनायक और उपखलनायक के पात्रों के रूप में उभरते हैं।
- भैरों की पत्नी सुभागी अपने पति की रोज-रोज की मार से बचने के लिए सूरदास की झोंपड़ी में शरण लेती थी। इसी ईर्ष्या भाव के कारण भैरों सूरदास को अपना दुश्मन समझ उससे किसी भी प्रकार बदला लेने की ढान लेता है। जिससे भैरों सूरदास से ईर्ष्या करने लगता है।
- बदले की आग बुझाने के लिए एक रात भैरों सूरदास की झोंपड़ी में आग लगाने घुसता है वहीं उस सूरदास की जमा पूँजी एक पोटली में मिलती है। भैरों वह पोटली चुराकर झोंपड़ी में आग लगा देता है।
- आग बुझाने पूरा गाँव इकट्ठा होता है। सभी आग बुझाने तथा अपराधी का नाम सोचने का कार्य करते हैं किंतु सूरदास की मनःस्थिति उस समय निराशापूर्ण होती है। वह आश्चर्यचकित, दुःखी तथा निराश था। उसके मन में केवल एक ही बात थी कि वह किसी प्रकार झोंपड़ी में जाकर अपनी पोटली निकाल लाना

चाहता था। उसे अपनी सभी मनोकामनाएँ पोटली के साथ जलती नज़र आ रही थीं।

- झोपड़ी के जल जाने पर सूरदास झोंपड़ी में अपनी पांटली तलाशने जाता है। वहाँ पर चारों ओर फूस की राख थी। उसे महसूस होता है कि आग में कंवल फूस ही नहीं उसकी तीनों अभिलाषाएँ भी जल गईं। ढूँढने पर भी उसे पोटली नहीं मिलती।
- जगधर सूरदास की झोंपड़ी जलने के पीछे भैरों को जिम्मेदार समझ कर भैरों के पास जाता है। वहाँ उसे पता चलता है कि भैरों ने झोंपड़ी जलाने से पहले सूरदास की पोटली भी चुराई थी।
- जगधर के मन में पैसों को देखकर ईर्ष्या का भाव जगता है कि भैरों को रातों रात बिना मेहनत किए पैसे मिल गए तो उसे भी ये प्राप्त होने चाहिए। इसी बात की धमकी वह भैरों को देता है कि यदि उसने आधे पैसे न दिए तो वह सूरदास को इस राज के बारे में बता देगा। भैरों पैसे देने से इंकार कर देता है।
- इसी ईर्ष्या की भावना में आकर जगधर सूरदास को भैरों की चोरी के विषय में बताता है किंतु सूरदास अपनी इस आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त रखता है क्योंकि एक गरीब के पास इतने पैसे होना उसके लिए लज्जा की बात है।
- सुभागी जो जगधर और सूरदास की बातें सुन रही है वह सूरदास से सहानुभूति रखती है तथा पोटली वापस लाने का संकल्प लेती है।
- सूरदास अपनी दशा पर दुखी था किंतु अपने पुत्र और उसके मित्रों की यह बात सुनकर कि 'खेल में कोई रोता है?' वह इस जीवन को एक खेल मानता है। उसकी मनोदशा बदल जाती है तथा वह एक खिलाड़ी की भाँति उत्साह और आत्मविश्वास से भर जाता है जो अगला खेल खेलने को तैयार होता है। सूरदास की हार न मानने की प्रवृत्ति उसमें विजय गर्व की तरंग भर देती है।

### पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई?

**उत्तर :** भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी बदला लेने के लिए जलाई। वह कई कारणों से सूरदास से बदला लेना चाहता था।

1. **सुभागी को शरण देने के कारण :** भैरों अपनी पत्नी सुभागी को रोज नशे में पीटता था। एक दिन भैरों की मार से बचकर वह सूरदास की शरण में आई। सूरदास ने उसे शरण देकर भैरों की मार से बचाया जिससे भैरों की जग हँसाई हुई।
2. **भैरों के मन में सूरदास के प्रति ईर्ष्याभाव के कारण :** सुभागी द्वारा बार-बार पति की मार से बचने हेतु सूरदास के घर में जाकर छिप जाना व सूरदास के द्वारा बीच-बचाव करके सुभागी को भैरों से बचाना-ही भैरों के मन में ईर्ष्याभाव जगा देता है और वह सूरदास से बदला लेने का निश्चय कर बैठता है।

**प्रश्न 2 :** 'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।

**उत्तर :** सूरदास का इस वाक्य से एक सशक्त चरित्र उभर कर आता है जिसमें कई विशेषताएँ हैं-

1. **हार न मानने की प्रवृत्ति :** सूरदास जीवन की विषम तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता। पुनः परिश्रम करने को तैयार रहता है।
2. **कर्मशील / मेहनती :** सूरदास एक मेहनती व्यक्ति है। अंधा होने पर भी उसने इतने पैसे जमा किए तथा आगे भी मेहनत करने से नहीं कतराता।
3. **प्रतिशोध की भावना से मुक्त :** सूरदास किसी से भी प्रतिशोध लेने की भावना नहीं रखता। भैरों के विषय में पता चलने पर भी वह उसे नुकसान पहुँचाने की नहीं सोचता।
4. **निर्णय लेने की क्षमता :** सूरदास, किसी भी परिस्थिति को केवल मौन रहकर उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देता। वह तुरंत सकारात्मक निर्णय लेकर जीवन में आगे बढ़ता है। झोपड़ी जलने पर उसने यही किया।
5. **सहृदय एवं परोपकारी :** सूरदास कोमल हृदय का है जिसने स्वयं पर संकट आने का अंदेशा होने पर भी सुभागी को शरण दी। अंत में भी सुभागी के बेघर होने का जिम्मेदार वह स्वयं को ही मानता है।
6. **आशावादी दृष्टिकोण :** मिठुआ के खेल की बात सुन कर सूरदास के मन में भविष्य के प्रति नवीन आशा जागृत होती है। वह अतीत को भूल कर भविष्य को फिर से सुधारना चाहता है।



### बहुविकल्पीय प्रश्न

**प्रश्न 1.** सूरदास के लिए पोटली की अहमियत थी क्योंकि:-

- (क) रुपयों की पोटली उसकी अभिलाषाओं का आधार
- (ख) रुपयों की पोटली उसके बुजुर्गों की कमाई
- (ग) रुपयों की पोटली उसके लोक-परलोक का आशा दीपक
- (घ) क व ग दोनों

**प्रश्न 2.** सुभागी रात-भर छिपी रही :-

- (क) मंदिर के आँगन में लगे अमरूद के बाग में
- (ख) मंदिर के पिछवाड़े अमरूद के बाग में
- (ग) मंदिर के बाहर अमरूद के पेड़ के पीछे
- (घ) कोई नहीं

**प्रश्न 3.** सुभागी अकेले रहने का, जीवन-यापन का निर्णय लेती है :-

- (क) भैरों के सरस स्वभाव के कारण
- (ख) भैरों के नीरस स्वभाव के कारण
- (ग) भैरों के सहज स्वभाव के कारण
- (घ) क व ग दोनों

**प्रश्न 4.** घीसू की बात का सूरदास पर प्रभाव पड़ा :-

- (क) सूरदास का क्षुब्ध हो जाना
- (ख) सूरदास का मर्माहत हो जाना
- (ग) सूरदास की निराशा, क्षोभ व उदासी का गायब हो जाना
- (घ) कोई नहीं

**प्रश्न 5.** सुभागी प्रण तोड़ती है :-

- (क) भैरों के घर को छोड़ने के इरादे का
- (ख) सूरदास के घर को छोड़ने का
- (ग) जगधर से बात न करने का
- (घ) जगधर के घर को छोड़ने का

**प्रश्न 6.** 'चूल्हा टंडा किया होता तो दुश्मन का कलेजा कैसे टंडा होता' में शब्द कहे थे :-

- (क) सूरदास ने
- (ख) जगधर ने
- (ग) नायकराम ने
- (घ) बजरंगी ने

प्रश्न 7. 'सूरदास की झोंपड़ी' में प्रयुक्त शब्द 'सुभा' का अर्थ है :-

- (क) शक करना (ख) शुभ काम करना  
(ग) चिंता करना (घ) माफ करना

प्रश्न 8. पोटली की जानकारी मिलने पर जगधर की पहली प्रतिक्रिया थी :-

- (क) भैरों को उस पोटली को वापिस लौटाने की सलाह देना  
(ख) भैरों को बराबर-बराबर बाँट लेने की सलाह देना  
(ग) भैरों को रखने की सलाह देने  
(घ) कोई नहीं

प्रश्न 9. सूरदास अपनी आर्थिक हानि को गुप्त रखना चाहता था :-

- (क) दरिद्रता के कम होने के कारण (ख) अंधा होते हुए भी धन-संचय के कारण  
(ग) लज्जा के कारण (घ) ख व ग दोनों

प्रश्न 10. 'सूरदास की झोंपड़ी' लेखक प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है :-

- (क) रंगभूमि (ख) कंकाल  
(ग) कर्मभूमि (घ) गबन

----- • ----- • ----- • ----- • -----

## बिस्कोहर की माटी

- प्रस्तुत पाठ में लेखक अपने गाँव तथा वहाँ के प्राकृतिक परिवेश, ग्रामीण जीवनशैली, गांवों में प्रचलित घरेलू उपचार तथा अपनी माँ से जुड़ी यादों का वर्णन करता है।
- कोइयाँ एक प्रकार का जलपुष्प है। इसे कुमुद और कोकाबेली भी कहते हैं। शरद ऋतु में जहाँ भी पानी एकत्रित होता है, कोइयाँ फूल उग जाता है। शरद की चाँदनी में कोइयाँ की पत्तियाँ तथा उजली चाँदनी एक सी लगती है। इस पुष्प की गंध अत्यंत मादक होती है।
- लेखक के अनुसार बच्चे का माँ से संबंध भी अद्भुत होता है। बच्चा जन्म लेते ही माँ के दूध को भोजन के रूप में ग्रहण करता है नवजात शिशु के लिए दूध अमृत के समान है। बच्चा माँ से सिर्फ दूध ही ग्रहण नहीं करता, उससे संस्कार भी ग्रहण करता है जो उसके चरित्र तथा व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते हैं।
- बच्चा सुबकता है, रोता है, माँ को मारता है। माँ भी कभी-कभी मारती है फिर भी बच्चा माँ से चिपटा रहता है। बच्चा माँ के पेट से गंध स्पर्श भोगता है। बच्चा दाँत निकलने पर टीसता है अर्थात् हर चीज़ को दाँत से काटता है।
- चाँदनी रात में खटिया पर बैठकर जब माँ बच्चे को दूध पिलाती है, तब बच्चा दूध के साथ-साथ चाँदनी के आनंद को महसूस करता है अर्थात् चाँदनी माँ के समान स्नेह, आनंद तथा ममता देती है, माँ से लिपटकर बच्चे का दूध पीना जड़ से चेतन होना यानि मानव जन्म लेने की सार्थकता है।
- बिसनाथ अभी माँ का दूध पीता था कि उसके छोटे भाई का जन्म हो गया। माँ के दूध पर छोटे भाई का अधिकार हो गया। बिसनाथ का दूध छूट गया। बिसनाथ को उनके तीन साल होने तक पड़ोस की कसेरिन दाई ने पाला। माँ का स्थान दाई ने ले लिया। यह बिसनाथ पर अत्याचार हुआ।
- दिलशाद गार्डन में लेखक बतखों को देखता है। बतख अंडे देने के समय पानी छोड़कर जमीन पर आ जाती है। लेखक ने एक बतख को कई अंडों का सेते देखा।

- लेखक को बत्तख माँ तथा मानव शिशु माँ में कई समानताएँ दिखीं। जिस प्रकार बत्तख पंख फैलाकर अंडों को दुनिया की नज़रों से बचाकर रखती है। अपनी पैनी चोंच से सतर्कता से कोमलता से अपने पंखों के अंदर छिपा कर रखती है, हमेशा निगाह कौवे की ताक पर रखती है उसी प्रकार मानव शिशु की माँ भी अपने बच्चों को दुनिया की नज़रों से बचाती है, उन पर आने वाली मुसीबत को माँपकर उनकी रक्षा करती है।
- गर्मियों की दोपहर में लेखक घर से चुपचाप बाहर निकल जाता था। लू से बचने के लिए माँ धोती या कमीज से गाँठ लगाकर प्याज बाँध देती। लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना पिया जाता, आम को भूनकर या उबालकर गुड़ या चीनी में उसका शरबत पिया जाता, उसे देह में लेपा जाता था, नहाया जाता तथा उससे सिर धोया जाता था।
- बिस्कोहर में बरसात आने से पहले बादल ऐसे घिरते थे कि दिन में ही अंधेरा हो जाता था। बरसात कई दिन तक होती थी जिसके कारण कच्चे घरों की दीवारें गिर जाती थीं तथा घर धँस जाता था।
- बरसात आने पर पशु-पक्षी सभी पुलकित हो उठते हैं। बरसात में कई कीड़े भी निकल आते हैं। उमस के कारण मछलियाँ मरने लगती हैं। पहली बारिश में दाद-खाज, फोड़ा फुंसी ठीक हो जाते हैं।
- मैदानों, खेतों तथा तालाबों में कई प्रकार के साँप होते हैं। साँप को देखने में डर तथा रोमांच दोनों हैं। डोडहा ओर मजगिदवा विषहीन होते हैं। डोडहा को वामन जाति का मानकर मारा नहीं जाता। धामिन भी विषहीन है। घोर कड़ाइच, भटिहा तथा गेंहुअन खतरनाक हैं जिसमें से सबसे अधिक गेंहुअन खतरनाक है जिसे फेंटारा भी कहते हैं।
- गाँव में लोग प्रकृति के बहुत निकट हैं। लेखक के अनुसार फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं क्योंकि गाँव में कई रोगों का इलाज फूलों द्वारा किया जाता है। फूलों की गंध से महामारी, देवी, चुडैल आदि का संबंध जोड़ा जाता है। गुड़हल के फूल को देवी का फूल मानते हैं। बेर के फूल सूंघने से बरें, ततैया का डंक झड़ता है। आम के फूल कई रोगों के उपचार में काम आते हैं। नीम के पत्ते और फूल चेचक में रोगी के समीप रखते हैं।
- लेखक के गाँव में कमल भी खिलते हैं। हिंदुओं के यहाँ कमल-पत्र पर भोजन परोसा जाता है। कमल पत्र को पुरइन भी कहते हैं तथा कमल की नाल को

भसीण कहते हैं। कमल ककड़ी केवल बिक्री के लिए प्रयोग की जाती है। गट्टा (कमल-बीज) खाया जाता है।

- अपने एक रिश्तेदार के घर लेखक ने एक, अपनी उम्र से बड़ी औरत, देखी जिसकी सुन्दरता लेखक के हृदय में बस गई। लेखक को प्रकृति के समान ही वह औरत आकर्षक लगी। प्रकृति के समस्त दृश्यों, जूही की लता, चाँदनी की छटा, फूलों की खूशबू में उन्हें वह औरत नज़र आने लगी। लेखक को लगा, सुन्दर प्रकृति नारी के सजीव रूप में आ गई हो।
- लेखक जिस औरत को देखकर समस्त प्रकृति के सौन्दर्य को भूल गया उससे अपनी भावनाओं का इज़हार न कर सका। वह सफ़ेद रंग की साड़ी पहने रहती है, आँखों में एक व्यथा लिए दिखती है। वह इंतज़ार करती हुई दिखती है। लेखक के लिए वह संगीत, मूर्ति, नृत्य आदि कला के हर अस्वाद में मौजूद है। लेखक के लिए हर सुख-दुःख से जोड़ने की सेतु है। इस स्मृति के साथ मृत्यु का बोध सजीव तौर पर जुड़ा है।

### पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** लेखक ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्ख से की हैं?

**उत्तर :** लेखक ने बत्ख माँ और मानव शिशु माँ की तुलना करते हुए कई पक्ष सामने रखे हैं। लेखक को दोनों में कई समानताएँ दिखती हैं।

1. **खतरों से बचाना :** जिस प्रकार बत्ख अपने पंखों को फैलाकर अंडों को दुनिया की नज़रों से बचाकर रखती है उसी प्रकार मानव माँ भी अपने बच्चों की ढाल बनकर उन्हें दुनिया के खतरों से बचाती है।
2. **सतर्कता और कोमलता से देखरेख :** जैसे बत्ख माँ अपनी पैनी चोंच से सतर्कता बरतते हुए कोमलता से अंडों को अपने पंखों के अंदर छुपाती है उसी प्रकार मानव माँ भी बच्चे को डांटते मारते समय ध्यान रखती है कि शिशु को नुकसान न पहुँचे।
3. **आने वाले खतरे को भाँपना :** बत्ख माँ की निगाह सदैव कौवे की ताक पर रहती है, मानव माँ भी बच्चे पर आने वाले संभावित खतरे को भाँप लेती है।

**प्रश्न 2 :** लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताओं का वर्णन कीजिए।

- उत्तर:1. लेखक के लिए प्रकृति : लेखक का प्रकृति से गहरा लगाव था। उसे प्रकृति के कई दृश्य अनुपम एवं हृदयग्राही लगते थे। प्रकृति उसके लिए सौन्दर्य का पर्याय थी।
2. लेखक की दृष्टि में नारी : लेखक ने अपने गाँव में एक रूपवती नारी देखी जिसकी सुन्दरता लेखक के हृदय में बस गई। वह भी लेखक को सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति लगी।
3. प्रकृति और नारी में समानता : सौन्दर्य की समानता होने के कारण लेखक को लगा जैसे प्रकृति नारी का सजीव रूप लेकर उसके समक्ष आ गई। प्रकृति के समस्त दृश्यों में जूही की लता, चाँदनी की छटा, फूलों की खुशबू आदि में उसे नारी के सौन्दर्य का आभास होता था। सौन्दर्य के समान धर्म होने के कारण लेखक को प्रकृति और नारी एकाकार होते हुए दिखे।

### बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. हरसिंगार का फूल खिलता है :-

- (क) शरद ऋतु में (ख) ग्रीष्म ऋतु में  
(ग) बसंत ऋतु में (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2. किस साँप को मारा नहीं जाता?

- (क) होंडहा साँप (ख) मजगिदवा साँप  
(ग) धामिन साँप (घ) गेहुँअन साँप

प्रश्न 3. गाँव में बरें व ततैया का डंक झाड़ा जाता है :-

- (क) नीम के फूल से (ख) आम के फूल से  
(ग) बेर के फूल से (घ) मटर के फूल से

प्रश्न 4. नीम के पत्तों का उपयोग किया जाता है :-

- (क) मलेरिया के रोग में (ख) डेगूँ के रोग में  
(ग) चेचक के रोग में (घ) चिकनगुनिया के रोग में

प्रश्न 5. विश्वनाथ त्रिपाठी का जन्म हुआ :-

- (क) इलाहबाद, उत्तर प्रदेश (ख) गया, बिहार  
(ग) कानपुर, उत्तर प्रदेश (घ) बिस्कोहर, उत्तर प्रदेश

**प्रश्न 6.** कोइयाँ है :-

- (क) जलपुष्प (ख) एक जीव  
(ग) ऋतु का नाम (घ) जंगली पुष्प

**प्रश्न 7.** यह अध्याय किस आत्म-कथा का अंश है?

- (क) अर्ध-कथानक (ख) नंगातलाई का गाँव  
(ग) मेरी जीवनधारा (घ) पेड़ का हाथ

**प्रश्न 8.** बिस्काहर की माटी लेखक के मन में बस गई :-

- (क) गाँव के फूलों को याद रखने के कारण  
(ख) प्रेम व भावुक संवेदना से परिपूर्ण बचपन की मधुर यादों के कारण  
(ग) बचपन में गाँव के बच्चों के साथ खेले खेलों के कारण  
(घ) क व ग दोनों

**प्रश्न 9.** बच्चे के प्रति माँ की ममता होती है :-

- (क) स्वजन्य (ख) प्रकृतिजन्य  
(ग) कर्मजन्य (घ) केवल ख

**प्रश्न 10.** प्रकृति को कवि ने किसके समान माना है:-

- (क) सजीव नारी (ख) सजीव पेड़-पौधे  
(ग) सजीव जीव जंतु (घ) कोई नहीं

— • — • — • — • —

## अपना मालवा : खाऊ उजाड़ू सभ्यता में

- लेखक ने इस पाठ में मालवा प्रदेश के मौसम, ऋतुओं, नदियों, वहाँ के जनजीवन तथा संस्कृति का अत्यंत सजीव वर्णन किया है।
- मालवा में जब अत्यधिक बारिश होती है तो जनजीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। यातायात के साधन टप्प हो जाते हैं तथा लोगों को आने-जाने में कठिनाई होती है।
- बारिश होने के कारण गेहूँ और चने की फसल अच्छी होती है किंतु सोयाबीन की फसल गल जाती है।
- अतिवृष्टि से नदियों में बाढ़ आ जाती है और पानी लोगों के घरों, दुकानों आदि में घुस जाता है।
- लेखक के अनुसार मालवा में पहले जैसा पानी अब नहीं गिरता क्योंकि उद्योग धंधों से निकलने वाली गैसों से पर्यावरण गर्म हो रहा है। वायु प्रदूषण फैल रहा है। पर्यावरण असंतुलित हो गया है। वर्षा ऋतु पर भी इसका कुप्रभाव पड़ा है और मालवा में औसतन वर्षा कम हो गई है।
- आज के इंजीनियर पश्चिमी शिक्षा को उच्च मानते हैं। उनका मानना है कि ज्ञान पश्चिम के रिनेंसा के बाद आया। किंतु भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा इतिहास की अज्ञानता के कारण उन्हें ये नहीं पता कि जिस पानी के प्रबंधन में वे स्वयं को माहिर मानते हैं उसे विक्रमादित्य, भोज और मुंज जैसे राजाओं ने रिनेंसा के आने से पहले ही समझ लिया था।
- पठार पर पानी रोकने के लिए इन्होंने तालाब-बावड़ियाँ बनवाईं और बरसात का पानी रोक कर धरती के गर्भ के पानी को जीवंत रखा।
- हमारे इंजीनियरों ने तालाबों और बावड़ियों को बेकार समझ कर उन्हें कीचड़ से भर जाने दिया।
- नवरात्रि की पहली सुबह मालवा में घट स्थापना होती है। लोग गोबर से घर आँगन लीपने, मानाजी के ओटले को रंगोली से सजाने तथा सज-धजकर त्यौहार मनाने की तैयारी में हैं। इन दिनों में वर्षा ऋतु समाप्त हो जाने पर मौसम साफ हो जाता है।



- लेखक हैरान है कि इस समय भी बदल गरज रहे हैं तथा बरसने के पूरे आसार है।
- ओंकारेश्वर में नर्मदा पर बांध बन रहा था जो सीमेंट कंक्रीट के विशाल राक्षस के समान प्रतीत हांता है। नदी के वेग में बाँध से रूकावट आ गई जिसके कारण नदी तिनफिन करती बह रही है। मानो बाँध बनने से चिढ़ रही हो। बाँध के निर्माण में लगी मशीनें और ट्रक गुर्गते हुए से प्रतीत हांते हैं।
- वर्तमान युग औद्योगिक विकास का युग है। नदियाँ गंदे नालों में बदल रही हैं। लोगों द्वारा कूड़ा करकट नदियों में बहाया जाता है। कल-कारखानों उद्योगों का रासायनिक पदार्थ नदियों में बहाया जाता है। पूजा सामग्रियों को जल में प्रवाहित किया जाता है। इन सभी कारणों से नदियाँ सड़े नालों में बदल रही हैं। शिप्रा, चंबल, नर्मदा, चोरल इन सभी नदियों को विकास की सभ्यता ने गंदे पानी के नालों में बदल दिया है।
- हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें प्रकृति से काट दिया है। हमारे नदी नाले सूख गये हैं। पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। विकास की औद्योगिक सभ्यता, वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है।
- यह खाऊ-उजाड़ सभ्यता यूरोप और अमेरिका की देन है। वे अपनी इस पद्धति को बदलना नहीं चाहते। वातावरण को गर्म करने वाली गैसों सबसे ज्यादा यूरोप और अमेरिका से निकलती है। फिर भी वे अपनी इस जीवन पद्धति से समझौता नहीं करना चाहते।
- इन गैसों द्वारा तापमान के बढ़ने के कारण ही समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है, मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है। लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिरना, बाडमेर के गांव बाढ़ में डूब गए। यही कारण है कि मालवा में अब डग-डग रोटी पग-पग नीर नहीं मिलता।
- लेखक के अनुसार हम अमेरिका तथा यूरोप की नकल करते हुए ऐसी जीवन पद्धति, संस्कृति, सभ्यता को अपना रहे हैं जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक सिद्ध होगा।

## महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसके गरम होने में यूरोप और अमेरिका की भूमिका लिखें।

- उत्तर:**
- 1. वातावरण के गरम होने का कारण :** आज औद्योगिक विकास के चलते हम जो उद्योग धंधों, कल-कारखाने लगा रहे हैं उनसे वातावरण को गरम करने वाली गैसों निकलती हैं। ये गैसें वातावरण के तापमान को कई डिग्री से बढ़ा रही हैं।
  - 2. यूरोप और अमेरिका की भूमिका :** ये हानिकारक गैसों सबसे अधिक यूरोप और अमेरिका जैसे देशों से निकलती हैं। इन देशों में लगे उद्योगों से निकलने वाली ग्रीन हाउस गैसों से वातावरण सर्वाधिक प्रदूषित हो रहा है।
  - 3. वातावरण के गर्म होने से हानियाँ :** इन गैसों द्वारा तापमान बढ़ने के कारण समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है, मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है तथा पर्यावरण असंतुलित हो गया है।
  - 4. इसे रोकने के लिए प्रयास :** इन हानियों से बचने के लिए हमें प्रकृति के विकास के साथ लेकर चलना होगा। उद्योग धंधों में ऐसा विकल्प चुनना होगा जिससे हमारे पर्यावरण को भी हानि न पहुँचे। जैसे बंजर धरती पर औद्योगीकरण करना या जंगलों को बेवजह न काटना आदि।

**प्रश्न 2 :** आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले कैसे बना रही हैं?

**उत्तर :** आज की सभ्यता के अनुसार हम नदियों को माता नहीं मानते बल्कि उसे उपयोग की वस्तु समझते हैं तथा कई रूपों में उसे दूषित कर रहे हैं-

- 1. कूड़ा-कचरा फेंक कर :** लोगों द्वारा अपने घर का कूड़ा कचरा इन नदियों में बहा दिया जाता है। जिसे पूर्णतः बहा ले जाने में असमर्थ नदियाँ प्रदूषित हो जाती हैं।
- 2. पूजा सामग्री बहाकर :** हिन्दु सभ्यता के अनुसार पूजा सामग्री को पवित्र मान नदियों में बहा दिया जाता है जिसके कारण नदियाँ दूषित होती जा रही हैं।
- 3. कल कारखानों का रासायनिक पदार्थ :** उद्योगों कारखानों से निकला सारा रासायनिक पदार्थ नदियों में बहाया जाता है जिनसे नदियों का पानी जहरीला भी हो जाता है।

4. नदियों का निरंतर रखरखाव न करना : नदियों के प्रति लापरवाही के कारण इनके नियमित सफाई व रखरखाव पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता जिससे ये गंदे नालों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

### बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. मालवा प्रदेश है :-

- (क) रेतीला (ख) उपजाऊ  
(ग) पठारी (घ) ऊँचे पहाड़ों वाला

प्रश्न 2. पाठ में प्रयुक्त रनेंसा शब्द का अर्थ है :-

- (क) रात (ख) पुनर्जागरण  
(ग) दिन (घ) अत्यधिक

प्रश्न 3. राजा मुंज व भोज ने बढ़ावा दिया था :-

- (क) भूमिगत जल को निकालने को  
(ख) तालाब, कुओं और बावड़ियों के निर्माण को  
(ग) पर्यटन स्थल बनाने को  
(घ) कोई नहीं

प्रश्न 4. विक्रमादित्य जैसे दूरदर्शी राजाओं ने तालाबों व बावड़ियों के निर्माण को बढ़ावा दिया -

- (क) पाताल से पानी निकालने हेतु (ख) भूमिगत जल की निकासी हेतु  
(ग) भूमिगत जल के संचयन हेतु (घ) केवल ग

प्रश्न 5. नागदा स्टेशन पर लेखक को चाय पिलाते हैं :-

- (क) मीणा जी (ख) शर्मा जी  
(ग) मुँशी जी (घ) कोई नहीं

प्रश्न 6. दो जगह से नर्मदा को देखने पर नदी लेखक को दिखाई दी :-

- (क) कहीं अथाह गहरी (ख) कहीं मटमैली कहीं छिछली  
(ग) केवल ख (घ) क व ख दोनों

**प्रश्न 7.** ओंकारेश्वर के सामने नर्मदा नदी पर बनाए जा रहे विशाल बाँध को लेखक क्या कहकर अपना असंतोष प्रकट करता है?

- (क) सुखदायी (ख) राक्षसी  
(ग) दुःखदायी (घ) सदानीरा

**प्रश्न 8.** पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप का परिणाम है :-

- (क) मौसम-चक्र बिगड़ना (ख) तापमान में निरंतर वृद्धि व बर्फ पिघलना  
(ग) केवल ख (घ) क व ख दोनों

**प्रश्न 9.** अमेरिका व यूरोप - ये विकसित देश हैं :-

- (क) सर्वाधिक पर्यावरण की रक्षा करने वाले  
(ख) सर्वाधिक कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन करने वाले  
(ग) केवल क  
(घ) केवल ख

**प्रश्न 10.** शिप्रा नदी की महत्ता बढ़ जाती है :-

- (क) चंबल नदी में मिलने से  
(ख) उज्जैन में महाकाल के चरण-स्पर्श करने से  
(ग) इटावा के पास यमुना नदी में मिलने से  
(घ) कोई नहीं



## अति महत्वपूर्ण प्रश्न

### सूरदास की झोंपड़ी

**प्रश्न 1 :** 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता।' इस कथन के आधार पर सूरदास की मनः स्थिति बताइए?

**प्रश्न 2 :** जगधर के मन में किस तरह की ईर्ष्या का भाव जगा और क्यों?

**प्रश्न 3 :** सूरदास अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

**प्रश्न 4 :** 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी' इस कथन की पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए?

**प्रश्न 5 :** “सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा।” इस कथन के आधार पर सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए?

**प्रश्न 6 :** सुभागी व भैरों के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

### बिस्कोहर की माटी

**प्रश्न 1 :** कोइयाँ किसे कहते हैं? उसकी विशेषताएँ बताइए।

**प्रश्न 2 :** गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए।

**प्रश्न 3 :** बिसनाथ द्वारा बिस्कोहर में हुई बरसात का वर्णन कीजिए।

**प्रश्न 4 :** बिस्कोहर गाँव में साँपों की कौन-कौन सी प्रजातियाँ थीं?

**प्रश्न 5 :** बिस्कोहर की माटी लेखक के मन में क्यों बस गई?

**प्रश्न 6 :** “बच्चा दूध ही नहीं, चाँदनी भी पी रहा था। चाँदनी भी माँ जैसी पुलक-स्नेह और ममता दे रही है।” आशय स्पष्ट कीजिए?

**प्रश्न 7 :** बच्चे का माँ का दूध पीना, सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित्र होता है? कहानी के आधार पर वर्णित कीजिए।

### अपना मालवा: खाऊ उजाड़ सभ्यता में

**प्रश्न 1 :** मालवा में जब बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

**प्रश्न 2 :** अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता, जैसा गिरा करता था, इसका क्या कारण है?

**प्रश्न 3 :** मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज ने पानी के रख-रखाव के लिए क्या प्रबंध किए।

**प्रश्न 4 :** ‘नई दुनिया’ की लाइब्रेरी से क्या पता चलता है?

**प्रश्न 5 :** अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ उजाड़ जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा। इस कथन पर विचार कीजिए।

**प्रश्न 6 :** हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी के प्रबंधन को जानते हैं और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे?

**प्रश्न 7 :** लेखक के विचार में हम जिसे ‘विकास की औद्योगिक सभ्यता’ कहते हैं, वह उजाड़ की अपसभ्यता कैसे है?

**प्रश्न 8 :** इस पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

## परियोजना कार्य हेतु कुछ प्रमुख विषय

1. हिंदी साहित्य के विभिन्न युग अथवा किसी एक काल का चयन

- आदिकाल
- भक्तिकाल
- रीतिकाल
- आधुनिक काल

2. आदिकाल

- समयसीमा
- नामकरण
- सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियाँ
- मुख्य प्रवृत्तियाँ
- मुख्य कवि एवं उनकी रचनाएँ

3. भक्तिकाल

- समय सीमा
- विभिन्न काव्य धाराएँ
  - निर्गुण काव्य धारा
  - सगुण काव्य धारा
  - ज्ञान मार्गी काव्य धारा
  - प्रेम मार्गी काव्य धारा

4. रीतिकाल

- समय सीमा
- नामकरण
- मुख्य प्रवृत्तियाँ
  - रीतिसिद्ध कवि
  - रीतिबद्ध कवि
  - रीतिमुक्त कवि

5. आधुनिक काल

- भारतेंदु युग
- द्विवेदी युग

- छायावाद
  - प्रगति वाद
  - प्रयोगवाद
  - नई कविता
  - साठोत्तरी कविता
6. जनसंचार माध्यम
- मुद्रित माध्यम
  - रेडिया
  - टेलीविजन
  - इंटरनेट
7. सोशल मीडिया के व्यापक आयाम
- परिभाषा
  - प्रकार
  - भूमिका
  - लाभ
  - हानि
8. जनसंचार का मुद्रित माध्यम
- परिभाषा
  - इतिहास
  - खूबियां
  - हिंदी के महत्वपूर्ण समाचार पत्र
  - किन्हीं दो समाचार पत्रों की तुलना
9. जनसंचार माध्यम के रूप में सिनेमा
- परिचय
  - इतिहास
  - भूमिका
  - किन्हीं चार फिल्मों की समीक्षा
10. पत्रकारीय लेखन के विविध आयाम
- समाचार
  - फीचर
  - आलेख

- स्तंभ
- साक्षात्कार
- कार्टून
- रिपोर्ट
- संपादकीय लेख ( परिभाषा, उदाहरण लेखन शैली)

#### 11. विशेष लेखन

- परिभाषा
- विशेष भाषा एवं शब्दावली
- शैली
- विशेष लेखन के क्षेत्र
  - राजनीति
  - अर्थ व्यवस्था
  - अपराध
  - स्वास्थ्य
  - फिल्म
  - पर्यावरण
  - शिक्षा

#### 12. कहानी और लघुकथा

- परिभाषा
- अंतर
- ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाली कहानियाँ (किन्हीं दो कहानियों की समीक्षा)
- किन्हीं दो कहानियों अथवा दो लघु कथाओं की समीक्षा

#### 13. अन्य विषय

- हिंदी की कविताओं में बादल का वर्णन
- हिंदी कविता में प्रकृति सौंदर्य
- मेरा शहर
- नदियाँ-हमारी जीवन रेखा
- मेरा प्रिय साहित्यकार
- ग्रामीण और शहरी जीवन में अंतर



## अभिव्यक्ति और माध्यम

---

1. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

---

2. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

---

3. विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

---

4. सृजनात्मक लेखन : कैसे बनती है कविता

---

5. नाटक लिखने का व्याकरण

---

6. कैसे लिखें कहानी

---

7. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

---

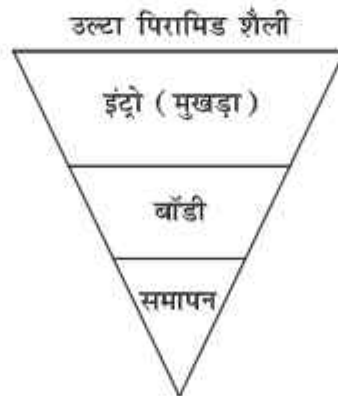
## विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

### मुख्य बिन्दु

- जनसमाज द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जन संचार के अनेक माध्यम हैं जैसे - मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट। मुद्रित अर्थात् समाचार पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए, रेडियो सुनने के लिए, टी.वी. देखने व सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने व देखने के लिए प्रयुक्त होते हैं। अखबार पढ़ने के लिए है, रेडियो सुनने के लिए है और टी० वी० देखने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। किन्तु इंटरनेट पर पढ़ने देखने और सुनने, तीनों की आवश्यकता पूरी हो जाती है।
- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित (प्रिंट) माध्यम सबसे पुराना, माध्यम है जिसके अंतर्गत समाचार, पत्र, पत्रिकाएँ आती हैं। मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ। तत्पश्चात् जर्मनी के गुटेनबर्ग ने छापाखाना की खोज की। भारत में सन् 1556 में, गोवा में पहला छापाखाना खुला जिसका प्रयोग मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए किया था। आज मुद्रण कम्प्यूटर की सहायता से होता है।
- मुद्रित माध्यम की खूबियाँ (विशेषताएँ) देखें तो हम पाएंगे कि सभी को अपनी कमियाँ हैं और खूबियाँ हैं। लिखे हुए शब्द स्थायी होते हैं। इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार समझ न आने पर कई बार पढ़ सकते हैं और उन पर चिंतन-मनन करके संतुष्ट भी हो सकते हैं। जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले अथवा बाद में पढ़ सकते हैं। चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं।
- मुद्रित माध्यम की खामियाँ (कमियाँ) - निरक्षरों (अशिक्षित लोगों) के लिए अनुपयोगी, टी.वी. तथा रेडियो की भाँति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं दे पाता। समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात् 24 घंटे में एक बार, साप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक मास में एक बार प्रकाशित

होता है। किसी भी खबर अथवा रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेडलाइन (निश्चित समय सीमा) होती है। स्पेस (स्थान) सीमा भी होती है। महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार ही किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है। मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर, सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

- मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए भाषा, व्याकरण, शैली, वर्तनी, समय-सीमा, आबंटित स्थान, अशुद्धि शोधन एवं तारतम्यता पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।
- **रेडियो** : रेडियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है जिसमें ध्वनि, शब्द और स्वर ही प्रमुख हैं। रेडियो मूलतः एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। रेडियो समाचार की संरचना समाचार पत्रों तथा टी.वी. की तरह उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है, जिसमें अखबार की तरह पीछे लौट कर सुनने की सुविधा नहीं होती। लगभग 90 फीसदी समाचार या कहानियाँ इसी शैली में लिखी जाती हैं।
- **उल्टा पिरामिड शैली** : उल्टा पिरामिड शैली में समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं का बताया जाता है अर्थात् कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन् खबर के आरंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों का तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-इंट्रो, बॉडी, समापन।
  1. **इंट्रो** : समाचार का मुख्य भाग
  2. **बॉडी** : घटते क्रम में खबर का विस्तृत ब्यौरा।
  3. **समापन** : अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काटकर छोटा भी किया जा सकता है।



## समाचार लेखन ( उल्टा पिरामिड शैली )

काँफी हाउस में गोली चलने से हड़कंप

1. **इंट्रो** कनॉट प्लेस इलाके में स्थित एक काँफी हाउस में गुरुवार दोपहर अचानक गोली चलने से हड़कंप मच गया। हालांकि, घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। पुलिस मौके पर पहुंच गई और जांच आरंभ की तो यह पता चला कि गलती से पिस्टल गिर जाने से दुर्घटनावश गोली चली थी।

2. **बॉडी** जानकारी के अनुसार, कनॉट प्लेस के एन ब्लॉक में स्टार बक्स के नाम से एक काँफी हाउस है। यहां गुरुवार दोपहर टैंगोर पार्क मॉडल टाउन निवासी 61 वर्षीय अनिल कुमार बैठे थे। उन्होंने अपने साथ एक लाइसेंसी रिवाल्वर 32 एमके फील्ड गन रखी थी। गुरुवार को वह अपने दो दोस्तों के साथ इस काँफी होम में मीटिंग के लिए आए थे। करीब दो घंटे से सभी वहां बैठे हुए थे। इस दौरान वह जैसे ही खड़े हुए कि उनकी पैंट की जेब से पिस्टल गिर गई और गोली चल गई। गनीमत यह रही कि इस घटना में कोई जखमी नहीं हुआ। मामले की जांच नहीं हुई। मामले की जांच से जुड़े एक पुलिस अधिकारी ने कहा घटनास्थल पर सीसीटीवी कैमरे तो लगे हुए हैं, लेकिन आरोपी के खड़े होने की वजह से घटना की तस्वीरें कैमरे में कैद नहीं हो सकी।

3. **समापन** पुलिस ने मौके से पिस्टल, पांच राउंड गोली और एक चली हुई गोली का खाली कारतूस बरामद किया है। जांच आगे बढ़ी तो यह खुलासा हुआ कि यह लाइसेंसी पिस्टल है, जो अनिल कुमार के नाम पर जारी की गई है। लेकिन, इस लाइसेंस की वैधता बीते साल 26 अक्टूबर को ही खत्म हो गई थी। पुलिस ने इस मामले में आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जांच में जुटी पुलिस अब उससे पूछताछ कर पूरे घटनाक्रम को समझने का प्रयास कर रही है।

2. **यौन उत्पीड़न से निपटने को शिक्षा विभाग तैयार**

1. **इंट्रो** दिल्ली के शिक्षा विभाग ने कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न की घटनाओं पर हाईटेक तकनीक अपनाया है। विभाग ने सरकारी स्कूलों और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में काम करने वाली महिला कर्मचारियों द्वारा यौन उत्पीड़न की शिकायत के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल तैयार किया है। इसके जरिये महिलाएं शिकायत दर्ज कर सकेंगी।

2. **बॉडी** शिक्षा निदेशालय ने सर्कुलर में कहा है कि कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न कानून 2013 के तहत स्कूलों में हर स्तर पर आंतरिक शिकायत समिति गठित की जा चुकी है। निदेशालय ने कहा कि अब विभाग की ओर से शिकायतों के लिए आईसीसी का ऑनलाइन मॉड्यूल तैयार किया गया है। निदेशालय ने इसकी शुरुआत कर दी है।

3. **समापन** अब [www.edudel.nic.in](http://www.edudel.nic.in) पर जाकर शिकायतकर्ता कंप्लेंट अंग्रेस्ट सेक्सुअल हैरेसमेंट एट वर्कप्लेस के पोर्टल पर जाकर शिकायत कर सकेंगे।

**समाचार लेखन की बुनियादी बातें :** साफ सुथरी टाइप कॉपी, ट्रिपल स्पेस में टाइप करते हुए दोनों ओर हाशिया छोड़ें, एक पंक्ति में 12-13 शब्दों से अधिक न हों, पंक्ति के अंत में विभाजित शब्द का प्रयोग न करें। समाचार कॉपी में जटिल शब्द एवं संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग न करें। लंबे अंकों को तथा दिनांक को शब्दों में लिखें। निम्नलिखित, क्रमांक, अधोहस्ताक्षरित, किंतु, लेकिन, उपर्युक्त, पूर्वोक्त जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। वर्तनी पर विशेष ध्यान दें। समाचार लेखन की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करें।

**टेलीविजन :** टेलीविजन जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है। टेलीविजन भी रेडियो की भांति एक रेखीय माध्यम है। टी.वी. में शब्दों व ध्वनियों की अपेक्षा दृश्यों (तस्वीरों) का महत्त्व अधिक है। टी.वी. में शब्द दृश्यों के अनुरूप तथा उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं। टेलीविजन में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक खबर बताने की शैली का प्रयोग किया जाता है। अतः टी.वी. में समाचार लेखन की प्रमुख शर्त दृश्य के साथ लेखन है।

- **टी.वी. खबरों के प्रमुख चरण :** प्रिंट अथवा रेडियो की भांति टी.वी. चैनल समाचार देने का मूल आधार सूचना देना है। टी.वी. में ये सूचनाएँ इन चरणों से हाँकर गुजरती हैं-
  1. फ्लैश (ब्रेकिंग न्यूज) 2. ड्राई एंकर, 3. फोन इन, 4. एंकर विजुअल, 5. एंकर-बाइट, 6. लाइव, 7. एंकर पैकेंज।
- **विशेषताएँ :** देखने व सुनने की सुविधा, जीवंतता तुरन्त घटी घटनाओं की जानकारी, प्रभावशाली, समाचारों का लगातार प्रसारण।
- **कमियाँ :** भाषा शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी, बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी-कभी सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है, अपरिपक्व बुद्धि पर सीधा प्रभाव।
- **रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा :** भाषा के स्तर व गरिमा को बनाए रखते हुए सरल भाषा का प्रयोग करें ताकि सभी वर्ग तथा स्तर के लोग समझ सकें। वाक्य छोटे-छोटे तथा सरल हों, वाक्यों में तारतम्यता हो। जटिल शब्दों, सामासिक शब्दों एवं मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से बचें। जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्तताएँ, अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ा जाए।

**इंटरनेट** : इंटरनेट की दीवानी नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर छपे समाचार पढ़ने में आनंद नहीं आता उन्हें स्वयं को घंटे दो घंटे में अपडेट रखने की आदत सी बन गई है। इंटरनेट पत्रकारिता, ऑन लाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता इसे कुछ भी कह सकते हैं। इंटरनेट द्वारा जहाँ हम सूचना, मनोरंजन, ज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवादों का आदान-प्रदान कर सकते हैं वहीं इसे अश्लीलता, दुष्प्रचार एवं गंदगी फैलाने का माध्यम भी बनाया जा रहा है। इंटरनेट का प्रयोग समाचारों के संप्रेषण, संकलन तथा सत्यापन एवं पुष्टिकरण में भी किया जा रहा है। टेलीप्रिंटर के जमाने में जहाँ एक मिनट में केवल 80 शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जा सकते थे वहीं आज एक सेकेंड में लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

- इंटरनेट पर समाचार पत्र का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम किसी भी रूप में समाचारों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों के माध्यम से अपने समय की धड़कनों को अनुभव कर दर्ज करने का कार्य करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है। इसी पत्रकारिता को वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है।
- इस समय विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है जबकि भारत में दूसरा दौर। भारत के लिए प्रथम दौर 1993 से प्रारंभ माना जाता है और दूसरा दौर 2003 से प्रारंभ हुआ है।
- भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ डॉटकॉम', 'इंडिया इंफॉलाइन' तथा 'सोफी' जैसी कुछ साइटें हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है। वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।
- हिंदी में नेट पत्रकारिता, 'वेब दुनिया' के साथ प्रारम्भ हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ, ये पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नयी दुनिया', 'हिन्दुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान-पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण प्रारंभ हुए। 'प्रभासाक्षी' नाम से प्रारंभ हुआ अखबार प्रिंट रूप में न होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. है।
- हिन्दी वेब जगत में आज अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं। कुल मिलाकर हिन्दी को वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशवकाल में ही है। सबसे बड़ी समस्या हिन्दी के फौंट की है। अभी भी हमारे पास हिन्दी का कोई की-बोर्ड

नहीं है। जब तक हिन्दी के की-बोर्ड का मानकीकरण नहीं हो जाता तब तक इस समस्या को दूर नहीं किया जा सकता।

### बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम है :-

- (क) रेडियो (ख) टेलिविज़न  
(ग) प्रिंट माध्यम (घ) इंटरनेट

प्रश्न 2. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता है:-

- (क) शब्दों में स्थायित्व होता है  
(ख) अनपढ़ों के लिए सहायक  
(ग) लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं  
(घ) क और ग

प्रश्न 3. भारत में पहला छापाखाना शुरू हुआ था :-

- (क) 1556 गोवा में (ख) 1585 कलकत्ता में  
(ग) 1565 बंगाल में (घ) 1558 गोरखपुर में

प्रश्न 4. मुद्रण की शुरूआत किस देश से हुई :-

- (क) जर्मनी (ख) चीन  
(ग) पुर्तगाल (घ) भारत

प्रश्न 5. रेडियो जनसंचार का कौन सा माध्यम है :-

- (क) श्रव्य (ख) दृश्य  
(ग) प्रिंट (घ) क और ख

प्रश्न 6. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर आधारित है :-

- (क) कथात्मक शैली (ख) पिरामिड शैली  
(ग) उल्टा पिरामिड शैली (घ) चित्रात्मक शैली

प्रश्न 7. ब्रेकिंग न्यूज़ का अर्थ है :-

- (क) खबरों को तोड़ना
- (ख) खबरों को बार-बार दिखाना
- (ग) किसी खबर को तत्काल दर्शकों तक पहुँचाना
- (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8. 'एंकर बाइट' का अर्थ है :-

- (क) प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा खबर की पुष्टि करना।
- (ख) खबर को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना
- (ग) एंकर द्वारा किसी खबर को बताना
- (घ) एंकर द्वारा खबर को छोटा करके दिखाना।

प्रश्न 9. वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय किसे कहा जाता है :-

- (क) इंडियन एक्सप्रेस को
- (ख) द हिंदू को
- (ग) तहलका डॉटकॉम को
- (घ) हिंदुस्तान टाइम्स को

प्रश्न 10. वेब पत्रकारिता क्या है :-

- (क) इंटरनेट पर पत्र लिखना
- (ख) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन
- (ग) इंटरनेट पर खबरें ढूँढना
- (घ) उपरोक्त सभी

अभिव्यक्ति और  
माध्यम - 3 विविध  
माध्यमों के लिए  
लेखन



अभिव्यक्ति और माध्यम  
- विविध माध्यमों के  
लिए लेखन भाग 2





## दीर्घ प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** विभिन्न जनसंचार माध्यमों, प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट को पाँच-पाँच विशेषताएँ एवं कमियाँ बताते हुए तालिका बनाएँ।

उत्तर :

विशेषताएँ (खूबियाँ)	टी.वी.	रेडियो	प्रिंट	इंटरनेट
1. दुःश्रम व प्रिंट दोनों माध्यमों का लाभ मिलता है। 2. इंटरनेट के द्वारा बटन दबते ही सूचनाओं का विशाल भंडार प्राप्त होता है। 3. यह संवादों के आदान-प्रदान व चैटिंग का सस्ता स्रोत है। 4. खबरें बड़ी तीव्र गति से पहुँचाई जाती है। 5. इंटरनेट के द्वारा खबरों का संप्रेषण पुष्टि, सत्यापन व बैकग्राउंड तुरंत होता है।	1. विश्व की घटनाओं को घर बैठे सीधे (लाइव) देख सकते हैं। 2. यह मनोरंजन व ज्ञानवर्धन का उत्तम साधन है। 3. टी.वी. की खबरों से जीवंतता का एहसास होता है। 4. इसमें देखने व सुनने का आनंद एक साथ लिया जा सकता है। 5. इसके माध्यम से साक्षर व निरक्षर दोनों तरह के लोग कार्यक्रम देख व सुन सकते हैं।	1. इस माध्यम से ध्वनि स्वर, शब्दों तथा संगीत से मनोरंजन व ज्ञान वर्धन होता है। 2. रेडियो में सुनने की उन्मुक्तता (स्वतंत्रता) होती है। 3. यह सस्ता माध्यम है। 4. निरक्षर व पढ़े लिखे सभी इसका आनंद ले सकते हैं। 5. इसके माध्यम से दूरदराज के कार्यक्रम भी आसानी से सुने जा सकते हैं।	1. पढ़ने व सोचने का पूरा अवसर प्राप्त होता है। 2. यह लिखित भाषा का विस्तार है। 3. प्रिंट माध्यम के द्वारा किसी भी सामग्री को सन्दर्भ के लिए काटकर लंबे समय तक रख सकते हैं। 4. कहीं से भी (बीच में से भी) और कभी भी पढ़ सकते हैं। 5. प्रिंट माध्यम चिंतन, विचार व संप्रेषण का माध्यम है।	

### खामियाँ ( कमियाँ )

प्रिंट	रेडियो	टी.वी.	इंटरनेट
<ol style="list-style-type: none"> <li>1. इसमें सीमित स्थान होता है।</li> <li>2. निरक्षर अर्थात् अनपढ़ लोगों के लिए प्रिंट माध्यम किसी काम का नहीं है।</li> <li>3. इस माध्यम द्वारा हम तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते।</li> <li>4. आय के विशेष स्रोत न होने के कारण प्रिंट माध्यम को विज्ञापन कर्त्ताओं को वरीयता देनी पड़ती है।</li> <li>5. अशुद्धियाँ हों तो छपने के बाद उन्हें दूर नहीं किया जा सकता।</li> </ol>	<ol style="list-style-type: none"> <li>1. एक रेखीय माध्यम की तरह पीछे नहीं लौट सकते।</li> <li>2. कई बार रेडियो कार्यक्रमों एवं समाचार बुलेटिनों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।</li> <li>3. रेडियो में अधिक लंबे कार्यक्रम नहीं सुना सकते क्योंकि वे उबाऊ हो जाते हैं।</li> <li>4. इसमें बोलचाल की भाषा के प्रयोग से भाषा के विस्तार व विकास की संभावना नहीं रहती।</li> <li>5. इस माध्यम में श्रोताओं को बौध्दिक रखना काफी कठिन है।</li> </ol>	<ol style="list-style-type: none"> <li>1. इसमें समय की सीमा होती है। यह भी एक रेखीय माध्यम है।</li> <li>2. टी.वी. कार्यक्रमों में दर्शकों को बाँधे रखना कठिन कार्य है।</li> <li>3. इसमें दृश्य श्रव्य (विजुअल व शब्द वाइट्स) में संतुलन बनाना बहुत कठिन है।</li> <li>4. इसमें सैक्स, हिंसा व रोमांस को प्रोत्साहन मिलता है और भाषा के विस्तार को भी संभावना कम रहती है।</li> <li>5. टी.वी. माध्यम में लाभ को ध्यान में रखकर तैयार किए गए कार्यक्रम विशेष दर्शक वर्ग के लिए होते हैं। अतः ये टाइप हो जाते हैं।</li> </ol>	<ol style="list-style-type: none"> <li>1. इसमें समय सीमा न होने के कारण लोग दूसरे कार्यों से कटते जा रहे हैं।</li> <li>2. गरीबों तथा अनपढ़ों के लिए इंटरनेट किसी काम का नहीं। इसे चलाने के लिए धन व कौशल की आवश्यकता होती है।</li> <li>3. नयी पीढ़ी में स्वयं को हर समय अपडेट रखने की लत लगने के बुरे परिणाम सामने आ रहे हैं।</li> <li>4. यह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का माध्यम है।</li> <li>5. इंटरनेट को केवल एक औजार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।</li> </ol>

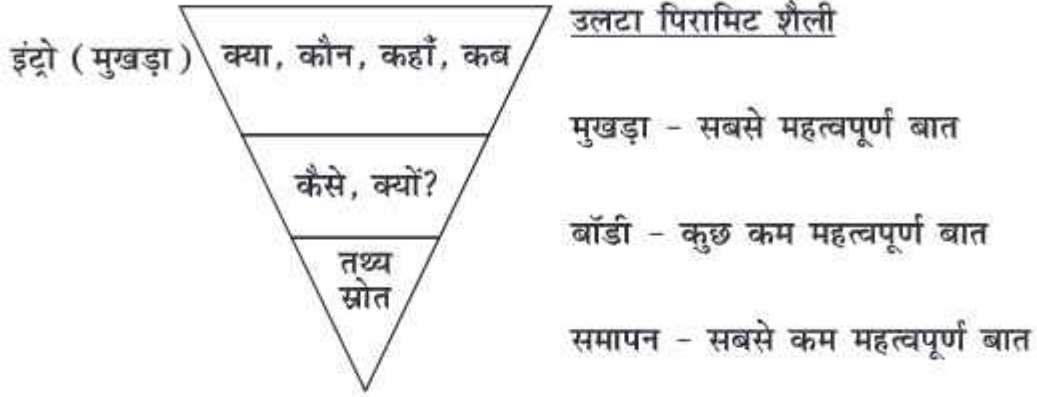
## पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

- लोकतंत्र में अखबार एक पहरेदार शिक्षक और जनमत निर्माण का कार्य करते हैं।
- अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने, उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। पत्रकार इस दायित्व की पूर्ति के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।
- पत्रकारीय लेखन एवं सृजनात्मक लेखन एक दूसरे से भिन्न हैं

पत्रकारीय लेखन	सृजनात्मक लेखन
1. इसका संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं और मुद्दों से है।	1. इस लेखन में कल्पना को भी स्थान दिया जाता है।
2. यह अनिवार्य रूप से तात्कालिक और पाठकों की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है।	2. इस लेखन में लेखक पर बंधन नहीं होता उसे काफी छूट होती है।

- पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का मूलभाव सक्रिय होता है।
- अच्छे लेखन की भाषा : सीधी, सरल एवं प्रभावी भाषा।
- अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य बातें : (1) गूढ़ से गूढ़ विषय की प्रस्तुति सरल सहज और रोचक हो। (2) विषय तथ्यों द्वारा पुष्ट हो। (3) लेख उद्देश्यपूर्ण हो।
- पत्रकार के प्रकार : 1. पूर्णकालिक : किसी समाचार संगठन के नियमित वेतनभोगी।
- 2. अंशकालिक : एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाले।
- 3. स्वतंत्र पत्रकार (फ्रीलांसर): स्वतंत्र पत्रकार जो भगतान के आधार पर अलगअलग अखबारों के लिए लिखें।

- छह ककार : किसी भी समाचार में छह प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है। क्या हुआ? कैसे हुआ? किसके साथ हुआ? क्यों हुआ? कहाँ हुआ? कब हुआ?



- फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना होता है।
- फीचर तथा समाचार में अंतर।

समाचार	फीचर
1. समाचार का कार्य पाठकों को सूचना देना होता है	1. फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।
2. इसका उद्देश्य पाठकों को ताज़ी घटना से अवगत कराना होता है।	2. इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना, और मनोरंजन करना होता है।
3. इसमें शब्द सीमा होती है।	3. इसमें शब्द सीमा नहीं होती। अच्छे फीचर 200 से 2000 तक शब्दों के होते हैं।
4. इसमें लेखक के विचारों या कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता।	4. इसमें लेखक की कल्पना और विचारों का भी स्थान मिलता है।
5. इसमें फोटो का होना अनिवार्य नहीं है।	5. अच्छे फीचर के साथ फोटो या ग्राफिक्स होना अनिवार्य है।

- फीचर के प्रकार : समाचार बैकग्राउंड फीचर, खोजपरक फीचर साक्षात्कार

फीचर, जीवन शैली फीचर, रूपात्मक फीचर, व्यक्तित्व चरित्र फीचर, यात्रा फीचर आदि।

- **विशेष रिपोर्ट** : समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।
- **विशेष रिपोर्ट के प्रकार**
  1. खोजी रिपोर्ट - पत्रकार ऐसी सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन कर जनता के समक्ष लाता है जो पहले सार्वजनिक न हो।
  2. इन डेप्थ रिपोर्ट - सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है
  3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट - घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या की जाती है
  4. विवरणात्मक रिपोर्ट - समस्या का विस्तृत विवरण दिया जाता है।
- आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है लेकिन विषयानुसार रिपोर्ट में फीचर शैली का भी प्रयोग होता है इसे फीचर रिपोर्ट कहते हैं।
- विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।
- **विचारपरक लेखन** : अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय, टिप्पणियां विचारपरक लेखन में आते हैं।
- **संपादकीय** - संपादकीय को अखबार की आवाज माना जाता है क्योंकि संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते।

संपादकीय का दायित्व संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है इसलिए इसके नीचे किसी का नाम नहीं होता। संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना या मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करता है।
- **स्तंभ लेखन** : कुछ लेखक अपने वैचारिक रूझान और लेखन शैली के लिए पहचाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता देखकर समाचार पत्र उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने एवं उसमें अपने

विचार व्यक्त करने की लेखक को पूर्ण छूट होती है। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वे अपने लेखक के नाम से पहचाने जाते हैं।

- **संपादक के नाम पत्र** : यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। यह अखबार का एक स्थायी स्तंभ है जिसके जरिए पाठक विभिन्न मुद्दों पर न सिर्फ अपनी राय प्रकट करता है अपितु जन समस्याओं को भी उठाता है।
- **लेख** : संपादकीय पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार और विषय विशेषज्ञ किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। इसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। किंतु इसमें लेखक तर्कों एवं तथ्यों के जरिए अपनी राय प्रस्तुत करता है।
- **साक्षात्कार** : साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढाँचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए न केवल ज्ञान अपितु संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

## पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्न

**प्रश्न 1** : फीचर से क्या अभिप्राय है? फीचर कितने प्रकार के होते हैं? इनकी विशेषताएँ बताइए।

**उत्तर** : फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना शिक्षित करना और मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है।

फीचर कई प्रकार के होते हैं जिनमें मुख्य हैं-

- |                           |                      |
|---------------------------|----------------------|
| 1. समाचार बैकग्राउंड फीचर | 5. रूपात्मक फीचर     |
| 2. खोजपरक फीचर            | 6. व्यक्तिचित्र फीचर |
| 3. साक्षात्कार फीचर       | 7. यात्रा फीचर       |
| 4. जीवनशैली फीचर          | 8. विशेषकार्य फीचर   |

**फीचर की विशेषताएँ** : फीचर की शैली कथात्मक शैली की तरह होती है। इसका आकार रिपोर्ट से बड़ा होता है। एक अच्छे एवं रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन या ग्राफिक्स का होना अनिवार्य है। फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। फीचर बोझिल नहीं होते।

**प्रश्न 2** : विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं? विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है?

**उत्तर : विशेष रिपोर्ट :** समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

**विशेष रिपोर्ट के प्रकार :** विशेष रिपोर्ट के मुख्य चार प्रकार हैं।

1. **खोजी रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में पत्रकार उन सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन करके जनता के सामने लाता है जो पहले सबके समक्ष न आए हों।
2. **इन डेपथ रिपोर्ट :** सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को जनता के सामने लाने वाली रिपोर्ट।
3. **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विस्तार से विश्लेषण और व्याख्या की जाए।
4. **विवरणात्मक रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में समस्या का विस्तृत वर्णन और बारीक से बारीक तथ्य को उद्घाटित किया जाए।

इनके अलावा एक अन्य रिपोर्ट भी है।

**फीचर रिपोर्ट :** सामान्यतः रिपोर्ट उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं। किंतु कुछ एक कथात्मक शैली में लिखी जाने वाली रिपोर्ट फीचर रिपोर्ट कहलाती है।

### **बहुविकल्पीय प्रश्न**

**प्रश्न 1.** किसी घटना या समस्या जिससे अधिक से अधिक लोग प्रभावित हों, या रुचि रखें को कहते हैं :-

- |            |          |
|------------|----------|
| (क) समाचार | (ख) फीचर |
| (ग) कहानी  | (घ) आलेख |

**प्रश्न 2.** समाचार पत्रों का मुख्य कार्य है :-

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| (क) सूचना देना   | (ख) जागरुक करना |
| (ग) शिक्षित करना | (घ) उपरोक्त सभी |

**प्रश्न 3.** समाचार लेखन में कितने ककारों का प्रयोग किया जाता है :-

- |         |          |
|---------|----------|
| (क) चार | (ख) पाँच |
| (ग) छह  | (घ) आठ   |

**प्रश्न 4.** फीचर क्या नहीं है :-

- (क) सुव्यवस्थित लेख (ख) सृजनात्मक लेख  
(ग) आत्मनिष्ठ लेख (घ) तात्कालिक घटना से अवगत कराने वाले लेख

**प्रश्न 5.** गहरी छानबीन विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर तैयार रिपोर्ट या खबर को कहते हैं :-

- (क) ब्रेकिंग न्यूज़ (ख) वर्णनात्मक रिपोर्ट  
(ग) विशेष रिपोर्ट (घ) उपरोक्त सभी

**प्रश्न 6.** किस लेख को अख़बार की आवाज़ माना जाता है :-

- (क) विशेष लेख (ख) विचारपरक लेख  
(ग) इनडैप्थ लेख (घ) संपादकीय लेख

**प्रश्न 7.** पाठक समाचार पत्रों में किस रूप में भागीदार बनते हैं :-

- (क) फीचर लेख द्वारा (ख) संपादक के नाम पत्र लेखन द्वारा  
(ग) आलेख लेखन द्वारा (घ) उपरोक्त सभी

**प्रश्न 8.** फ्रीलांसर पत्रकार कहते हैं :-

- (क) फ्री में काम करने वाला पत्रकार  
(ख) कुछ भी लिखने के लिए स्वतंत्र पत्रकार  
(ग) भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखने वाला पत्रकार  
(घ) एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार

**प्रश्न 9.** एक सफल साक्षात्कारकर्ता के लिए आवश्यक है :-

- (क) संवेदनशील कूटनीति (ख) आकर्षक व्यक्तित्व  
(ग) धैर्य और साहस (घ) क और ग

**प्रश्न 10.** खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर किया जाता है :-

- (क) भ्रष्टाचार के विरुद्ध (ख) अनियमितताओं के विरुद्ध  
(ग) गड़बड़ियों और घोटालों के विरुद्ध (घ) उपरोक्त सभी



## विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

- **विशेष लेखन** : समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य विज्ञान खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी देते हैं इसी कार्य के अन्तर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लेखन किया जाए तो उसे विशेष लेखन कहते हैं।
- **डेस्क** : समाचार पत्र-पत्रिकाओं रेडियो और टी.वी. में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।
- **विशेष लेखन के क्षेत्र** : विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे अर्थ व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य इत्यादि।
- **बीट** : संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ है कि वह आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार है।
- विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नहीं है। अब बीट रिपोर्टिंग के आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।
- बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

---

### बीट रिपोर्टिंग

1. बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी होना पर्याप्त है उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती हैं।

2. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं।

### विशेषीकृत रिपोर्टिंग

1. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है।

2. विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

- विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विषय विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं।
- पत्र पत्रिकाओं को विशेष लेख लिखने वाले सामान्यतः पेशेवर पत्रकार न होकर विषय विशेषज्ञ होते हैं। जैसे खेल के क्षेत्र में हर्षा भोगले, जसदेव सिंह और नरोत्तम पुरी आदि प्रसिद्ध हैं।
- **विशेष लेखन की भाषा शैली :** विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जैसे-
  1. कारोबार और व्यापार में सोना उछला, चाँदी लुढ़की आदि।
  2. पर्यावरण संबंधित लेख में आद्रता, टाक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग आदि।
- विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विषयानुसार उल्टा पिरामिड या फीचर शैली का प्रयोग हो सकता है। पत्रकार चाहे कोई भी शैली अपनाएँ लेकिन उसे यह ध्यान में रखना होता है कि खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना चाहिए।
- **विशेषज्ञता का अभिप्राय :** विशेषज्ञता का अर्थ है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सकें।
- विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं का अपडेट रहना, पुस्तकें पढ़ना, शब्दकोश आदि का सहारा लेना, सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क रखना, निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।
- कुछ वर्षों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण रूप से उभरने वाली पत्रकारिता-आर्थिक पत्रकारिता है क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है।
- आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावली का मतलब नहीं पता होता।
- आर्थिक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह किस प्रकार, सामान्य पाठक और जानकार पाठक दोनों को भली-भाँति संतुष्ट कर पाता है।
- किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करने के लिए महत्व रखने वाली बातें हैं

कि हमारी बात पाठक / श्रोता तक पहुँच रही है या नहीं तथा तथ्यों और तर्कों में तालमेल है या नहीं।

## पाठ से संबंधित प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1 :** विशेष लेखन किसे कहते हैं? इसके प्रमुख क्षेत्र तथा उनमें प्रयोग होने वाली भाषा शैली के बारे में लिखें।

**उत्तर :** समाचार पत्रों में सामान्य समाचारों के अलावा, साहित्य विज्ञान, खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसी कार्य के अंतर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर विशेष लेखन किया जाता है उसे विशेष लेखन कहते हैं।

- **विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र :** अर्थ व्यापार, खेल मनोरंजन, विज्ञान प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य आदि।
- **विशेष लेखन की भाषा शैली :** विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। यह उल्टा पिरामिड या फीचर शैली दोनों में लिखा जाता है। यह विषयानुसार निर्धारित होती है।

विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है जैसे-

1. **कारोबार और व्यापार :** तेज़ड़िए, मंदड़िए, सोना उछला।
2. **पर्यावरण और मौसम :** आर्द्रता, टॉक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग।
3. **खेल :** जर्मनी ने घुटने टेके, आस्ट्रेलिया के पाँव उखड़े।

**प्रश्न 2 :** विशेष लेखन में बीट तथा डेस्क का अर्थ तथा महत्व बताइए।

**उत्तर :** **बीट :** समाचार पत्रों तथा रेडियो टेलीविजन में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें अपने विषय की पूरी जानकारी हो। इन्हीं डेस्कों पर काम करने वाले संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। यदि एक संवाददाता का बीट खेल है तो उसे उस क्षेत्र की सभी खेल संबंधी रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

## बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. विशेष लेखन है :-

- (क) किसी विशेष व्यक्ति का लेख
- (ख) किसी विशेष व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया लेख
- (ग) किसी विशेष विषय पर सामान्य से हटकर किया लेख
- (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2. संवाददाताओं के बीच उनकी रुचि और ज्ञान के आधार पर किए गए काम के बँटवारे को ----- कहते हैं :-

- (क) बीट
- (ख) डेस्क
- (ग) एकरिंग
- (घ) संपादकीय

प्रश्न 3. विशेष लेखन के क्षेत्र है :-

- (क) अर्थ-व्यापार
- (ख) विज्ञान प्रौद्योगिकी
- (ग) फिल्म-मनोरंजन
- (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4. विशेष संवाददाता का दर्जा पाने के लिए संवाददाता को होना चाहिए :-

- (क) उच्च डिग्री प्राप्त करना
- (ख) किसी विशेष पद का अधिकारी
- (ग) अपने अनुभव के आधार पर विषय विशेष में अपनी जानकारी को विकसित करना
- (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5. सोना उछला; 'चाँदी लुढ़की', 'सेंसेक्स आसमान पर' प्रस्तुत शब्दावली का संबंध है :-

- (क) कारोबार एवं व्यापार से
- (ख) सुनार से
- (ग) खेल से
- (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6. विशेष संवाददाता बनने के लिए आवश्यक है :-

- (क) इस विषय से संबंधित पुस्तकें पढ़ें
- (ख) इस विषय से संबंधित लोगों को अपडेट रखें
- (ग) संबंधित विषय का शब्दकोश और एन साइक्लोपिडिया भी उनके पास हो
- (घ) उपरोक्त सभी

**प्रश्न 7.** न्यूज़ पेग क्या है?

- (क) न्यूज़ को अच्छी तरह समझना।
- (ख) न्यूज़ को विशेष ढंग से पेश करना।
- (ग) किसी विशेष लेख की शुरुआत किसी खबर से जोड़कर प्रस्तुत करना।
- (घ) किसी खबर को पेशगी लेकर प्रस्तुत करना।

**प्रश्न 8.** 'विशेष लेखन' के लेखक अधिकतर होते हैं :-

- (क) संपादक
- (ख) विशेष लेखक
- (ग) विषय के विशेषज्ञ
- (घ) उपरोक्त सभी

**प्रश्न 9.** 'नरोत्तमपुरी' किस क्षेत्र के विशेष रिपोर्ट कर्ता है :-

- (क) पर्यावरण
- (ख) कानून-परामर्श दाता
- (ग) खेल जगत
- (घ) फिल्म जगत

**प्रश्न 10.** समाचार पत्रों के किन लेखों में तकनीकी शब्दावली का भी प्रयोग किया जाता है :-

- (क) फीचर
- (ख) विशेष रिपोर्ट
- (ग) आलेख
- (घ) संपादकीय

----- • ----- • ----- • ----- • -----

# सृजनात्मक लेखन

## 'कैसे बनती है कविता'

- कविता इंसान के मन को अभिव्यक्त करने वाली सबसे पुरानी कला है। मौखिक युग में कविता के द्वारा इंसान ने अपने भावों को दूसरे तक पहुंचाया होगा। इससे स्पष्ट होता है कि कविता मन में उमड़ने-धुमड़ने वाले भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का काव्यात्मक माध्यम है।
- वाचिक परंपरा में जन्मी कविता आज लिखित रूप में मौजूद है। पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए लोकगीतों और तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। कविता को आज तक किसी एक परिभाषा में बांध पाना सम्भव नहीं हो पाया है। अनेक प्राचीन काव्यशास्त्रियों और पश्चिमी विद्वानों ने कविता की अनेक परिभाषाएँ दी हैं। जैसे शब्द और अर्थ का संयोग, रसयुक्त वाक्य, संगीतमय विचार आदि।
- कविता लेखन के संबंध में दो मत मिलते हैं। एक का मानना है कि अन्य कलाओं के समान कविता लेखन की कला को प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि इसका संबंध मानवीय भावों से है जबकि दूसरा मत कहता है कि अन्य कलाओं की भांति प्रशिक्षण के द्वारा कविता लेखन को भी सरल बनाया जा सकता है।
- कविता का पहला उपकरण 'शब्द' है। कवि डल्ब्यू एच ऑर्डेन ने कहा कि 'प्ले विद द वर्ड्स' अर्थात् कविता लेखन में सबसे पहले शब्दों से खेलना सीखें, उनके अर्थ की परतों को खोलें क्योंकि शब्द ही भावनाओं और संवेदनाओं को आकार देते हैं।
- बिंब और छंद (आंतरिक लय) कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक होते हैं। बाह्य संवेदनाएँ मन के स्तर पर बिंब के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। छंद के अनुशासन की जानकारी के बिना आंतरिक लय का निर्वाह असंभव है। कविता की भाषा, बिंब, छंद, संरचना सभी परिवेश के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसलिए इनके अनुसार ही भाषा, बिंब और छंद का चयन किया जाता है।

- कविता के मुख्य घटक (तत्व)
  1. भाषा का सम्यक ज्ञान
  2. शब्द विन्यास
  3. छंद विषयक बुनियादी जानकारी
  4. अनुभव और कल्पना का सामंजस्य
  5. सहज सम्प्रेषण शक्ति
  6. भाव एवं विचार की अनुभूति
- नवीन दृष्टिकोण और प्रस्तुतीकरण की कला न हो तो कविता लेखन संभव ही नहीं है। प्रतिभा को किसी नियम या सिद्धांत द्वारा पैदा नहीं किया जा सकता, किन्तु परिश्रम और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। कविता लेखन के ये घटक कविता लेखन भले ही न सिखाएँ पर कविता की सराहना एवं कविता विषयक ज्ञान देने में सहायक हैं।

## दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

**प्रश्न 1 :** कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।

**उत्तर :** कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं।

1. **भाषा का सम्यक ज्ञान :** कविता में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। भावों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जरूरी है कि कवि कविता में भाषा के रोज नये प्रयोगों द्वारा अपने अनुभवों को रूप प्रदान करता रहे।
2. **शब्द विन्यास :** शब्द मनुष्य के सबसे प्रिय मित्र होते हैं। इसलिए कविता लेखन के समय कवि को अपने भावों और विचारों के अनुरूप शब्दों का चयन कर उनका प्रयोग करना चाहिए।
3. **छंद विषयक बुनियादी जानकारी :** छंद और तुक से बँधी हुई रचना हमारी भावनाओं को संगीत में बाँधकर हमारे सामने प्रस्तुत करती है तो उसकी छूअन हमें भीतर तक उस भाव से जोड़ देता है। इसलिए कविता में छंद और तुक कविता को अधिक भावमयी बना देते हैं।
4. **अनुभव और कल्पना का सामंजस्य :** कवि कविता में भावों और विचारों के साथ अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करता है। कल्पना के द्वारा कवि कविता में जीवन के सत्य के मधुर और कटु दोनों रूपों को प्रकट करता है। कवि को केवल कोरी कल्पना से बचना चाहिए।
5. **सहज सम्प्रेषण शक्ति :** कविता कवि अपने लिए नहीं लिखता वरन् उसका लक्ष्य अपने भावों और विचारों से समाज को परिचित कराना है। इसलिए वह अपने भावों का साधारणोकरण करता है। सहज व सरल भाव पाठक को कविता के साथ बांध देते हैं।
6. **भाव एवं विचार की अनुभूति :** कविता भावों का प्रबल आवंग है और मनुष्य भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए तत्पर रहता है। सामान्य व्यक्ति कविता की उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकता जहाँ कवि पहुँच जाता है क्योंकि कवि की आत्म शक्ति प्रबल होती है।



## नाटक लिखने का व्याकरण

**पाठ परिचय :** नाटक एक दृश्य विद्या है। इसे हम अन्य गद्य विधाओं से इसलिए अलग भी मानते हैं, क्योंकि नाटक भी कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध आदि की तरह साहित्य के अन्तर्गत ही आता है। पर यह अन्य विधाओं से इसलिए अलग है क्योंकि वह अपने लिखित रूप से दृश्यता की ओर बढ़ता है। नाटक केवल अन्य विधाओं की भाँति केवल एक आयामी नहीं है। नाटक का जब तक मंचन नहीं होता तब तक वह सम्पूर्ण रूप व सफल रूप में प्राप्त नहीं करता है। अतः कहा जा सकता है कि नाटक को केवल पाठक वर्ग नहीं दर्शक वर्ग भी प्राप्त है।

साहित्य की अन्य विधाएँ पढ़ने या फिर सुनने तक की यात्रा करती हैं, परंतु नाटक पढ़ने, सुनने और देखने के गुण को भी अपने भीतर रखता है।

नाटक के प्रमुख तत्व या अंग घटक इस प्रकार हैं :

1. समय का बंधन, 2. शब्द, 3. कथ्य, 4. संवाद, 5. द्वंद (प्रतिरोध), 6. चरित्र योजना, 7. भाषा शिल्प, 8. ध्वनि योजना, 9. प्रकाश योजना, 10. वेषभूषा, 11. रंगमंचीयता।

**प्रश्न 2 :** “समय के बंधन’ का नाटक में क्या महत्व है?

**उत्तर :** नाट्य विधा में ‘समय के बंधन’ का विशेष महत्व है। नाटककार को ‘समय के बंधन’ का अपने नाटक में विशेष ध्यान रखना होता है और इस बात का नाटक की रचना पर भी पूरा प्रभाव पड़ता है। नाटक को शुरु से अन्त तक एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा होना होता है। यदि ऐसा नहीं होता तो नाटक से प्राप्त होने वाला रस, कौतुहल आदि प्राप्त नहीं हो पाता है। नाटक का मंथन हम धारावाहिक के रूप में नहीं दिखा सकते हैं। नाटककार चाहे अपनी किसी भूतकालीन रचना को ले या किसी अन्य लेखक की रचना को चाहे वह भविष्यकाल की हो, वह दोनों परिस्थितियों में नाटक का मंचन वर्तमान काल में ही करेगा। इसीलिए नाटक के मंचीय निर्देश हमेशा वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। क्योंकि नाटक का कभी भी मंचन हो वह वर्तमान काल में ही घटित होगा। या खेला जाएगा।

इसके साथ-साथ ही नाटक के प्रायः तीन अंक होते हैं, प्रारंभ, मध्य, समापन। अतः इन अंकों को ध्यान में रखते हुए भी नाटक को समय सीमा में बाँटना जरूरी हो जाता है।

# कैसे लिखें कहानी

## मुख्य बिन्दु

**कहानी :** किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवेश हो, दृढ़तात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिन्दु हो, उसे कहानी कहा जाता है। कहानी जीवन का अविभाज्य अंग है। हर व्यक्ति अपनी बातें दूसरों को सुनाना और दूसरों की बातें सुनना चाहता है। कहानी लिखने का मूलभाव सभी में होता है, इसे कुछ लोग विकसित कर पाते हैं, कुछ नहीं।

**कहानी का इतिहास :** जहाँ तक कहानी के इतिहास का सवाल है, वह उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है। मौखिक कहानी की परम्परा बहुत पुरानी है। प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ अत्यन्त लोकप्रिय थी, क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थीं। धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया था। शिक्षा देने के लिए भी पंचतंत्र जैसी कहानियाँ लिखी गई, जो जगप्रसिद्ध हैं।

**कथानक :** कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है। जिसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख होता है। कथानक को कहानी का प्रारम्भिक नक्शा माना जा सकता है।

कहानी का कथानक आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कहानीकार कल्पना का विकास करते हुए एक परिवेश, पात्र और समस्या को आकार देता है तथा एक ऐसा काल्पनिक ढांचा तैयार करता है जो कांरी कल्पना न होकर संभावित हो और लेखक के उद्देश्य से मेल खाता हो। कथानक में प्रारम्भ, मध्य और अन्त- कथानक का पूरा स्वरूप होता है।

**दृढ़ :** कहानी में दृढ़ के तत्व का होना आवश्यक है। दृढ़ कथानक को आगे बढ़ाता है तथा कहानी में रोचकता बनाए रखता है। दृढ़ के तत्वों से अभिप्राय यह है कि परिस्थितियों के रास्ते में एक या अनेक बाधाएँ होती हैं उन बाधाओं के समाप्त हो जाने पर, किसी निष्कर्ष पर पहुँच कर कथानक पूरा हो जाता है। कहानी की यह शर्त है कि वह नाटकीय ढंग से

अपने उद्देश्य को पूर्ण करते हुए समाप्त हो जाए। कहानी द्वंद्व के कारण ही पूर्ण होती है।

**देशकाल और वातावरण :** हर घटना, पात्र और समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने के लिए आवश्यक है कि लेखक देशकाल और वातावरण का पूरा ध्यान रखे।

**पात्र :** पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा, उतनी ही आसानी से उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में हांगी।

**चरित्र चित्रण :** पात्रों का चरित्र-चित्रण पात्रों की अभिरूचियों के माध्यम से, कहानीकार द्वारा गुणों का बखान करके, पात्र के क्रिया-कलापों, संवादों के माध्यम से किया जाता है।

**संवाद :** कहानी में संवाद का विशेष महत्व है। संवाद ही कहानी को और पात्र को स्थापित एवं विकसित करते हैं, साथ ही कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं, जो घटना या प्रतिक्रिया, कहानीकार नहीं दिखा सकता, उसे संवादों के माध्यम से सामने लाता है। संवाद पात्रों के स्वभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल होते हैं।

**चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) :** कथानक के अनुसार कहानी चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) की ओर बढ़ती है। सर्वोत्तम यह है कि चरमोत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करे तथा उसे लगे कि उसे स्वतन्त्रता दी गई है, उसने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वह उसके अपने हैं।

**कहानी लिखने की कला :** कहानी लिखने की कला को सीखने का सबसे अच्छा और सीधा रास्ता यह है कि अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाएँ और उनका विश्लेषण किया जाए।

## नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

**प्रश्न 1 :** नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है?

**उत्तर :** नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को सरल बनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रूककर एक रूपरेखा प्रदान करें। उसके बाद शानदार तरीके से अपने विषय की शुरुआत करें।
2. उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाये, यह भी दिमाग में पहले से होना आवश्यक है।
3. जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है।
4. किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ-साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक है।

**प्रश्न 2 :** आलेख या फीचर लेखन करते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

**उत्तर :**

1. आलेख या फीचर की भाषा सरल, सरस और भावपूर्ण होनी चाहिए।
2. इसमें नई जिज्ञासाएँ जागृत करने की क्षमता होनी चाहिए।
3. इसमें विचारों की अधिकता होनी चाहिए।
4. इसमें किसी बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए।
5. यह नवीनता और ताज़गी से युक्त होना चाहिए।
6. इसका आकार बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए।

## नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन-अभ्यास

1. कोराना के पश्चात विद्यालय में मेरा पहला दिन
2. बोर्ड परीक्षा का पेपर और दिल्ली का ट्रैफिक जाम
3. जब मैंने पहला पौधा लगाया
4. बोर्ड परीक्षा से एक रात पहले बिजली का चले जाना
5. भयंकर गर्मी में चौराहे पर बच्चों द्वारा भीख माँगना
6. मेरी पहली हवाई यात्रा
7. यदि इंटरनेट अचानक बंद हो जाए
8. मोबाइल के बिना दुनिया की कल्पना
9. रक्तदान का मेरा अनुभव
10. अपने विदेशी दोस्त के साथ मेरा दिल्ली भ्रमण
11. सपने में गांधी जी से मुलाकात
12. यमुना नदी को साफ सुथरा बनाने का स्वप्न
13. दिल्ली की इलेक्ट्रिक बस में मेरी पहली यात्रा
14. कोराना के पश्चात बाजारों में भीड़-भाड़
15. मेरे जीवन की वह सुखद घटना
16. मेरे मोहल्ले में बरसात
17. मेट्रो स्टेशन पर मित्र से मुलाकात
18. मंच पर पहली बार
19. नदी का शांत तट और मैं
20. सब्जी बेचता बच्चा
21. घनी अंधेरी रात में आकाश का वह सबसे चमकीला तारा
22. घर से स्कूल तक का सफर
23. परीक्षा के दिन
24. विज्ञापन-कितना झूठ कितना सच
25. मेरा प्यारा बचपन
26. सोशल मीडिया-कितना सही कितना गलत
27. पर्यावरण के लिए मेरी जिम्मेदारी
28. लक्ष्य तक पहुँचने की तैयारी
29. आत्मघाती है बदले की भावना
30. मेरी भाषा मेरा गौरव



अभिव्यक्ति और  
माध्यम - नए और  
अप्रत्याशित विषयों पर  
लेखन

## फीचर/आलेख-अभ्यास

1. बस्तों के बोझ के नीचे गुम होता बचपन।
2. जीवन के बेहतरीन पलों को छीनता मोबाइल फोन।
3. हर हाथ में हथियार-सोशल मीडिया।
4. भीड़ में अकेले हम।
5. घर और बाहर-दोनों मोर्चों पर जूझती महिलाएँ।
6. सब पढ़ें, सब बढ़ें।
7. स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत।
8. यातायात नियमों की अनदेखी से होती दुर्घटनाएँ।
9. धर्म तोड़ता नहीं, जोड़ता है।
10. सफलता में बाधक सोच-‘मैं ही सही हूँ।’
11. दिव्यांगों की खेल जगत में बढ़ती हुई उपलब्धियाँ।
12. असुरक्षित माहौल : कामकाजी महिलाएँ।
13. बच्चों में आत्मविश्वास की कमी।
14. शिक्षा के स्तर पर हुए सुधार/क्रान्ति।

## हल सहित/आलेख

**प्रश्न 1 :** ‘खेल और स्वास्थ्य’ पर फीचर लिखें -

खेलना एक शारीरिक क्रिया कलाप है। जिससे हमारे शरीर के सभी अंगों का संचालन होता है। क्योंकि इससे हमारे शरीर में रक्त का परिसंचरण भी सुधर जाता है। जीवन में सदैव खेलों में भाग लेने से सबसे पहले तो हमारे स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव पड़ता है और हमारी कोशिकाओं में रक्त का संचार सही बना रहता है। हमारे ऊतक जो टूटते रहते हैं वे फिर से बन जाते हैं और हमारा स्नायु-तंत्र मजबूती से काम करता रहता है। यदि स्वस्थ वातावरण में सामान्य शारीरिक गतिविधियाँ की जाएँ तो शारीरिक सुदरता के साथ-साथ स्वास्थ्यगत सुदरता भी प्राप्त हो सकेगी।

खेलों में भाग लेने वाले व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक विकास दूसरों से अच्छा होता है व दोनों में सतुलन बनाए रखने में सहायता करता है। उसके स्मृति, स्तर एकाग्रता-स्तर और सीखने की क्षमता में सुधार होता है।

## परीक्षोपयोगी एक अंक वाले प्रश्नोत्तर ( अभिव्यक्ति और माध्यम )

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

**प्रश्न 1. रेडियो समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?**

उत्तर-रेडियो समाचार की भाषा सरस, निरक्षर लोगों के लिए बोधगम्य, आम बोलचाल की सुस्पष्ट भाषा होनी चाहिए।

**प्रश्न 2. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के तेजी से लोकप्रिय होने का क्या कारण है?**

उत्तर- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। इसमें पढ़ने, सुनने और देखने की तीनों सुविधाएँ होती हैं।

**प्रश्न 3. विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर - किसी विशेष विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन होता है। अधिकांश समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के साथ-साथ रेडियो और टी.वी. चैनलों में भी विशेष लेखन होता है।

**प्रश्न 4. पत्रकारिता की साख बनाए रखने के लिए संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का नामोल्लेख कीजिए!**

उत्तर-(क) तथ्यों की शुद्धता पर ध्यान देना।

(ख) निष्पक्षता के साथ सामग्री को प्रस्तुत करना।

**प्रश्न 5. फीचर किसे कहते हैं?**

उत्तर - सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन को फीचर कहते हैं। इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना होता है।

**प्रश्न 6. इंटरनेट पत्रकारिता के बहुत लोकप्रिय होने का सबसे प्रमुख कारण क्या है ?**

उत्तर- इंटरनेट की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। यह सभी प्रकार की सूचनाओं के आदान-प्रदान, चर्चा व परिचर्चाओं का साधन होने के साथ-साथ मनोरंजन का भी साधन है।

**प्रश्न 7. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर आधारित होती है ?**

उत्तर - उल्टा पिरामिड शैली।

**प्रश्न 8. भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला?**

उत्तर- भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में, गोवा में खुला।

**प्रश्न 9. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में मुख्य अंतर क्या है?**

उत्तर-बीट रिपोर्टिंग में संवाददाता का उस क्षेत्र के संबंध या विषय में सामान्य जानकारी या रुचि होना पर्याप्त है जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण होता है। पत्रकार को उस विषय की विशेष जानकारी होनी चाहिए

**प्रश्न 10. वेबसाइट पर पत्रकारिता शुरू करने की पहली साइट कौन सी है?**

उत्तर - रिडिफ़ डॉट कॉम को।

**प्रश्न 11. टी.वी. पर प्रसारित किए जाने वाले समाचार किन-किन चरणों से होकर दर्शकों तक पहुँचते हैं?**

उत्तर-टी.वी. समाचार दर्शकों तक निम्नलिखित चरणों से होकर पहुँचते हैं

फ्लैश या ब्रेकिंगन्यूज, ड्राई एंकर, फोन-इन एंकर, विजुअल, एंकर बाइट, लाइव, एंकर पैकेज।

**प्रश्न 12. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है, लिखिए।**

उत्तर-विशेष रिपोर्ट चार प्रकार की होती है-खोजी रिपोर्ट, इन डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट।

**प्रश्न 13. बीट किसे कहते हैं ?**

उत्तर- खबरें कई तरह की होती हैं, जैसे-राजनीतिक, आर्थिक, आपराधिक, खेल, फिल्म, कृषि आदि। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहा जाता है।

**प्रश्न 14. पत्रकार का क्या दायित्व है ?**

उत्तर-पत्रकार का दायित्व है-पाठकों अथवा दर्शकों तक सूचना पहुँचाना, उन्हें जागरूक और शिक्षित करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना।

**प्रश्न 15. पत्रकार कितने तरह के होते हैं?**

उत्तर- पत्रकार तीन तरह के होते हैं-पूर्णकालिक पत्रकार, अंशकालिक पत्रकार और फ्रीलांसर पत्रकार।

**प्रश्न 16. पूर्णकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर- वे पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करने वाले वेतनभोगी कर्मचारी होते हैं। वे पूर्णकालिक पत्रकार कहलाते हैं।

**प्रश्न 17. अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं?**

उत्तर - अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार होता है।

**प्रश्न 18. फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं ?**

उत्तर- वह पत्रकार जिसका संबंध किसी विशेष अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।



**प्रश्न 19. पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा कहाँ तक सीमित है ?**

उत्तर - पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों तक सीमित होता है।

**प्रश्न 20. समाचारपत्रों के समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर-(क) भाषा सीधी, सरल, साफ-सुथरी और प्रभावी होने के साथ-साथ सुबोध होती है।

(ख) वाक्य छोटे-छोटे और सहज होते हैं।

**प्रश्न 21. उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का ढाँचा क्या होता है ?**

उत्तर-उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का ढाँचा इस प्रकार होता है-इंट्रो या मुखड़ा, बॉडी और समापन।

**प्रश्न 22. समाचार लेखन के छह ककार क्या होते हैं ?**

उत्तर - समाचार लेखन के छह ककार होते हैं-क्या, किसके, कब, कहाँ, क्यों और कैसे। समाचार-लेखन में इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है।

**प्रश्न 23. इंट्रो या मुखड़े में कितने ककारों का उत्तर दिया जाता है ?**

उत्तर - इंट्रो या मुखड़े में पहले तीन-चार ककारों का उत्तर दिया जाता है। ये ककार हैं- क्या, कौन, कब और कहाँ।

**प्रश्न 24. फीचर लेखन की शैली कैसी होती है ?**

उत्तर - फीचर लेखन की शैली सीधा पिरामिड अर्थात् कथात्मक होती है।

**प्रश्न 25. आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है ?**

उत्तर-आधुनिक जनसंचार के माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम प्रिंट माध्यम है।

**प्रश्न 26. प्रिंट या मुद्रित जनसंचार माध्यम के दो रूप बताइए।**

उत्तर - समाचारपत्र और पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें प्रिंट माध्यम के दो रूप हैं।

**प्रश्न 27. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?**

उत्तर -मुद्रित माध्यमों में छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, आराम से पढ़ते हुए सोच सकते हैं और समझ में न आने पर पुनः पढ़ सकते हैं। यही उनको सबसे बड़ी विशेषता है।

**प्रश्न 28. मुद्रित माध्यमों की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर-(क) मुद्रित माध्यमों की भाषा आम बोलचाल की सरल, सुबोध और प्रचलित भाषा होती है।

(ख) मुद्रित माध्यमों की भाषा व्याकरण और वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध होती है।

**प्रश्न 29. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?**

उत्तर- मुद्रित माध्यम निरक्षरों के लिए किसी काम के नहीं हैं, यही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है।

**प्रश्न 30. अखबारों की दो खामियाँ लिखिए।**

उत्तर - (क) अखबार तुरंत घटी घटनाओं को पाठकों तक तुरंत नहीं पहुँचा सकते।

(ख) मुद्रित माध्यमों में लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा ज्ञान, उनकी शैक्षिक योग्यता, उनकी रुचियों और आवश्यकताओं का ध्यान रखना पड़ता है।

**प्रश्न 31. रेडियो से श्रोता को क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है?**

उत्तर - (क) रेडियो श्रोता को खबरों को पुनः सुनने की सुविधा नहीं है। रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुना सकता।

(ख) उसे अपनी रुचि-अरुचि के सभी समाचारों को सुनने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

**प्रश्न 32. नेट या नेट साउंड से क्या आशय है ?**

उत्तर-नेट या नेट साउंड से आशय है-ऐसी प्राकृतिक आवाजें जो शूट करते समय अपने आप चली आती है।

**प्रश्न 33. आम आदमी के दो जनसंचार माध्यम कौन-कौन से हैं ?**

उत्तर - रेडियो और टेलीविजन दोनों आम आदमी के माध्यम हैं।

**प्रश्न 34. रेडियो और टी.वी. समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर -(क) रेडियो और टी.वी. समाचारों की भाषा सरल, सुबोध और प्रभावी होती है।

(ख) वाक्य छोटे-छोटे, सीधे और स्पष्ट होते हैं।

**प्रश्न 35. ऐसे तीन शब्द लिखिए जिनका रेडियो और टी.वी. की भाषा में प्रयोग निषेध होता है?**

उत्तर - (क) निम्नलिखित (ख) उपरोक्त (ग) अधोहस्ताक्षरित।

**प्रश्न 36. रेडियो और टी.वी. के लिए साफ-सुथरी और सरल भाषा लिखने के लिए किन दो चीजों के प्रयोग से बचना आवश्यक है?**

उत्तर-(क) गैर जरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, अतिरंजित उपमाओं से।

(ख) मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से।

**प्रश्न 37. भाषा के साफ-सुथरी रखने के दो उपाय लिखिए।**

उत्तर (क) वाक्य छोटे-छोटे हों। एक वाक्य में एक ही बात कही जाए।

(ख) वाक्यों में तारतम्य होना चाहिए।

**प्रश्न 38. अपडेट करने से क्या आशय है?**

उत्तर-अपडेट करने से आशय है कि इंटरनेट की विभिन्न वेबसाइटों पर उपलब्ध नवीनतम सूचना से स्वयं को परिचित रखना।

**प्रश्न 39. इंटरनेट के दो प्रमुख लाभ बताइए।**

उत्तर-(क) इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर खबरों का संप्रेषण किया जाता है।  
(ख) समाचारों के संकलन, उनके सत्यापन और पुष्टिकरण के लिए इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है।

**प्रश्न 40. आजकल टेलीप्रिंटर एक सेकेंड में लगभग कितने शब्द का एक जगह से दूसरी जगह भेज सकता है ?**

उत्तर-लगभग 70 हजार शब्द प्रति सेकेंड।

**प्रश्न 41. इंटरनेट पत्रकारिता का आरंभ कब हुआ?**

उत्तर- इंटरनेट पत्रकारिता का आरंभ सन 1982 में हुआ।

**प्रश्न 42. इंटरनेट पत्रकारिता किसे कहते हैं ?**

उत्तर - इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान-प्रदान करना, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों द्वारा अपने समय की धड़कनों को अनुभव और दर्ज करने को इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं।

**प्रश्न 43. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का कौन-सा दौर चल रहा है?**

उत्तर- भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है।

**प्रश्न 44. इंटरनेट पर पढ़े जा सकने वाले दो हिंदी समाचारपत्रों के नाम लिखिए।**

उत्तर- 'नवभारत टाइम्स' और 'हिंदुस्तान'।

**प्रश्न 45. हिंदी में नेट पत्रकारिता करने का श्रेय किसे दिया जाता है?**

उत्तर- हिंदी में नेट पत्रकारिता आरंभ करने का श्रेय 'वेब दुनिया' को दिया जाता है।

**प्रश्न 46. उस हिंदी अखबार का नाम बताइए जो प्रिंट रूप में न होकर केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।**

उत्तर-'प्रभासाक्षी' नामक हिंदी अखबार केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

**प्रश्न 47. हिंदी का सर्वश्रेष्ठ वेबसाइट कौन-सी है?**

उत्तर - हिंदी की सर्वश्रेष्ठ वेबसाइट बी.बी.सी. की है।

**प्रश्न 48.** आजकल इंटरनेट पत्रकारिता के अत्यंत लोकप्रिय होने का क्या कारण है ?

उत्तर- इससे न केवल खबरों का संप्रेषण, पुष्टि, सत्यापन होता है बल्कि खबरों के बैकग्राउंड को तैयार करने में तत्काल सहायता मिलती है।

**प्रश्न 49.** टी.वी. पर प्रसारित खबरों में सबसे महत्वपूर्ण क्या है ?

उत्तर-टी.वी. पर प्रसारित खबरों में विजुअल, नेट और बाइट सबसे महत्वपूर्ण है।

**प्रश्न 50.** प्रिंट माध्यम की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (क) प्रिंट माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है।

(ख) इस माध्यम से लिखित भाषा का विस्तार होता है।

**प्रश्न 51.** प्रिंट माध्यम की दो खामियाँ लिखिए।

उत्तर- (क) अशिक्षित व्यक्तियों के लिए इस माध्यम की कोई उपयोगिता नहीं है।

(ख) यह तुरंत घटी घटनाओं की सूचना तत्काल नहीं दे पाता।

**प्रश्न 52.** रेडियो माध्यम की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (क) यह माध्यम शिक्षित व अशिक्षित दोनों के काम का है।

(ख) रेडियो माध्यम के लिए बिजली की अनिवार्यता नहीं है।

**प्रश्न 53.** टेलीविजन की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-(क) टेलीविजन में देखने और सुनने की दोनों सुविधाएँ हैं।

(ख) यह घटनाओं को तुरंत श्रोताओं-दर्शकों तक पहुँचाता है।

**प्रश्न 54.** इंटरनेट की कमी का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-इंटरनेट अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का माध्यम बन गया है।

**प्रश्न 55.** एक अच्छे और रोचक फीचर के लिए क्या-क्या आवश्यक है?

उत्तर-एक अच्छे और रोचक फीचर के लिए फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स का होना आवश्यक है।

**प्रश्न 56.** अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने वाले पृष्ठ को क्या कहते हैं?

उत्तर--संपादकीय पृष्ठ के सामने वाले पृष्ठ को ऑप-एड पृष्ठ कहते हैं।

**प्रश्न 57.** संपादकीय का क्या महत्व होता है?

उत्तर -संपादकीय में अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करते हैं।

**प्रश्न 58.** स्तंभ लेखन का कार्य कौन करता है?

उत्तर -स्तंभ लेखन का कार्य कुछ महत्वपूर्ण लेखक करते हैं।

**प्रश्न 59. संपादक के नाम पत्र लेखन का उद्देश्य क्या होता है?**

उत्तर- 'संपादक के नाम पत्र' का उद्देश्य जनता या पाठकों को विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय प्रकट करने का अवसर देना होता है।

**प्रश्न 60. अखबारों में लेख कौन लिखता है ?**

उत्तर- अखबारों में लेख वरिष्ठ पत्रकार और विषय-विशेषज्ञ लिखते हैं।

**प्रश्न 61. लेख और विशेष रिपोर्ट में क्या अंतर होता है ?**

उत्तर- लेख में लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। उसमें उस विषय से जुड़े सभी तथ्यों और सूचनाओं के अतिरिक्त पृष्ठभूमि की सामग्री भी होती है जबकि विशेष रिपोर्ट में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

**प्रश्न 62. साक्षात्कार के लिए पत्रकार में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?**

उत्तर- किसी व्यक्ति का साक्षात्कार करने के लिए पत्रकार में संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य, साहस और ज्ञान जैसे गुण होने चाहिए।

**प्रश्न 63. वह लेखन, जिसमें किसी मुद्दे के प्रति समाचारपत्र की अपनी राय प्रकट की जाती है, उसे क्या कहते हैं?**

उत्तर- उसे संपादकीय कहते हैं।

**प्रश्न 64. किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहन छानबीन और विश्लेषण को क्या कहा जाता है?**

उत्तर- उसे रिपोर्ट कहते हैं।

**प्रश्न 65. लेख किसे कहते हैं ?**

उत्तर- किसी समाचार के अंतर्गत उसका विस्तार, पृष्ठभूमि, विवरण आदि वाले को लेख कहते हैं।

**प्रश्न 66. डेस्क से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- समाचारपत्रों और पत्रिकाओं, टी.वी. और रेडियो चैनल में विशेष लेखन की व्यवस्था को डेस्क कहते हैं।

**प्रश्न 67. विशेष लेखन क्या होता है?**

उत्तर- किसी विशेष विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है।

**प्रश्न 68. संवाददाताओं में काम का विभाजन किस आधार पर किया जाता है?**

उत्तर- संवाददाताओं में काम का विभाजन उनकी विषय में दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है?

**प्रश्न 69. बीट किसे कहते हैं?**

उत्तर- संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखने की प्रक्रिया को मीडिया में बीट कहा जाता है।

**प्रश्न 70. खेलों में दिलचस्पी और जानकारी रखने वाले पत्रकार को कौन-सी बीट मिलेगी?**

उत्तर- खेल बीट।

**प्रश्न 71. कृषि क्षेत्र से संबंधित शब्दावली के दो उदाहरण दीजिए।**

उत्तर- (क) गेहूँ टूटा।

(ख) लाल मिर्च और लाल हुई।

**प्रश्न 72. सर्राफ़ा बाजार से संबंधित भाषा-शैली के दो उदाहरण लिखिए।**

उत्तर- (क) सोना तेरह हजारी हुआ।

(ख) चाँदी लुढ़की।

**प्रश्न 73. पर्यावरण और मौसम से जुड़ी विशेष शब्दावली का प्रयोग करते हुए दो समाचारों के शीर्षक लिखिए।**

उत्तर- (क) मछुआरों को सुनामी की चेतावनी।

(ख) पश्चिमी विक्षोभ के कारण मूसलाधार वर्षा की संभावना।

**प्रश्न 74. बीट से जुड़ा समाचार लिखने की शैली क्या होती है?**

उत्तर- उल्टा पिरामिड शैली

**प्रश्न 75. विशेष लेखन के पाँच प्रमुख विषय लिखिए।**

उत्तर- (क) अर्थ-व्यापार (ख) विज्ञान-प्रौद्योगिकी (ग) खेल (घ) कृषि (ङ) विदेश।

**प्रश्न 76. पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ क्या है?**

उत्तर- पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ है-व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने पर भी किसी विशेष विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर समझ को उस सीमा तक विकसित करना कि उनकी आप सहजता से व्याख्या कर सकें।

**प्रश्न 77.** कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी रोजमर्रा की खबरें किस शैली में लिखी जाती हैं ?

उत्तर-उल्टा पिरामिड शैली में लिखी जाती हैं।

**प्रश्न 78.** दलहन और तेल के कारोबार से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर-(क) स्टॉकिस्टों की चौतरफा बिकवाली से उड़द में से दो दिनों में 150 रुपये निकले।

(ख) वनस्पति तेल में आग लगी।

**प्रश्न 79.** खेल क्षेत्र से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर-(क) मुस्लीधरन की स्पिन में आस्ट्रेलिया फँसा।

(ख) विकेटों की पतझड़ : एक दिन में 16 विकेटें गिरी।

**प्रश्न 80.** सूचनाओं के दो मुख्य स्रोत कौन-कौन से हैं?

उत्तर-(क) मंत्रालय के सूत्र

(ख) प्रेस कान्फ्रेंस और विज्ञप्तियाँ।

**प्रश्न 81.** कविता की उत्पत्ति के मूल में क्या-क्या हैं?

उत्तर- कविता की उत्पत्ति के मूल में संवेदना और राग तत्व हैं।

**प्रश्न 82.** कविता लेखन के संबंध में कौन-से दो मत प्रचलित हैं ?

उत्तर-(क) कविता लेखन की कोई प्रणाली सिखाई या बताई नहीं जा सकती।

(ख) प्रशिक्षण के द्वारा कविता लिखना सिखाया जा सकता है।

**प्रश्न 83.** बचपन में बच्चों का कविता से परिचय किस रूप में होता है?

उत्तर - लोरी के रूप में प्रथम परिचय होता है।

**प्रश्न 84.** कविता अन्य कलाओं की तरह सिखाई क्यों नहीं जा सकती है?

उत्तर- क्योंकि इसमें बाह्य उपकरणों की सहायता नहीं ली जा सकती है।

**प्रश्न 85.** कविता का सबसे पहला उपकरण क्या है ?

उत्तर - कविता का सबसे पहला उपकरण 'शब्द' है।

**प्रश्न 86.** शब्दों से खेलने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर-शब्दों से खेलने का तात्पर्य है शब्दों के नए आयाम खोलना और लय तथा ताल की दुनिया में जाना।

**प्रश्न 87.** बिंब और छंद हमारी क्या सहायता करते हैं?

उत्तर -बिंब और छंद कविता की आंतरिक लय को इंद्रियों द्वारा पकड़ने में हमारी सहायता करते हैं।

**प्रश्न 88. कविता का अनिवार्य तत्त्व कौन-सा है ?**

उत्तर - छंद कविता का अनिवार्य तत्त्व है।

**प्रश्न 89. कविता के सारे घटक किससे प्रचलित होते हैं?**

उत्तर - कविता के सारे घटक परिवेश और संदर्भ से प्रचलित होते हैं।

**प्रश्न 90. कविता के घटक कौन-कौन से हैं ?**

उत्तर - कविता के घटक भाषा, संरचना, बिंब, छंद और संकेत हैं।

**प्रश्न 91. कविता किनसे बनती है?**

उत्तर- कविता शब्दों के मेल, परिवेश के अनुसार शब्द-चयन, लय, तुक, वाक्य संरचना, यति-गति, बिंब, सँक्षिप्तता के साथ-साथ विभिन्न अर्थ स्तर आदि से बनती है।

**प्रश्न 92. नाटक को किस प्रकार के काव्य की संज्ञा दी गई है ?**

उत्तर-दृश्य काव्य की।

**प्रश्न 93. नाटककार को नाटक लिखते समय किस बात को सदा याद रखना चाहिए?**

उत्तर-समय के बंधन की बात को नाटककार को सदैव ध्यान रखना चाहिए।

**प्रश्न 94. नाटक वर्तमानकाल में ही क्यों लिखे जाते हैं ?**

उत्तर-नाटक को वर्तमानकाल में संयोजित करना होता है। इसलिए नाटक वर्तमान में ही लिखे जाते हैं।

**प्रश्न 95. नाटक का शरीर किसे कहा जाता है ?**

उत्तर- बोले जाने वाले 'शब्द' को नाटक का शरीर कहा जाता है।

**प्रश्न 96. नाटक के तत्त्व कौन-कौन से हैं ?**

उत्तर - कथ्य, संवाद, चरित्र-चित्रण, देश-काल, भाषा और उद्देश्य नाटक के तत्त्व हैं।

**प्रश्न 97. नाटककार को कौन-सी कला आनी चाहिए?**

उत्तर- नाटककार को घटनाओं, स्थितियों अथवा दृश्यों का चुनाव, उन्हें उचित क्रम में रखना, प्रारंभ से अंत तक विकास की दिशा में आगे बढ़ने की कला अवश्य आनी चाहिए।

**प्रश्न 98. किस प्रकार का नाटक गहरा और सशक्त सिद्ध होता है?**

उत्तर-जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक गुण जितने अधिक होंगे वह नाटक उतना ही गहरा और सशक्त होगा।

**प्रश्न 99. दो चर्चित नाटकों के नाम लिखिए।**

उत्तर- अंधायुग और तुगलक।



**प्रश्न 100. आधुनिक युग के दो नाटककारों के नाम लिखिए।**

उत्तर- मोहन राकेश, धर्मवीर भारती।

**प्रश्न 101. एक अच्छा नाटक कौन-सा होता है ?**

उत्तर - एक अच्छा नाटक वही होता है जो कथा को आपसी बहस, वाद-विवाद और तर्क-वितर्क से आगे बढ़ाता है।

**प्रश्न 102. कहानी का इतिहास कितना पुराना है?**

उत्तर - कहानी का इतिहास, मानव इतिहास जितना ही पुराना है।

**प्रश्न 103. कहानी का केंद्र-बिंदु कौन होता है ?**

उत्तर- कहानी का केंद्र-बिंदु कथानक होता है।

**प्रश्न 104. कहानी के तत्वों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर-कहानी के तत्व हैं-कथानक, पात्र, भाषा, देशकाल, उद्देश्य, संवाद।

**प्रश्न 105. कहानी में कथानक के कितने स्तर होते हैं ?**

उत्तर- कहानी में कथानक के तीन स्तर-आदि, मध्य, अंत होते हैं।

**प्रश्न 106. कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिए?**

उत्तर - कहानी की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक होनी चाहिए।

**प्रश्न 107. लेख में किस शैली का प्रयोग होता है?**

उत्तर-लेख में 'मैं' शैली का प्रयोग होता है।

**प्रश्न 108. कहानी को रोचक बनाने में कौन सा तत्व सहायक होता है?**

उत्तर- द्वन्द्व।

**प्रश्न 109. कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिए?**

उत्तर - सरल, सहज और स्वाभाविक।

**प्रश्न 110. स्टिंग ऑपरेशन क्या है ? यह क्यों किया जाता है।**

उत्तर- स्टिंग ऑपरेशन किसी गुप्त कमरे से किया गया गुप्त ऑपरेशन है जिसमें किसी भ्रष्टाचार अथवा रहस्य का भंडाफोंड किया जाता है।

**प्रश्न 111. ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई थी? अब यह (AIR) संस्था के अंतर्गत आता है।?**

उत्तर- ऑल इंडिया रेडियो (AIR) की स्थापना 1936 ई0 में हुई थी। अब यह 'प्रसार भारती' नामक संस्था के अन्तर्गत आता है।

**प्रश्न 112. द्वारपाल किन्हें कहा जाता है?**

उत्तर-द्वारपाल संपादक या संपादक मंडल को कहा जाता है जो प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

**प्रश्न 113. पत्रकारिता की बैसाखियों से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर- पत्रकारिता की बैसाखियों से तात्पर्य है - वे साधन जिनके सहारे पत्रकारिता निष्पक्ष, वस्तुपरक और सन्तुलित बनती है। ये बैसाखियाँ हैं-1. निष्पक्षता 2. सच्चाई 3. संतुलन 4. स्पष्टता।

**प्रश्न 114 रेडियो समाचार वाचक की दो विशेषताएँ बताएँ?**

उत्तर - 1. आवाज में स्पष्टता हो।

2. वाचक का उच्चारण सही हो।

**प्रश्न 115. चौथा खंभा किसे कहा जाता है? क्यों?**

उत्तर-मीडिया को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है, क्योंकि मीडिया ही लोकतंत्र को सजग बनाए रखता है। वह जनता के हितों की रक्षा करता है।

**प्रश्न 116. संचार प्रक्रिया में 'फीड-बैक' का महत्त्व बताइए?**

उत्तर-समाचार प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया को 'फीड-बैक' कहा जाता है। फीड-बैक के आधार पर ही संदेश में सुधार किया जाता है। इसी से संचार की प्रक्रिया आगे बढ़ती है।

**प्रश्न 117. स्वतंत्रता से पहले की किन्हीं दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।**

उत्तर 1 हँस 2 जागरण

**प्रश्न 118 भारत में कौन-कौन सी साइट प्रयोग की जाती है ?**

उत्तर-भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ डॉटकॉम', 'इंडियाइफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है।

**प्रश्न-119. उल्टा पिरामिड-शैली में समाचारों को किस क्रम में लिखा जाता है ?**

उत्तर-उल्टा पिरामिड-शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए क्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/विचार/समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम के बजाए सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है।

**प्रश्न 120.** रेडियो प्रसारण के लिए तैयार किए जा रहे समाचार की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-(i) उच्चारण में जटिल शब्द न हों।

(ii) संख्या को शब्दों में लिखें।

(iii) पर्याप्त हाशिया दोनों ओर हो।

(iv) % और \$ को प्रतिशत और डॉलर लिखा जाए आदि।

**प्रश्न 121.** व्यापार-कारोबार की भाषा की एक विशेषता लिखिए।

उत्तर- इसमें कारोबार से संबंधित शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

**प्रश्न 122.** खोजी पत्रकारिता से क्या आशय है ?

उत्तर- भ्रष्टाचार, अनियमितता, गड़बड़ी आदि का उजागर करने वाली पत्रकारिता।

**प्रश्न 123.** मुद्रित माध्यम में लेखक को क्या ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावा उन्हें पाठकों की रुचियों और जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

**प्रश्न 124.** 'उलटा पिरामिड' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'उल्टा पिरामिड' समाचारों का ढाँचा है, जिसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है।

**प्रश्न 125.** वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किस भारतीय वेबसाइट को जाता है ?

उत्तर- तहलका डॉटकॉम।

**प्रश्न 126.** मुद्रण माध्यम ( प्रिंट मीडिया ) के अंतर्गत आने वाले दो माध्यमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-(i) समाचारपत्र, (ii) पत्र-पत्रिकाएँ।

**प्रश्न 127.** फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज का क्या आशय है ?

उत्तर- कोई भी बड़ी खबर कम शब्दों में और खबरों को रोककर सबसे पहले दर्शक तक पहुँचाना है।

**प्रश्न 128.** संचार माध्यमों में रेडियो क्या है ?

उत्तर- रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है।

**प्रश्न 129. रेडियो समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए ?**

उत्तर- रेडियो समाचार की भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का भी प्रयोग किया गया हो।

**प्रश्न 130. पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं ?**

उत्तर-अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

**प्रश्न 131. फीचर के अंत में क्या होना चाहिए?**

उत्तर-फीचर के अंत में उनकी भविष्य की योजनाओं पर फोकस करना चाहिए।

**प्रश्न 132 'इन-डेपथ' रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर-'इन-डेपथ' रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है।

**प्रश्न 133. संपादकीय लेखन क्या होता है ?**

उत्तर-संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना, समस्या, या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं।

**प्रश्न 134. अखबारों में किस तरह के लेख होते हैं ?**

उत्तर-अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचारपूर्ण लेखन से उस अखबार की छवि बनती है। अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियाँ विचारपरक पत्रकारीय लेखन की श्रेणी में आते हैं।

**प्रश्न 135 स्तंभ लेखन क्या होता है ?**

उत्तर-स्तंभ लेखन भी विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है।

**प्रश्न 136. लिखित और मौखिक भाषा में क्या अंतर है ?**

उत्तर-लिखित और मौखिक भाषा में सबसे बड़ा अंतर यह है कि लिखित भाषा अनुशासन की माँग करती है। मौखिक भाषा में एक स्वतः स्फूर्तता होती है।

**प्रश्न 137. संपादक के नाम पाठक के पत्र कहाँ प्रकाशित होते हैं ?**

उत्तर-अखबारों के संपादकीय पृष्ठ पर और पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम पाठकों के पत्र भी प्रकाशित होते हैं। सभी अखबारों में यह एक स्थायी स्तंभ होता है। यह पाठकों का अपना स्तंभ होता है। इस स्तंभ के जरिए अखबार के पाठक न सिर्फ विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं बल्कि जन समस्याओं को भी उठाते हैं।

**प्रश्न 138 लेख लिखने वालों को किस प्रकार शुरुआत करनी चाहिए?**

उत्तर-लेख की कोई एक निश्चित शैली नहीं होती और हर एक लेखक की अपनी शैली होती है। लेकिन अगर अखबारों और पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना चाहते हैं तो शुरुआत उन विषयों के साथ करना चाहिए जिस पर आपकी अच्छी पकड़ और जानकारी हो।

**प्रश्न 139. टी.वी. और रेडियो पर विशेष लेखन के लिए क्या प्रबंध होता है?**

उत्तर-अधिकतर समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी.वी. और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है।

**प्रश्न 140. भारत का पहला छापाखाना किसने खोला था ?**

उत्तर- भारत में पहला छापाखाना मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।

**प्रश्न 141. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना कौन-सा माध्यम है ?**

उत्तर-प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है।

**प्रश्न 142. अखबार और पत्रिका के लिए लेखक और पत्रकारों को किन-किन बातों को याद रखना चाहिए ?**

उत्तर-अखबार और पत्रिका के लिए लेखक और पत्रकार को यह हमेशा याद रखना चाहिए कि वह ऐसे विशाल समुदाय के लिए लिख रहा है, जिसमें एक विश्वविद्यालय के कुलपति सरीखे विद्वान से लेकर कम पढ़े-लिखे मजदूर और किसान सभी शामिल हैं।

**प्रश्न 143 अखबार में समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं ?**

उत्तर-अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। इस समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ में उससे कम महत्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

**प्रश्न 144. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर-पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर या स्वतंत्र। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है जबकि अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार है।

**प्रश्न 145. पत्रकारीय लेखन में कैसी भाषा का प्रयोग किया जाता है ?**

उत्तर-पत्रकारीय लेखन में आलंकारिक-संस्कृतनिष्ठ भाषा शैली के बजाय आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। पाठकों को ध्यान में रखकर ही अखबारों में सीधी, सरल, साफ-सुथरी लेकिन प्रभावी भाषा के इस्तेमाल पर जोर दिया जाता है।

**प्रश्न 146. फीचर की भाषा किस प्रकार की होती है ?**

उत्तर-फीचर की भाषा में समाचारों की सपाटबयानी नहीं चलती। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि फीचर की भाषा और शैली को आलंकारिक और दुरुह बना दिया जाए।

**प्रश्न 147. सफल साक्षात्कार के लिए क्या जरूरी है ?**

उत्तर-एक अच्छे और सफल साक्षात्कार के लिए यह जरूरी है कि आप जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने जा रहे हैं, उसके बारे में आपके पास पर्याप्त जानकारी हो।

**प्रश्न 148. एंकर बाइट से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर-टी.वी. पत्रकारिता में बाइट का काफी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

**प्रश्न 149. इंटरनेट और पत्रकारिता में क्या संबंध है ?**

उत्तर-इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतरीन औजार है, वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी जरिया बन गया है। इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं। पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर इस्तेमाल यानी खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग होता है। दूसरा, रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक ईमेल के जरिए भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है।

**प्रश्न 150. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता कब से शुरू हुई ?**

उत्तर- भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी तीसरा दौर चल रहा है। भारत में इसका पहला दौर 1982-1992 से शुरू माना जा सकता है जबकि दूसरा दौर 1993-2001 से शुरू हुआ। तीसरा दौर-2002 से अब तक माना जाता है।

**प्रश्न 151. लाइव किसे कहते हैं ?**

उत्तर-लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी.वी. चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जाएँ।

**प्रश्न 152. हिंदी की वेब पत्रकारिता की क्या समस्या है ?**

उत्तर-हिंदी की वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फौंट की है। डायनमिक फौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं।

**प्रश्न 153. एंकर-पैकेज से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर-एंकर-पैकेज किसी भी खबर का संपूर्णता के साथ पेश करने का जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट एवं ग्राफिक के जरिये जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं।

**प्रश्न 154 खोजी रिपोर्ट (Investigative Report) क्या होती है ? इसका इस्तेमाल कब किया जाता है ?**

उत्तर-खोजी रिपोर्ट में किसी विषय की गहराई से छान-बीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाया जाता है जिन्हें पहले दबाने या छुपाने का प्रयास किया गया हो। इस रिपोर्ट का इस्तेमाल प्रायः सार्वजनिक महत्त्व के मामलों में भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

**प्रश्न 155. भारत में समाचार-पत्रकारिता का प्रारंभ कब और किससे हुआ ?**

उत्तर-भारत में समाचार पत्रकारिता का प्रारंभ 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिको के 'बंगाल गजट' से हुआ।

**प्रश्न 156. हिंदी में समाचार प्रसारण करने वाले किन्हीं दो टी.वी. चैनलों के नाम लिखिए ?**

उत्तर-आई.बी.एन-7, आजतक।

**प्रश्न 157.** टेलीविजन को जनसंचार का सबसे लोकप्रिय माध्यम क्यों कहा गया है ?

उत्तर-टेलीविजन को जनसंचार का सबसे लोकप्रिय माध्यम इसलिए कहा गया है क्योंकि यह सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की आवश्यकताओं को प्रभावशाली ढंग से पूरा करता है। यह सचित्र होने के कारण विश्वसनीय माना जाता है।

**प्रश्न 158.** ऐसे किन्हीं दो हिंदी के समाचारपत्रों के नाम लिखिए जिनके इंटरनेट संस्करण भी उपलब्ध हैं ?

उत्तर-(1) नवभारत टाइम्स (2) हिंदुस्तान।

**प्रश्न 159.** इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय क्यों है ?

उत्तर-इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय इसलिए है क्योंकि यह सबसे तीव्र एवं सटीक माध्यम है। इसे किसी भी समय और स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है।

**प्रश्न 160.** विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही भारत की किन्हीं दो संस्थाओं के नाम लिखिए।

उत्तर-(1) डिफेंस रिसर्च एंड डेवलेपमेंट ऑर्गनाइजेशन

(2) सेंट्रल स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन।

**प्रश्न 161.** भारत में नियमित अपडेटेड साइटों के नाम लिखिए।

उत्तर-(1) एन.डी.टी.वी. (2) द टाइम्स ऑफ इंडिया

**प्रश्न 162.** किन्हीं दो समाचारपत्रों के नाम बताइए जिनके वेब संस्करण भी उपलब्ध हैं ?

उत्तर-(1) दैनिक जागरण (2) अमर उजाला

**प्रश्न 163.** इंटरनेट पत्रकारिता क्या है ?

उत्तर-इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है।

**प्रश्न 164.** ड्राई एंकर कौन होता है ?

उत्तर-ड्राई एंकर वह होता है जो समाचार के दृश्य नहीं आने तक दर्शकों को रिपोर्ट से मिली जानकारी के आधार पर समाचार से संबंधित सूचना देता है।

**प्रश्न 165.** पर्यावरण से संबंधित पत्रिकाओं के नाम लिखिए ?

उत्तर-डाउन टू अर्थ, नेशनल ज्योग्राफी।

**प्रश्न 166.** नई वेबभाषा को क्या कहते हैं ?

उत्तर-नई वेबभाषा को 'एच.टी.एम.एल.' अर्थात्, हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज' कहते हैं।



**प्रश्न 167. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली पर होती है ?**

उत्तर-उल्टा पिरामिड शैली पर।

**प्रश्न 168. 'संपादक के नाम पत्र' स्तंभ की क्या उपयोगिता है ?**

उत्तर-इस स्तंभ में पाठक विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। वे इनमें जन समस्याओं को उठाते हैं। नए लेखकों को अच्छा अवसर मिलता है।

**प्रश्न 169. जनसंचार के मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?**

उत्तर-मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनका रिकार्ड रखा जा सकता है।

**प्रश्न 170. अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है ?**

उत्तर-अंशकालिक संवाददाता उसे कहा जाता है जो कुछ समय के लिए ही किसी समाचारपत्र के लिए काम करता है।

**प्रश्न 171. पीत पत्रकारिता को परिभाषित कीजिए।**

उत्तर-पीत पत्रकारिता में सनसनीखेज घटनाओं को उभारा जाता है। इसका उपयोग प्रायः किसी का चरित्र-हनन करने के लिए किया जाता है। उसे पेज श्री पत्रकारिता भी कहा जाता है।

**प्रश्न 172. इंटरनेट क्या है ?**

उत्तर-इंटरनेट अंतरक्रियात्मक और सूचनाओं का विशाल भंडार है।

**प्रश्न 173. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है ?**

उत्तर-जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम है।

**प्रश्न 174. बाइट किसे कहते हैं ?**

उत्तर-बाइट कथन को कहते हैं। दूरदर्शन पर किसी खबर की पुष्टि के लिए बाइट दिखाई जाती है।

**प्रश्न 175. इंटरनेट पत्रकारिता को अन्य किन-किन नामों से पुकारा जाता है ?**

उत्तर-इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता और वेब पत्रकारिता के नामों से पुकारा जाता है।

**प्रश्न 176. फीचर के साथ क्या-क्या होना जरूरी है ?**

उत्तर-फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि का होना जरूरी है।

**प्रश्न 177. संपादकीय को क्या माना जाता है ?**

उत्तर-संपादकीय को अखबार की आवाज माना जाता है।

**प्रश्न 178. संचार प्रक्रिया की शुरुआत कहाँ से होती है ?**

उत्तर-संचार प्रक्रिया की शुरुआत स्रोत या संचारक से होती है।

**प्रश्न 179** संचार प्रक्रिया में फीडबैक किसे कहते हैं ?

उत्तर-संचार प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता संदेश मिलने पर जो प्रतिक्रिया देता है उसे फीडबैक कहते हैं।

**प्रश्न 180.** नॉयज ( शोर ) किसे कहते हैं ?

उत्तर-संचार प्रक्रिया में आनी वाली बाधाओं को शोर या नॉयज कहते हैं।

**प्रश्न 181.** जनसंचार के दो प्रमुख कार्य बताइए।

उत्तर-दो प्रमुख कार्य हैं -

(1) सूचना देना, (2) शिक्षित करना।

**प्रश्न 182.** आकाशवाणी कितनी भाषाओं व बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है?

उत्तर-आकाशवाणी 24 भाषाओं और 146 बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है।

**प्रश्न 183** भारत में दूरदर्शन के क्या उद्देश्य होने चाहिए ?

उत्तर- • सामाजिक परिवर्तन • राष्ट्रीय एकता • वैज्ञानिक चेतना का विकास  
• पर्यावरण संरक्षण मनोरंजन • सामाजिक विकास

**प्रश्न 184.** समाचार क्या है ?

उत्तर-समाचार किसी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

**प्रश्न 185.** समाचार के चार प्रमुख तत्त्व बताइए।

उत्तर-• नवीनता • प्रभाव • जनरुचि • अनोखापन।

**प्रश्न 186.** जनसंचार माध्यम में द्वारपाल की भूमिका का निर्वाह कौन करता है ?

उत्तर-संपादक, सहायक संपादक, समाचार संपादक, मुख्य उपसंपादक और उपसंपादक द्वारपाल की भूमिका का निर्वाह करते हैं।

**प्रश्न 187.** संपादन के प्रमुख सिद्धांत बताइए।

उत्तर- • तथ्यों की शुद्धता • वस्तुपरकता • निष्पक्षता • संतुलन • स्रोत।

**प्रश्न 188.** एडवोकेसी पत्रकारिता किसे कहा जाता है ?

उत्तर-जब कोई अखबार किसी खास विचारधारा या खास उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर उसके पक्ष में जनमत जगाने का अभियान चलाता है तब उसे एडवोकेसी पत्रकारिता कहा जाता है।

**प्रश्न 189.** मुद्रित माध्यम में पत्रकार को किस बात को ध्यान में रखना पड़ता है ?

उत्तर-मुद्रित माध्यम में पत्रकार को इस बात को ध्यान में रखना पड़ता है कि आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर कर लिया जाए।

**प्रश्न 190. टी.वी. के लिए खबर लेखन की बुनियादी शर्त क्या है ?**

उत्तर-टी.वी. के लिए बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन की है।

**प्रश्न 191. विशेष लेखन के चार क्षेत्र बताइए।**

उत्तर- • खेल • कृषि • विदेश • शिक्षा-स्वास्थ्य।

**प्रश्न 192. छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसे जाता है ?**

उत्तर-छापेखाने के आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है।

**प्रश्न 193. रेडियो में अखबार वाली क्या सुविधा नहीं है ?**

उत्तर-रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है।

**प्रश्न 194. प्रिंट माध्यम से क्या तात्पर्य है ?**

उत्तर-प्रिंट माध्यम से तात्पर्य है-अखबार, पत्रिकाएँ, और पुस्तकें। इन्हें प्रिंट किया या छापा जाता है। इनमें स्थायित्व होता है।

**प्रश्न 195. विज्ञापन के दो उद्देश्य लिखिए?**

उत्तर-1. अपने उत्पाद की विशेषताएं बताना।

2. लोगों का ध्यान आकर्षित कर वस्तु की बिक्री बढ़ाना।

**प्रश्न 196. दैनिक पत्र से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर-नियमित रूप से प्रतिदिन प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र दैनिक पत्र कहलाता है।

**प्रश्न 197. साप्ताहिक पत्र से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- सप्ताह में एक बार प्रकाशित होने वाला पत्र साप्ताहिक पत्र कहलाता है।

**प्रश्न 198. पाक्षिक पत्र से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर-15 दिन में एक बार प्रकाशित होने वाले पत्र को पाक्षिक कहा जाता है।

**प्रश्न 199. समाचार में डेडलाइन से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर-किसी भी समाचार को एक समय सीमा के अंतर्गत ही प्रकाशित किया जाता है, यही डेड लाइन कहलाती है।

**प्रश्न 200. निबंध-लेखन में किस शैली का प्रयोग वर्जित है?**

उत्तर-“मैं” शैली का।

## अपठित गद्यांश

### गद्यांश 1

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

भारतवर्ष के हजारों वर्षों के गौरवशाली इतिहास से यदि 'बुद्ध पूर्णिमा' का दिन हटा दिया जाए तो शायद ये दुनिया हमें विश्व गुरु मानने में संकोच करने लगेगी। यह वह धरती है, जहाँ राम, कृष्ण जैसे अवतार और महावीर, आदि शंकराचार्य जैसे युगपुरुष जन्में हैं, लेकिन आज से करीब ढाई हजार साल पहले इस धरती पर उस सूर्य का उदय हुआ था, जिसने हमेशा-हमेशा के लिए मानवता की राहें आलोकित कर दी। एक बुद्ध न होते तो हमारी सनातन संपदा अधूरी रह जाती। हम आध्यात्मिकता के उस शिखर की झलक कभी न पाते, जहाँ पहुँचकर हम विश्व गुरु कहलाए। बुद्ध ईसा से 563 वर्ष पूर्व हुए थे, लेकिन उनकी बातें आज के दौर की हैं। बुद्ध का सबसे बड़ा रहस्य यही है कि वे ढाई हजार साल पहले जो बोल चुके हैं, वो सूत्र, उसकी भाषा, समसामयिक है। ओशो बुद्ध को दुनिया का एकमात्र 'धर्म-वैज्ञानिक' मानते थे, क्योंकि बुद्ध ने धर्म को तर्क से परे कभी नहीं माना। बुद्ध का मूल यही है कि, 'मैं तुम्हें सिर्फ मार्ग दिखा सकता हूँ, गंतव्य तुम्हें स्वयं खोजना होगा।' आपने कभी विचार किया है कि शाक्य वंश के राजकुमार 'सिद्धार्थ' गौतम बुद्ध बने क्यों? क्योंकि वह दुख स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, वह दुख की जड़ों तक पहुँचकर उसे हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहते थे। उन्होंने ऐसा किया भी और ऐसा करने का मार्ग भी बताया। जबतक हम सुखों के पीछे अंधों की तरह भागेंगे, दुख भी हमारा पीछा करते रहेंगे। सुख और दुख साथ आते हैं। जैसे सिक्के को तोड़कर उसके दो पहलू अलग नहीं किए जा सकते, वैसे ही यह असंभव है कि सुख और दुःख अलग कर दिए जाएँ। समदर्शी होना पड़ेगा, दोनों को एक नजर से देखना पड़ेगा, तभी हम इस अंधी दौड़ से मुक्त हो पाएंगे। एक दिन भगवान बुद्ध के दर्शन करने के लिए एक नगर सेठ आया। बड़ा धन कुबेर। तमाम हाथी-घोड़े सेवक-सेविकाओं के साथ भगवान के पास पहुँचा। दर्शन किए और जाते - जाते उसने भगवान से कहा, 'आप बुद्ध हैं, मुझे बड़ा दुःख होता है जब मैं आपको मिट्टी के पात्र में भिक्षा माँगते हुए देखता हूँ। मैं आपके लिए सोने का भिक्षा-पात्र लाया हूँ, कृपा करके इसे स्वीकार करें।' भगवान ने मुस्कराकर कहा, 'ठीक है, रख दो।' ये बात भगवान बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद को अच्छी नहीं लगी। सेठ के जाते ही आनंद कहने लगे, 'भगवान, ये आपने क्या किया? आप सोने-चांदी का मोह त्याग नहीं पाए? आपने सोने का भिक्षा पात्र स्वीकार कर लिया। मैं बड़ा निराश हूँ, क्या सोचता था आपके बारे में और आप क्या निकले!' भगवान ने आनंद को पास बुलाया और कहा, 'आनंद, सोने और मिट्टी के अंतर पर तुम रूके हुए हो मैं तो कब का उसके पार जा चुका हूँ। मुझे तो सिर्फ भिक्षा पात्र चाहिए, वो किस धातु का बना है, मुझे इससे क्या?' आनंद ने कहा, 'यदि आपको कोई फर्क नहीं पड़ता, तो आपको सोना टुकरा देना चाहिए था। भगवान ने उत्तर दिया, 'यदि मैं सोना टुकरा देता, तो इसका एक ही अर्थ था मैं अब तक सोने और मिट्टी का अंतर भुला नहीं पाया, अब तक मेरी आँखों ने समदर्शी होना नहीं सीखा।

प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष सही, पर माया ने अब तक मुझे जकड़ रखा है।' कितनी बड़ी बात बात कह दी भगवान बुद्ध ने। अगर हम अपने दिए हुए दान को दान माते हैं, तो सच्चे दानी नहीं हैं, अपने किए हुए परोपकार को परोपकार मानते हैं, तो अभी हमारे पूर्ण परोपकारी होने में कुछ कमी है। जिस दिन हमारा अस्तित्व ही दानमय हो गया, हमारा व्यक्तित्व ही परोपकारी हो गया, उस दिन हम जो दं वही दान है, जो करें वही परोपकार है। हम दानी और परोपकारी होने के अंकार से सदा के लिए मुक्त हो जाएंगे।

1. वह कौन सी घटना थी जिस दिन मानवता का आलोक प्रकाशित हुआ था ?
  - (क) बुद्ध का जन्म
  - (ख) बुद्ध का महानिर्वाण
  - (ग) बुद्ध का महाप्रस्थान
  - (घ) उपर्युक्त सभी
2. भारत को विश्व गुरु मानने का क्या कारण है ?
  - (क) भारत की प्राकृतिक सुंदरता
  - (ख) भारत की अर्थव्यवस्था
  - (ग) भारत की आध्यात्मिक परंपरा
  - (घ) भारत की शिक्षा प्रणाली
3. बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क में क्या संबंध है ?
  - (क) धर्म और तर्क एक दूसरे के विपरीत हैं।
  - (ख) धर्म और तर्क एक दूसरे के सहयोगी हैं।
  - (ग) धर्म और तर्क में किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है।
  - (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं
4. 'तभी हम इस अंधी दौड़ से मुक्त हो पाएंगे।' इस पंक्ति में 'इस अंधी दौड़' से लेखक का क्या आशय है ?
  - (क) सुखों के पीछे भागना
  - (ख) दुख के पीछे भागना
  - (ग) दुख के कारणों के पीछे भागना
  - (घ) समदर्शी होना
5. भगवान बुद्ध ने सोने का भिक्षा पात्र क्यों स्वीकार कर लिया ?
  - (क) भिक्षा पात्र के सोने के धातु से बने होने के कारण
  - (ख) पेट की भूख के कारण
  - (ग) मिट्टी और सोने की तुलना में सोने का मूल्य अधिक होने के कारण
  - (घ) समदर्शी होने के कारण

6. भगवान बुद्ध के अनुसार सच्चे दानी और परोपकारी की क्या विशेषाएँ हैं ?
- (क) अपने दिए हुए दान और परोपकार को याद करना  
 (ख) परोपकार कर अथवा दान देकर भूल जाना  
 (ग) दानी और परोपकारी व्यक्ति के साथ रहना  
 (घ) उपर्युक्त सभी
7. ओशो द्वारा बुद्ध को संसार का एकमात्र धर्म वैज्ञानिक मानने का क्या कारण है ?
- (क) धर्म और तर्क एक दूसरे के विपरीत हैं ।  
 (ख) बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क एक दूसरे से परे नहीं हैं ।  
 (ग) बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क एक दूसरे से परे हैं ।  
 (घ) बुद्ध के अनुसार धर्म और तर्क एक दूसरे के पर्यायवाची हैं ।
8. 'परोपकार' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द को अलग कीजिए -
- (क) परो (उपसर्ग) और पकार (मूल शब्द)  
 (ख) पर (उपसर्ग) और पकार (मूल शब्द)  
 (ग) पर (उपसर्ग) और उपकार (मूल शब्द)  
 (घ) परोप (उपसर्ग) और कार (मूल शब्द)
9. लेखक ने दान और परोपकार के साथ अहंकार की बात क्यों की है ?
- (क) दान और परोपकार के साथ अहंकार का कोई संबंध नहीं है ।  
 (ख) लेखक के लिखने की इच्छा मात्र से ।  
 (ग) दान और परोपकार हमेशा अहंकार को जन्म देते हैं ।  
 (घ) व्यक्ति अहंकारी होते ही दानी अथवा परोपकारी हो जाता है।
10. गद्यांश में समदर्शी होने के क्या लक्षण बताए गए हैं ?
- (क) विशेष और सामान्य दोनों को एक दृष्टि से देखना  
 (ख) सोने और मिट्टी में अंतर कर पाना  
 (ग) व्यक्ति का दानी और परोपकारी बन जाना  
 (घ) व्यक्ति का अहंकारी बन जाना

## गद्यांश 2

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

महिलाओं को दूसरों की प्राथमिकताओं के आधार पर खुद को ढालना सिखाया जाता है और पुरुषों को नेतृत्व करना सिखाया जाता है क्योंकि दिन के अंत में, महिलाओं को घर के कामों का प्रबंधन करना पड़ता है जबकि पुरुष नायक होते हैं जो अपने परिवार को बचाते हैं और उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। यह भारत में सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता है और इसका एक कारण महिलाओं को समाज में बुनियादी अधिकार से वंचित करना है। एक महिला को अपने घरेलू मामलों में भी अपनी राय रखने के अधिकार से वंचित किया जाता है, राजनीतिक या वित्तीय दृष्टिकोण बहुत पीछे हैं। महिलाएँ जन्मजात नेत्री होती हैं और अगर उन्हें मौका दिया जाए तो वे हर क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर सकती हैं। हम एक पुरुष प्रधान समाज में रहते हैं जहाँ एक पुरुष को वह करने का पूरा अधिकार है जो वह चाहता है। सदियों से, महिलाओं को पुरुषों के सामने खाने या अन्य पुरुषों के सामने बैठने की अनुमति नहीं थी। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण विश्व स्तर पर एक प्रमुख चिंता का विषय है। लैंगिक समानता दोनों लिंगों को समान शिक्षा और समान संसाधन प्रदान करने से शुरू होती है। बालिकाओं की शिक्षा हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए न कि केवल एक विकल्प। एक शिक्षित महिला अपने और अपने आसपास के लोगों के लिए बेहतर जीवन का निर्माण करने में सक्षम होगी। समाज में महिलाओं के विकास के लिए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक महिला को शिक्षा प्राप्त करने, पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त करने और जागरूकता फैलाने का अवसर मिले। हालांकि, लैंगिक समानता सुनिश्चित करेगी कि संसाधनों तक पहुँच दोनों लिंगों को समान रूप से प्रदान की जाए और समान भागीदारी सुनिश्चित की जाए। यहाँ तक कि पेशेवर स्तर पर भी महिलाओं को लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ता है क्योंकि नियुक्तियों में एक पुरुष उम्मीदवार को महिला उम्मीदवार की अपेक्षा अधिक तरजीह दी जाती है। अब मानसिकता बदलनी चाहिए और महिला-पुरुष की परवाह न करते हुए योग्य उम्मीदवारों की ही नियुक्ति की जानी चाहिए। लैंगिक समानता सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और सभी के लिए बुनियादी मानवाधिकार सुनिश्चित करता है।

1. भारत में महिलाओं को समाज में बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित करने का क्या कारण है ?

- (क) भारत में पुरुष प्रधान समाज का वर्चस्व
- (ख) पुरुषों का महिलाओं से अधिक शक्तिशाली होना
- (ग) पुरुषों की स्वार्थपरता
- (घ) महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझना

2. लैंगिक समानता की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं ?
  - (क) स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से शिक्षा और संसाधन प्रदान करना
  - (ख) स्त्री की अपेक्षा पुरुष को समान रूप से शिक्षा और समान संसाधन प्रदान करना
  - (ग) पुरुषों की अपेक्षा स्त्री को समान रूप से शिक्षा और समान संसाधन प्रदान करना
  - (घ) स्त्री-पुरुष दोनों को अलग-अलग शिक्षा और संसाधन प्रदान करना
3. आज विश्व स्तर पर चिंता का एक प्रमुख विषय क्या है?
  - (क) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण
  - (ख) लैंगिक असमानता और महिलाओं की स्थिति
  - (ग) लैंगिक असमानता और पुरुष सशक्तिकरण
  - (घ) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण
4. पेशेवर स्तर पर महिलाओं को लैंगिक असमानता का सामना किस प्रकार करना पड़ता है ?
  - (क) पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को अधिक छुट्टी देकर ।
  - (ख) पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं से अधिक काम लिया जाता है ।
  - (ग) महिला उम्मीदवार को पुरुष उम्मीदवार की अपेक्षा अधिक तरजीह दी जाती है ।
  - (घ) पुरुष उम्मीदवार को महिला उम्मीदवार की अपेक्षा अधिक तरजीह दी जाती है ।
5. सतत विकास की आवश्यकता को कैसे पूरा किया जा सकता है ?
  - (क) लैंगिक समानता से
  - (ख) महिला सशक्तिकरण से
  - (ग) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण दोनों से
  - (घ) इनमें से कोई नहीं
6. महिलाओं को यदि मौका मिले तो वे क्या कर सकती हैं ?
  - (क) समाज का नेतृत्व
  - (ख) उत्कृष्ट वैज्ञानिक
  - (ग) देश की रक्षा
  - (घ) उपर्युक्त सभी
7. आज लैंगिक समानता की बात करना क्यों जरूरी है ?
  - (क) महिलाओं के विकास के लिए।
  - (ख) महिलाओं के बुनियादी अधिकारों के लिए।
  - (ग) देश के सतत विकास के लिए।
  - (घ) उपर्युक्त सभी।
8. आज हमारी प्राथमिकता क्या होनी चाहिए ?



- (क) सभी के लिए घर  
 (ख) पर्यावरण सुरक्षा  
 (ग) आर्थिक प्रगति  
 (घ) बेटियों की शिक्षा
9. महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों को नेतृत्व करना क्यों सिखाया जाता है ?  
 (क) भारतीय समाज के प्रगतिवादी विचारों के कारण  
 (ख) पुरुषों में महिलाओं की अपेक्षा अधिक शारिरिक बल होने के कारण  
 (ग) महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व का गुण होने के कारण  
 (घ) भारतीय समाज के रूढ़िवादी विचारों के कारण
10. 'सशक्तिकरण' शब्द में मूल शब्द?  
 (क) सशक्ति  
 (ख) शक्ति  
 (ग) करण  
 (घ) सश

### गद्यांश 3

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

अफवाहों के दौर में शांत रहना बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो कर रहना भी भले आदमी की चाल है, परंतु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन-मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। जरा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरुद्ध जहरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातें बड़ी तेजी से फैल जाती हैं। समाचारों के शीघ्र आदान-प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं, जबकि धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के लिए सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्लभ हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खरतनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा-फंसाद और टंटे को पसंद नहीं करती, परन्तु इतनी तेजी से कुटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते। अगर लाखों-करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें जरूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फंसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं।

यह स्वार्थी का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन-मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थ के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

1. लेखक ने कठिन समस्या किसे माना है ?  
(क) अफवाहों के दौर में शांत रहना  
(ख) अफवाहों के दौर में चंचल रहना  
(ग) संघर्ष के दौर में शांत रहना  
(घ) संघर्ष के दौर में चंचल रहना
2. राजनीति अफवाहों के जरिए क्या करवाती है ?  
(क) लाभ  
(ख) दंगे  
(ग) उत्सव  
(घ) पर्व
3. आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है ?  
(क) भलाई के साधनों को  
(ख) गलत बातों का प्रचार-प्रसार  
(ग) सही बातों का प्रचार-प्रसार  
(घ) राजनीति को
4. चुप रहना खतरनाक कब हो जाता है ?  
(क) जब गलत प्रचार होता है।  
(ख) जब सही प्रचार होता है।  
(ग) जब सही-गलत प्रचार होता है।  
(घ) जब भलाई का प्रचार होता है।
5. लेखक ने संघर्ष करना आवश्यक क्यों माना है ?  
(क) जन के लाभ से बचने के लिए  
(ख) जन की हानि से बचने के लिए  
(ग) स्वार्थ को दूर करने के लिए  
(घ) परहित को दूर करने के लिए
6. हमारा सारा साहित्य किसका साहित्य है ?  
(क) केवल नीति का

- (ख) केवल सच्चाई का  
 (ग) नीति और सच्चाई का  
 (घ) प्रबलता का
7. कौन -से साधन अब भी दुर्लभ हैं?  
 (क) मनुष्य की भलाई को सोचने के (ख) मनुष्य के स्वार्थ को सोचने के  
 (ग) मनुष्य के अहित को सोचने के (घ) दूसरों के विवाद को सोचने के
8. हम किस पर दृढ़ रहते हैं ?  
 (क) केवल सच्चाई पर (ख) केवल भद्रता पर  
 (ग) सच्चाई और भद्रता पर (घ) केवल नीति पर
9. आदान-प्रदान में प्रयुक्त समास है ?  
 (क) कर्मधारय समास (ख) द्वंद्व समास  
 (ग) द्विगु समास (घ) तत्पुरुष समास
10. गद्यांश के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक होगा ?  
 (क) अन्याय का प्रतिकार (ख) न्याय का प्रतिकार  
 (ग) सत्य का प्रतिकार (घ) अहिंसा का प्रतिकार

## उत्तर संकेत ( गद्यांश )

### गद्यांश-1

1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (घ) 6. (ख) 7. (ख) 8. (ग)  
 9. (ग) 10. (क)

### गद्यांश-2

1. (क) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग) 6. (घ) 7. (घ) 8. (घ)  
 9. (घ) 10. (ख)

### गद्यांश-3

1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख) 6. (ग) 7. (क) 8. (ग)  
 9. (ख) 10. (क)

## अपठित पद्यांश/काव्यांश

### काव्यांश 1

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए -

शांत स्निग्ध, ज्योत्स्ना उज्ज्वल ।

अपलक अनंत, नीरव भू-तल ।

सैकत-शय्या पर दुग्ध-घवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म-विरल,

लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त, निश्चल ।

तापस-बाला गंगा, निर्मल, शशि-मुख से दीपित मृदु-करतल,

लहरें उर पर कोमल कुंतल ।

गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार-तरल सुन्दर

चंचल अंचल-सा नीलांबर ।

साड़ी की सिकुड़न-सी जिस पर , शशि की रेशमी-विभा से भर,

सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल लहर ।

चाँदनी रात का प्रथम प्रहर,

हम चले नाव लेकर सत्वर ।

सिकता की सस्मित-सीपी पर, मोती की ज्योत्सना रही विचर,

लो, पालें चढ़ी, उठा लंगर ।

मृदु मंद-मंद, मंथर-मंथर, लघु तरणि, हंसिनी-सी सुन्दर

तिर रही, खोल पालों के पर ।

निश्चल-जल के शुधि-दर्पण पर, बिम्बित हो रजत-पुलिन निर्भर

दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर ।

कालाँकाँकर का राज-भवन, सोया जल में निश्चिंत, प्रमन,

पलकों में वैभव-स्वप्न सघन ।

नौका से उठती जल-हिलोर,

हिल पड़ते नभ के ओर-छोर ।

स्फारित नयनों से निश्चल , कुछ खोज रहे चल तारक दल

ज्योतिर कर नभ का अंतस्तल,

जिनके लघु दीपों को चंचल, अंचल की ओट किये अबिरल

फिरतीं लहरें लुक-छिप पल पल ।

सामने शुक्र की छवि झलमल, तैरती परी-सी जल में कल,  
 रूपहरे कचों में ही ओझल ।  
 लहरों के घूँघट से झुक-झुक, दशमी का शशि निज तिर्यक्-मुख  
 दिखलाता, मुग्धा-सा रुक-रुक ।  
 अब पहुँची चपला बीच धार,  
 छिप गया चाँदनी का कगार ।  
 दो बाहों -से दुरस्थ-तीर, धारा का कृश कोमल शरीर  
 आलिंगन करने को अधीर ।  
 अति दूर, क्षितिज पर विटप-माल, लगती भू-लेखा-सी अराल,  
 अपलक-नभ नील-नयन विशाल;  
 माँ के उर पर शिशु-सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,  
 ऊर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप;  
 वह कौन विहग ? क्या विकल कोक, उड़ता , हरने का निज विरह-शोक ?  
 छाया की कोकी को विलोक ?  
 नौका घूमी विपरीत-धार ।  
 डौँडों के चल करतल पसार, भर-भर मुक्ताफल फेन-स्फार,  
 बिखराती जल में तार-हार ।  
 चाँदी के साँपों -सी रलमल, नाँचतीं रश्मियाँ जल में चल  
 रेखाओं-सी खिंच तरल-सरल  
 लहरों की लतिकाओं में खिल, सौ-सौ शशि, सौ-सौ उड़ झिलमिल  
 फूँले फूँले जल में फेनिल ।  
 अब उथला सरिता का प्रवाह, लगी से ले-ले सहज थाह  
 हम बढ़े घाट को सहोत्साह  
 ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार  
 उर में आलोकित शत विचार ।  
 इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उदर  
 शाश्वत है गति, शाश्वत संगम ।  
 शाश्वत नभ का नीला-विकास, शाश्वत शशि का यह रजत-हास  
 शाश्वत लघु-लहरों का विलास ।  
 है जग-जीवन के कधार चिर जन्म-मरण के आर पार  
 शाश्वत जीवन -नौका-विहार ।  
 मैं भूल गया अस्तित्व-ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण

करता मुझको अमरत्व-दान ।

1. प्रस्तुत काव्यांश में किसका वर्णन है?

- (क) प्रकृति का
- (ख) नौका विहार का
- (ग) गंगा का
- (घ) रात्रि का

2. कवि ने किसे तपस्विनी कहा है ?

- (क) गंगा को
- (ख) नदी को
- (ग) रात्रि को
- (घ) प्रकृति को

3. 'तन्वंगी' शब्द का क्या अर्थ है ?

- (क) युवती
- (ख) छरहरी
- (ग) गंगा
- (घ) नदी

4. कवि ने किसे शिशु के समान बताया है?

- (क) दीपों को
- (ख) पतवार को
- (ग) द्वीप को
- (घ) चंद्रमा को

5. माँ के उर पर शिशु-सा पंक्ति में निहित अलंकार क्या है ?

- (क) अनुप्रास
- (ख) रूपक
- (ग) मानवीकरण
- (घ) उपमा

6. कवि क्या भूल गया ?

- (क) जीवनदान
- (ख) अस्तित्व ज्ञान
- (ग) अमरत्व ज्ञान
- (घ) अमरत्व दान

7. 'सिक्ता' का अर्थ क्या है ?

- (क) रेत
- (ख) धरती
- (ग) नदी
- (घ) समुद्र

8. ज्योत्सना की कौन सी विशेषता बताई गई है ?

- (क) शांत स्निग्ध
- (ख) तीक्ष्ण
- (ग) मलिन
- (घ) मृदुल

## काव्यांश 2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए -

उठो, धरा के अमर सपूतों ।

पुनः नया निर्माण करो ।

जन-जन के जीवन में फिर से

नव स्फूर्ति, नव प्राण भरों ।

नई प्रात है नई बात,

है नया किरन है, ज्योति नई।

नई उमंगें, नई तरंगें

नई आस है, साँस नई ।

युग-युग के मुरझे सुमनों में

नई-नई मुस्कान भरों ।

उठो, धरा के अमर सपूतों ।

पुनः नया निर्माण करो ॥

डाल-डाल पर बैठ विहग

कुछ नए स्वरोँ में गाते हैं ।

गुन-गुन, गुन-गुन करते भौरें

मस्त उधर मँडराते हैं ।

1. कवि ने किसका आह्वान करते हैं ?
  - (क) देशवासियों से
  - (ख) सैनिकों से
  - (ग) अमर सपूतों से
  - (घ) नेताओं से
2. काव्यांश में कवि क्या करने को कहते हैं ?
  - (क) नया निर्माण करने को
  - (ख) नव स्फूर्ति भरने को
  - (ग) नव प्राण भरने को
  - (घ) उपर्युक्त सभी
3. मुस्कान भरने की बात किसके लिए कही गई है?
  - (क) सैनिकों के लिए
  - (ख) अमर सपूतों के लिए
  - (ग) देशवासियों के लिए
  - (घ) फूलों के लिए
4. डाल-डाल पर बैठे पक्षी क्या करते हैं ?
  - (क) उड़ते हैं
  - (ख) गाते हैं
  - (ग) खाते हैं
  - (घ) आश्रय पाते हैं
5. भौरें क्या करते हैं?
  - (क) मंडराते हैं
  - (ख) गुनगुनाते हैं
  - (ग) मस्त हैं
  - (घ) मस्त होकर गुनगुनाते और मंडराते हैं
4. कवि नव स्फूर्ति, नव प्राण किसमें भरने की बात करते हैं ?
  - (क) अमर सपूतों में
  - (ख) स्वयं में
  - (ग) जन-जन में
  - (घ) पाठकों में



7. युग-युग से कौन मुरझाया हुआ है ?  
 (क) फूल  
 (ख) पत्ते  
 (ग) डालियाँ  
 (घ) पेड़
8. काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक चुनिए ?  
 (क) गर्जना  
 (ख) आह्वान  
 (ग) प्रार्थना  
 (घ) हुँकार

### काव्यांश 3

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर दीजिए:
- जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है  
 जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर, समीर पिया।  
 वह स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य नहीं है।  
 उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?  
 केवल अपने लिए सोचते, मौज भरे गाते हो।  
 पीते खाते, सोते, जगते, हँसते, सुख पाते हो।  
 जग से दूर, स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश है।  
 सोचो, तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम सा स्वार्थ विवश है?
- पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला-पोसा।  
 किए हुए हैं वह निज-हित का तुमसे बड़ा भरोसा।  
 उससे होना उग्रहण प्रथम है सत्कर्तव्य तुम्हारा।  
 फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

1. मातृभूमि से मनुष्य क्या-क्या प्राप्त करता है?  
(क) अन्न, जल, फल  
(ख) अन्न, फल, फूल  
(ग) अन्न, जल, वायु  
(घ) फल, फूल, जल
2. प्रस्तुत पंक्तियों में धरती की तुलना किससे की गई है?  
(क) ईश्वर से  
(ख) पिता से  
(ग) माता से  
(घ) विश्व से
3. प्रस्तुत काव्यांश में मनुष्य की किस प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है -  
(क) देश व देशवासियों के प्रति सेवा भाव  
(ख) स्वार्थी और आत्मकेंद्रित  
(ग) निःस्वार्थ और उदार  
(घ) विश्व बंधुता
4. कवि के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्तव्य क्या होना चाहिए?  
(क) माता-पिता के ऋण से उद्धार होना  
(ख) देश व जाति के ऋण से उद्धार होना  
(ग) शिक्षकों के ऋण से उद्धार होना  
(घ) भाई-बहनों के ऋण से उद्धार होना

5. काव्यांश का मुख्य संदेश है -  
 (क) सेवा भाव (ख) परोपकार  
 (ग) दयालुता (घ) देश भक्ति
6. मनुष्य किसी प्रवृत्ति के कारण विवश हो गया है।  
 (क) बेकारी (ख) बीमारी  
 (ग) स्वार्थ (घ) परमार्थ
7. कवि सम्पूर्ण जीवन किस पर न्यौछावर/समर्पित करने को कह रहा है:-  
 (क) मातृभूमि पर (ख) माँ पर  
 (ग) समाज पर (घ) किसी अन्य पर
8. प्रस्तुत काव्यांश में कौन सा गुण है:-  
 (क) माधुर्य (ख) प्रसाद  
 (ग) ओज (घ) करुण

## उत्तर संकेत ( काव्यांश )

### काव्यांश-1

1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ) 6. (ख) 7. (क) 8. (क)

### काव्यांश-2

1. (क) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ) 6. (ग) 7. (क) 8. (ख)

### काव्यांश-3

1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ) 6. (ग) 7. (क) 8. (ग)

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र ( 2023-24 )  
हिंदी ( ऐच्छिक ) कोड संख्या 002  
कक्षा बारहवीं

निर्धारित समय: 3 घंटे

अधिकतम अंक : 80 अंक

सामान्य निर्देश:

- इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। खंड-अ में वस्तुपरक / बहुविकल्पी और खंड-ब में वस्तुनिष्ठ / वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।
- प्रश्न-पत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 14 है और सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
- खंड-अ में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड-ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के साथ दिए गए उचित विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
- यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

खंड अ ( वस्तुपरक प्रश्न )

अपठित बोध

प्रश्न संख्या

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:  $1 \times 10 = 10$

'किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर उसकी आत्मा है।' यह उक्ति भारत जैसे प्राचीन राष्ट्र के संदर्भ में और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। संस्कृति राष्ट्र के जीवन मूल्यों, आदर्शों, दर्शन आदि को मानसिक धरातल पर अभिव्यक्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। भारत में इसके पीछे हजारों वर्षों के आचरण, व्यवहार,

अनुभव, चिंतन, मनन आदि की पूंजी लगी हुई है। कालचक्र के सैकड़ों सुखद एवं दुखद घटनाक्रमों के दौरान कसौटी पर खरे उतर कर उन्होंने अपनी सत्यता व विश्वसनीयता अनेक बार सिद्ध की है। त्याग, संयम, परहित एवं अहिंसा या जीवों पर दया आदि भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च मूल्यों में से हैं। संस्कृति और सभ्यता दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अपने आयु, पद और अनुभव में बड़ों के प्रति आदर भाव, श्रद्धा व सम्मान रखना ही संस्कृति की आत्मा है, उसकी पहचान है। संस्कृति और उसके आदर्श एवं मूल्य एक दिन में निर्मित नहीं होते, वे हजारों वर्षों की अनुभूतियों तथा सिद्धांतों के परिणाम होते हैं। इन आदर्शों व मूल्यों के आधार पर ही राष्ट्रीय संस्कृति निर्मित होती है। इसका निर्माण कार्य ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसका आचरण, व्यावहारिक जिंदगी में सहज रूप से अभिव्यक्त होना अर्थात् उसका अंगीभाव हो जाना, संस्कृति कहलाता है।

भारतीय संस्कृति का सर्वोच्च मूल्य त्याग है, यह मूल्य हमें पाश्चात्य संस्कृति तथा साम्यवादी संस्कृति की भोगवादी वृत्ति से दूर रखता है। इनकी इस भोगवादी संस्कृति ने आज संपूर्ण मानव जाति को विनाश के कगार पर पहुँचा दिया है और इसी प्रवृत्ति ने मनुष्य और प्रकृति के बीच एक बाई पैदा कर दी है। भारतीय संस्कृति सर्वसमावेशक है, जीवमान में ईश्वरीय सत्ता की अनुभूति करने वाली है। भारतीय संस्कृति अपने सुखों के लिए दूसरों को नष्ट करने की बर्बरता नहीं रखती। भारतीय संस्कृति में विश्वास करने वाले लोग, राजा से भी अधिक उस संन्यासी को समादृत करते हैं, जो विश्व कल्याण के लिए संयम नियम का पालन करते हुए अपना सर्वस्वार्पण करते हैं।

(क) भारत में आचरण, व्यवहार, अनुभव, चिंतन और मनन आदि की पूंजी लगी हुई है पंक्ति से आशय है? 1

- |                                   |                              |
|-----------------------------------|------------------------------|
| (i) जीवन मूल्यों का महत्व         | (ii) ईश्वरीय सत्ता का योगदान |
| (iii) राष्ट्रीय संस्कृति की चेतना | (iv) त्याग का उदात्त रूप     |

- (ख) पाश्चात्य संस्कृति तथा साम्यवादी संस्कृति की भोगवादी वृति से बचाव होता है- 1
- (i) संयम से (ii) अहिंसा से  
(iii) मूल्यों से (iv) चिंतन से
- (ग) संस्कृति और सभ्यता एक दूसरे के पूरक हैं, क्योंकि..... 1
- (i) सभ्यता के भीतर ही संस्कृति का विकास  
(ii) सांस्कृतिक निर्धारक तत्व ही सभ्यता को परिभाषित करते हैं।  
(iii) सभ्यता व संस्कृति का प्रभाव एक-दूसरे पर पड़ता है।  
(iv) सभ्यता उन्नति है और संस्कृति उदात्तता
- (घ) भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से किन अर्थों में भिन्न है - 1
- (i) भोगवाद से मुक्त होने के कारण (ii) भोगवाद से युक्त होने के कारण  
(iii) उदारता के कारण (iv) स्वार्थ भावना के कारण
- (ङ) 'समादृत' शब्द का समानार्थी हो सकता है- 1
- (i) समवयस्क (iii) सम्मानित  
(ii) सुसंस्कृत (iv) समावेशक
- (च) मनुष्य और प्रकृति के बीच खाई पैदा करने के महत्वपूर्ण कारण हैं-- 1
- (i) आधुनिकता (ii) भोगवादी दृष्टिकोण  
(iii) प्रकृति के प्रति उदासीनता (iv) लालची स्वभाव
- (छ) संस्कृति के मूल में समाहित है: कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए: 1
- कथन (1) एक राष्ट्र की आत्मा  
(2) जीवन मूल्यों, दर्शन का आईना

(3) पाश्चात्य जगत की भोगवादी संस्कृति

(4) आधारभूत तत्वों का अवमूल्यन

विकल्प (i) कथन 1 व 4 सही हैं।

(ii) कथन 1 व 2 सही हैं।

(iii) कथन 1, 2, 3 व 4 सही हैं।

(iv) कथन 1 व 3 सही हैं।

(ज) प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर सांस्कृतिक संरक्षण के विषय में कहा जा सकता।

1

(i) सांस्कृतिक व्यवहार का संरक्षण करना

(ii) सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाना

(ii) संस्कृति का हस्तांतरण करना

(iv) संरक्षण को व्यावहारिक रूप प्रदान करना

(झ) राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण होता है -

1

(i) ईश्वरीय सत्ता के प्रभाव से

(ii) विश्व के कल्याण की ओर उन्मुख होने से

(iii) आदर्शों व मूल्यों के आधार पर

(iv) आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होने से

(ज) भारतीय संस्कृति में राजा से अधिक संन्यासी को आदर देने का प्रबल कारण है -

1

(i) आत्मसंयम

(ii) परोपकार

(iii) त्याग की भावना

(iv) जनप्रियता

प्रश्न 2. दिए गए काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए 1×8=8

हम जंग न होने देंगे!

विश्व शांति के हम साधक हैं, जंग न होने देंगे!

कभी न खेतों में फिर खूनी बाद फलेगी,  
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी,  
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा,  
एटम से नागासाकी फिर नहीं जलेगी,  
युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे।  
जंग न होने देंगे।

हथियारों के डेरों पर जिनका है डेरा,  
मुँह में शांति, बगल में बम, धोखे का फेरा,  
कफन बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर,  
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा,  
कामयाब हो उनकी चाले, ढंग न होने देंगे।  
जंग न होने देंगे।

हमें चाहिए शांति, जिंदगी हमको प्यारी,  
हमें चाहिए शांति, सृजन की है तैयारी,  
हमने छोड़ी जंग भूख से, बीमारी से,  
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी।  
हरी-भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे  
जंग न होने देंगे।



(क) इस कविता के केन्द्रीय भाव हेतु दिए गए कथनों को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1

- कथन (1) आंतरिक वैमनस्य को विस्मृत करना  
(2) विश्व शांति के मार्ग पर अग्रसर होना  
(3) युद्ध की नई तकनीकों पर विचार करना  
(4) एटम बम से ऐतिहासिक परचम लहराना

विकल्प-

- (i) कथन 1 व 2 सही है। (ii) कथन 1, 2, 3 व 4 सही है।  
(iii) कथन 1 व 4 सही है। (iv) कथन 1 व 3 सही है।

(ख) 'खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी,' प्रस्तुत पंक्ति में मौत की फसल से तात्पर्य है- 1

- (i) युद्ध के कारण किसानों की मेहनत विफल नहीं होगी।  
(ii) प्रकृति का विनाश नहीं होगा  
(iii) युद्ध अपार जन-हानि का कारण नहीं बनेगा।  
(iv) हरित सौन्दर्य रक्ताभ रूप में नहीं दिखेगा।

(ग) 'मुँह में शांति, बगल में बम, धोखे का फेरा' रेखांकित वाक्यांश के भाव को स्पष्ट कीजिए- 1

- (i) छोटा मुँह बड़ी बात (ii) मुँह में राम बगल में छुरी  
(iii) बारूद की पुड़िया होना (iv) दिल छोटा करना

(घ) अपनी आँखों में कवि ने दुनिया का सपना सँजोया है- 1

- (i) जहाँ युद्ध मात्र विकल्प हो  
(ii) जहाँ सर्वत्र शांति बयार चल रही हो।  
(iii) हथियारों के ढेरों पर डेरा जमाना है  
(iv) हरी-भरी धरा का सपना

- ( ड ) 'कफन बेचने वाले' कहकर कवि की लेखनी उद्धाटित करना चाह रही है-।
- (i) वे मुल्क जो हथियारों की खरीद-फरोख्त करते हैं
  - (ii) वे मुल्क जो कफन बेचने वालों को ललकार रहे हैं।
  - (iii) वे मुल्क जो विश्व शांति के लिए हथियारों की खरीद-फरोख्त करते हैं
  - (iv) वे मुल्क जो अन्य मुल्कों को गुलाम बनाना चाहते हैं
- ( च ) 'आसमान फिर न अँगारे उगलेगा' पंक्ति में अँगारे उगलने का तात्पर्य है-।
- (i) परमाणु परीक्षण पर पाबंदी से
  - (ii) सौरमंडल में सूर्य की दशा परिवर्तन से
  - (iii) परमाणु विस्फोट करने से
  - (iv) भुखमरी के कारण मृत्युदर में वृद्धि
- ( छ ) नागासाकी फिर नहीं जलेगी के माध्यम से कवि का अभिप्राय है- 1
- (i) विश्व शांति को विस्तारित करना
  - (ii) हिरोशिमा नागासाकी को याद करना
  - (iii) विश्व को अस्त्र रहित बनाना
  - (iv) संसार में अस्त्र-शस्त्र का प्रचार-प्रसार करना
- ( ज ) कवि ने किसके विरुद्ध रण की तान छेड़ रखी है- 1
- (i) खेत-खलिहान बाद के विरुद्ध
  - (ii) नवसृजन की बात कहने के लिए
  - (iii) निर्धनता व भुखमरी को संघर्षहीन बनाने के लिए
  - (iv) हरित धरा को लहलुहान होने से बचाने के लिए

### अभिव्यक्ति और माध्यम

प्रश्न 3. (क) निम्नलिखित प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों का कपन दिखा और सुनाकर खबर को प्रमाणिकता दी जाती है। इसे कहते हैं-  $1 \times 5 = 5$

- (i) एंकर विजुअल
- (ii) एंकर बाइट
- (iii) एंकरिंग
- (iv) एंकर सूचना

(ख) फीचर के संदर्भ में कौन सा /से कथन सही हैं?

- (a) फीचर एक सुव्यवस्थित और आत्मनिष्ठ लेखन है।
  - (b) फीचर में लेखक के पास अपनी राय जाहिर करने का अवसर होता है।
  - (c) फीचर लेखन में छह ककारों को सम्मिलित किया जाना अत्यंत आवश्यक है।
- (i) केवल (a)
  - (ii) केवल (b)
  - (iii) (a) और (b)
  - (iv) (b) और (c)

(ग) प्रो. स्वामी अय्यर एक महत्वपूर्ण लेखक हैं और अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन शैली भी विकसित हो चुकी है। उनकी लोकप्रियता को देखकर अखबार ने उन्हें नियमित रूप से लिखने का जिम्मा दिया है। इस जानकारी के आधार पर वे लिखते होंगे-

- (i) खोजी रिपोर्ट (ii) स्तंभ  
(iii) संपादकीय (iv) प्रतिबेदन

(घ) भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार पत्रों एवं संगठनों में लिखने वाले पत्रकारों को कहते हैं-

- (i) फ्रीलांसर पत्रकार (ii) अल्पकालिक पत्रकार  
(iii) अशकालिक पत्रकार (iv) पूर्णकालिक पत्रकार

(ङ) अनामिका कुमार विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाली रिपोर्टर हैं। इन्हें कहा जाएगा

- (1) संवाददाता (11) विशेष संवाददाता  
(11) उपसंपादक (प) विषय विशेषज्ञ

#### पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उचित विकल्प का चयन कीजिए - 1×5=5

जो है वह बड़ा है बिना किसी स्तंभ के  
जो नहीं है उसे थामे है राख और रौशनी के ऊँचे ऊँचे स्तंभ  
-आग के स्तंभ  
और पानी के स्तंभ  
धुएँ के खुशबू के  
आदमी के उठे हुए हाथों के स्तंभ  
किसी अलक्षित सूर्य को  
देता हुआ अर्ध  
शताब्दियों से इसी तरह  
गंगा के जल में  
अपनी एक टांग पर खड़ा है यह शहर  
अपनी दूसरी टांग से  
बिल्कुल बेखबर।

- (क) जो है वह खड़ा है  
बिना किसी स्तंभ के ..... ' वह जो बिना सहारे के खड़ी है-
- (i) दार्शनिकता (ii) आध्यात्मिकता  
(iii) धुएं की विशालता (iv) पानी की पवित्रता
- (ख) 'अपनी दूसरी टांग से बिलकुल बेखबर, पति का आशय है कि'  
(i) अध्यात्मिकता से अनभिज्ञ होना (ii) आधुनिकता से अनभिज्ञ होना  
(iii) सांसारिकता से अनभिज्ञ होना (iv) दार्शनिकता से अनभिज्ञ होना
- (ग) राख के स्तंभ से क्या अभिप्राय है?  
(i) पूजा-पाठ की सामग्री के ढेर से (ii) शवों के राख के ढेर से  
(iii) मिट्टी के ढेर से (iv) मुरझाए फूलों के ढेर से
- (घ) आस्था, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति का मिला-जुला रूप दिखाई देता है-  
(i) श्रद्धा और अंधभक्ति में (ii) मोक्ष की अवधारणा में  
(iii) मिथकीय आस्था में (iv) बनारस की आध्यात्मिकता में
- (ङ) मनुष्य के हाथ स्तंभ की भांति बड़े हो जाते हैं-  
(i) मंदिर की ध्वजा को प्रमाण करने के लिए  
(ii) अदृश्य को अर्घ्य देने के लिए  
(iii) किसी की मदद के लिए (iv) श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए

प्रश्न 5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा निर्देशानुसार उचित विकल्प का चयन कीजिए-

चौधरी साहब एक खासे हिंदुस्तानी रईस थे। बसंत पंचमी होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाच रंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी। कंधों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा-सा लड़का पान की तश्तरी लिए

पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की काट-छाँट का क्या कहना है। जो बातें उनके मुँह से निकलती थीं, उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था।

- (क) प्रस्तुत गद्यांश में किस की विशेषताओं का वर्णन किया गया है?
- (i) भारतेंदु की (ii) राधेश्याम की  
(iii) रामचंद्र की (iv) बदरीनारायण की
- (ख) चौधरी साहब एक खासे हिन्दुस्तानी रईस थे, 'खासे रईस' से तात्पर्य है-
- (i) दिखावा करने वाला (ii) उत्सव मनाने वाला  
(iii) गंभीर व्यक्तित्व वाला (iv) व्यंग्य करने वाला
- (ख) चौधरी साहब की बातचीत के अंदाज से यह पता चलता है कि वे खासे हिन्दुस्तानी रईस के साथ-साथ ..... थे-
- (i) साहित्य प्रेमी (ii) भाषानुरागी  
(iii) रसिक धर्मी (iv) सौन्दर्य प्रेमी
- (घ) प्रस्तुत गद्यांश में विलक्षण वक्रता' से तात्पर्य स्पष्ट होता है?
- (i) मुहावरेदार (ii) कुटिलता  
(iii) वाक् चातुर्य (iv) अनोखी भंगिमा
- (ङ) कथन- हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी।  
कारण- चौधरी साहब की गिनती धनी व्यक्तियों में होती थी। सहृदयता के लिए भी प्रसिद्ध थे।
- (i) कथन (A) सही है और कारण (R) की सही व्याख्या है  
(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।  
(iii) कथन (A) सही है किंतु कारण गलत है।  
(iv) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) की सही व्याख्या नहीं है।

पाठ्यपुस्तक अंतरात भाग 2

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प लिखिए-

(क) 'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे। इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र की विशेषता है-  $1 \times 7 = 7$

- (i) आर्थिक मदद की चाह रखने वाला (ii) अत्यधिक परिश्रमी व्यक्तित्व  
(iii) सांत्वना का अभिलाषी (iv) हार न मानने की प्रवृत्ति वाला

(ख) 'अभिलाषाओं की राख है' से क्या अभिप्राय है?

- (i) सभी पैसों का जल जाना (ii) झोंपड़ी का जल जाना  
(iii) ईर्ष्या के कारण झोंपड़ी जलना (iv) चाहतों का जल जाना

(ग) कथन (A) - नारी प्रकृति का सजीव रूप है।

कारण (R) नारी शरीर से उन्हें बिस्कोहर की फसलों, वनस्पतियों की उत्कट गंध आती है

- (i) कथन (A) सही है और कारण (R) की सही व्याख्या है।  
(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।  
(iii) कथन (A) सही है किंतु कारण गलत है।  
(iv) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A)- जीवन के मर्म का ज्ञान ही दुखों से मुक्ति है।

कारण (R) -सूरदास विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा।

- (i) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) की सही व्याख्या नहीं है।  
(ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।  
(iii) कथन (A) सही है किंतु कारण गलत है।  
(iv) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है।

( ड ) निम्नलिखित शब्द-युग्मों को सुमेलित कीजिए-

भाग-1

भाग-2

- |            |  |
|------------|--|
| (1) भरभंडा | (क) खेतों में पानी देने के लिए छोटी-छोटी नालियाँ बनाई जाती है। |
| (2) कोइयाँ | (ख) एक प्रकार का फल  |
| (3) बरहा   | (ग) कमल का फूल   |
| (4) पुरइन  | (घ) कोका-बेली  |

विकल्प-

- (i) (1)- (ख), (2)-(घ), (3) (क), (4)- (ग)
- (ii) (1)-(क), (2)-(ग), (3)-(ख), (4)-(घ)
- (iii) (2)-(ख), (2)-(ग), (3)-(घ), (4)-(ग)
- (iv) (1)-(क), (2)-(ख), (3)-(ग), (4)-(घ)

( च ) विकास की औद्योगिक सभ्यता, उजाड़ की अपसभ्यता है क्योंकि-

- (i) वर्तमान युग को औद्योगिकीकरण का युग कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।
- (ii) आधुनिक सभ्यता के विकास से प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हो रही है।
- (iii) औद्योगिकीकरण के लगातार बढ़ने से उद्योग धंधों में खूब वृद्धि हुई है।
- (iv) अपशिष्ट पदार्थों, प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग से नदियों का प्रवाह बाधित हुआ है।

( छ ) 'पग-पग पर नीर वाला मालवा नीर विहीन हो गया' से तात्पर्य है-

- (i) पर्यावरण और मनुष्य का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है।
- (ii) पहले जल से परिपूर्ण अब वर्षा की मात्रा कम हो गई है।
- (iii) लद्दाख जैसे स्थानों पर भी बर्फबारी प्रभावित हुई है।



(iv) जल संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास चल रहा है।

**खंड ब (वर्णनात्मक)**

**प्रश्न 7. निम्न में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**

**5×1=5**

- (i) समाज में बढ़ती आर्थिक असमानताएँ
- (ii) आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस का समाज पर प्रभाव
- (iii) परीक्षा के दिन

**प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 60 शब्दों में लिखिए-**

**3×2=6**

- (i) कविता में बिंब की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
- (ii) नाटक के विभिन्न तत्वों पर प्रकाश डालिए।
- (iii) कहानी का हमारे जीवन से क्या संबंध है? परिभाषित कीजिए।

**प्रश्न 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** **3×2=6**

- (i) समाचार माध्यमों में प्रिंट माध्यम की विशेषताएँ लिखिए।
- (ii) रेडियो समाचार लेखन की भाषा पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 10. निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** **2×2=4**

- (i) 'जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- (ii) माघ के मास में विरहिणी के भावों को अपने शब्दों में लिखिए।
- (iii) भरत का आत्म परिताप उनके व्यक्तित्व के किस पक्ष की ओर संकेत करता है ? वर्तमान में ऐसे व्यक्तित्व की आवश्यकता सिद्ध कीजिए।

**प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-**

**6×1=6**

ये पत्थर ये चट्टानें

ये झूठे बंधन टूटें  
 तो धरती का हम जानें  
 सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है।  
 अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है।  
 आधे आधे गाने  
 तोड़ो तोड़ो तोड़ो  
 ये ऊसर बंजर तोड़ो  
 ये चरती परती तोड़ो  
 सब खेत बनाकर छोड़ो  
 मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को  
 हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की बीज को?  
 गोड़ो गोड़ो गोड़ो

अथवा

पुलकि सरीर सभा भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े॥  
 कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहीं मैं काहा  
 -मैं जनेऊ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ॥  
 मो पर कृपा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी॥

**प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 2×2=4**

- (i) 'शेर' कहानी में उद्धृत व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए लेखक के उद्देश्य का वर्णन कीजिए।
- (ii) घड़ीसाजी का इम्तहान पास करने से लेखक के अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए।
- (iii) 'बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन सुना सकने में असमर्थ था' कथन के माध्यम से हरगोबिन की तत्कालीन स्थिति की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

6×1=6

मेरे लिए एक दूसरी दृष्टि से भी यह अनूठा अनुभव था। लोग अपने गाँवों से विस्थापित होकर कैंसी अनाथ, उन्मूलित जिंदगी बिताते हैं, यह मैंने हिंदुस्तानी शहरों के बीच बसी मजदूरों की गंदी, दम घुटती भयावह बस्तियों और स्लम्स में कई बार देखा था, किंतु विस्थापन से पूर्व वे कैसे परिवेश में रहते होंगे, किस तरह की जिंदगी बिताते होंगे, इसका दृश्य अपने स्वच्छ, पवित्र खुलेपन में पहली बार अमझर गाँव में देखने को मिला।

अथवा

बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था, हृदय में कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक आँखों में दिख रही थी। कुछ खाँसकर, गला साफ कर नकली परदे के हट जाने पर स्वयं विस्मित होकर बालक ने धीरे से कहा, 'लड्डू'। पिता और अध्यापक निराश हो गए। इतने समय तक मेरा श्वास घुट रहा था। अब मैंने सुख से साँस भरी। उन सबने बालक की प्रवृत्तियों का गला घोटने में कुछ उठा नहीं रखा था। पर बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह नड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों पर मधुर मर्मर था, मेरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नहीं।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-

3×1=3

“सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के सहते हैं पर मैदान में डटे रहते हैं।” परीक्षा के समय को आधार मानकर 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ क्या संदेश देता है?

अथवा

लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है?

अंक योजना प्रतिदर्श प्रश्न पत्र ( 2023-2024 )

हिंदी ( ऐच्छिक )-002

कक्षा बारहवीं

अवधि-3 घंटे

सामान्य निर्देश

- (1) इस अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। इस प्रश्नपत्र में वस्तुपरक एवं वर्णनात्मक प्रश्न हैं। अतः अंक योजना में दिए गए वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- (2) यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दें, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
- (3) समान त्रुटियों के लिए स्थान-स्थान पर अंक न काटे जाएँ।
- (4) गुणवत्तापूर्ण, सटीक उत्तर पर शत-प्रतिशत अंक देने में किसी प्रकार का संकोच न किया जाए।
- (5) मूल्यांकन में 0 से 100 प्रतिशत अंकों का पैमाना स्वीकार्य है।
- (6) मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना के निर्देशानुसार ही किया जाए।

प्रश्न 1. अपठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न 1×10=10

- (1) (iii) राष्ट्रीय संस्कृति की चेतना
- (2) (iii) मूल्यों से
- (3) (i) सभ्यता के भीतर ही संस्कृति का विकास
- (4) (i) भोगवाद से मुक्त होने के कारण
- (5) (ii) सम्मानित

- (6) (ii) भोगवादी दृष्टिकोण
- (7) (ii) कथन 1 व 2 सही है।
- (8) (iv) संरक्षण को व्यावहारिक रूप प्रदान करना
- (9) (iii) आदर्शों व मूल्यों के आधार पर
- (10) (ii) परोपकार

**प्रश्न 2. अपठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** 1×8=8

- (1) (i) कथन 1 व 2 सही है।
- (2) (iii) युद्ध अपार जन-हानि का कारण नहीं बनेगा
- (3) (ii) मुँह में राम बगल में छुरी
- (4) (ii) जहाँ सर्वत्र शांति बयार चल रही हो
- (5) (i) वे मुल्क जो हथियारों की खरीद-फरोख्त करते हैं
- (6) (iii) परमाणु विस्फोट करने से
- (7) (i) विश्व शांति को विस्तारित करना
- (8) (iii) निर्धनता व भुखमरी को संघर्षहीन बनाने के लिए

**प्रश्न 3. अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न** 1×5=5

- (1) (ii) एंकरबाइट
- (2) (iii) (a) और (b)
- (3) (ii) स्तंभ
- (4) (i) फ्री लांसर पत्रकार
- (5) (ii) विशेष संवाददाता

**प्रश्न 4. पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** 1×5=5

- (1) (ii) आध्यात्मिकता
- (2) (ii) आधुनिकता से अनभिज्ञ होना
- (3) (i) शवों के राख के ढेर से
- (4) (iv) बनारस की आध्यात्मिकता में

(5) (ii) अदृश्य को अर्घ्य देने के लिए

**प्रश्न 5. पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** 1×5=5

- |  |                           |
|--|---------------------------|
| (1) (iv) बदरीनारायण की                             | (2) (ii) उत्सव मनाने वाला |
| (3) (i) साहित्य प्रेमी                             | (4) (iii) वाक चातुर्य     |
| (5) (i) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है |                           |

**प्रश्न 6. पाठ्यपुस्तक पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** 1×7=7

- (1) (iv) हार न मानने की प्रवृत्ति वाला
- (2) (iv) चाहतों का जल जाना
- (3) (i) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है
- (4) (iv) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है
- (5) (i) भरभंडा एक प्रकार का फल, कोइयां कोका-बेली, बरहा-खेतों में पानी देने के लिए छोटी-छोटी नालियाँ बनाई जाती हैं, पुरइन- कमल का फूल
- (6) (ii) आधुनिक सभ्यता के विकास से प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हो रही है
- (7) (ii) पहले जल से परिपूर्ण अब वर्षा की मात्रा कम हो गई है।

**खंड व (वर्णनात्मक प्रश्न)**

**प्रश्न 7. किसी एक विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-** 5×1=5

विषयवस्तु	2 अंक
भाषा-	2 अंक
प्रस्तुति-	1 अंक

**प्रश्न 8. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 60 शब्दों लिखिए-** 3×2=6

- (i) • कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक बनाना
- शब्दों के माध्यम से मन के भीतर चित्र निर्मित करना कविता को जीवंत बनाना

(ii) समय का बंधन

- शब्द
- संवाद
- कथ्य
- शिल्प

(iii) अपने अनुभवों को प्रकट करने तथा दूसरों के अनुभवों को जानने की प्राकृतिक इच्छा की पूर्ति

कल्पना शक्ति का विकास

नैतिक मूल्यों तथा आदर्श जीवन जीने की प्रेरण

**प्रश्न 9. प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-**

**3×2=6**

(i) छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है।

- पढ़ने और सोचने का पूरा अवसर प्राप्त होता है।
- 'प्रिन्ट माध्यम को साक्ष्य के रूप में लंबे समय तक रख सकते हैं
- पढ़ते हुए उस पर सोच-विचार कर सकते हैं

(ii) 'सरल एवं आम बोलचाल की भाषा

- सहज बोध
- 'मानकीकरण
- दृश्यात्मकता

**प्रश्न 10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

**2×2=4**

(i) 'यहाँ (भारत) आने पर सर्वथा अनजान एवं अपरिचित व्यक्ति को भी पूर्ण स्नेह एवं आश्रय प्राप्त होना

- अपरिचितों को भी पूरा आदर, सम्मान तथा प्रेम प्राप्त होना

(ii) माघ महीने में ठंड विरहिणी को अधिक व्यथित करती है।

- हृदय का थर-थर काँपना
- प्रियतम के विरह में अश्रुपात होना
- भीगे वस्त्र तीर की तरह चुभना

(iii) उज्ज्वल पक्ष की ओर संकेत

- राम को वनवास दिलाने में उनका हाथ न होना
- राम को वनवास से वापस लाने के लिए चित्रकूट जाना
- राम को स्वामी एवं स्वयं को सेवक मानना

प्रश्न 11. किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-  $6 \times 1 = 6$

संदर्भ -	1 अंक
प्रसंग -	1 अंक
व्याख्या -	3 अंक
विशेष -	1 अंक

प्रश्न 12. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए-  $2 \times 2 = 4$

(i) 'शेर' प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघुकथा

- शेर व्यवस्था का प्रतीक
- सत्ता तभी तक खामोश रहती है, जब तक सब उसकी आज्ञा का पालन करते रहें
- 'जन साधारण को मूर्ख बनाकर उनका शोषण करने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य
- उद्देश्य लेखक असगर वजाहत ने सुविधाभोगियों, छद्म अहिंसावादियों और सह-अस्तित्ववादियों के ढोंग पर प्रहार
- जन सामान्य को जागरूक करना

(ii) वह व्यक्ति अपने कार्य का पूर्ण ज्ञाता हो गया है।

- अर्थात् धर्म के रहस्यों की पूरी जानकारी।
- धर्म का इम्तहान पास करना।
- 'धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझना चाहिए।

(iii) 'वह सोच रहा था कि मेरे संवाद से ये लोग बहुरिया को अपने यहाँ ले आएँगे।

- बड़ी बहुरिया गाँव की लक्ष्मी हैं और यदि गाँव की लक्ष्मी ही चली जाएगी तो वहाँ क्या रह जाएगा।



- बूढ़ी माता को बहुरिया की दशा बताकर व्यथित नहीं करना चाहता था।
- बड़ी बहुरिया भाई-भाभियों की नौकरी कैसे कर पाएगी?
- भावुक एवं किंकर्तव्यविमूढ़

प्रश्न 13. किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 6×1=6

संदर्भ -	1 अंक
प्रसंग -	1 अंक
व्याख्या -	3 अंक
विशेष -	1 अंक

प्रश्न 14. किसी एक प्रश्न का उत्तर 60 शब्दों में दीजिए- 3×1=3

(i) हार न मानने वाला, दृढ़ निश्चयी, आत्मविश्वासी।

शत-प्रतिशत सफलता के लिए सदैव सजग, सक्रिय, समर्पित।

हार-जीत की भावना से ऊपर उठकर सतत प्रयासरत रहना

(ii) 'बत्तख का माँ के समान ममतामयी और वात्सल्यपूर्ण स्वभाव

- बच्चों की सुरक्षा के प्रति अतिशय सजगता
- माँ का निःस्वार्थ प्रेम
- समर्पण की भावना

शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली

अभ्यास प्रश्न पत्र

कक्षा XII ( 2023-24 )

हिंदी ( ऐच्छिक)(002)

अवधि: 3 घंटे

अधिकतम अंक- 80

सामान्य निर्देश:-

- इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं। खंड 'अ' में वस्तुपरक / बहुविकल्पी और खंड 'ब' में वस्तुनिष्ठ / वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।
- प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 14 है और सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
- खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के साथ दिए गए उचित विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
- यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

खंड 'अ' ( वस्तुपरक प्रश्न )

अपठित बोध

1×10=10

**प्रश्न 1** निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता रही है 'अनेकता में एकता'। यद्यपि ऊपरी तौर पर भारत के विभिन्न प्रदेशों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है, तथापि अपने आचार विचार की एकता के कारण यहाँ सामाजिक संस्कृति का रूप देखने को मिलता है। यही कारण है कि विभिन्नताओं के होते हुए भी भारत सदियों से एक भौगोलिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इकाई के रूप में विश्व में अपना

स्थान बनाए हुए है। इसलिए भारत में अनेकता में एकता के सदैव दर्शन होते हैं। भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों का ही मिश्रण रहा है। अतः इसकी प्राचीनता, इसकी गतिशीलता, इसका लचीलापन, इसकी ग्रहणशीलता, इसका सामाजिक स्वरूप और अनेकता में निहित एकता ही इसकी प्रमुख विशेषता है। इस विशेषता के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। वास्तव में संस्कृति का निर्माण एक लम्बी परम्परा के बाद होता है। संस्कृति वस्तुतः विचार और आचरण के नियम और मूल्य हैं, जिन्हें कोई समाज अपने अतीत से प्राप्त करता है। इसलिए कहा जा सकता है कि इसे हम अपने अतीत से विरासत के रूप में प्राप्त करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली का नाम है। यह एक सामाजिक विरासत है जो परम्परा से चली आती रही है। प्रायः सभ्यता और संस्कृति को एक ही मान लिया जाता है, परन्तु इसमें भेद है। सभ्यता में मनुष्य के जीवन का भौतिक पक्ष प्रधान होता है अर्थात् सभ्यता का अनुमान सुख-सुविधाओं से लगाया जा सकता है। इसके विपरीत संस्कृति में आचार और विचार पक्ष की प्रधानता होती है। इस प्रकार 'सभ्यता को शरीर माना जा सकता है और 'संस्कृति' को आत्मा, इसलिए इस दोनों को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। वास्तव में दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

- (i) गद्यांश में सामाजिक विरासत किसे कहा गया है ?
- |                 |                   |
|-----------------|-------------------|
| (क) संस्कृति को | (ख) भौतिक पक्ष को |
| (ग) विचारों को  | (घ) आचरण को       |
- (ii) भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता किसे माना गया है?
- |                       |                            |
|-----------------------|----------------------------|
| (क) सामाजिक इतिहास को | (ख) अनेकता में एकता को     |
| (ग) प्राचीन इतिहास को | (घ) सभ्यता एवं संस्कृति को |
- (iii) भारत में सामाजिक संस्कृति का रूप दिखाई पड़ने का क्या कारण है ?
- |               |               |
|---------------|---------------|
| (क) धार्मिकता | (ख) विभिन्नता |
| (ग) एकता      | (घ) विविधता   |

- (iv) भारतीय संस्कृति किसका मिश्रण है?
- (क) प्राचीनता का  
(ख) आध्यात्मिकता और भौतिकता का  
(ग) आध्यात्मिकता का (घ) भौतिकता का
- (v) गद्यांश के अनुसार भारतीय संस्कृति की विशिष्टता नहीं है-
- (क) गतिशीलता (ख) ग्रहणशीलता  
(ग) स्थिरता (घ) लचीलापन
- (vi) सभ्यता का अनुमान किससे लगाया जा सकता है?
- (क) भीतरी उन्नति से (ख) परोपकारिता से  
(ग) व्यावहारिकता से (घ) भौतिक सुख-सुविधाओं से
- (vii) आचार और विचार पक्ष की प्रधानता किस में होती है ?
- (क) इतिहास में (ख) भौतिकता में  
(ग) संस्कृति में (घ) सभ्यता में
- (viii) प्रस्तुत गद्यांश में एक दूसरे का पूरक किसे बताया गया है?
- (क) शरीर और आत्मा को (ख) प्राचीनता और आधुनिकता का  
(ग) सभ्यता और संस्कृति को (घ) अनेकता और एकता को
- (ix) किस विशेषता के कारण भारतीय संस्कृति विश्व में अपना विशेष स्थान रखती है?
- (क) सामाजिकता (ख) आधुनिकता  
(ग) भौतिकता (घ) अनेकता में एकता
- (x) अतीत से विरासत के रूप में हम किसे प्राप्त करते हैं?
- (क) संस्कृति को (ख) अनेकता को  
(ग) विचार को (घ) जीवन को

प्रश्न 2. दिए गए काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक  
उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 1×8=8

मैंने गढ़े

ताकत और उत्साह से

भरे-भरे

कुछ शब्द

जिन्हें छीन लिया मठाधीशों ने

दे दिया उन्हें धर्म का झंडा

उन्मादी हो गए

मेरे शब्द

तलवार लेकर

मिटाने लगे

अपना ही वजूद

फिर रचे मैंने

इंसानियत से लबरेज

ढेर सारे शब्द

अबकी उन्हें अगवा कर लिया

सफेदपोश लुटेरों ने

और दबा दिया उन्हें

कुर्सी के पाये तले

असहनीय दर्द से चीख रहे हैं

मेरे शब्द और वे

कर रहे हैं अट्टहास

अब मैं गढूँगी  
बोऊँगी उन्हें  
निराई गुड़ाई और  
खाद-पानी से  
लहलहा उठेगी फसल  
तब कोई मठाधीश  
कोई लुटेरा  
नहीं छीन पाएगा उन्हें  
छीनने की कोशिश में भी  
गिर ही जाएँगे कुछ दाने  
और समय आने पर  
फिर उगेंगे वे  
एक बार  
दो बार  
बार-बार  
लगातार उगेंगे  
मेरे शब्द

- (i) मठाधीशों ने उत्साह भरे शब्दों को क्यों छीना ?  
(क) धार्मिक उन्माद जगाने के लिए (ख) धर्म से दूर करने के लिए  
(ग) धर्म का अर्थ स्पष्ट करने के लिए (घ) उत्साह जगाने के लिए
- (ii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कर बताइए कि इनमें से कौन-सा / कौन-से कथन सही है/हैं?

- (i) तलवार शब्द आत्मघात की ओर संकेत करता है।  
(ii) तलवार शब्द सुरक्षा की ओर संकेत करता है।  
(iii) तलवार शब्द निष्क्रिय की ओर संकेत करता है।  
(क) केवल II (ख) केवल I  
(ग) केवल III (घ) I और III
- (iii) कवयित्री किस उम्मीद से शब्दों को बो रही हैं?  
(क) सही अर्थ प्राप्त करने की (ख) अलग अर्थ प्राप्त करने की  
(ग) विकल्प (क) और (ख) (घ) विपरीत अर्थ प्राप्त करने की
- (iv) पंक्तियों में 'वे' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?  
(क) राजा के लिए (ख) जनता के लिए  
(ग) नेताओं के लिए (घ) किसान के लिए
- (v) कवयित्री बाधाओं को दूर करने हेतु क्या बनने के लिए कहती है?  
(क) सक्रिय (ख) कालजयी  
(ग) साधारण मनुष्य (घ) कालकूट
- (vi) इंसानियत से भरे ढेर सारे शब्दों को किसने अगवा कर लिया है?  
(क) कवयित्री ने (ख) नेताओं ने  
(ग) किसानों ने (घ) मजदूरों ने
- (vii) मजदूरों ने प्रस्तुत काव्यांश में 'कुर्सी' किसका प्रतीक है?  
(क) लोकतंत्र का (ख) सत्ता का  
(ग) प्रजा का (घ) सफेदपोश लोगों का
- (viii) प्रस्तुत काव्यांश का मूल संदेश है-  
(क) साहित्य के प्रति विद्रोह (ख) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता  
(ग) समानता का अधिकार (घ) प्रजातंत्र का विरोध

### अभिव्यक्ति और माध्यम

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-  
1×5=5

- (i) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
- (i) विशेष लेखन से समाचार-पत्रों में विविधता आती है और उनका कलेवर बढ़ता है।  
(ii) विशेष लेखन मनोरंजन रहित एकांगी दृष्टिकोण वाला होता है।  
(iii) पाठकों की जिज्ञासा शांत करने के लिए विशेष लेखन किया जाता है।  
इन कथनों में कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?
- (क) केवल (i) (ख) केवल (ii)  
(ग) (i) और (iii) दोनों (घ) (i), (ii) तथा (iii)
- (ii) उचित मिलान को दर्शाने वाले विकल्प का चयन कीजिए-
- | अ                                | ब                  |
|----------------------------------|--------------------|
| (i) सिनेमा                       | (i) दृश्य माध्यम   |
| (ii) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना | (ii) मार्कोनी      |
| (iii) रेडियो का आविष्कार         | (iii) 1936         |
| (iv) समाचार पत्र                 | (iv) प्रिंट माध्यम |
- (क) (i)-(i), (ii)-(ii), (iii)-(iii), (iv)-(iv)  
(ख) (i)-(iv), (ii)-(i), (iii)-(ii), (iv)-(iii)  
(ग) (i)-(i), (ii)-(iii), (iii)-(ii), (iv)-(iv)  
(घ) (i)-(ii), (ii)-(iii), (iii)-(ii), (iv)-(i)
- (iii) संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा उनके ज्ञान एवं रुचि के आधार पर किया जाता है, मीडिया की भाषा में इसे क्या कहते हैं?



- (क) सेक्शन (ख) बीट  
 (ग) चैम्बर (घ) पिरामिड
- (iv) कहानी का केन्द्रबिन्दु क्या होता है?  
 (क) पात्र (ख) देशकाल  
 (ग) कथानक (घ) संवाद
- (iv) मनोरंजक ढंग से लिखा गया प्रासंगिक लेख अथवा नवीन घटनाओं का शब्द-चित्र होता है-  
 (क) समाचार (ख) फीचर  
 (ग) संपादकीय (घ) रिपोर्टिंग

#### पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1×5=5

यह दीप अकेला स्नेह भरा  
 है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।  
 यह जन है गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गाएगा?  
 पनडुब्बा ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लाएगा?  
 यह समिधा ऐसी आग हठीला बिरला सुलगाएगा।  
 यह अद्वितीय यह मेरा यह मैं स्वयं विसर्जित -  
 यह दीप, अकेला, स्नेह भरा  
 है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

- (i) प्रस्तुत काव्यांश में दीपक किसका प्रतीक है?  
 (क) समष्टि का (ख) समाज का  
 (ग) व्यष्टि का (घ) संसृति का

- (ii) व्यक्ति की शक्ति किसके साथ बढ़ सकती है?
- (क) अकेले रहकर (ख) समाज से जुड़कर  
(ग) समाज का त्याग कर (घ) सत्ता के साथ रहकर
- (iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
- (i) यद्यपि दीपक स्नेह और गर्व में मदमाता होकर झूम रहा है, पर उसकी व्यक्तिगत सत्ता का कोई महत्व नहीं है।  
(ii) व्यष्टि जब समष्टि का अंग बनता है, समाज के लिए कुछ करता है तभी उसको महता प्राप्त होती है।  
(iii) कवि ने दीप के माध्यम से व्यक्ति और ईश्वर के सम्बन्धों को व्यंजित किया है।
- इन कथनों में कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?
- (क) केवल (i) (ख) केवल (ii)  
(ग) (i) और (ii) (घ) (i), (ii) तथा (iii)
- (iv) व्यक्ति की तुलना समिधा से क्यों की गई है।
- (क) क्योंकि व्यक्ति समिधा की भांति अन्य लकड़ियों की अपेक्षा अद्वितीय है  
(ख) क्योंकि समिधा हवन रुपी अग्नि में जलकर प्रकाश फैलाती है।  
(ग) क्योंकि व्यक्ति समिधा की भांति नश्वर है।  
(घ) क्योंकि व्यक्ति समाज के लिए अनुपयोगी है।
- (v) समाज की गहराइयों में डुबकी लगाकर मोतीरूपी भावनाओं को बाहर का काम कौन करता है?
- (क) गोताखोर (ख) व्यक्ति  
(ग) समाज (घ) पनडुब्बा

प्रश्न 5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा निर्देशानुसार उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1×5=5

एक मिल मालिक के दिमाग में अजीब अजीब ख्याल आया करते थे जैसे सारा संसार मिल हो जाएगा, सारे लोग मजदूर और वह उनका मालिक या मिल में और चीजों की तरह आदमी भी बनने लगेंगे, तब मजदूरी भी नहीं देनी पड़ेगी, वगैरा वगैरा। एक दिन उसके दिमाग में ख्याल आया कि अगर मजदूरों के चार हाथ हो तो काम कितनी तेजी से हो और मुनाफा कितना ज्यादा। लेकिन यह काम करेगा कौन? उसने सोचा, वैज्ञानिक करेंगे, ये हैं किस मर्ज की दवा? उसने यह काम करने के लिए बड़े वैज्ञानिकों को मोटी तनख्वाहों पर नौकर रखा और वे नौकर हो गए। कई साल तक शोध और प्रयोग करने के बाद वैज्ञानिकों ने कहा ऐसा असम्भव कि आदमी के चार हाथ हो जाएँ।

- (i) मिल मालिक के दिमाग में मजदूरों के चार हाथ लगवाने का ख्याल क्यों आया?
- (क) कम समय में अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से  
(ख) मजदूरों का कार्य सरल करने के उद्देश्य से  
(ग) वैज्ञानिकों को कोई न कोई काम देने के लिए  
(घ) मिल के अजायबघर में रखवाने के लिए
- (ii) मिल मालिक के ख्याल पर किसने पानी फेर दिया?
- (क) मजदूरों ने (ख) वैज्ञानिकों ने  
(ग) नौकरों ने (घ) उपर्युक्त सभी ने
- (iii) मिल मालिक द्वारा मजदूरों के चार हाथ लगवाने के क्या उद्देश्य था?
- (क) काम को शीघ्रता से करवाना (ख) उत्पादन बढ़ाना  
(ग) मजदूरों को ताकतवर बनाना (घ) क व ख दोनों
- (iv) वैज्ञानिकों को नौकर किसने बनाया?
- (क) शोषितों ने (ख) पूंजीपति ने  
(ग) विज्ञान ने (घ) क और ख दोनों

- (v) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन (A) : कई साल तक शोध और प्रयोग करने के बाद वैज्ञानिकों ने कहा ऐसा असम्भव कि आदमी के चार हाथ हो जाएँ।

कारण (R) : वैज्ञानिक चापलूस थे और वे सिर्फ मिल मालिक की जी हजूरी किया करते थे।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

#### पाठ्यपुस्तक अंतराल भाग-2

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 1×7=7

- (i) मितुआ के प्रश्न- 'दादा, अब हम कहाँ रहेंगे? के उत्तर में सूरदास का कथन 'दूसरा घर बनाएँगे।' सूरदास की किस अभिवृत्ति को दर्शाता है?
- (क) निष्ठुर स्वभाव (ख) दृढ़ आत्म विश्वास  
(ग) पलायन स्वभाव (घ) कर्तव्यविमूढ़ता
- (ii) 'सूरदास विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा' इसका क्या कारण था?
- (क) झोपड़ी की राख को साफ करना चाहता था।  
(ख) राख से खेलना चाहता था।  
(ग) जीवन मर्म समझने के कारण उसका दुःख समाप्त हो गया था।  
(घ) सूरदास धन के घमंड से भर गया था।

- (iii) कथन (A) : यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।  
कारण (R) : सूरदास ने भैरों की झोंपड़ी में आग लगा दी और उसके अरमानों पर पानी फेर दिया।
- (क) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या नहीं है।  
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ही गलत हैं।  
(ग) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।  
(घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) सही व्याख्या नहीं है।
- (iv) कथन (A) : फूल केवल गंध ही नहीं देते, दवा भी करते हैं।  
कारण (R) : सुगंधित फूलों का उपयोग अनेक प्रकार की बीमारियों को ठीक करने की दवा बनाने के लिए किया जाता है।
- (क) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) सही व्याख्या नहीं है।  
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ही गलत हैं।  
(ग) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।  
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है।
- (v) जिसको आज विकास की औद्योगिक सभ्यता कहा जाता है, वह वास्तव में विकास की नहीं ..... है।
- (क) उजाड़ की सभ्यता  
(ख) उजाड़ की अपसभ्यता  
(ग) उजाड़ की उपसभ्यता  
(घ) विनाश की सभ्यता
- (vi) निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए-
- (i) सिमरोल-चोरल नदी  
(ii) केवडेश्वर-शिप्रा नदी  
(iii) जानापाव पर्वत-चम्बल नदी  
(iv) विन्ध्य-यमुना नदी
- इन युगों में से कौन से सही सुमेलित हैं?
- (क) केवल (i)  
(ख) (i) और (iii) दोनों  
(ग) केवल (iv)  
(घ) (i), (ii) और (iii)

(vii) 'बिस्कोहर की माटी' की विधा है-

(क) जीवनी

(ख) संस्मरण

(ग) रेखाचित्र

(घ) आत्मकथा

**खंड 'व' (वर्णनात्मक प्रश्न)**

प्रश्न 7. निम्न में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-  $5 \times 1 = 5$

(i) सोशल मीडिया के दुष्परिणाम

(ii) जब मेरी ट्रेन छूट गई

(iii) मधुर वचन हैं औषधि, कटुक वचन हैं तीर

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-  $3 \times 2 = 6$

(i) 'संवाद नाटक के प्राण होते हैं?' सिद्ध कीजिए।

(ii) 'कहानी साहित्य की एक ऐसी विधा है जो अपने ही सीमित क्षेत्र में पूर्ण, स्वतंत्र एवं प्रभावशाली है। इस कथन के आलोक में कहानी की विशेषताओं को स्पष्ट करें।

(iii) कविता हमें जीने की कला सिखाती है। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-  $3 \times 2 = 6$

(i) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर की स्पष्ट करें।

(ii) फीचर लेखन की आवश्यकता क्यों होती है?

प्रश्न 10. निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-  $2 \times 2 = 4$

(i) 'कार्नेलिया का गीत' कविता में कवि ने भारत भूमि के प्राकृतिक सौंदर्य को किस प्रकार व्यक्त किया है?

(ii) विद्यापति के पद 'सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआए' के द्वारा नायिका क्या कहना चाहती है?

(iii) 'वसन्त आया कविता में कवि की चिन्ता क्या है?

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

6×1=6

तोड़ो तोड़ो तोड़ो  
ये ऊसर बंजर तोड़ो  
ये चरती परती तोड़ो  
सब खेत बनाकर छोड़ो  
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को  
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?  
गोड़ो गोड़ो गोड़ो

अथवा

देखा विवाह आमूल नवल,  
तुझ पर शुभ पड़ा कलश का जल।  
देखती मुझे तू हंसी मंद,  
होठों में बिजली फँसी स्पंद  
उर में भर झूली छवि सुन्दर  
प्रिय की अशब्द शृंगार-मुखर  
तू खुली एक उच्छ्वास संग,  
विश्वास स्तब्ध बंध अंग-अंग  
नत नयनों से आलोक उतर  
काँपा अधरों पर थर-थर-थरा  
देखा मैंने, वह मूर्ति धीति  
मेरे बसंत की प्रथम गीति

प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-  $2 \times 2 = 4$

(i) 'संवाद पहुँचाने का काम सभी नहीं कर सकते। आदमी भगवान के घर से संवदिया बनकर आता है।' क्या आप कहानीकार के इस कथन से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

(ii) "जब आदमी उजड़ेगा तो पेड़ हरे-भरे रहकर क्या करेंगे? इसी कारण आम के पेड़ों पर न तो बौर आता है, न फल लगते हैं। 'इस कथन के आलोक में मनुष्य और प्रकृति के संबंधों पर प्रकाश डालिए।

(iii) 'मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है।' कथन के आधार पर पारों की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

$6 \times 1 = 6$

धर्म के दस लक्षण वह सुना गया, नौ रसों के उदाहरण दे गया। पानी के चार डिग्री के नीचे शीतता में फँस जाने के कारण और उससे मछलियों की प्राणरक्षा को समझा गया, चंद्रग्रहण का वैज्ञानिक समाधान दे गया, अभाव को पदार्थ मानने न मानने का शास्त्रार्थ कह गया और इंग्लैंड के राजा आठवें हेनरी की स्त्रियों के नाम और पेशवाओं का कुर्सीनामा सुना गया। यह पूछा गया कि तू क्या करेगा बालक ने सीखा सिखाया उत्तर दिया कि मैं यावज्जन्म लोकसेवा करूंगा। सभा वाह-वाह करती सुन रही थी, पिता का हृदय उल्लास से भर रहा था।

**अथवा**

बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है और मूर्ख के मस्तिष्क से भी अधिक सूने गिरि कांतार में भी



ऐसा मस्त बना है कि ईर्ष्या होती है। कितनी कठिन जीवनी-शक्ति है। प्राण ही प्राण को पुलकित करता है, जीवनी-शक्ति ही जीवनी शक्ति को प्रेरणा देती है।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- 3×1=3

(i) 'संगीत, गंध, बच्चे- बिसनाथ के लिए सबसे बड़े सेतु हैं, काल, इतिहास को पार करने के।' प्रस्तुत कथन के आधार पर बताएँ कि गंध के संबंध से बिसनाथ किस तरह जुड़ा हुआ है?'

(ii) नदी का सदानीरा रहना जीवन के स्रोत का सदा जीवित रहना है। इस कथन से मानव सभ्यता के लिए नदियों के महत्व पर क्या प्रकाश पड़ता है?

शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली

उत्तर संकेत अभ्यास प्रश्न पत्र

कक्षा XII ( 2023-24 )

हिंदी ( ऐच्छिक ) ( 002 )

अधिकतम अंक- 80

अवधि: 3 घंटे

सामान्य निर्देश:-

1. इस अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। इस प्रश्नपत्र में वस्तुपरक एवं वर्णनात्मक प्रश्न हैं। अतः अंक योजना में दिए गए वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
2. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
3. समान त्रुटियों के लिए स्थान-स्थान पर अंक न काटे जाएँ।
4. गुणवत्तापूर्ण, सटीक उत्तर पर शत-प्रतिशत अंक देने में किसी प्रकार का संकोच न किया जाए।
5. मूल्यांकन में 0 से 100 प्रतिशत अंकों का पैमाना स्वीकार्य है।
6. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक योजना के निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड 'अ' ( वस्तुपरक प्रश्न )

प्रश्न 1.अपठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न 1×10=10

- |                          |                                     |
|--------------------------|-------------------------------------|
| (i) (क) संस्कृति को      | (ii) (ख) अनेकता में एकता को         |
| (iii) (ग) एकता           | (iv) (ख) आध्यात्मिकता और भौतिकता का |
| (v) (ग) स्थिरता          | (vi) (घ) भौतिक सुख-सुविधाओं से      |
| (vii) (ग) संस्कृति में   | (viii) (ग) सभ्यता और संस्कृति को    |
| (ix) (घ) अनेकता में एकता | (x) (क) संस्कृति को                 |

- प्रश्न 2. अपठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** **1×8=8**
- (i) (क) धार्मिक उन्माद जगाने के लिए (ii) (ख) केवल 1  
 (iii) (क) सही अर्थ प्राप्त करने की (iv) (ग) नेताओं के लिए  
 (v) (क) सक्रिय (vi) (ख) नेताओं ने  
 (vii) (ख) सत्ता का (viii) (ख) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- प्रश्न 3. अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** **1×5=5**
- (i) (ग) (i) और (iii) दोनों  
 (ii) (ग) (i)-(i), (ii)-(iii), (iii)-(ii), (iv)-(iv)  
 (iii) (ख) बीट (iv) (ग) कथानक  
 (v) (ख) फीचर
- प्रश्न 4. पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** **1×5=5**
- (i) (ग) व्यष्टि का (ii) (ख) समाज से जुड़कर  
 (iii) (ख) केवल (ii)  
 (iv) (क) क्योंकि व्यक्ति समिधा की भांति अन्य लकड़ियों की अपेक्षा अद्वितीय है  
 (v) (अ) (ख) व्यक्ति
- प्रश्न 5. पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न** **1×5=5**
- (i) (क) कम समय में अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से  
 (ii) (ख) वैज्ञानिकों ने (iii) (घ) क व ख दोनों  
 (iv) (ख) पूंजीपति ने  
 (v) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

प्रश्न 6. पूरक पाठ्यपुस्तक अंतराल भाग 2 पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

1×7=7

- (i) (ख) दृढ़ आत्म विश्वास
- (ii) (ग) जीवन मर्म समझने के कारण उसका दुःख समाप्त हो गया था।
- (iii) (ग) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।
- (iv) (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है।
- (v) (ख) उजाड़ की अपसभ्यता
- (vi) (घ) (i), (ii) और (iii)
- (vii) (घ) आत्मकथा

खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)

प्रश्न 7. किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन- 5×1=5

- |             |       |
|-------------|-------|
| विषयवस्तु - | 2 अंक |
| भाषा-       | 1 अंक |
| प्रस्तुति - | 2 अंक |

प्रश्न 8. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में- 3×2=6

- (i) नाटक का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व संवाद है। संवादों के बिना नाटकों की गतिशीलता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संवादों से ही नाटक के चरित्रों का विकास होता है। संवाद ही कव्य को गतिशील बनाते हैं। ये जितने सहज होंगे उतना ही दर्शकों के मर्म को छुएँगे। अतः नाटक के संवादों को परिवेश के अनुकूल ही सहज-स्वाभाविक होना चाहिए तभी वे दर्शकों को बाँधने में सफल होते हैं और नाटक की सार्थकता भी तभी सिद्ध होती है।
- (ii) कहानी की यही विशेषता है कि इसमें मानव के जीवन की किसी प्रमुख घटना का वर्णन होता है। कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी अंग, किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है। उसका चरित्र, उसकी शैली तथा कथा विन्यास सब उसी भाव की पुष्टि करते हैं।

(iii) कविता हमें अपनी ओर खींचती तो है ही, पर कभी-कभी जटिल और अबूझ-सी भी लगती है, जिसे समझ पाना भी कठिन हो जाता है। अतः उसे बार-बार सुनने पर उसकी अनुगूँज हमारे अन्तर्मन को सुंदर बनाकर जीने की कला सिखाती है।

**प्रश्न 9. प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में -**

**3×2=6**

(i) बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को उस क्षेत्र के विषय में जानकारी और रुचि का होना आवश्यक है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग के अंतर्गत सामान्य समाचारों की अपेक्षा विशेष क्षेत्र या विशेष विषय से जुड़ी घटनाओं और समस्याओं का बहुत ही बारीकी से विश्लेषण करके प्रस्तुत करना होता है।

(ii) फीचर पाठक की चेतना को नहीं जगाता बल्कि वह उसकी भावनाओं और संवेदनाओं को उत्प्रेरित करता है। यह यथार्थ की वैयक्तिक अनुभूति है। इसमें लेखक पाठक को अपने अनुभव से समाज के सत्य का भावनात्मक रूप में परिचय कराता है। इसमें समाचार दृश्यात्मक रूप में पाठक के सामने उभरकर आ जाता है। यह सूचनाओं को सम्प्रेषित करने का ऐसा साहित्यिक रूप है जो भाव और कल्पना के रस से आप्त होकर पाठक को भी इसमें भिगो देता है।

**प्रश्न 10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर-**

**2×2=4**

(i) प्रस्तुत गीत में प्रसाद जी ने भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक महत्त्व का वर्णन किया है। प्रातः काल सूर्य की प्रथम किरणें जब भारत की भूमि पर पड़ती हैं तब प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। उस समय प्रकृति मधुमय दिखाई देती है। यहाँ दूर देशों से आने वाले व्यक्तियों को आश्रय मिलता है। यह देश सभी की शरणस्थली है। यहाँ के मनुष्य दयावान और करुणावान हैं तथा सभी के प्रति सहानुभूति रखते हैं। यहाँ के लोग सभी को मुख पहुँचाने वाले हैं। भारत में विविध सभ्यता-संस्कृति, रंग-रूप, आचार-विचार एवं धर्म वाले प्राणियों के साथ समानता का.. व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार कवि ने इस कविता में भारत की अनेक विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

(ii) विरहिणी नायिका प्रिय (श्रीकृष्ण) के परदेश (मथुरा) चले जाने से अत्यन्त व्याकुल है, उसे चैन नहीं पड़ता। वह अपनी दारुण वेदना सखी से कहती है और यह भी कहती है कि दूसरा व्यक्ति उसके दुःख को तभी समझ सकता है। जब वह इस पीड़ा से स्वयं गुजरा हो। अर्थात् रजाके पांव न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराईश मेरे (नायिका के) विरह दुःख को कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है अन्यथा संसार के लोगों की तो यह सामान्य प्रवृत्ति है कि वे दूसरे के दारुण दुःख की कथा पर विश्वास नहीं करते।

(iii) वसन्त आयाश कविता में कवि की प्रमुख चिन्ता यह है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। वसन्त ऋतु का आना अब प्रकृति निरीक्षण से नहीं कलेंडर से जाना जाता है। पत्ते झड़ते हैं, फूल खिलते हैं, आम के वृक्ष बौर से लद जाते हैं, कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। पर हमें वसन्तागमन का बोध इनसे नहीं अपितु कलेंडर से और वसन्त पंचमी की छुट्टी से होता है। कवि ने आधुनिक मानव की जीवन-शैली पर करारा व्यंग्य किया है। कविताएँ पढ़ने से हमें पता चलता है कि वसन्त में ढाक के जंगल लाल फूलों से भर जाते हैं और ऐसा लगता है कि जंगल में आग लग गई है। प्रकृति से दूर होते जाना मानव के लिए अच्छा नहीं है कवि यही बात इस कविता के माध्यम से कहना चाहता है।

प्रश्न 11. किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या - 6×1=6

संदर्भ-	1 अंक
प्रसंग-	1 अंक
व्याख्या-	3 अंक
विशेष-	1 अंक

प्रश्न 12. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर- 2×2=4

(i) संवाद पहुँचाने का काम प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। अवसर पढ़ने पर तथा इसकी शिक्षा मिलने पर हर व्यक्ति कुशल संवादिया हो सकता है। भगवान किसी

को संवदिया बनाकर नहीं भेजता। संसार में जन्म लेने के बाद प्रत्येक व्यक्ति वातावरण और परिस्थितियों से प्रभावित होता है। वह बहुत से काम अपने अनुभव से भी करता है। संवदिया का कार्य भी एक व्यवसाय है। आज प्रत्येक व्यवसाय का प्रशिक्षण दिया जाता है। संवाद पहुँचाने का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया जा सकता है और इस व्यवसाय का कौशल अर्जित किया जा सकता है। अतः इस कथन से सहमत होने का प्रश्न ही नहीं है।

(ii) लेखक ने स्पष्ट किया है कि औद्योगिक विकास के दौर में आज प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट होता जा रहा है। औद्योगीकरण की इस आंधी में केवल मनुष्य ही नहीं उजड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृति और आवास स्थल भी सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं तथा वनस्पति भी नष्ट हो जाती है। अतः विकास और पर्यावरण सुरक्षा के बीच संतुलन होना चाहिए।

(iii) गंगा घाट पर लड़की (पारो) की भेंट लड़के (संभव) से हुई थी और पुजारी ने उन्हें पास खड़ा देखकर भ्रम से पति-पत्नी समझकर फलने-फूलने का आशीर्ष भी दिया था। लड़की छिटककर दूर खड़ी हो गई पर उन दोनों के मन में प्रेम का अंकुरण हो गया था। आज मसा देवी के दर्शन करने के बाद लड़की ने मनोकामना पूरी होने हेतु कलावे की जो गाँठ बाँधी थी लगता था उस गाँठ का असर हुआ और संभव से उसकी फिर मुलाकात हो गई। वह सोचने लगी मनोकामना की यह गाँठ भी कैसी अद्भुत है, अनूठी है। इधर बाँधो तो उधर लग जाती है। अर्थात् इधर गाँठ बाँधो उधर मनोकामन हो जाती है। आज ही उसने गाँठ बाँधी थी और संभव आज उसे फिर दिख गया तथा उससे परिचय भी हुआ। जब मन्नु ने अपनी बुआ का नाम बताया पाए संभव ने अपना नाम संभव देवदास बताकर यह संकेत कर दिया कि वह पारो का देवदास है। शरतचन्द्र के उपन्यास शदेवदास की नायिका पारो है और नायक देवदास है। वे दोनों एक-दूसरे से गहरा प्रेम करते हैं। पारो के मन में भी संभव के प्रति प्रेम उत्पन्न हो चुका है है।

प्रश्न 13. किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या-

6×1=6

संदर्भ-	1 अंक
प्रसंग-	1 अंक
व्याख्या-	3 अंक
विशेष-	1 अंक

प्रश्न 14. किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में-

3×1=3

(i) बिसनाथ का मानना है कि समय और इतिहास को पार करना हो, समय के आर-पार झाँकना हो तो संगीत, गंध और बच्चे इसमें सहायक होते हैं। काल और इतिहास के दोनों तटों को जोड़ने में वे नदी के पुल का काम करते हैं। बड़ा होने पर बिसनाथ को अपना बचपन याद आता है, तो उसको यह भी याद आता है कि उसको अपनी माँ के पेट की गंध, दूध की गंध जैसी लगती थी। पिता के कुर्ते को वह सूँघता था तो उसके पसीने की बू उसको अच्छी लगती थी। नारी शरीर से उसको बिस्कोहर की फसलों और वनस्पतियों की गंध आती थी। तालाब की चिकनी मिट्टी की गंध, गेहूँ, खीरा, भुट्टा या पुआल की गंध भी उसे प्रिय थी। फूले हुए नीम की गंध को नारी शरीर या श्रृंगार से कभी नहीं जोड़ा जा सकता। वह गंध मादक, गंभीर और असीमित की ओर ले जानेवाली होती है। बचपन के बाद इतना समय बीत जाने के बाद आज बिसनाथ गंध के पुल पर होकर पुनः अपने बचपन वाले तट पर लीट सकता है। गंध के माध्यम से वह आज भी अपने माता-पिता तथा उस आकर्षक नारी से जुड़ा है।

(ii) 'नदी का सदानिरा रहना' का आशय है कि नदी में कभी भी पानी का अभाव न हो, वह सदा पानी से भरी पूरी रहे, जल उसमें हमेशा बहता रहे। नदी पानी से ही नदी बनती है, यदि पानी ही नहीं होगा तो नदी का क्या होगा ? सूखी नदी किस काम की ? संसार की अनेक प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही जन्मी तथा विकसित हुई हैं। जल को जीवन कहते हैं। सृष्टि का पहला जीव जल



में ही जन्मा था। मनुष्य ने जब से कृषि का व्यवसाय अपनाया, तभी से उसने एक स्थान पर रहना शुरू किया। इस प्रकार गाँव बने, नगर बने और सभ्यता पनपी वर्तमान सभ्यता उद्योगों की सभ्यता है। उद्योग भी नदियों के तट पर स्थापित है। नदियों के जल से ही फसलें फलती-फूलती हैं। नदियों का जल जीवन के लिए आवश्यक है। जल से ही यह पृथ्वी शस्यश्यामला कहलाती है। वनों, उद्यानों तथा फसलों को जल चाहिए, तभी वे जीवधारियों के लिए भोजन दे पाते हैं। अन्न, फल, सब्जी, मांस और मछली आहार के साधन हैं। इन सबका अस्तित्व ही जल से है। मनुष्य ही नहीं सभी जीवों के लिए जल जीवन देने वाला है। आज मनुष्य की महत्वाकांक्षा के कारण पृथ्वी का वातावरण प्रदूषित हो रहा है। इससे नदियों में जल सूख रहा है। अनेक नदियाँ सूख चुकी हैं अथवा गन्दे पानी का नाला बन चुकी हैं। यदि धरती पर जीवन की रक्षा करनी है तो नदियों को सदा जल से पूर्ण रखना ही होगा। तभी मनुष्य बचेगा और तभी उसकी सभ्यता बचेगी।

शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

अभ्यास प्रश्न पत्र

कक्षा XII ( 2023-24 )

हिंदी ( ऐच्छिक ) ( 002 )

अधिकतम अंक- 80

अवधि: 3 घंटे

सामान्य निर्देश:-

- इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं। खंड 'अ' में वस्तुपरक / बहुविकल्पी और खंड 'ब' में वस्तुनिष्ठ / वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।
- प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 14 है और सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के साथ दिए गए उचित विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

खंड 'अ' ( वस्तुपरक प्रश्न )

अपठित बोध

1×10=10

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-

सिनेमा जगत के अनेक नायक-नायिकाओं, गीतकारों, कहानीकारों और निर्देशकों को हिन्दी के माध्यम से पहचान मिली है। यही कारण है कि गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी को ओर आए हैं। समय और समय के उभरते सच को परदे पर पूरी अर्थवत्ता में धारण करने वाले ये लोग दिखावे के लिए भले ही अंग्रेजी के आग्रही हों लेकिन बुनियादी और जमीनी हकीकत यही है कि इनकी पूँजी, इनकी प्रतिष्ठा की एकमात्र निमित्त हिंदी ही है। लाखों-करोड़ों दिलों की धड़कनों

पर राज करने वाले ये सितारे हिंदी फिल्मों और भाषा के सबसे बड़े प्रतिनिधि हैं। छोटे परदे (टी.वी.) ने आम जनता के घरों में अपना मुकाम बनाया तो लगा हिंदी आम भारतीय की जीवन-शैली बन गई। हमारे आदिग्रंथों- रामायण और महाभारत को जब हिंदी में प्रस्तुत किया गया तो सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया। 'बुनियाद' और 'हम लोग' से शुरू हुआ सोप ऑपेरा का दौर हो या सास-बहू धारावाहिकों का, ये सभी हिंदी की रचनात्मकता और उर्वरता के प्रमाण हैं। 'कौन बनेगा करोड़पति' से करोड़पति चाहे जो बने हों, पर सदी के महानायक की हिंदी हर दिल की धड़कन की भाषा बन गई। सुर और संगीत की प्रतियोगिता में कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र असम, सिक्किम जैसे गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों ने हिंदी गीतों के माध्यम से पहचान बनाई। ज्ञान गंभीर डिस्कवरी चैनल, हो या बच्चों को रिझाने लुभाने वाला 'टॉम एण्ड जेरी' इनके हिंदी उच्चारण की मिठास और गुणवत्ता अद्भुत, प्रभावी और ग्राह्य है। धर्म-संस्कृति, कला कौशल, ज्ञान-विज्ञान सभी कार्यत्मक हिंदी संप्रेषणीयता के प्रमाण हैं।

- (i) कहानीकारों और निर्देशकों को पहचान किस से मिली है?
- (क) कहानी से (ख) कविता से  
(ग) हिंदी से (घ) फिल्मों से
- (ii) किन कलाकारों ने हिन्दी की ओर रुख किया है?
- (क) हिंदी भाषी (ख) गैर-हिंदी भाषी  
(ग) विदेशी (घ) देशी
- (iii) परदे पर अर्थवत्ता को धारण करते लोग दिखावे के लिए किस भाषा के आग्रही हैं?
- (क) पंजाबी (ख) हिंदी  
(ग) तेलुगु (घ) अंग्रेजी
- (iv) कब सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल जाता था?
- (क) रामायण, महाभारत के प्रस्तुतीकरण के समय

- (ख) विवाह समारोह के समय  
 (ग) मेले के समय  
 (घ) खेलों के समय
- (v) हिंदी कब हर दिल की धड़कन बन भाषा बन गई?  
 (क) हम लोग के समय (ख) कौन बनेगा करोड़पति के कारण  
 (ग) धारावाहिकों के कारण (घ) संगीत के कारण
- (vi) गैर हिंदी कलाकारों ने हिंदी गीतों के माध्यम से कहाँ पहचान बनाई?  
 (क) सुर और संगीत की प्रतियोगिता में (ख) टॉम एण्ड जैरी में  
 (ग) बुनियाद में (घ) रामायण में
- (vii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-  
 (i) छोटे पर्दे से तात्पर्य टी.वी. पर आने वाले कार्यक्रम से है।  
 (ii) छोटे पर्दे से तात्पर्य नाटक से है।  
 (iii) छोटे पर्दे से तात्पर्य लघु फिल्म से है। उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /  
 कौन-से सही है/हैं?  
 (क) केवल (ii) (ख) केवल (i)  
 (ग) केवल (iii) (घ) (i) और (iii)
- (viii) बच्चों की लुभाने वाले ..की हिंदी उच्चारण और मिठास की गुणवत्ता प्रभावी और  
 ग्राह्य है। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-  
 (क) टॉम एण्ड जैरी (ख) डिस्कवरी चैनल  
 (ग) रामायण और महाभारत (घ) ये सभी
- (ix) रचनात्मक शब्द से मूल शब्द पहचानिए-  
 (क) रच (ख) रचना  
 (ग) चना (घ) आत्मक

- (X) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प लिखिए-

कथन (A) : प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक भारतीय सिनेमा है।

कारण (R) : सिनेमा में केवल रामायण ही दिखाई जाती है।

(क) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) गलत है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं।

- प्रश्न 2. दिए गए काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 1×8=8

गुलाब का फूल है हमारा पढ़ा-लिखा

मैंने उसे काफी उलट-पुलट कर देखा है

मुझे तो वह ऐसा ही दिखा

सबसे बड़ा सबूत उसके गुलाब होने का यह है

कि वह गाँव में जाकर बसने के लिए तैयार नहीं है

गाँव में उसकी प्रदर्शनी कौन कराएगा

वहाँ वह अपनी शोभा की प्रशंसा किससे कराएगा

वह फूलने के बाद किसी फसल में थोड़े ही बदल जाता है।

मूरख किसान को फूलने के बाद

फसल देने वाला ही तो भाता है,

गाँव में इसलिए ठीक है अलसी और सरसों के फल ।

बीच-बीच में यह प्रस्ताव कि गुलाब गाँव में चिकित्सा करे या पढ़ाए

पेश करने में कोई हर्ज नहीं है

मगर साफ समझ लेना चाहिए कि गुलाब का यह फर्ज नहीं है कि  
गाँव जाकर खिले, अलसी और सरसों वगैरा से मिले  
ढँक जाए वहाँ की धूल से  
और वक्त बेवक्त अपनी प्रदर्शनी न कराए।  
आमीन, गुलाब पर ऐसा वक्त कभी न आए।

- (i) इस कविता के केन्द्रीय भाव हेतु दिए गए कथनों को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए-
- कथन (i) गुलाब शहरी समाज के पढ़े-लिखे सुविधासंपन्न वर्ग का प्रतीक है।  
(ii) अन्न उपजाने की अपेक्षा किसानों से नहीं व्यापारियों से करनी चाहिए।  
(iii) किसान को सजावटी पौधों की अपेक्षा उसकी जीविका चलाने वाले पौधे ही भाते हैं।  
(iv) गुलाब जैसे लोग सदैव दिखावा और अपनी प्रशंसा के भूखे होते हैं।

विकल्प-

- (क) कथन (i) और (ii) सही है।  
(ख) कथन (ii) और (iii) सही है।  
(ग) कथन (i), (iii) और (iv) सही है।  
(घ) कथन (i), (ii), (iii) और (iv) सही है।
- (i) कवि ने किसे मूर्ख कहा है?  
(क) गुलाब को (ख) किसान को  
(ग) सरसों को (घ) पढ़े-लिखे शहरी को
- (ii) पढ़ा-लिखा गुलाब कहाँ जाकर बसने को तैयार नहीं है ?  
(क) शहर में (ख) कस्बे में  
(ग) गाँव में (घ) महानगर में

- (iii) कवि के अनुसार गुलाब का निम्न में से क्या फर्म नहीं है ?
- (क) वह गाँव में जाकर खिले (ख) अलसी, सरसों वगैरा से मिले  
(ग) वहाँ की धूल से ढक जाए (घ) उपर्युक्त सभी
- (iv) किसान को फूलने के बाद फसल देने वाला क्यों भाता है?
- (क) क्योंकि वह उन्हें अपने घर में प्रदर्शनी के लिए रखना चाहता है।  
(ख) क्योंकि फसल से ही उसका जीवन-यापन होता है।  
(ग) क्योंकि किसान को फूल बिलकुल पसंद नहीं होते।  
(घ) क्योंकि फसल बिना फूल के उगती है।
- (vi) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-
- कथन (A) : मगर साफ समझ लेना चाहिए कि गुलाब का यह फर्ज नहीं है कि गाँव जाकर खिले।  
कारण (R) : कवि स्वयं भी गुलाब के समान अभिजात्य वर्ग से संबंधित है और वह गाँव में नहीं बसना चाहता।
- (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।  
(ख) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है।  
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।  
(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
- (vii) 'बीच-बीच' में कौन-सा अलंकार है?
- (क) अनुप्रास (ख) यमक  
(ग) उपमा (घ) पुनरुक्ति प्रकाश

- (viii) काव्यांश में कवि ने किस फसल का जिक्र किया है?  
 (क) गेहूँ (ख) अलसी  
 (ग) ज्वार (घ) बाजरा

### अभिव्यक्ति और माध्यम

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-  
 1×5=5

- (i) किसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना भी होता है?  
 (क) समाचार लेखन (ख) फीचर लेखन  
 (ग) डायरी लेखन (घ) पटकथा लेखन
- (ii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-  
 (i) खोजी रिपोर्ट इसमें रिपोर्टर गहरी छानबीन कर ऐसी सूचनाएँ प्रस्तुत करता है जो सार्वजनिक रूप से पहले मौजूद होते हैं।  
 (ii) इन डेपथ रिपोर्ट-इसके अंतर्गत सार्वजनिक रूप में उपलब्ध सूचनाओं, तथ्यों की गहरी छानबीन कर तथ्यों को प्रकाशित किया जाता है।  
 (iii) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट इसमें रिपोर्टर द्वारा किसी घटना, समस्या से जुड़े तथ्यों की व्याख्या को प्रस्तुत किया जाता है।  
 इन कथनों में कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?  
 (क) केवल (i) (ख) केवल (ii)  
 (ग) (ii) और (iii) दोनों (घ) (i), (ii) तथा (iii)
- (iii) अनन्या और शाम्भवी तथ्यों की गहराई में जाकर किसी गड़बड़ी की असली वजह और उसके लिए जिम्मेदार लोगों को दूँड निकालने का काम करती हैं, वे हैं-  
 (क) विशेष पत्रकार (ख) खोजी पत्रकार  
 (ग) वैकल्पिक पत्रकार (घ) फ्रीलांसर



- (iv) किसी विचारधारा या उद्देश्य या मुद्दे के पक्ष में जनमत बनाने के लिए शुभम लगातार और जोरशोर से पत्रकारिता का अभियान चला रहा है। यहाँ वह किस प्रकार की पत्रकारिता कर रहा है?
- (क) खोजपरक पत्रकारिता (ख) विशेषीकृत पत्रकारिता  
(ग) एडवोकेसी पत्रकारिता (घ) विश्लेषणात्मक पत्रकारिता
- (v) अत्यन्त महत्वपूर्ण या बड़े समाचार को कम से कम शब्दों में दर्शकों तक तत्काल पहुँचाया जाना कहलाता है-
- (क) ब्रेकिंग न्यूज (ख) फीचर न्यूज  
(ग) बीट न्यूज (घ) पेज श्री न्यून

#### पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1×5=5

मुझ भाग्यहीन की तू संबल तू  
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,  
दुख ही जीवन की कथा रही  
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।  
हो इसी कर्म पर बज्रपात  
यदि धर्म, रहे नत सदा माघ  
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल  
हो भ्रष्ट शीत के से शतदला!  
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण  
कर करता मैं तेरा तर्पण!

- (i) काव्यांश में भाग्यहीन कौन है।  
 (क) पुत्री सरोज (ख) कवि की पत्नी  
 (ग) स्वयं कवि (घ) कवि की पोती
- (ii) 'दुख ही जीवन की कथा रही इस पंक्ति का अभिप्राय है-  
 (क) निराला का व्यक्तिगत जीवन वैभव से परिपूर्ण था।  
 (ख) निराला का व्यक्तिगत जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से भरा हुआ था।  
 (ग) निराला केवल दुख और शोक की रचनाएँ ही लिखते थे।  
 (घ) उपर्युक्त पंक्ति केवल निराला की पुत्री सरोज के लिए प्रयुक्त है।
- (iii) कवि ने कौन-सी बात किसी से नहीं कही?  
 (क) आजीवन विपत्तियों का सामना करने की  
 (ख) बेटी का विवाह करने की  
 (ग) सर्वदा सुखद जीवन व्यतीत करने की  
 (घ) जीवन में हमेशा सद्कर्म करने की
- (iv) काव्यांश में कौन-सा भाव मुखरित हुआ है?  
 (क) दैन्य भाव (ख) कुद्ध भाव  
 (ग) वत्सल भाव (घ) रति भाव
- (v) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
- (i) एक भाग्यहीन पिता के संघर्षमय जीवन और पुत्री के प्रति कुछ न कर पाने का पश्चात्ताप कविता में व्यक्त हुआ है।
- (ii) प्रस्तुत कविता अपनी प्राणप्रिया पत्नी के असमय मृत्यु से दुखी कवि की दैन्य अभिव्यक्ति है।
- (iii) कवि अपने जीवन के सभी पुण्य कर्मों का फल अपनी पुत्री सरोज को श्रद्धांजलि रूप में अर्पित करता है।

इन कथनों में कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(क) केवल (i)

(ख) केवल (ii)

(ग) (i) और (iii)

(घ) (i), (ii) तथा (iii)

**प्रश्न 5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा निर्देशानुसार उचित विकल्प**

**का चयन कीजिए-**

**1×5=5**

चौधरी साहब से तो अब अच्छी तरह परिचय हो गया था। अब उनके यहाँ मेरा जाना एक लेखक की हैसियत से होता था। हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज समझा करते थे। इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का एक अद्भुत मिश्रण रहता था। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि चौधरी साहब एक खासे हिंदुस्तानी रईस थे। वसंत पंचमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाचरंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी। कंधों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा-सा लड़का पान की तश्तरी लिए पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की कांट-छांट का क्या कहना है। जो बातें उनके मुँह से निकलती थी, उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था। अगर किसी नौकर के हाथ से कभी कोई गिलास वगैरह गिरा तो उनके मुँह से यही निकला कि 'कारे बचात नाही।'

(i) 'इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का एक अद्भुत मिश्रण रहता था।'

इस कथन का औचित्य बताइए।

(क) प्रेम और उत्सुकता का अद्भुत मिश्रण लेखक मंडली में दिखाई देता था।

(ख) उपाध्याय ब्रीनारायण चौधरी को पुरातत्व की अच्छी जानकारी थी।

(ग) लेखक मंडली की आयु उपाध्याय ब्रीनारायण चौधरी से बहुत अधिक थी।

(घ) लेखक मंडली चौधरी साहब को पुराने विचारों वाला आदमी समझती थी।

- (ii) उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी इसका अभिप्राय है कि-
- (क) पंडित उमाशंकर द्विवेदी एक बहुत बड़ी रियासत के मालिक थे।  
 (ख) लेखक और उसके साथियों को बड़ी रियासत प्राप्त हुई थी।  
 (ग) उनके पास बहुत बड़ी रियासत थी और तबीयत ठीक नहीं रहती थी।  
 (घ) कार्य व्यवहार से रियासत और तबीयतदारी की झलक मिलती थी।
- (iii) चौधरी साहब कैसे व्यक्ति थे?
- (क) खासे हिंदुस्तानी रईस, कंधों तक बालों वाले  
 (ख) क्रोधी स्वभाव के कंधों तक बालों वाले  
 (ग) कंधों तक बालों वाले, स्वार्थी  
 (घ) स्वार्थी, खासे हिंदुस्तानी रईस
- (iv) 'कारे बचात नाही' कहने से चौधरी साहब प्रदर्शित करते हैं कि वे-
- (क) नौकर से गिलास टूटने पर क्रोधित हो रहे हैं।  
 (ख) नौकरों को बहुत डाँट-डपटकर रखते हैं।  
 (ग) वस्तुओं का नुकसान सहन नहीं करना चाहते हैं।  
 (घ) विलक्षणता और चुटीलापन जैसे विशेष गुणों के स्वामी हैं।
- (v) कथन (A) : एक छोटा-सा लड़का जो पान की तश्तरी लिए चौधरी साहब के पीछे-पीछे लगा हुआ है, वह चौधरी साहब का नौकर है।  
 कारण (R) : वर्तमान सन्दर्भ में यह कार्य बालमजदूरी की अवस्था को दर्शाता है।
- (क) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है।  
 (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।  
 (ग) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।  
 (घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) सही व्याख्या नहीं है।

पाठ्यपुस्तक अंतराल भाग-2

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- 1×7=7

- (i) सूरदास अपनी इस आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त क्यों रखना चाहता था?  
(क) क्योंकि वह सभी से पोटली के राज को गुप्त रखना चाहता था।  
(ख) क्योंकि वह जगधर को पोटली के बारे में नहीं बताना चाहता था।  
(ग) क्योंकि एक गरीब के पास इतने पैसे होना लज्जा की बात है।  
(घ) क्योंकि एक अमीर के पास इतने पैसे होना गर्व की बात है।
- (ii) सूरदास के मन में अचानक से आशा की किरण किस प्रकार जगी ?  
(क) खेलते हुए बच्चों की बात सुनकर तुम खेल में रोते हो।  
(ख) उसके अंतर्मन से  
(ग) अपनी दैन्य स्थिति को देखते हुए (घ) जगधर के उकसाने पर
- (iii) कथन (A) : लेखक ने आधुनिक सभ्यता को 'खाऊ- उजाड़ सभ्यता' कहा है।  
कारण (R) : यह भारत की अपनी सभ्यता है और यह भारत से यूरोप तथा अमेरिका गई है।  
(क) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है।  
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।  
(ग) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।  
(घ) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है।
- (iv) कथन (A) : बीसवीं शताब्दी में यूरोप में हुई फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद परिवर्तन की जो लहर चली थी उसको शरिनेसाश या पुनर्जागरण काल कहा जाता है।  
कारण (R) : इसी के कारण ब्रिटेन में बड़े-बड़े उद्योग लगे और उनके माल को खपाने के लिए एशिया में बाजार तलाशे गए।

- (क) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या नहीं है।  
 (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।  
 (ग) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) गलत है।  
 (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) सही व्याख्या है।
- (v) 'संगीत, गंध, बच्चे- बिसनाथ के लिए सबसे बड़े सेतु हैं' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?  
 (क) क्योंकि इनसे ही काल, इतिहास को पार किया जा सकता है।  
 (ख) क्योंकि इनसे ही भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।  
 (ग) क्योंकि इनसे ही ब्रह्मांड में विचरण किया जा सकता है।  
 (घ) क्योंकि अरुचिपूर्ण होने के कारण ये सभी त्याज्य हैं।
- (vi) निम्नलिखित शब्द-युग्मों को सुमेलित कीजिए-
- | भाग 1              | भाग 2                          |
|--------------------|--------------------------------|
| (i) भरभंडा         | (i) मधुमेह की दवाई             |
| (ii) नीम के पत्ते  | (ii) आँख दुखने पर दवा          |
| (iii) बेर के फूल   | (iii) चेचक होने पर दवाई का काम |
| (iv) गुड़हल के फूल | (iv) तँतैयों के डंक की दवाई    |
- (क) (i)-(i), (ii)-(ii), (iii)-(iii), (iv)-(iv)  
 (ख) (i)-(iv), (ii)-(i), (iii)-(ii), (iv)-(iii)  
 (ग) (i)-(i), (ii)-(iii), (iii)-(iv), (iv)-(iv)  
 (घ) (i)-(ii), (ii)-(iii), (iii)-(iv), (iv)-(i)
- (vii) 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
- (i) बिस्कोहर की माटी विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा रिपोर्ताज शैली में लिखा गया पाठ है।

- (ii) इस पाठ में लेखक ने अपनी ग्रामीण प्राकृतिक सुषमा और सम्पदा का सुंदर वर्णन किया है।
- (iii) इस पाठ में लेखक ने औद्योगिक विकास से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है। इन कथनों में कौन सा/से कथन सत्य है है?
- (क) केवल (i) (ख) केवल (ii)
- (ग) (i) और (iii) दोनों (घ) (ii) और (iii) दोनों

**खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)**

**प्रश्न 7. निम्न में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**  $5 \times 1 = 5$

- (i) राजनीति का अपराधीकरण (ii) सच्ची खुशी
- (iii) वसुधैव कुटुम्बकं

**प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-**  $3 \times 2 = 6$

- (i) नाटककार एक सफल सम्पादक होना चाहिए? स्पष्ट कीजिए।
- (ii) 'कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव का इतिहास' इस कथन के आधार पर कहानी की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
- (iii) कविता की रचना के लिये आवश्यक तत्वों का उल्लेख कीजिए।

**(III) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-**  $3 \times 2 = 6$

- (i) विशेष लेखन की भाषा-शैली संबंधी विशेषता का वर्णन कीजिए।
- (ii) आजकल इन्टरनेट के अधिक लोकप्रिय होने के कारणों को स्पष्ट कीजिए

**प्रश्न 10. निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**  $2 \times 2 = 4$

- (i) 'यह दीप अकेला' कविता में व्यष्टि एवं समष्टि के संतुलन को आवश्यक माना गया है स्पष्ट करें।

- (ii) 'बारहमासा' की नायिका 'छार' क्यों बन जाना चाहती है? पवन से वह क्या प्रार्थना करती है और क्यों?
- (iii) ये झूठे बंधन टूटें, तो धरती को हम जानें, यहाँ पर झूठे बंधनों और धरती को जानने से क्या अभिप्राय है ? 'तोड़ो' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए।

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

6×1=6

अरुण यह मधुमय देश हमारा!  
 जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।  
 सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।  
 छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा।  
 लघु सुरधनु से पंख पसारे-शीतल मलय समीर सहारे।  
 उड़ते खग जिस ओर मुँह किए समझ नीड़ निज प्यारा।  
 बरसाती आँखों के बादल बनते जहाँ भरे करुणा जल।  
 लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।  
 हेम कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।  
 मंदिर ऊँघते रहते जब जगकर रजनी भर तारा।

**अथवा**

बहुत दिनान को अवधि आसपास परे,  
 खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।  
 कहि कहि आवन छबीले मनभावन को,  
 गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को।।  
 झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास है के,  
 अब ना घिरत घन आनंद निदान को।



अधर लगे हैं आनि करि के पयान प्रान,  
चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को॥

प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-  $2 \times 2 = 4$

- (i) बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी ?
- (ii) असगर वजाहत की 'शेर' लघुकथा के आलोक में प्रतिपादित कीजिए कि 'प्रमाण' से भी अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास'।
- (iii) 'व्यापार यहाँ भी था' 'दूसरा देवदास' पाठ के आधार पर इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

$6 \times 1 = 6$

हरगोबिन को अचरज हुआ तो आज भी किसी को संवदिया की जरूरत पड़ सकती है। इस जमाने में जबकि गाँव-गाँव में डाकघर खुल गए हैं, संवदिया के मारफत संवाद क्यों भेजेगा कोई ? आज तो आदमी घर बैठे ही लंका तक खबर भेज सकता है और वहाँ का कुशल संवाद मँगा सकता है, फिर उसकी बुलाहट क्यों हुई? हरगोबिन बड़ी हवेली की टूटी ड्योढ़ी पारकर अंदर गया। सदा की भाँति उसने वातावरण को सूँघकर संवाद का अंदाज लगाया.... निश्चय ही कोई गुप्त समाचार ले जाना है।

#### अथवा

यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारम्परिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यह रही है कि शासक वर्ग ने औद्योगीकरण का मार्ग चुना, ट्रेजेडी यह रही है कि पश्चिम की देखादेखी और नकल में योजनाएँ बनाते समय प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच का नाजुक संतुलन किस तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है इस ओर हमारे पश्चिम शिक्षित सत्ताधारियों का ध्यान कभी नहीं गया।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- 3×1=3

- (i) 'सूरदास' प्रतिशोध का नहीं बल्कि पुनर्निर्माण का ही दूसरा नाम है। 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ को दृष्टि में रखते हुए सरदास की चारित्रिक विशेषताओं को लिखिए।
- (ii) लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है? आप क्या मानते हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।











